" कुमायूँ नैनीताल लालवृत्तीय भारत सरकार द्वारा मान्य दृक्तुल्य गणित से युक्त सर्वत्रोपयोगी धर्मशास्त्र सम्मत् पंचाङ्ग "

स्थापित २०३८	जीवन विजय पंचाङ्गं सूक्ष्मं यद् दृक्तुल्यकम् । गणितेन समाविष्टं धर्मशास्त्रैक सम्मतम् ॥१॥	ॐ	कल्याणाय भवत्वेव सर्वेषां नात्र संशयः । प्राप्नोतु विजयं लोके यथा नाम तथा गुण ॥२॥	वर्ष २

वर्ष लग्नम् ४।७।१९।४



श्रीजीवन विजय पञ्चाङ्गम्

वर्षेश लग्नम् ९।२४।२





उत्तर भारते 'युवा' सम्वत्सरः



दक्षिण भारते 'दुन्दुभिः' सम्वत्सरः



राजा शुक्र	शालीवाहनीय शके १९०४	विक्रम संवत् २०३९	ईस्वी सन् १९८२-८३	मंत्री मंगल

प्रधान सम्पादक : गणक-भास्कर पं. भोलादत्त महतोलिया शास्त्री, बी. ए. विशारद सुपुत्र पं. श्री तारादत्त पौत्र पं. श्री गंगादत्त

१. पश्चिमी खेड़ा, पो० काठगोदाम जि० नैनीताल २. ए/५०, आदर्श कालोनी, पो० रुद्रपुर, (नैनीताल)

भूतपूर्व निवासी—ग्राम, टांडी (भद्रकोट) पो० ओखलकांडा, जि० नैनीताल (उ० प्र०)

मूल्य ४-०० (चार रुपये)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उत्तर प्रदेश शासन

सामान्य प्रशासन अनुभाग

संख्या: 8220/तीन-39(2)—1981-सा०प्र०अनु०

दिनांक, लखनऊ, 7 दिसम्बर, 1981

विज्ञप्ति

निगोशियबल इन्स्ट्रूमेंट्स ऐक्ट, 1881 (ऐक्ट संख्या 26, 1881) की धारा 25 द्वारा प्राप्त उन अधिकारों को काम में लाते, जिन्हें भारत सरकार की विज्ञप्ति संख्या 20-25-56-पब्लि-1, दिनांक 8 जून, 1957 के अनुसार राज्य सरकार काम में ला सकती है, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल घोषित करते हैं कि निम्नलिखित अनुसूची में निर्दिष्ट छुट्टियां सन् 1982 ई० में अथवा 1903-1904 शक संवत् के वर्ष में समस्त उत्तर प्रदेश में सार्वजनिक छुट्टियां होंगी:—

सन् 1982 तथा 1903-1904 शक संवत् की छुट्टियों की अनुसूची

त्योहारों के नाम	छुट्टियों की संख्या	ग्रिगोरियन कलेंडर के अनुसार तिथि	भारतीय शक संवत् के अनुसार तिथि	सप्ताह के दिन
1	2	3	4	5
* ईद-मिलाद-उन-नबी या ईद-ए-मिलाद	1	8 जनवरी, 1982	पौष 18, 1903	शुक्रवार
गणतन्त्र दिवस	1	26 जनवरी, 1982	माघ 6, 1903	मंगलवार
शिवरात्रि	1	22 फरवरी, 1982	फाल्गुन 3, 1903	सोमवार
होली	2	9 तथा 10 मार्च, 1982	फाल्गुन 18 तथा 19, 1903	मंगलवार तथा बुधवार
राम नवमी	1	2 अप्रैल, 1982	चैत्र 12, 1904	शुक्रवार
महावीर जयन्ती	1	6 अप्रैल, 1982	चैत्र 16, 1904	मंगलवार
गुड फ्राइडे	1	9 अप्रैल, 1982	चैत्र 19, 1904	शुक्रवार
बुद्ध पूर्णिमा	1	7 मई, 1982	वैशाख 17, 1904	शुक्रवार
** बैंकों की अर्द्धवार्षिक लेखा बन्दी	1	30 जून, 1982	आषाढ़ 9, 1904	बुधवार
ईदुलफितर	1	23 जुलाई, 1982	श्रावण 1, 1904	शुक्रवार
जन्माष्टमी	1	12 अगस्त, 1982	श्रावण 21, 1904	बृहस्पतिवार
स्वतन्त्रता दिवस	1	15 अगस्त, 1982	श्रावण 24, 1904	रविवार
दशहरा	2	25 तथा 27 सितम्बर, 1982	आश्विन 3 व 5, 1904	शनिवार तथा सोमवार
* ईद-उज-जुहा (बकरीद)	1	28 सितम्बर, 1982	आश्विन 6, 1904	मंगलवार
महात्मा गांधी का जन्म दिवस	1	2 अक्टूबर, 1982	आश्विन 10, 1904	शनिवार
दीपावली	2	15 तथा 16 अक्टूबर, 1982	आश्विन 23 व 24, 1904	शुक्रवार व शनिवार
* मुहर्रम	1	28 अक्टूबर, 1982	कार्तिक 6, 1904	बृहस्पतिवार
कार्तिक पूर्णिमा तथा गुरुनानक का जन्म दिवस	1	1 नवम्बर, 1982	कार्तिक 10 1904	सोमवार
क्रिसमस-डे	1	25 दिसम्बर, 1982	पौष 4, 1904	शनिवार
* ईद-मिलाद-उन-नबी या ईद-ए-मिलाद	1	28 दिसम्बर, 1982	पौष 7, 1904	मंगलवार
** बैंकों की वार्षिक लेखा बन्दी	1	31 दिसम्बर, 1982	पौष 10, 1904	शुक्रवार

* यह त्योहार स्थानीय चन्द्र दर्शन के अनुसार मनाये जायेंगे और जिला मजिस्ट्रेट इन छुट्टियों की तारीख, यदि आवश्यकता पड़े तो पुनः निर्दिष्ट कर सकते हैं परन्तु ऐसा करने में वे स्टेट बैंक की स्थानीय शाखा से, यदि कोई हो, प्रबन्ध कर लेंगे कि बैंक भी उसी दिन छुट्टी करें।

** केवल कोषागारों तथा उप-कोषागारों के लिए।

आज्ञा से,

त्रिभुवन प्रसाद,

मुख्य सचिव।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीजीवन विजय के लिए ऋषितुल्य विद्वानों
--की अमूल्य सम्मतियाँ--

श्री सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय, हल्द्वानी के प्रतिभाशाली भूतपूर्व छात्र श्री भोलादत्त महतोलिया द्वारा सम्पादित श्रीजीवन विजय पंचांग (सं. २०३९) की पाण्डु-लिपि देखी, विगत एक ही वर्ष के स्वल्प समय में ही इस पंचांग में जितनी विषयवृद्धि हुई है उसे देखकर मन पुलकित हो गया, स्पष्ट है कि पंचांग-गणित में हो रही मनमानी ने हमारे पर्वती क्षेत्र की भयंकर हानि की है। गणित स्वतः प्रमाणित होता है, अतः हमें ऋषियों के वचनों का पालन करना ही होगा। क्योंकि :—

प्रत्यक्ष विषयः कोऽपि नैति युक्ति पथं यदि।
इन्द्रियाणां भ्रमो ज्ञेयः प्रमाणं गणित सदा॥

वस्तुतः दृक्तुल्य गणित द्वारा बने पंचांग ही जातकादि एवं श्रौतस्मार्त-धार्मिक कृत्यों हेतु प्रयोगार्ह हैं। क्षेत्र में यह पहला पंचांग है, जिसमें दैनिक ग्रहस्पष्ट, लग्नसारणी, भा. स्टै. टाइम में तिथ्यादिपदार्थ तथा अन्य मौलिक सामग्री के द्वारा जनसामान्य भी ज्योतिष शास्त्र के प्रमाणिक विषयों से लाभान्वित हो सकते हैं।

आशा ही नहीं विश्वास भी है कि विद्वान लोग प्रिय महतोलिया के गहन अध्ययन, भूरिपरिश्रम तथा मौलिक रूपेण विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण की प्रसंशा अवश्य करेंगे। मैं इन्हें साधुवाद के साथ ही पूर्णसफलता व दीर्घ जीवन के लिए हार्दिक शुभाशीर्वाद देता हूँ।

(मदन नारायण त्रिपाठी)
अवकाश प्राप्त प्राचार्य
श्री स० ध० संस्कृत म० वि० हल्द्वानी
(नैनीताल)

श्रीमद्गणिगणक भास्करैः पण्डित भोलादत्त महतोलिया शास्त्री (बी० ए०) विशारदैः रुद्रपुर जिला (नैनीताल) वास्तव्यैर्महता परिश्रमेण विरचितं वैक्रम २०३८ संवत्सरीयं श्रीजीवन पञ्चाङ्गमामूलचूलमवलोकितवानस्मि। पञ्चाङ्गस्य सर्वाङ्गीण सौन्दर्य सम्पत्ति को वा गुणगृह्यो विपश्चित् नाभिनन्देत् कश्च सहृदयो नाभिशंसेत्पञ्चाङ्ग निर्मातुरलघवीय सौष्ठवलङ्कर्मणताम्? सकलेतर पञ्चाङ्गसाधारणगुणान् ग्रहण निर्णयः, दृक् प्रत्ययतिथ्यादि निर्णयः वर्षलग्न, विश्वलग्न, सूक्ष्मगणनाया विवेचनात्मकान्यस्मिन् सङ्कलय्य विभ्रतोऽप्यस्याऽनायासाधनाऽऽगम साधन प्रकारं दैनिक लग्नसारणि सूक्ष्म नैनीताल भूकेन्द्रीयाक्षांश निर्मितं हितावहां बहूपकारिणीमन्याश्च काश्चिदद्भुतां सविशेषमाविष्कुर्वतो, समस्त जिज्ञासुजन सुगमवर्त्मना परिचाययतस्तन्निर्मातुर्विपश्चिद् पश्चिमस्य परमश्लाघ्यां रचना कौशलीञ्च प्रकटयतः पञ्चाङ्ग-वरेण्यस्य हृदयेन साफल्य कामये। आशा च सर्वनिष्पक्षपाताः सहृदया विद्वान्सः पञ्चाङ्गमेतदुररी करिष्यन्ति। जनतायाश्च एतत्परमादरपात्रतामियादिति।

प्रेषकः
(पण्डित गङ्गाप्रसाद शास्त्री)
२४-३-८१
ज्योतिषाचार्यः
मुरारिपुरम्
(ग्वालियर)

कूर्माचल के नवोदित पञ्चाङ्ग "श्री जीवन विजय" की अग्रिम प्रति ससम्मान प्राप्त हुई। आमूलचूल इस पञ्चाङ्ग का अध्ययन किया। अत्यन्त मनस्तुष्टि हुई। इसलिए कि समस्त कूर्माचल (अल्मोड़ा, नैनीताल व गढ़वाल) का जन समाज आज तक वैदिक संस्कृति से पल्लवित एवं परिपूर्ण रहा है। षडंग वेद के चक्षु (नेत्र) स्थानीय अंग 'फलित ज्योतिष' का यहाँ बाहुल्येन समादर रहता आया है। पञ्चाङ्ग गणित पद्धतियों से निर्मित पञ्चाङ्गों में 'माला' (स्थान विशेष) के ज्योतिर्विदों का नाम सविशेष रहा है। दुर्दैव से कूर्माचल के ब्राह्मणों ने करवट बदली और अपनी पाण्डित्य परम्पराओं से वर्तमान में प्रायः विरत से होते गये हैं। तथापि आज भी कूर्माचल एवं गढ़देश में जो अनेक प्रकार के पञ्चाङ्ग प्रकाश में आ रहे हैं; लगभग सभी में गणितीय त्रुटियाँ असोढव्य रूपेण रहती हैं। क्योंकि उन सभी पञ्चाङ्गकारों का पञ्चाङ्ग निर्माण सम्बन्धी ज्ञान परम्परागत होने के कारण अत्यन्त लघु सीमा का है। जातकादि व धर्म शास्त्रीय निर्णयों के लिये कहीं कहीं पर तो अत्यन्त कठिनाइयाँ पाठकों के सामने आती रही हैं।

'गणित' अपनी जगह पर स्वतः स्वयं प्रमाण है। फलित ज्योतिष के उपयोग में उत्तम पञ्चाङ्गों का सहयोग सदैव संशयग्रस्त रहा है? ऐसी ही अनेक विषम स्थितियों के सुधार के लिये, जिसकी कि मैं विगत ४० वर्षों से प्रतीक्षा कर रहा था, कूर्माचल में आवश्यकता थी, सौभाग्य से इन सबका हल आज 'श्री जीवन विजय' नामक इस उत्तम पञ्चाङ्ग के रूप में सामने आया है। यह पञ्चाङ्ग नैनीताल केन्द्राभिप्रायिक सूक्ष्म व सही गणित से सुशोभित है। विद्वान् सम्पादक ने वर्तमान सही गणित का स्तुत्यश्रम कर इस पञ्चाङ्ग-निर्माण से समस्त कूर्माचल में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। अवश्य ही यह पञ्चाङ्ग कूर्माचलीय जनता के लाभाय व ज्ञानविवर्धनाय होगा। इस उत्तम प्रकार के सूक्ष्म-शुद्ध पञ्चाङ्ग का प्रयोग करके जन सामान्य भी ज्योतिषशास्त्र की सही व सूक्ष्म गतिविधियों से परिचित होगा जैसा कि हमारे प्राचीन खगोल मर्मज्ञों ने स्पष्ट किया है कि यहाँ की दृग्गणितैक्यप्रक्रिया ही ज्योतिष जगत में व्यवहारोपयोगी है।

मैं विद्वान सम्पादक के भूरिपरिश्रम की सराहना के साथ ही उनकी पूर्ण सफलता व दीर्घ जीवन की शुभ कामना करता हूँ॥ इति शम्॥

(अल्मोड़ा मण्डलान्तर्गत जुनायल ग्राम निवासी)
श्री पं० केदारदत्त जोशी)
(ज्योतिषाचार्य (गणित, फलित)
(भू० पू०) प्रमुख प्राध्यापक
संस्कृत महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
सम्प्रति नि० स्थान—नगवा, वाराणसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चि० श्री भोलादत्त महतोलिया द्वारा सम्पादित श्रीजीवन विजय पंचांग की प्रूफप्रति देखी । श्री महतोलिया ने अपने पंचांग के इस द्वितीय पुष्प में विगत वर्ष की अपेक्षा विशेष परिश्रम किया है । केवल १ वर्ष के अल्प समय में ही दैनिक ग्रहस्पष्ट सहित तिथ्यादि पदार्थों को भा० प्र० समय (I.S.T.) में दे सकना उनकी निष्काम एवं सच्ची ज्योतिषाराधना का परिचायक है । इसके अतिरिक्त साम्पातिक कालादि अनेकशः नवीन विषयों के सरलतम रूपेण प्रस्तुतीकरण से यह पंचांग समस्त कूर्मांचल के लिए एक गौरव का विषय बनकर देश के प्रमुख एवं शुद्ध पंचांगों की श्रेणी में आ गया है । विशेषकर इस वर्ष के क्षयाधिमास के विषय में इनका अध्ययन एवं गवेषणा पूर्ण लेख सुसराहनीय है । पंचांगकार ने 'संसर्प' को शुद्ध रूप में मान्यता देकर धर्मशास्त्रीय पक्ष अपनाया ही नहीं अपितु अपने क्षेत्र में इसके प्रचार-प्रसार पर विशेष परिश्रम भी किया है । एतदर्थ इनको श्रेय है ।

इसमें नाममात्र भी सन्देह नही कि श्री महतोलिया क्षयाधिमास सम्बन्धी धर्मशास्त्रीय संरक्षण में सहायक सिद्ध हुये है । अतः पुण्य के भी भागी हैं ।

कर्मठ नवयुवक सम्पादक का प्रयास स्तुत्य है । हमें विश्वास है कि भविष्य में आपका यह प्रयास वेधसिद्ध दृक्तुल्य गणित तथा धर्मशास्त्रीय निर्णयों के लिये अत्यन्त सहायक एवं लोकप्रिय होगा और जनता का मोह अशुद्ध पंचांगों से हटाने में अपनी भूमिका निभायेगा । समस्त जनसामान्य में इनका यह पंचांग अपनी अनेकशः विशेषताओं के कारण लोक-प्रियता में कीर्तिमान स्थापित करके अपने क्षेत्र के अन्य पंचांगों को सुधार हेतु भी अवसर करेगा, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है ।

हम इस नवोदित युवा पंचांगकार की अहर्निश प्रगति की कामना करते हैं ।

(राजज्योतिषी पं० मुकुन्द वल्लभ मिश्र)
ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष—श्री मार्तण्ड पंचांग कार्यालय
कुराली (पंजाब)

पञ्चाङ्ग प्रत्येक भारतीय के धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन में अनिवार्यतया आवश्यक वस्तु है । हमारे पूर्वज खगोलशास्त्र के इतने अभ्यस्त थे कि उन्हें उसकी तथ्यता के लिये किसी उपकरण की आवश्यकता न थी । समय के साथ हमारी प्रज्ञा का इतना ह्रास हो गया कि आज हम अपने दैनिक कृत्यों के लिये मात्र पञ्चाङ्ग पर आश्रित रहते हैं । दुःख तो यह है कि जैसे जैसे डाक्टर बढे हैं वैसे ही रोग भी बढ़ रहे हैं । हमारे देश में जितने पञ्चाङ्ग बढ़ रहे हैं उतनी ही उनके सिद्धान्तों में विविधता आ रही है । किसी भी धार्मिक कृत्य के लिये तिथ्यादि की गणना में पञ्चाङ्गों में एकरूपता नहीं होती फलतः उन कृत्यों के फल नहीं होते और लोगों को शास्त्रों पर अनास्था होती जा रही है ।

ब्रह्मा की समग्रसृष्टि गतिशील है । अतः आज से सैकड़ों या हजारों वर्ष पूर्व जिस ग्रह की जो स्थिति थी वह आज नहीं हो सकती । इस तथ्य को श्री भास्कराचार्य ने स्वीकार किया है और स्पष्ट कहा है कि उनके ग्रन्थों में ग्रहों आदि की स्थिति पर जो गणित दर्शाया है वह उनके काल का है । आवश्यकता है कि उनके सैकड़ों वर्षों बाद आज हम उन्हीं की शैली से आज की ग्रहस्थिति को जानें । हम जिस देश और काल में हों उसके अक्षांश-देशान्तर के अनुसार ग्रहों की गति और उसके फल का आकलन करें ।

इसी दृष्टि से कूर्मांचल के अक्षांश-देशान्तर के आधार पर श्रीभोलादत्त महतोलियाजी ने जो जीवनविजय पञ्चाङ्ग, का निर्माण किया है । यह उनका अत्यन्त प्रशंसनीय प्रयास है । वे उदीयमान, कर्मठ और लगनशील व्यक्ति हैं । हमें उनसे बड़ी आशायें है । मैं उनके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ कूर्मांचल की जनता से निवेदन करता हूं कि अधिक से अधिक इस पञ्चाङ्ग के प्रचार-प्रसार द्वारा श्री महतोलिया जी के उत्साह को बढ़ावें और ज्योतिष के वास्तविक तथ्य को समझें । इति शम् ।

— जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
केन्द्रीय ग्रन्थागार
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

नया संगरौली
जैंती (अल्मोड़ा) ।

चिरायुष्मान् पं० श्री भोलादत्त महतोलिया द्वारा निर्मित पञ्चाङ्ग गत संवत् २०३८ एवं वर्तमान संवत् २०३९ का पूर्ण अवलोकन किया ।

भारतीय खगोल विज्ञान् सतत् अन्वेषक ऋषि-महर्षियों से लेकर आज बीसवीं-एक्कीसवीं शताब्दी के परिवेश में भी वही यथार्थ सत्यता की उक्ति स्पष्ट समीचीन है, "खेटैः स्फुटैरेव च फलस्फुटत्वम् ।" ग्रहों के सततवेध से दिक्-देश-काल की सूक्ष्म स्थिति जानना ही हमारे पूर्वजों का लक्ष्य रहा है, इसी कारण प्रत्यक्ष में भी सामान्य जनता को वर्षमान व ऋतुओं में अन्तर तथा अविश्वास नहीं हुआ है ।

दृग्गणितैक्यता की उपलब्धि यदि काल-ग्रह-ऋतु-आकाशदर्शन सौर-चान्द्र-सावन दिनों में ठीक न उपलब्ध हो तो मानव यज्ञ-यागादिजन्य पुण्यफल का भागीदार भी नहीं हो सकता है ।

पं० श्री महतोलिया ने दृक्सिद्ध गणित के द्वारा कठोर श्रम से अपने कूर्माञ्चल उपखण्ड के लिये धर्मशास्त्र सम्मत श्रीजीवनविजय पञ्चाङ्ग का निर्माण किये है । मैंने इस पञ्चाङ्ग के गणितादि को आद्योपान्त ठीक पाया; इस पर शंका करना अपने ज्योतिषशास्त्र पर शंका करने के समान होगा ।

इस पञ्चाङ्ग से समस्त जनता जनार्दन को सभी क्षेत्रों में उचित निर्देशन मिलेगा । मैं व्यक्तिगतरूप से इनके इस प्रयास की प्रसंशा किये बिना नहीं रह सकता तथा इनके समुज्जवल भविष्य की शुभ कामना करता हूँ ।

—कृष्णचन्द्र द्विवेदी, विद्यावारिधि
ज्योतिषाचार्य

ज्योतिषविभागाध्यक्ष,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय;
वाराणसी ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: पाठकों के प्रेरणाप्रद पत्रों के कुछ अंश :—

अनुष्ठान कुटीर
पं० कैलाशनाथ उपाध्याय — के. २१/८ नारायणदीक्षित लेन
वाराणसी–१
दिनांक २०-३-८१

श्रीयुत पं० भोलादत्त जी !

सप्रेम नमन, सम्वत् २०३८ का पञ्चाङ्ग मिला, धन्यवाद,........................ प्रथमाराधना के प्रथम सोपान पर ही अपने धर्मशास्त्रसम्मत दृक्तुल्यगणितागत श्री जीवन विजय पञ्चाङ्ग की रचना और सम्पादन करके गुरु ऋण से उऋण होने का एक मार्ग भी बना लिया है ।

पञ्चाङ्गावलोकन के पश्चात् गणितीय शुद्धता, सामग्रीय परिपक्वता एवं भाषा शैली का अनोखापन प्रत्येक जनमानस को मोह लेता है। विद्वत्समाज में तो प्रतिशोध की भावना कुछ द्वेष व ईर्ष्यायुक्त रहती है। लेकिन बहुसंख्यक जनसमूह द्वारा आपका पञ्चाङ्ग निश्चय ही आदरणीय रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं भी आपकी भावी उन्नति एवं स्थायित्व की शुभ कामना करता हूँ।

(सपादकीय सहयोगी—चिन्ताहरण जन्त्री) — आपका अपना ही

(कैलाशनाथ उपाध्याय)

पं० बंशीधर शर्मा गौड़ — मु० पो०—सिगारला
'राजस्थान'
१३-८-८१

श्री महतोलिया

सस्नेह वन्दे, पञ्चाङ्ग की प्रति मिली, आपका पञ्चाङ्ग-प्रकाशन का प्रयास उ० प्र० में प्रशंसनीय है। आप शुद्ध गणित के प्रचार से जनता के मुहूर्तादि शुभ समय में होने के श्रेष्ठ फल के भागी होंगे, स्थूल गणित से बने पञ्चाङ्ग ही उ० प्र० में प्रचलित होने से मुहूर्तादि शुभ कार्य ठीक समय पर नहीं हो पाते थे, अब आप द्वारा सम्पादित श्री जीवन विजय पञ्चाङ्ग इस कमी को दूर करके शुद्धगणित (सूक्ष्म दृश्य) के प्रचार से सर्वत्र मान्य होगा, यही हमारी शुभ कामना है। पत्रोत्तर देवें।

भवदीय

(पं० बंशीधर शर्मा)

पं० ठाकुरदत्त पंत ज्योतिर्विद — मु० पो०–रानीखेत
अल्मोड़ा (उ० प्र०)
२७-८-८१

श्री बी० डी० महतोलिया शास्त्री,

नमस्कार, आपका पञ्चाङ्ग रानीखेत में पं० एन० एन० बिष्ट जी के यहाँ से प्राप्त हुआ। धन्यवाद, पञ्चाङ्ग को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ। आप कुमाऊँ के अन्य पञ्चाङ्गों से अच्छी प्रगति कर रहे हैं। अतः आपके पञ्चाङ्ग को मेरी प्रशस्ति एवं सद्भावना सादर प्रेषित है। कृपया पत्रोत्तर देकर सम्पर्क बनाये रखें। भवदीय

(पं० ठाकुरदत्त पंत)

पं० रमेशचन्द्र शर्मा — मुकुन्दाश्रम
(पुत्र श्री मुकुन्द दैवज्ञ) — गढ़वाल उ०प्र०
श्रीयुत महतोलिया जी, — ३-८-८१

सादर अभिवादन, आपके द्वारा सस्नेह प्रेषित श्री जीवन विजय पञ्चाङ्ग की प्रति प्राप्त हुई। परम हर्ष हुआ बहुशः धन्यवाद, आपका पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य गणित से युक्त होने के कारण आपने क्षेत्रीय ज्योतिषानुरागियों की परम्परागत अभावों की पूर्ति करके पर्वतीय अंचल के जनमानस की जो अभूतपूर्व सेवा की है उसके लिये सदैव ऋणी रहेंगे, परन्तु ढोंगी लोगों को इससे स्वाभाविक जलन अवश्य होगी। आशा है आप इसकी तनिक भी चिन्ता न करके अपने निरन्तर प्रयासों से पञ्चाङ्ग को और अधिक उपयोगी बनाकर ज्योतिष साहित्य की सेवा करते रहेंगे। भवदीय

(पं० रमेशचन्द्र)

राजपण्डित शिवानन्द उनियाल — महामाया राजराजेश्वरी समिति
नई दिल्ली–१
४-८-८१

परम श्रद्धेय महतोलिया जी सादर नमस्कार,

आपके द्वारा निर्मित श्रीजीवन विजय पञ्चाङ्ग मिला, यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि पर्वतीय अंचल की गरिमा यथावत् ज्योतिर्विज्ञान के क्षेत्र में अपना स्थान बनाये हुये है।

आपके इस सराहनीय प्रयास से समस्त पर्वतीय लोगों का जो मनोबल बढ़ाया इसके लिए माँ राजराजेश्वरी से प्रार्थना है कि आप अपने इस सराहनीय क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुँच कर विद्वद्वृन्द ज्योतिर्विज्ञानियों की सेवा में सफल हो तथा दिग्दिगन्तर तक आपकी चहुँमुखी प्रतिभा का प्रकाश पूर्णकुन्देन्दु के समान फैले।

समस्त शुभकामनाओं सहित आपका

(प्रं० शिवानन्द उनियाल)
द्वारा बिड़ला मन्दिर, नई दिल्ली-१

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सम्पादकीय

मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मना
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्ता [illegible] ज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थिति विभुश्चानेकधा यः श्रुतौ
वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥
यद्भूतं यद्भविष्यं च सर्वदा यस्सनातनः ।
अव्यक्तव्यापक रूपायस्तस्मै कालात्मने नमः ॥
श्रौतं स्मार्तञ्च गार्हस्थ्यं यद्विना नैव सिद्धयति ।
तत्कालाख्येश्वरस्याङ्गं वन्दे तिथ्यादि पञ्चकम् ॥

श्रौत–स्मार्त व गृहस्थ धर्म सम्बन्धी सभी कृत्यों को विधिपूर्वक पूरा करने के लिये अनिवार्यतः प्रयुक्त होने वाले पञ्चाङ्ग शब्द में तिथि-वारादि के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण विषयों का भी समावेश रहता है। वेदों के सर्वोपरि होने के कारण ही उनमें प्रतिपादित 'ज्योतिषशास्त्र' की महत्ता भी वेदों के तुल्य ही मानवमात्र के लिए कल्याणकारी है। इसमें सन्देह नहीं, क्योंकि हिन्दू जीवन के समस्त धार्मिक कार्यों को सविधि सम्पादन व हमारे धर्मशास्त्रों में यथोक्तकाल निर्धारित है तथा उनके यथार्थ ज्ञान का एक मात्र साधन प्रत्यक्ष वेधसिद्ध सूक्ष्म सिद्धान्त गणित द्वारा निर्मित पञ्चांग ही है। वेदों तथा धर्मशास्त्रों से सीधा सम्बन्ध रखने वाला, कालरूपी ईश्वर का प्रत्यक्ष अंगभूत 'पञ्चांग' का शुद्ध गणित से बनना ही धार्मिकता है, जो लोग धर्म का नाश करके अशुद्ध गणित के पञ्चांगों के द्वारा हमारे पवित्र धर्मशास्त्रों पर सीधा कुठाराघात कर रहे हैं वे लोग वास्तव में ही शास्त्र-शत्रु ही नहीं है अपितु राष्ट्र शत्रु भी हैं। क्योंकि पञ्चांग-गणित सम्बन्धी सभी पुस्तकों में तात्कालिक वेध क्रिया अत्यावश्यक कही गई है।

ज्योतिष गणित के सभी सिद्धान्त ग्रन्थों में पुरातन काल से ही सुधार होते रहे हैं। भविष्य में भी होते रहेंगे; यदि ऐसा नहीं होता तो 'वेदांग ज्योतिष' ही प्रयोज्य होना चाहिए था। तब अन्य ग्रन्थों (सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव आदि) की आवश्यकता क्यों? क्योंकि ग्रन्थकर्ता विद्वानों ने सभी ग्रन्थों का निर्माण ही प्रत्यक्ष वेध क्रिया के पश्चात किया है और भविष्य के लिए यह स्पष्ट आदेश भी दिया है कि प्रत्यक्ष दृक्तुल्य गणित से साधित पञ्चांग ही धर्मकृत्यों हेतु प्रयोज्य है। इस आशय के अनेकों प्रमाण-वाक्य विगत वर्षों के पञ्चांग में दे चुके हैं (कृपया वहीं देखें) यहाँ पर कुछ अन्य वाक्य पुनः देते हैं ताकि हमारे पाठकों को महर्षि तुल्य विद्वानों के आदेशों का ज्ञान हो जाय और उनके अज्ञान जन्य अनर्थकारक भ्रम दूर हो सकें॥ यथा—

तत्तद्गति वशान्नित्यं यथादृक्तुल्यतां ग्रहाः ।
प्रयान्ति तत्प्रवक्षामि स्फुटीकरणमादरात् ॥
(सूर्यसिद्धान्त द्वितीय अध्याय का १४ वाँ श्लोक)

ग्रह लाघव ग्रन्थ के रचयिता श्री गणेश दैवज्ञ के पूज्य पिता श्री केशव दैवज्ञ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ग्रहकौतुक' में तथा 'जातक पद्धति' में भी प्रत्यक्ष दृक्तुल्य गणित का आदेश दिया है। 'जातकपद्धति' के प्रथम श्लोक में ही आप लिखते हैं—

यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽथ खेटाः स्फुटा
यत्पक्षे हि घटन्त उद्गम दृग्ास्तक्षँ सषड्भः स च ॥ (जा० प. १।१)

परन्तु आपके पुत्र श्रीगणेश दैवज्ञ ने जब ६० वर्ष में ही अपने पूज्य पिता जी के सिद्धान्त से स्पष्ट ग्रहों में तथा तत्कालीन प्रत्यक्ष वेधागत ग्रहों में अन्तर देखा तो उसका परिमार्जन करके 'ग्रहलाघव' तथा 'तिथि चिन्तामणि' नामक ग्रन्थ बनाये। यदि वेध क्रिया की आवश्यकता पञ्चांग गणित में व्यर्थ होती तो श्रीगणेश को अपने पिता के सिद्धान्त व सूत्रों को केवल ६० वर्ष में ही क्यों बदलना पड़ता? आप लिखते हैं—

'श्रीकेशवः स्फुटतरं कृतवान् हि सौरार्यासन्नमेतदपि षष्टिमिते गताब्दे ।
दृष्ट्वा श्लथं किमपि तत्तनयो गणेशः स्पष्टं यथा ह्यकृद दृग्गणितैक्यमत्र ॥'

ग्रहलाघव नामक पुस्तक में भी आपने दृक्तुल्य गणितागत ग्रहादि व तिथ्यादि पदार्थों से ही समस्त धार्मिक कृत्य सम्पन्न कराने को लिखा है—

.... इतीमे यान्ति दृक्तुल्यताम् ।
सिद्धैस्तैरित पर्वधर्मनयसत्कार्यादिकं ह्यादिशेत् ॥ (ग्रहलाघव १।१६)

प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट है कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही वास्तविक दृश्य गणित का बोल बाला था। वे लोग जो भी नियम (सिद्धान्त) या सूत्र बनाते थे उसको सतत परीक्षण, लगातार वेध के बाद ही प्रयोज्य मानते थे। आज के तथ्याकथित ज्योतिषी लोग स्वयं वेध करना तो दूर रहा, वेधसिद्ध गणित का ही विरोध करने में 'ज्योतिष सेवा' मानने लगे हैं। परन्तु ऐसे धर्मभ्रष्ट लोगों का यह कुत्सित प्रयास अब अन्यत्र चले या न चले पर कुमाऊँ में नहीं चल पायेगा। क्योंकि (१) हमारे परम सौभाग्य से विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषानुरागी विद्वान् डा० श्रीसम्पूर्णानन्द जी के शिक्षा मन्त्रित्व में उन्हीं के सतत प्रयासों से शासनादेश संख्या ए० १८५३।१५-२०३०।५० दिनांक २३।५।१९५१ के अनुसार हमारी उ० प्र० सरकार सम्वत् २०१२ शके १८७७ से स्वयं अपना पञ्चांग प्रकाशित करा रही है जो कि इससे पूर्व भी तथा अब भी श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से अविरल रूप में निकल रहा है, विवादों के अन्तिम निर्णयार्थ केवल यही पञ्चांग सरकार को मान्य है। (२) देश के प्रथम प्रधान मन्त्री पं० नेहरू जी के प्रयास से हमारी भारत सरकार भी प्रतिवर्ष १२ भाषाओं में 'राष्ट्रीय पंचांग' सन् १९५७ से प्रकाशित करती आ रही है। (३) हमारे कुमाऊँ का तो यह और भी सौभाग्य है कि ग्रहों तथा अन्य तिथ्यादि पदार्थों का प्रत्यक्ष वेध करने के लिए उ० प्र०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शासन ने दिनांक २५।११।१९७५ से नैनीताल में एक विशाल वेधशाला भी स्थापित की है। अतः अब वहाँ पञ्चांगों के गणित आदि की तुलना प्रत्यक्ष देखकर हो जायेगी, पाठक चाहें तो श्रीजीवन विजय की परीक्षा के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

वेधसिद्ध गणित की तथा पूर्वोक्त आर्ष प्रमाण वाक्यों की महत्ता को मानते हुये वर्तमान समय के प्रत्यक्ष वेध सिद्ध सूक्ष्म दृक्तुल्य गणित द्वारा निर्मित श्री जीवन विजय पञ्चांग का द्वितीय पुष्प पाठकों के कर कमलों में समर्पित करके हम विशेष हर्षित हैं। इस अंक में हमने अनेकशः नये विषय तो दिये ही हैं तदतिरिक्त सम्पूर्ण पञ्चांग को भारतीय प्रमाणित समय (रेडियो घड़ी)में देकर हमने इसे अखिल भारतोपयोगी एवं जन सामान्योपयोगी बनाने का सफल प्रयास भी किया है। इस वर्ष हमने ज्योतिष का व्यवसाय करने वाले लोगों की सुविधा के लिए दैनिक ग्रह स्पष्ट भी दे दिये हैं। इस प्रकार समस्त कुमाऊँ में आज यह पहला पञ्चांग है जिसमें दैनिक ग्रह-स्पष्ट, दैनिक निरयण लग्न सारणी तथा दैनिक साम्पातिक काल से युक्त अनेकानेक विषय सरल एवं बोधगम्य भाषा में सोदाहरण दिये हैं। इस प्रकार यह पञ्चांग वास्तव में ही 'अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चांग' हो गया है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

वेधशालाओं द्वारा प्राप्त पदार्थों या दृक्तुल्य गणित को लेखबद्ध रूप में सप्रमाण झुठलाने का साहस करने वाला आज कोई भी नहीं है। जबकि भारतीय नाविक पञ्चांग (Nautical Almanac) या तत्तुल्य गणित के अन्य पञ्चांगों से पदार्थों को चोरी-छिपे अपने पञ्चांगों में देकर 'नाविक पञ्चांग' को ही अशुद्ध बताने वाले (अर्थात दृग्गणित को 'धोखा' कहने वाले) अनेक नामधारी[1] ज्योतिषी नानाविधि छल-प्रपंच रचकर येन-केन-प्रकारेण अपने अशुद्ध पञ्चांगों का अस्तित्व बचाने में लगे हुये हैं। परन्तु यह उनकी भूल है। क्योंकि वर्तमान पीढ़ी का युवा पाठक 'कूपमण्डूकता' को त्यागकर प्रगति की ओर बढ़ता जा रहा है। यही प्रबल कारण है कि आज देश में अधिकांशतः पञ्चांग शुद्ध गणित से ही बन रहे हैं। 'परम्परा' के नाम पर अशुद्ध गणित का पक्ष लेना मूर्खता ही है क्योंकि गणित स्वतः प्रमाण है। और फिर 'परम्परा' का ऐसा अर्थ तो विशेषतया विनाशकारी है। यथा—

" दोषं विलोक्यापि 'परम्परा मे' मत्वेति तां नैव जहाति मूढः।
तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं का पुरुषाः पिबन्ति ॥ "

आशा ही नहीं विश्वास भी है कि पञ्चांग का यह अंक आप के लिए विशेष ज्ञानवर्धक होगा। यदि इसके द्वारा हम कुछ भी नवीन सामग्री आपको दे सकें हों तो हमारा परिश्रम वास्तव में सफल है। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी। यदि आपका सतत सहयोग बना रहा तो अग्रिम अंकों में हम कुछ और विशेष अप्रकाशित सामग्री उपलब्ध कराने में सफल रहेंगे॥ प्रेस सम्बन्धी भूलों के लिये क्षमा करते हुये अपनी अमूल्य राय से हमें अवगत कराने की कृपा अवश्यमेव करियेगा॥ धन्यवाद।

1. नामधारी ज्योतिषी लोगों की परिभाषा के गोलाध्याय 1/7 में—
द्विविधगणितमुक्तं व्यक्तमव्यक्तमुक्तं [illegible]।
यदि भवति तदेदं ज्योतिषं भूरिभेदं प्रपठितुमधिकारी सोऽन्यथा 'नामधारी'॥

योग, नक्षत्र तिथ्यादि के नाम व संकेताक्षर

नक्षत्र	संकेताक्षर	योग	संकेताक्षर
१. अश्विनी	अ.	१. विष्कुम्भ	वि.
२. भरणी	भ.	२. प्रीति	प्री.
३. कृत्तिका	कृ.	३. आयुष्मान्	आ.
४. रोहिणी	रो.	४. सौभाग्य	सौ.
५. मृगशीर्ष	मृ.	५. शोभन	शो.
६. आर्द्रा	आ.	६. अतिगण्ड	अति.
७. पुनर्वसु	पुन.	७. सुकर्मा	सु
८. पुष्य	पु.	८. धृति	धृ.
९. आश्लेषा	श्ले.	९. शूल	शू.
१०. मघा	म	१०. गण्ड	गं.
११. पूर्वाफाल्गुनी	पूफा.	११. वृद्धि	वृ.
१२. उत्तराफाल्गुनी	उफा.	१२. ध्रुव	ध्रु.
१३. हस्त	ह.	१३. व्याघात	व्या.
१४. चित्रा	चि.	१४. हर्षण	ह.
१५. स्वाती	स्वा.	१५. वज्र	व.
१६. विशाखा	वि.	१६. सिद्धि	सि.
१७. अनुराधा	अनु	१७. व्यतीपात	व्य.
१८. ज्येष्ठा	ज्ये.	१८. वरीयान	व.
१९. मूल	मू.	१९. परिघ	प.
२०. पूर्वाषाढ़ा	पूषा.	२०. शिव	शि.
२१. उत्तराषाढ़ा	उषा.	२१. सिद्ध	सि.
२२. श्रवण	श्र.	२२. साध्य	सा.
२३. धनिष्ठा	ध.	२३. शुभ	शु.
२४. शतभिषा	श.	२४. शुक्ल	शु.
२५. पूर्वाभाद्रपदा	पूभा.	२५. ब्रह्म	ब्र.
२६. उत्तराभाद्रपदा	उभा.	२६. ऐन्द्र	ऐं.
२७. रेवती	[illegible]	२७. वैधृति	[illegible]

राशि	संकेताक्षर	ग्रह	संकेताक्षर
१. मेष	मे.	१. सूर्य	सू.
२. वृषभ	वृ.	२. चन्द्र	चं.
३. मिथुन	मि	३. मंगल	मं.
४. कर्क	क.	४. बुध	बु.
५ सिंह	सिं	५. बृहस्पति	बृ.
६. कन्या	क.	६. शुक्र	शु.
७. तुला	तु.	७. शनि	श
८. वृश्चिक	वृ.	८. राहु	रा.
९ धनु	ध.	९ केतु	के.
१०. मकर	म.	१०. हर्शल	ह.
११ कुम्भ	कुं.	११ नेपच्यून	ने
१२. मीन	मी.	१२. वैडेश	वैं,

ससियो = सर्वार्थसिद्धि योग
जय. = जयन्ती
असियो = अमृतसिद्धि योग
मु० = मुहूर्त
प्रा० = प्रारम्भ
व्या० = व्यापिनी, व्यावहा
भ० = भद्र
जं० = जयन्ती

घं० = घंटा
घ = घटी
मि० = मिनट
सं० = संस्कार
दा० = दान
शु० = शुक्ल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सम्पादकीय

मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मनाम्
आत्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्ता ज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थिति विभुश्चानेकधा यः श्रुतौ
वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥

यद्भूतं यच्च भाव्यं च सर्वदा यः सनातनः ।
अव्यक्ताव्यक्त रूपायतस्मै कालात्मने नमः ॥

श्रौतं स्मार्तञ्च गार्हस्थं यद्विना नैव सिद्ध्यति ।
तत्कालाख्येश्वरस्याङ्गं वन्दे तिथ्यादि पञ्चकम् ॥

श्रौत-स्मार्त व गृहस्थ धर्म सम्बन्धी सभी कार्यों को विधिपूर्वक पूरा करने के लिये अधिकांशतः प्रयुक्त होने वाले पञ्चाङ्ग शब्द में तिथि-वारादि के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण विषयों का भी समावेश रहता है। वेदों के सर्वोपरि होने के कारण ही उनमें प्रतिपादित 'ज्योतिषशास्त्र' की महत्ता भी वेदों के तुल्य ही मानवमात्र के लिए कल्याणकारी है। इसमें सन्देह नहीं, क्योंकि हिन्दू जीवन के समस्त धार्मिक कार्यों को सविधि सम्पादन व हमारे धर्मशास्त्रों में यथोक्तकाल निर्धारित हैं तथा उनके यथार्थ ज्ञान का एक मात्र साधन प्रत्यक्ष वेधसिद्ध सूक्ष्म सिद्धान्त गणित द्वारा निर्मित पञ्चांग ही है। वेदों तथा धर्मशास्त्रों से सीधा सम्बन्ध रखने वाला, कालरूपी ईश्वर का प्रत्यक्ष अंगभूत 'पञ्चांग' का शुद्ध गणित से बनना ही धार्मिकता है, जो लोग धर्म का नाद करके अशुद्ध गणित के पञ्चांगों के द्वारा हमारे पवित्र धर्मशास्त्रों पर सीधा कुठाराघात कर रहे हैं वे लोग वास्तव में ही शास्त्र-शत्रु ही नहीं हैं अपितु राष्ट्र शत्रु भी हैं। क्योंकि पञ्चांग-गणित सम्बन्धी सभी पुस्तकों में तात्कालिक वेध क्रिया अत्यावश्यक कही गई है।

ज्योतिष गणित के सभी सिद्धान्त ग्रन्थों में पुरातन काल से ही सुधार होते रहे हैं। भविष्य में भी होते रहेंगे; यदि ऐसा नहीं होता तो 'वेदांग ज्योतिष' ही प्रयोज्य होना चाहिए था। तब अन्य ग्रन्थों (सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव आदि) की आवश्यकता क्यों? क्योंकि ग्रन्थकर्ता विद्वानों ने सभी ग्रन्थों का निर्माण ही प्रत्यक्ष वेध क्रिया के पश्चात किया है और भविष्य के लिए यह स्पष्ट आदेश भी दिया है कि प्रत्यक्ष दृक्तुल्य गणित से साधित पञ्चांग ही धर्मकृत्यों हेतु प्रयोज्य है। इस आशय के अनेकों प्रमाण वाक्य विगत वर्ष के पञ्चांग में दे चुके हैं (कृपया वहाँ देखें) यहाँ पर कुछ अन्य वाक्य पुनः देते हैं ताकि हमारे पाठकों का महर्षि तुल्य विद्वानों के आदेशों का ज्ञान हो जाय और उनके अज्ञान जन्य अनर्थकारक भ्रम दूर हो सकें। यथा—

तत्तद्गति वशान्नित्यं यथादृक्तुल्यतां ग्रहाः ।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥

(सूर्यसिद्धान्त द्वितीय अध्याय का १४ वाँ श्लोक)

ग्रह लाघव ग्रन्थ के रचयिता श्री गणेश दैवज्ञ के पूज्य पिता श्री केशव दैवज्ञ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ग्रहकौतुक' में तथा 'जातक पद्धति' में भी प्रत्यक्ष दृक्तुल्य गणित का आदेश दिया है। 'जातकपद्धति' के प्रथम श्लोक में ही आप लिखते हैं—

यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेधोऽथ खेटाः स्फुटा
यत्पक्षे हि घटन्त उद्गम इहास्तर्क्षं सषड्भः स च ॥ (जा० प. १।१)

परन्तु आपके पुत्र श्रीगणेश दैवज्ञ ने जब ६० वर्ष में ही अपने पूज्य पिता जी के सिद्धान्त से स्पष्ट ग्रहों में तथा तत्कालीन प्रत्यक्ष वेधागत ग्रहों में अन्तर देखा तो उसका परिमार्जन करके 'ग्रहलाघव' तथा 'तिथि चिन्तामणि' नामक ग्रन्थ बनाये। यदि वेध क्रिया की आवश्यकता पञ्चांग गणित में व्यर्थ होती तो श्रीगणेश को अपने पिता के सिद्धान्त व सूत्रों को केवल ६० वर्ष में ही क्यों बदलना पड़ता? आप लिखते हैं—

'श्रीकेशवः स्फुटतरं कृतवान् हि सौरार्यासन्नमेतदपि षष्टिमिते गताब्दे ।
दृष्ट्वा श्लथं किमपि तत्तनयो गणेशः स्पष्टं यथा ह्यकृत दृग्गणितैक्यमत्र ॥'

ग्रहलाघव नामक पुस्तक में भी आपने दृक्तुल्य गणितागत ग्रहादि व तिथ्यादि पदार्थों से ही समस्त धार्मिक कृत्य सम्पन्न कराने को लिखा है—

……………… इतीमे यान्ति दृक्तुल्यताम् ।
सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्मनयसत्कार्यादिकं त्वादिशेत् ॥ (ग्रहलाघव १।१६)

प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट है कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही वास्तविक दृश्य गणित का बोलबाला था। वे लोग जो भी नियम (सिद्धान्त) या सूत्र बनाते थे उसको सतत परीक्षण, लगातार वेध के बाद ही प्रयोज्य मानते थे। आज के तथाकथित ज्योतिषी लोग स्वयं वेध करना तो दूर रहा, वेधसिद्ध गणित का ही विरोध करने में 'ज्योतिष सेवा' मानने लगे हैं। परन्तु ऐसे धर्मभ्रष्ट लोगों का यह कुत्सित प्रयास अब अन्यत्र चले या न चले पर कुमाऊँ में नहीं चल पायेगा। क्योंकि (१) हमारे परम सौभाग्य से विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषानुरागी विद्वान् डा० श्रीसम्पूर्णानन्द जी के शिक्षा मन्त्रित्व में उन्हीं के सतत प्रयासों से शासनादेश संख्या ए० १८५३।१५-२०३०।५० दिनांक २३।५।१९५१ के अनुसार हमारी उ० प्र० सरकार सम्वत् २०१२ शाके १८७७ से स्वयं अपना पञ्चांग प्रकाशित करा रही है जो कि इससे पूर्व भी तथा अब भी श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से अविरल रूप में निकल रहा है, विवादों के अन्तिम निर्णयार्थ केवल यही पञ्चांग सरकार को मान्य है। (२) देश के प्रथम प्रधान मन्त्री पं० नेहरू जी के प्रयास से हमारी भारत सरकार भी प्रतिवर्ष १२ भाषाओं में 'राष्ट्रीय पंचांग' सन् १९५७ से प्रकाशित करती आ रही है। (३) हमारे कुमाऊँ का तो यह और भी सौभाग्य है कि ग्रहों तथा अन्य तिथ्यादि पदार्थों का प्रत्यक्ष वेध करने के लिए उ० प्र०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शासन ने दिनांक २५।११।१९५५ से नैनीताल में एक विशाल वेधशाला भी स्थापित की है। अतः अब यहाँ पञ्चांगों के गणित आदि की तुलना प्रत्यक्ष देखकर हो जायेगी, पाठक चाहें तो आजीवन विजय की परीक्षा के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

वेधसिद्ध गणित की तथा पूर्वोक्त आर्ष प्रमाण वाक्यों की महत्ता को मानते हुये वर्तमान समय के प्रत्यक्ष वेध सिद्ध सूक्ष्म दृक्तुल्य गणित द्वारा निर्मित श्री जीवन विजय पञ्चांग का द्वितीय पुष्प पाठकों के कर कमलों में समर्पित करके हम विशेष हर्षित हैं। इस अंक में हमने अनेकशः नये विषय तो दिये ही हैं तदतिरिक्त सम्पूर्ण पञ्चांग को भारतीय प्रमाणित समय (रेडियो घड़ी) से देकर हमने इसे अखिल भारतोपयोगी एवं जन सामान्योपयोगी बनाने का सफल प्रयास भी किया है। इस वर्ष हमने ज्योतिष का व्यवसाय करने वाले लोगों की सुविधा के लिए दैनिक ग्रह स्पष्ट भी दे दिये हैं। इस प्रकार समस्त कुमाऊँ में आज यह पहला पञ्चांग है जिसमें दैनिक ग्रह-स्पष्ट, दैनिक निरयण लग्न सारणी तथा दैनिक साम्पातिक काल से युक्त अनेकानेक विषय सरल एवं बोधगम्य भाषा में सोदाहरण दिये हैं। इस प्रकार यह पञ्चांग वास्तव में ही 'अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चांग' हो गया है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

वेधशालाओं द्वारा प्राप्त पदार्थों या दृक्तुल्य गणित को लेखबद्ध रूप में सप्रमाण झुठलाने का साहस करने वाला आज कोई भी नहीं है। जबकि भारतीय नाविक पञ्चांग (Nautical Almanac) या तत्तुल्य गणित के अन्य पञ्चांगों से पदार्थों को चोरी-छिपे अपने पञ्चांगों में देकर 'नाविक पञ्चांग' को ही अशुद्ध बताने वाले (अर्थात् दृग्गणित को 'धोखा' कहने वाले) अनेक नामधारी[1] ज्योतिषी नानाविधि छल-प्रपंच रचकर येन-केन-प्रकारेण अपने अशुद्ध पञ्चांगों का अस्तित्व बचाने में लगे हुये हैं। परन्तु यह उनकी भूल है। क्योंकि वर्तमान पीढ़ी का युवा पाठक 'कूपमण्डूकता' को त्यागकर प्रगति की ओर बढ़ता जा रहा है। यही प्रबल कारण है कि आज देश में अधिकांशतः पञ्चांग शुद्ध गणित से ही बन रहे हैं। 'परम्परा' के नामपर अशुद्ध गणित का पक्ष लेना मूर्खता ही है क्योंकि गणित स्वतः प्रमाण है। और फिर 'परम्परा' का ऐसा अर्थ तो विशेषतया विनाशकारी है। यथा—

" दोषं विलोक्यापि 'परम्परा से' मत्वेति तां नैव जहाति मूढ़ः।
तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं का पुरुषाः पिबन्ति ॥ "

आशा ही नहीं विश्वास भी है कि पञ्चांग का यह अंक आप के लिए विशेष ज्ञान-वर्धक होगा। यदि इसके द्वारा हम कुछ भी नवीन सामग्री आपको दे सकें हों तो हमारा परिश्रम वास्तव में सफल है। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी। यदि आपका सतत सहयोग बना रहा तो अग्रिम अंकों में हम कुछ और विशेष अप्रकाशित सामग्री उपलब्ध कराने में सफल रहेंगे॥ प्रेस सम्बन्धी भूलों के लिये क्षमा करते हुये अपनी अमूल्यराय से हमें अवगत कराने की कृपा अवश्यमेव करियेगा॥ धन्यवाद।

१. नामधारी ज्योतिषी लोगों की परिभाषा के [illegible] १/७ में—
द्विविधगणितमुक्तं व्यक्तमव्यक्तमुक्तं तदवगमनिष्ठः शब्दशास्त्रे पटिष्ठः [illegible]।
यदि भवति तदेदं ज्योतिषं भूरिभेदं प्रपठितुमधिकारी सोऽन्यथा 'नामधारी'॥

योग, नक्षत्र तिथ्यादि के नाम व संकेताक्षर

नक्षत्र	संकेताक्षर
१. अश्विनी	अ.
२. भरणी	भ.
३. कृत्तिका	कृ.
४. रोहिणी	रो.
५. मृगशीर्ष	मृ.
६. आर्द्रा	आ.
७. पुनर्वसु	पुन.
८. पुष्य	पु.
९. आश्लेषा	श्ले.
१०. मघा	म
११. पूर्वाफाल्गुनी	पूफा.
१२. उत्तराफाल्गुनी	उफा.
१३. हस्त	ह.
१४. चित्रा	चि.
१५. स्वाती	स्वा.
१६. विशाखा	वि.
१७. अनुराधा	अनु
१८. ज्येष्ठा	ज्ये.
१९. मूल	मू.
२०. पूर्वाषाढ़ा	पूषा.
२१. उत्तराषाढ़ा	उषा.
२२. श्रवण	श्र.
२३. धनिष्ठा	ध.
२४. शतभिषा	श.
२५. पूर्वाभाद्रपदा	पूभा.
२६. उत्तराभाद्रपदा	उभा.
२७. रेवती	रे.

योग	संकेताक्षर
१. विष्कुम्भ	वि.
२. प्रीति	प्री.
३. आयुष्मान्	आ.
४. सौभाग्य	सौ.
५. शोभन	शो.
६. अतिगण्ड	अति.
७. सुकर्मा	सु
८. धृति	धृ.
९. शूल	शू.
१०. गण्ड	गं.
११. वृद्धि	वृ.
१२. ध्रुव	ध्रु.
१३. व्याघात	व्या.
१४. हर्षण	ह.
१५. वज्र	व.
१६. सिद्धि	सि.
१७. व्यतीपात	व्य.
१८. वरीयान	व.
१९. परिघ	प.
२०. शिव	शि.
२१. सिद्धि	सि.
२२. साध्य	सा.
२३. शुभ	शु.
२४. शुक्ल	शु.
२५. ब्रह्म	ब्र.
२६. ऐन्द्र	ऐं.
२७. वैधृति	वै.

राशि	संकेताक्षर
१. मेष	मे.
२. वृषभ	वृ.
३. मिथुन	मि
४. कर्क	क.
५ सिंह	सिं
६. कन्या	क.
७. तुला	तु.
८. वृश्चिक	वृ.
९ धनु	ध.
१०. मकर	म.
११ कुम्भ	कुं.
१२. मीन	मी.

ग्रह	संकेताक्षर
१. सूर्य	सू.
२. चन्द्र	चं.
३. मंगल	मं.
४. बुध	बु.
५. बृहस्पति	बृ.
६. शुक्र	शु.
७. शनि	श.
८. राहु	रा.
९ केतु	के.
१०. हर्शल	ह.
११ नेपच्यून	ने
१२. प्लूटो	प्लू.

ससियो = सर्वार्थसिद्धि योग
जय. = जयन्ती
असियो = अमृतसिद्धि योग
मु० = मुहूर्त
प्रा० = प्रारम्भ
व्या० = व्यापिनी, व्याघात
[illegible] = भद्र
जं० = जयन्ती

घं० = घंटा
घ = घटी
मि० = मिनट
सं० = संस्कार
दा० = दान
पु० = पुण्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: पंचांग-गणित विधान :—

१. प्रस्तुत श्री जीवन विजय पञ्चाङ्ग का यथावत् गणित नैनीताल के भौगोलिक उत्तर अक्षांश २९° उ० २२' के तुल्यतम भूकेन्द्रीय अक्षांश २९°।१२'।६'४" तथा ग्रीनिच से पूर्व रेखांश ७९° पू० ३०' को केन्द्र मानकर किया गया है।

२. पञ्चाङ्ग में दिये गये घटीपलात्मक मान, 'सूर्योदयास्त, स्पष्ट मध्याह्न, सूर्यास्त, दिनमान तथा दैनिक लग्न सारणी के घंटा-मिनट केवल इसी स्थल (नैनीताल) के लिए हैं। प्रत्येक पत्र में इसका उल्लेख किया भी गया है।

३. पञ्चाङ्ग के सूर्योदयास्त मिनट पर्यन्त, स्पष्ट मध्याह्न सेकेण्ड पर्यन्त तथा दिनमान पलात्मक सूक्ष्म हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन संस्कार (Refrection of Rays) एवं क्षैतिज लम्बन (Horizontal Parallals) संस्कार का समावेश नहीं है। क्योंकि इस प्रकार का सूर्योदयास्त भूपृष्ठीय होने के कारण श्रौतस्मार्त धार्मिक कृत्यों के लिए अग्राह्य है।

४. घंटा-मिनट में दिये गये तिथ्यादि पदार्थों व पञ्चाधार की संक्रान्ति व भद्रा आदि को भारतवर्ष में सर्वत्र प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकि तन्नोल्लिखित घं. मि. भारतीय प्रामाणिक समय (इण्डियन स्टैण्डर्ड टाइम I. S. T.) में होने के कारण प्रत्येक स्थल के लिए सूक्ष्म हैं।

५. भौमादि पंचताराग्रहों के सूर्य केन्द्रिक उदयास्त केतकर की उन्नतांश पद्धति से भारत केन्द्र (उज्जैन) के लिए हैं। गुरु-शुक्र के उदयास्त २९° उ० ३०' अक्षांश के लिए भी दिये हैं।

६. दैनिक लग्न सारणी के घं. मि. नैनीताल में प्रत्येक लग्न का आरम्भ काल भा०प्र० समय में बताते हैं। चूँकि प्रत्येक लग्न का प्रवेश काल उससे पूर्वलग्न का समाप्ति काल भी है। लग्न सारणी का मेष प्रवेश काल सेकेन्ड तथा वृषादि ११ लग्नों का प्रवेश काल मिनट पर्यन्त शुद्ध है।

७. भा० प्र० समय में दिये गये घं. मि. 'वार' पर आधारित हैं। वार एक सूर्योदय से अग्रिम सूर्योदय तक रहता है। अतः यहाँ दिन के १२ बजे के बाद के घंटों को १३,१४,१५·····२२ २३ तथा रात के १२ बजे को २४ बजे एवं तदुपरान्त के घंटों को २५,२६·····३०,३१ आदि लिखा है। अंग्रेजी पद्धति से २४ व २४ से अधिक घंटों में २४ कम करके वे अगली तारीख के A. M. होंगे। इसी प्रकार १३ बजे से बाद के घण्टे १२ कम करके उसी तारीख के P. M. होंगे।

८. कम्पटर में जब उस पंक्ति का मैटर पूरा नहीं हो पाया है तब A. B. C. D. तथा अन्य कुछ चिन्हों के साथ उसे अन्यत्र किसी पंक्ति में लिखा है। पाठक इसका ध्यान रक्खें, यही नियम प्रत्येक स्थान के लिए है।

९. जिस तिथि नक्षत्र व योग की वृद्धि हुई है उसके घटी पलों में ६०।० तथा घं. मि. में (— —) का चिन्ह लगा है। क्षय तिथ्यादि के समाप्ति काल घटी पल व घं. मि. दोनों में एक ही खाने में दिए हैं।

१०. पञ्चाङ्ग में सर्वत्र ही निरयण गणना का आधार लिया गया है। सायन गणना के लिए भारत सरकार द्वारा स्वीकृत चित्रापक्षीय स्पष्ट अयनांश को प्रमाणिक माना गया है। ये अयनांश भूनन (Nutation) संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

—: पञ्चांग-विचार तथा देखने की विधि एवं सामान्य ज्ञान :—

तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण इन पाँच अंगों को ही पञ्चाङ्ग कहते हैं। —

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
एतेषां यत्र विज्ञानं पञ्चाङ्गं तन्निगद्यते॥

यहाँ पर इनका संक्षिप्त परिचय देते हैं।

तिथि :—भूकेन्द्रीय दृष्टि से जिस क्षण स्पष्ट सूर्य-चन्द्र के भोगांश तुल्यतम हो जाते हैं अर्थात् वे दोनों ऊपर नीचे एक सीध में आ जाते हैं ठीक वही क्षण स्पष्ट 'अमान्त काल' होता है जिसे पञ्चाङ्गों में लिखा जाता है। अमान्त के बाद स्पष्ट चन्द्र अपनी शीघ्रगति के कारण स्पष्ट सूर्य से आगे बढ़ता चला जाता है, इस प्रकार इन दोनों (सूर्य-चन्द्र) की प्रति १२ अंशात्मक दूरी का नाम ही 'तिथि' है। कुल तिथियाँ ३० होती हैं। १५ शुक्ल पक्ष की तथा १५ कृष्ण पक्ष की। इनके नाम तथा अंक ये हैं। १. प्रतिपदा, २. द्वितीया, ३. तृतीया, ४. चतुर्थी ५. पंचमी, ६. षष्ठी, ७. सप्तमी, ८. अष्टमी, ९. नवमी, १०. दशमी, ११. एकादशी, १२. द्वादशी, १३. त्रयोदशी, १४. चतुर्दशी, १५. पूर्णिमा तथा ३० अमावास्या। पञ्चाङ्ग में इनके नाम न लिखकर १,२,३, आदि अंक तथा समाप्ति काल लिखने की प्रथा है।

वार :—वार या दिन ७ होते हैं। भारतीय पद्धति से 'वार' एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक रहता है। इस पञ्चाङ्ग में सर्वत्र इसी पद्धति का अनुपालन किया गया है। वारों के नाम—रविवार, चन्द्रवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, (गुरुवार) शुक्रवार तथा शनिवार हैं। पञ्चाङ्गों में इनके नामों के प्रथमाक्षर र. चं. मं. बु. बृ. शु. श. मात्र ही लिखे जाते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नक्षत्र :— निरयण गणना अर्थात् भारतीय फलित ज्योतिष का मूलाधार 'नक्षत्र' ही है। समस्त भचक्र के ३६० अंशात्मक क्षेत्र को २७ भागों में बाँटकर प्रति १३°।२०' या ८०० कलात्मक क्षेत्र को अश्विन्यादि १-१ नक्षत्र माना गया है। निरयण स्पष्ट चन्द्र अपनी दैनिक स्पष्ट गति से जिस नक्षत्र के क्षेत्र में गमनशील रहता है उसका नाम तथा अग्रिम नक्षत्र-सीमा में प्रवेश काल (गमनशील चन्द्र नक्षत्र का समाप्तिकाल) को पञ्चाङ्गों में लिखने की प्रथा है। पूर्वोक्त ८०० कलात्मक नक्षत्र सीमा को स्पष्ट निरयण चन्द्र जितने समय में पार कर लेता है उसी को नक्षत्र का भभोग या सर्वर्क्ष काल कहते है। चन्द्र की स्पष्ट गति के विषम होने से नक्षत्रादि के मान घटते बढ़ते रहते हैं।

योग :—निरयण आदि बिन्दु से स्पष्ट सूर्य-चन्द्र की सम्मिलित प्रति १३°।२०' या ८०० कलात्मक दूरी का नाम योग' है। नक्षत्रों की तरह ही 'विष्कुम्भादि योग' भी २७ ही होते हैं। इनके नामों के आद्यक्षर तथा उनका समाप्तिकाल इस पञ्चाङ्ग में केवल (I. S. T.) में दिया गया है, जिसे भारतवर्ष में सर्वत्र प्रयोग किया जा सकता है। योगों के नाम पृष्ठ   में देखें।

करण :—तिथि के आधे भाग अर्थात सूर्य से चन्द्र की प्रति ६ अंशात्मक दूरी को करण कहते हैं। कुल ग्यारह करण होते हैं। जिनमें बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज तथा विष्टि ये ७ चरकरण और शकुनि, चतुष्पद, नाग व किंस्तुघ्न ये ४ स्थिर करण हैं। इस पञ्चाङ्ग में केवल तिथि के आधेभाग में समाप्त होने वाले करणों को लिखा ही गया है। विष्टि करण का नाम ही 'भद्रा' है। मान्यता है कि भद्रा में शुभकार्यारम्भ उचित नहीं है। करण चक्र पृष्ठ   में दिया है।

साम्पातिक काल (Sidreal Time)—पञ्चाङ्ग गणित में साम्पातिक काल या सीडीरियल टाइम का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। समस्त भचक्र भी अन्य ग्रह पिण्डों की तरह स्वयं अपना अहोरात्र-वृत्त बनाता है। बसन्त सम्पात बिन्दु (♈ सायन मेषादि बिन्दु) जब किसी स्थान विशेष के ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर पहुँचता है, उस समय साम्पातिक घड़ी से शून्य (०) बजता है। तदनुक्रम में पुनः उसी स्थान पर ♈ के पहुँचने पर एक साम्पातिक अहोरात्र बनता है। जितनी देर में साम्पातिक अहोरात्र या २४ घण्टे पूरे होते हैं उतनी देर में मध्यम समय से २३ घं. ५६ मि ४-०९ से. ही पूरे हो पाते हैं। इस अन्तर को ही साम्पातिक संस्कार कहते हैं। उसकी सारणी पृष्ठ   पर दी गई है। इस वर्ष से श्री जीवन विजय पञ्चाङ्ग में हमने स्थानीय शून्य बजे का दैनिक साम्पातिक काल भी देना आरम्भ किया है। इसकी प्रयोग विधि व उपयोगिता के बारे में अन्यत्र के पृष्ठों में पढ़ियेगा।

—: पंचांग देखने की विधि :—

पचाङ्ग के पाँच अंगों का परिचय ऊपर हो चुका है। पचांग देखने के लिए किसी भी पृष्ठ को खोलिए, आइये चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही देखें—१ले कालम में दिनमान ३० घं. २३ प. लिखा है। यह इस दिन का नैनीताल का सूर्योदय से सूर्यास्त तक का कुल समय घटी पलों में है। सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाने पर भी लगभग यही मान आयेगा। यदा-कदा २-३ पलों का अन्तर उपेक्ष्य है परन्तु अधिक अन्तर होने पर अशुद्धि स्पष्ट है। दूसरे कालम में तिथि १ का तात्पर्य प्रतिपदा से है। नैनीताल में यह प्रतिपदा शुक्रवार को सूर्योदय से १९ घ. ५ प. तक है। परन्तु भारत वर्ष में सर्वत्र ही १३ घ. ५१ मि. (I. T. S.) तक अर्थात् दिन में १ बजकर ५१ मिनट तक प्रतिपदा रहेगी। नक्षत्र के कालम में रेवती नक्षत्र है। जो कि शुक्रवार को सूर्योदय के बाद ४५ घ. ३० प. तक रहेगा। इसके बाद ४५ घ. ३१ प. से अश्विनी नक्षत्र व मेष राशि का आरम्भ होगा। भा० प्र० समय (I. S. 1) के अनुसार रात्रि घं. २४ मि. २५ (अर्थात् १२ बजकर २५ मि.) पर रेवती नक्षत्र समाप्त होगा। यदि किसी बालक का जन्म भारत के किसी भी कोने में इस दिन रात्रि १२ बजकर २६ मि. पर हो तो निश्चय ही उस बालक का अश्विनी नक्षत्र का १ चरण व मेष राशि होगी। अन्यत्र भी इसी प्रकार विचारणीय है। योग के कालम में ब्रह्म योग का समाप्तिकाल केवल भा. स्टैं. टा० में घ. १० मि. २५ पर दिया है। यह सार्वभौमिक मान है। नैनीताल में इसका घट्यादि मान लाने के लिए घं. १० मि. २५ में से इस दिन का सूर्योदय घं. ६ मि. १३ कम करके शेष को २½ से गुणा करना होगा। (गुणाभाग की बचत के लिए हमने इस वर्ष पचांग में घं. मि. के घटीपल तथा घटीपलों के घं. मि. बनाने की सारणी पृष्ठ   पर दी है।) जैसे घं. १०।२५ में से घं. ६।१३ घटाने पर घं. ४।१२ बचा। सारणी में ४ घं. के सामने १० घटी तथा १२ मि. के सामने ३० पल लिखा है। अर्थात् इस दिन ब्रह्म योग नैनीताल में १० घं. ३० पल तक रहेगा। बाद के कालम में बालव करण का समाप्ति काल घं. २४ मि. ४३ अंकित है। यह शुक्ल पक्ष की द्वितीया के पहले आधे भाग का करण है। चूँकि प्रतिपदा की समाप्ति के साथ ही 'बव' करण भी समाप्त होता है। अतः घं. १३।५१ पर बव करण समाप्त होगा। द्वितीया की समाप्ति पर कौलव करण समाप्त होता है, अतः कौलव करण शुक्रवार की रात्रि घं. २४।४३ से प्रारम्भ होकर अगले दिन शनिवार को घं. ११।३४ पर द्वितीया के साथ समाप्त होगा। यही सर्वत्र समझें। करण के बाद नैनीताल-सूर्योदय भा. स्टैं. टाइम में दिया गया है। जो कि घं. ६ मि. १३ है। सूर्योदय के बाद स्पष्ट मध्याह्न काल भी भा. प्र. समय में सेकेण्ड पर्यन्त दिया गया है। इसमें २ से. अधिक अशुद्धि नहीं है। मध्याह्न का अर्थ है कि घं. १२ मि. १० से. ५२ बजे नैनीताल में स्थानीय सूर्य घड़ी से ठीक १२ बजेंगे अथवा स्पष्ट सूर्य ठीक खमध्य [illegible] करेंगे। स्पष्ट मध्याह्न का उपयोग 'अभिजित्'

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नामक मुहुर्त विशेष का समय निकालने में भी कर सकते हैं। अभिजित् मुहूर्त मध्यम मानेतर घटी (४८मि.) तथा सूक्ष्ममान दिनमान का १५वाँ भाग है। इष्टदिन के दिनमान में १५ का भाग देने से अभिजित् का घट्यादि काल आये। सारणी की सहायता से इसके घं. मि. से. बनाकर २ से भाग दें। प्राप्त फल को स्पष्ट मध्याह्न में घटाने से अभिजित् का प्रारम्भ काल तथा जोड़ने से समाप्तिकाल भी भा. स्टैं टा. (I. S. T) में प्राप्त हो जायेगा। अभिजित् मुहूर्त बहुत ही प्रभावशाली माना गया है। इसमें किया गया कार्य निष्फल नहीं होता, ऐसी शास्त्रोक्ति है। स्प. मध्याह्न के कालम में घं. मि. दोनों को एक साथ लिखा है। इसमें ऊपर के अंक घण्टे के तथा नीचे के अंक मिनट के हैं।

स्पष्ट मध्याह्न से इष्ट दिन का शुद्ध वेलान्तर (Equation of time) को भी ज्ञात किया जा सकता है। इसकी विधि यह है कि इस पञ्चाङ्ग में दिये गये स्प. म. काल के घं. मि. का १२ घ. १२ मि. से अन्तर ही ऋण-धन वेलान्तर होगा। यदि मध्याह्न १२ घं. १२ मि. से अधिक हो तो वेलान्तर धन (+) तथा कम हो तो ऋण (–) होता है। ऋण धन के ये चिह्न मध्यमकाल को प्रमाणिक बनाने के लिए हैं। जैसे— मध्याह्न १२ घं. १७ मि. ५२ से.में १२ घं. १२ मि. कम करने से ५ मि. ५२ से. धन (+) वेलान्तर हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। इस वेलान्तर में २ सेकिण्ड से अधिक की अशुद्धि नहीं है।

स्पष्ट मध्याह्न के बाद सूर्यास्त काल भी घं. १८ मि. २३ भा. प्र. समयमें दिया है। अर्थात् सूर्योदय घं. ६ मि. १३ बजे से सूर्यास्त घं. १८ मि० २३ तक कुल १२ घं. १० मि. (या ३० घं. २५ प.) का दिनमान है। सूक्ष्म दिनमान से केवल २ पल या ४८ से. की अशुद्धि उपेक्ष है। सूर्यास्त के बाद स्पष्ट निरयण चन्द्र का अपनी दैनिक गति से मेषादि द्वादश-राशि प्रवेश काल घं. मि. में दिया है। अन्त में दिनांक हैं। जिनमें पहले स्थाने में कुमाऊँ एवं गढ़वालादि में प्रचलित 'गते' दूसरे में 'सौर प्रविष्टे,' तीसरे में राष्ट्रीय गते, चौथे में मुसलमानी तथा अन्त के कालम में अंग्रेजी तारीख दी गई है। प्रत्येक गते या तारीख के साथ मास-नाम के संकेताक्षर भी अंकित हैं।

पञ्चाङ्ग में पर्वादि - विवरण, भद्रा, पञ्चक, निरयण ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश काल, सायन सूर्य की संक्रान्ति, सामान्य विवरण तथा सर्वार्थसिद्धि योग (समियों) अमृत सिद्धि योग (अमियों) मृत्युयोग, यमघंट योग तथा गुरु-रवि पुष्यामृत योगों का विवरण भी भा. स्टैं. टा में ही दिया है। इन योगों को जानने की १ तालिका भी पृष्ठ पर दी गयी है। जिसके प्रयोग का विवरण गतवर्ष के पञ्चाङ्ग से देखना चाहिए। पक्ष के आरम्भ का स्फुट (True) अयनांश व केतकी अहर्गण भी प्रतीक पृष्ठ में दे दिये हैं। अयन व ऋतुओं की गणना सायन सूर्यवशात् की गई है। दैनिक लग्नसारणी के बारे में पीछे बता चुके हैं कि यह नैनीताल (कुमाऊँ) में मेषादि लग्नों का प्रवेशकाल बताती है। किसी लग्न का प्रवेश काल ही उससे पहले लग्न का समाप्ति काल है। जैसे कि २६ मार्च, १९८२ दिन शुक्रवार को नैनीताल में मेषलग्न का आरम्भ (या मीन लग्न की समाप्ति) भा. स्टैं. टा. (रेडियो से मिली घड़ी) के अनुसार घं. ७ मि. ५ से. ५९ बजे होगा और इसकी समाप्ति (या वृष लग्न का प्रवेश) घं. ८ मि. ४० बजे होगी। यही सर्वत्र समझें। साप्ताहिक पंक्तिस्थ ग्रह भी पूर्णतया वेध सिद्ध हैं। ग्रहों के साथ, उनकी गति, वक्री मार्गी उदय-अस्त व नक्षत्र भी दे दिये हैं, क्योंकि पाठकों को नक्षत्र जानने में कठिनाई होती है। गतवर्ष के पञ्चाङ्ग के साप्ताहिक ग्रह हमने 'सरस्वती पञ्चाङ्ग' से लिए थे। जैसा कि हमने वहाँ लिखा भी था कि 'सरस्वती पञ्चाङ्ग' (१०० वर्षीय पञ्चाङ्ग) से लिए गये साप्ताहिक ग्रह कुमाऊँ में प्रचलित एक अन्य पञ्चाङ्ग से अवश्य मिलेंगे और वे मिले। कारण? इससे सिद्ध हुआ कि उस पञ्चाङ्ग के साप्ताहिक ग्रह भी शताब्दी पञ्चाङ्ग से ही लिए जाते हैं जो कि दृश्य तुल्य संस्कार युक्त होने के कारण लगभग ठीक हैं। दृश्यतुल्य ग्रह एवं ग्रहचार से युक्त ऐसे पञ्चाङ्ग में वास्तविक दृश्यगणित का विरोध क्यों रहता होगा? ईश्वर ही जाने। हमें प्रसन्नता है कि कुमाऊँ के लोगों को इस भयंकर अशुद्धि का पता लग गया है और अधिकांश लोगों ने उस पञ्चाङ्ग का बहिष्कार भी आरम्भ कर दिया है। हमें आशा है कि उस पञ्चाङ्ग के सम्पादक महोदय अब शुद्ध गणित का पञ्चाङ्ग बनाने की प्रेरणा लेंगे। (यदि शुद्ध गणित जानते होंगे तो)। अन्यथा पञ्चाङ्ग का अस्तित्व बचाना कठिन हो जायेगा। छल-प्रपंच करके लेख-प्रतिलेख छपवाना भी अधिक नहीं चलेगा; न जनता छली ही जायेगी।

इस वर्ष पञ्चाङ्ग में हमने दैनिक ग्रह स्पष्ट सूर्य-चन्द्र क्रान्ति, चन्द्रशर के साथ-साथ अन्यग्रहों के शरादि भी दे दिये हैं। इससे जन्मपत्रियाँ बनाने वाले लोगों को विशेष सुविधा हो जायेगी। हमें प्रसन्नता है कि वर्षों से प्रचलित पञ्चाङ्ग भी आजतक वे सामग्रियाँ नहीं दे पाये हैं जिन्हें हम केवल १ वर्ष के स्वल्प काल में दे सकने में सफल हुये हैं। कारण यह है कि यहाँ के पञ्चाङ्गों का मूल उद्देश्य 'धन कमाना' रहा है जबकि उनका गणित पूर्णतया अशुद्ध है। परन्तु हमारा उद्देश्य सभी वर्ग के लोगों को शुद्ध सूक्ष्म ज्योतिषीय पदार्थों से युक्त पञ्चाङ्ग देने के साथ साथ ज्योतिष की शिक्षा देना भी है। अतः हम प्रतिज्ञा करते हैं कि प्रतिवर्ष १ २ नये विषय अवश्य ही देते रहेंगे। जनता ने जिस उत्साह व निष्ठा से हमारे पञ्चाङ्ग को अपनाया है, सराहना की है वह अभूतपूर्व है। इसी से उत्साहित होकर हमने इस वर्ष चं. मि. भी दे दिये हैं ताकि जनसामान्य भी पञ्चाङ्ग को समझ सकें और लाभ उठा सकें। दैनिक साम्पातिक काल एवं उसके आधार पर बनी 'अभिनव लग्न सारणी' आज तक किसी जन्त्री या पञ्चाङ्ग में नहीं छपी थी सो हमने अपनी जन्मभूमि कुमाऊँ के ज्योतिषी लोगों को सर्वप्रथम भेंट की है। विश्वास है कि यह सर्वजन हिताय सिद्ध होगी ॥ परीक्षा प्रार्थनीय है।

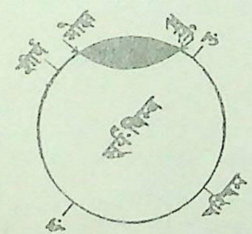
CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: ग्रहण विवरण :—

श्री शाके १९०४ सम्वत् २०३९ में कुल ५ ग्रहण हैं। जिनमें से भारत भूमण्डल में केवल २ ग्रहण (१. चन्द्र ग्रहण २. सूर्य ग्रहण) ही दिखाई देंगे। शेष तीन ग्रहणों के बारे में पञ्चाङ्ग के पृष्ठों में उल्लेख है। यहाँ पर दृश्य ग्रहणद्वय के मूलांक एवं कुछ प्रसिद्ध स्थानों के स्पर्श मोक्ष दिये जा रहे हैं। चन्द्र-ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष प्रत्येक स्थान में एक ही समय पर होता है।

१. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

श्री सम्वत् २०३९ शके १९०४ पौष-अमावास्या बुधवार अर्थात् १५ दिसम्बर १९८२ को मूल नक्षत्र धनुराशि में लगने वाले खण्डग्रास सूर्य ग्रहण का सूतक नैनीताल में १४ दिसम्बर मंगलवार को आधी रात के बाद ३ बजकर ८ मि. से लगेगा। बालक-वृद्ध रोगी बुधवार को दोपहर १ बजे तक पथ्याहार ले सकते हैं।



नैनीताल में ग्रहण का	भारतीय स्टै. समय से घं. मि. से.			सूर्योदयात् घट्यादि घ. प. वि.		
स्पर्श	१५	८	२६	२०	१४	५८
मध्य	१६	१२	८	२२	५४	०
मोक्ष	१७	८	४४	२५	१५	३०
पर्वकाल	२	०	१८	५	०	४५

नैनीताल सूर्योदय ७ घं. २ मि. ३२ से.

सूर्य ग्रहण का राशि फल :—यह ग्रहण मूल नक्षत्र एवं धनु राशि पर लग रहा है। अतः जन्म या पुकारने के नाम से जिन लोगों की धनु राशि हो उन्हें तथा गर्भवती महिलाओं को यह ग्रहण नहीं देखना चाहिए। इस मध्य इष्टदेव का चिन्तन-कीर्तन करना अभीष्ट रहेगा।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
फल	अपमान	रोग	स्त्री कष्ट	सौख्य	चिन्ता	विध्वंस	धन लाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सिद्धि

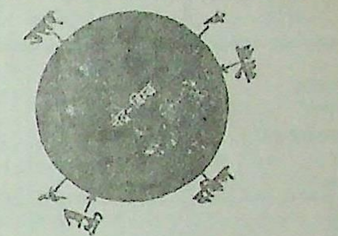
२. खग्रास चन्द्र ग्रहण

सम्वत् २०३९ शके १९०४ पौषशुक्ल १५ को मिथुन राशि आर्द्रा नक्षत्र पर लग रहे खग्रास चन्द्रग्रहण का सूतक गुरुवार ३० दिसम्बर की प्रातः ८ बजे से होगा। बालक वृद्ध-रोगी दोपहर १ बजे तक पथ्याहार ले सकेंगे।

:— चन्द्र ग्रहण का राशि-फल :—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
फल	धन लाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सिद्धि	अपयश	रोगादि	स्त्री कष्ट	सौख्य	चिन्ता	विध्वंस

चन्द्रग्रहण का	भा. स्टै. टा. घं.	मि.	से.	सूर्योदयात् (नैनी०) घ.	प.	वि.
चंद्रकांति मालिन्य आ.	१४	२२	०	१८	०	४५
ग्रहण स्पर्श	१५	२०	३०	२०	२७	००
सम्मीलन	१६	४२	१२	२३	१६	१४
मध्य	१६	५८	४२	२४	३९	३०
उन्मीलन	१७	२९	१२	२५	४८	४५
मोक्ष	१८	३७	०	२८	३८	१५
निर्मला कान्ति	१९	३५	३०	३१	४	३०
पर्व काल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



कुछ प्रसिद्ध स्थान जहाँ 'सूर्य ग्रहण' का केवल स्पर्श दिखाई देगा।

स्थान	⊙ स्पर्श घं. मि. से.	मध्य घ. मि. से.	सूर्यास्त ऊपरी कोर घं. मि. से.	पर्व काल घं. मि. से.	परमग्रास क. वि.
अगरतल्ला	१६ ६ २२	१६ २५ ०	१६ ३६ ६	० २९ ४४	०'।५५"
इम्फाल	१६ ८ ३४	— — —	१६ २३ १९	० १४ ४५	० ।३९
ईटानगर	१५ ५२ ६	— — —	१६ १९ २५	० २७ १९	२ ।३६
काठमांडू (नै०)	१५ २८ ४०	१६ १८ २८	१६ ५२ ३	१ २३ २३	२ ।४७
कोहिमा	१६ २ ६	— — —	१६ २० ४४	० १८ ३८	१ ।१८
गोहाटी	१५ ५२ १०	१६ २३ २६	१६ २९ १०	० ३७ ०	२ ।३२
गंगटोक	१५ ३८ ४२	१६ २० ५६	१६ ३९ ०	१ ० १८	४ ।२३
डिब्रूगढ़	१५ ५३ २७	— — —	१६ १३ ३९	० २० १२	२ ।१७
ढाका (बं० दे०)	१६ ३ ५४	१६ २४ ४३	१६ ३९ ४८	० ३५ ५४	१ । ६
पटना	१५ ३७ ६	१६ २० ११	१६ ५६ ५२	१ १९ ४६	४ ।१५
सिलाँग	१५ ५५ ५२	१६ २४ ०	१६ २९ ५४	० ३४ २	२ । ३

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ कुछ प्रसिद्ध स्थान जहां सम्पूर्ण सूर्य ग्रहण दिखाई देगा ॥

स्थान	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			पर्व काल			परमग्रास	
	घं.	मि.	से	घं.	मि.	से	घं.	मि	से.	घं.	मि.	से	क	वि.
अहमदाबाद	१५	१०	३५	१६	९	४७	१७	२	४२	१	५२	७	६'	१२"
इलाहाबाद	१५	२८	४२	१६	१७	४८	१७	२	३१	१	३३	४९	५'	१२"
इस्लामाबाद (पा.)	१४	४०	२३	१६	०	२४	१७	१०	२४	२	३०	१	१३'	८"
उज्जैन	१५	२०	४	१६	१३	३२	१७	१	५०	१	४१	४६	५'	२४"
कलकत्ता	१६	५	६	१६	२४	२८	१६	४३	२४	०	३८	१८	०	५५
कुरुक्षेत्र	१४	५९	५०	१६	८	४८	१७	९	४०	१	४४	५०	९	४७
करांची	१४	४६	२८	१६	०	९	१७	५	२	२	१८	३४	८	५२
चंडीगढ़	१४	५७	४३	१६	८	५	१७	१०	४	२	१२	२१	१०	१६
जबलपुर	१५	३३	१२	१६	१७	५४	१६	५८	५८	१	२५	४६	४'	६"
जयपुर	१५	६	२६	१६	१०	३२	१७	७	२६	२	१	०	८'	२"
जोधपुर	१५	०	२२	१६	७	४२	१७	७	१२	२	६	५०	८'	२३"
दिल्ली	१५	४	४६	१६	१०	३०	१७	८	४४	२	३	५८	८'	४८"
देहरादून	१५	१	५७	१६	९	४६	१७	९	४२	२	७	४५	९'	४१"
नागपुर	१५	४०	३३	१६	१८	२८	१६	५३	४८	१	१३	१५	३	११
नैनीताल (कुमाऊँ) ⊗	१५	८	२६	१६	१२	८	१७	८	४४	२	०	१८	८'	४५"
पटना	१६	६	३२	१६	१५	५२	१६	२५	२९	०	१८	५७	०'	१०
पूना	१५	३७	०	१६	१४	२४	१६	४९	१४	१	१२	१४	२	३०
बम्बई	१५	३०	२०	१६	१२	४९	१६	५२	४	१	२१	४४	३	९
भोपाल	१५	२४	५१	१६	१५	१८	१७	१	७	१	३६	१६	४	५८
लखनऊ	१५	२०	४९	१६	१४	४९	१७	५	२२	१	४४	३३	६	२८
वाराणसी	१५	३२	३१	१६	१८	५२	१७	१	१८	१	२८	४७	४	४५
श्रीनगर	१४	४३	४०	१६	२	२	१७	१०	३१	२	२६	५१	१२	५४
शिमला	१४	५७	२५	१६	८	२	१७	१०	१४	२	१२	४९	१०	२६
हरिद्वार	१५	३	१७	१६	१०	१३	१७	९	२६	२	६	९	९	२४
हैदराबाद	१६	९	३२	१६	२०	२	१६	३०	४४	०	२१	१२	०	१४

ग्रहणों को देखते समय ग्रहण के चित्र को सिर के ऊपर ठीक इस प्रकार रखना चाहिए कि पूर्वादि दिशाएँ मिल जाएँ। बिम्ब के जिस स्थान पर स्पर्श-मोक्ष लिखे हैं बिल्कुल उसी स्थान पर ग्रहण-छाया द्वारा बिम्ब का स्पर्श एवं छूटना पाठकों को प्रत्यक्ष दिखाई देगा। विशेष सूक्ष्मता के लिए वेध यन्त्रों का या वेधशाला का आश्रय लेना चाहिए। किस पञ्चाङ्ग के स्पर्शादि काल सही हैं, यह भी वेधशाला से अवश्यमेव पता करना चाहिए॥ पञ्चाङ्ग गणित की सत्यता का एक मात्र प्रत्यक्ष उदाहरण 'ग्रहण' ही है, जिसकी तुलना प्रार्थनीय है। क्योंकि "ज्योतिषे ग्रहणं सारम्"।

⊗ ग्रहणों के मूलांक ⊗

गणितीय मूलांक (पदार्थ)	सूर्य ग्रहण दिनांक १५-१२-८२	चन्द्र ग्रहण दिनांक ३०-१२-८२
भूकेन्द्रीय पर्वान्त काल	अमान्त घ. १४।४८ (स्टै० टा०)	पूर्णिमान्त घ. १७।३ (स्टै. टा.)
पर्वान्तीय सायन सूर्य राश्यादि	८।२३°।४'।१२"	९।८°।२६'।३५"
„ „ चन्द्र „	८।२३।४।१२	३।८।२६।३५
सूर्य दिन गति कलादि	६१'।४"	६१'।८"
चन्द्र „ „ „	७१६'।२२"	९१२'।३१"
चन्द्र शर कलादि	(उ.) ६१'।२७".४	(उ०) २२'।५४"
„ „ दिनगति „	(−) ६५।११	(+) ८४।०८
सायन मध्यम राहु इत्यादि	रा. ३।४।४४।११	रा. ३।३°।५६'।१३"
बिराहु चन्द्र राश्यादि	रा. ५।१८।२७।१	रा. ०।४°।३०'।२२"
स्फुट अयनांश अंशादि	२३°।३६'।५०"	२३°।३६'।५२"
„ सूर्य परम क्रान्ति	२३°।२६'।२८"	२३°।२६°।२८"
सूर्य चन्द्र विपुवांश की	युति घं. १४।४०।५६ (स्टै. टा.)	प्रतियुति घं. १७।०।१५
तात्कालिक सूर्य विपुवांश	घं. १७।२९।४७·५	घं. १८।३६।४५
„ चन्द्र „	घं. १७।२९।४७·५	घं. ६।३६।४५
सूर्य विपुवांश की होरा गति	से. १९·१	से. ११·१
चन्द्र „ „ „	से. १२८·३	से. १६६·६
स्फुट सूर्य क्रान्ति	(द०) २३°।१५'।३४"	(द०) २३'।१०'।२०"
„ चन्द्र „	(द०) २२°।१३'।४२"	(उ०) २३°।३३'।२६"
सूर्य क्रांति की होरा गति	(−) ८"	(+) ९·७"
चन्द्र „ „ होरा गति	(−) २५६"	(+) ६५·७"
नि. दे. स्फुट चन्द्र परमलंबन कलादि	५४'।१८"·६	६१' २३"·७
दि. ने. „ सूर्य परम लम्बन „	०।९·०	०।९·०"
„ „ बिम्बार्ध „	१६' १५"	१६।१७"·५
„ चंद्र „ „	१४' ४८"	१६।४३·८
„ सूर्य-चंद्र बिंबैक्यार्ध „	३१' ३"	— —
„ „ „ बिंबांतरार्ध „	२' ५४"	— —
मानैक्य खण्ड „	५३' ३७"·२५	६२ १८
मानान्तर „ „	२४ ५·२५	२९ ४६
भूभा „ „	७७ ५४·५५	९२' १९"
ग्रहण परम ग्रास „	८'४७"	३९' ५०"
	·२७ (सूर्य बिम्ब = १)	१·१९ (चन्द्र बिम्ब = १)
सूर्योदय (भा० स्टै० टा०)	७ घं. २ मि. ३२ से.	७ घं. ९ मि ४२ से.

(⊗) प्रस्तुत मूलांकों से ही नैनीताल का गणित किया है, शुभ पर्वतीय नाक्षिकपञ्चांग से (कुमाऊँ)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अथ सम्वत्सरादि फल व सृष्टि काल क्रम

विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् ।
सम्वत्सर फलं वक्ष्ये लोकानांहितकाम्यया ॥ १ ॥
अचिन्त्याव्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्त जगदाधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ २ ॥
स्वकुलाधिदेवाय श्रीदेवगुरवे विद्याप्रदात्रे जगजीवनाय ।
पितुश्चमातुश्च पदाम्बुज्येभ्यो नमोनमः स्वल्पमतेस्त्रिवारम् ॥ ३ ।
आदित्यादि नवग्रहाः शुभकरा मेषादयो राशयो,
नक्षत्राणि च योग करण तिथयस्तद्देवतास्तद्गणाः ।
मासाब्दा ऋतवस्तथैव दिवसाः संध्यास्तथा रात्रयः,
सर्वे स्थावरजंगमाः प्रतिदिनं कुर्वन्तुनो मंगलम् ॥४॥
धर्मशास्त्र मनुसृत्य शुद्धं दृग्गणितागतम् ।
'जीवन विजय' कृतं भोलादत्तेन निर्मलम् ॥ ५ ॥
नैनीतालाक्षवृत्तस्य तिथिपत्रेण वै जनाः ।
सर्वे भवन्तु संलाभा याचन्ते तु प्रयोजितुम् ॥ ६ ॥
प्राप्ते नूतन वत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद्ध्वजारोपणं
स्नानं मंगलमाचरेद् द्विजवरैः सार्द्धं सुपूजोत्सवः ।
देवाना गुरुयोषितां चशिशवोऽलंकार वस्त्रादिभिः
सपूज्यो गणकः फलं च शृणुयात्तस्माच्च लाभ प्रदम् ॥ ७ ॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषत,
सपुष्पाणि समादाय चर्ण कृत्वा विधानतः ॥ ८ ॥
मरीचिं लवणं हिंगु जीरकेण समन्वितम्
अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद्रोग शान्तये ॥ ९ ॥
भक्षन् हि मानवः सौख्यं व्याधिनाशं च विन्दति,
विद्याबलायुः कान्तिश्च पुष्टि प्राप्नोति हायने ॥ १० ॥
शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजननं सम्वत्सरात्राज्यतां
राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्रीफलं वृद्धिदम् ।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रप वृद्धिस्तथा,
सस्यं सर्वसुखं च वत्सरफल शृण्वन्वता सिद्धिदम्॥ ११ ॥

तिथेश्च श्रीकरं प्रोक्तं वारादायुष्यवर्धनम्,
नक्षत्राद्धरते पापं योगाद्रोगनिवारणम् ॥ १२ ॥
करणाच्चिन्तितं कार्यं पंचांग फलमुत्तमम् ।
एतेषां श्रवणान्नित्यं गंगास्नान फलं भवेत् ॥ १३ ॥
फलानि वत्सरस्यैवं चैत्रशुक्ले शृणोतियः ।
भक्त्या पंचांग दानेन सः सुखी वत्सरं भवेत् ॥ १४ ॥

चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर का आरम्भ होता है। इस दिन सभी लोगों को अपने-अपने घरों में ध्वजा पताका आदि लगाकर तोरण व वन्दनवारों से सजाना चाहिए। विधि पूर्वक स्नान ध्यानादिक क्रियाओं को पूरा करके किसी योग्य ज्योतिषी को घर में बुलाकर आदर-सत्कार पूर्वक उसे सन्तुष्ट करके नूतन सम्वत्सर का फल सुनना वर्षपर्यन्त के लिए शुभ सूचक होता है। घर में प्रत्येक प्रकार से नृत्यगीतादि सहित उत्सव मनाना चाहिये। उपर्युक्त श्लोक ८, ९, १० के अनुसार नीम (या बकायन) का चूर्ण बनाकर वर्षपर्यन्त खाने से रोग नहीं होते हैं।

सृष्टिकाल क्रम वर्णन

समस्त जगत की उत्पत्ति स्थिति तथा विनाश के कारण भूत केवल ब्रह्मा जी ही हैं। सत, त्रेता द्वापर तथा कलयुग इन चार युगों का १ महायुग होता है। सौरमान से इस महायुग की वर्ष संख्या ४३,२०,००० है। इस महायुग की १००० आवृत्ति होने पर ४३२० ०,००,००० वर्षों का एक कल्प या ब्रह्मा जी का आधा दिन होता है। इस प्रकार ७२० कल्प व्यतीत होने पर ब्रह्मा जी के ३६० अहोरात्र या १ वर्ष होता है। ब्रह्मा जी की १०० वर्षीय आयु सौरमान से ७२००० कल्पों की होती है। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु में ३११०४०००००००००० वर्ष होते हैं। इस वर्ष सम्वत् २०३९ की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ब्रह्मा की १०० वर्षीय आयु में से ५० वर्ष व्यतीत होकर ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन की १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४४ वां प्रति विपल व्यतीत हो रहा है। ब्रह्मा के एक दिन अर्थात् ८६४००००००० वर्षों (मनुष्यमान) में जो १४ मन्वन्तर व्यतीत होते हैं उनमें से १ स्वायुंभव, २ स्वारोचिष, ३. उत्तम ४. तामस, ५. रैवत तथा ६ चाक्षुष ये छः मनु तो व्यतीत हो चुके हैं। सम्प्रति ७ वाँ 'वैवस्वत' मन्वन्तर चल रहा है। इस मन्वन्तर के भी २७ महायुग व्यतीत होकर २८वें महायुग के सत् त्रेता व द्वापर ये तीन युग तो बीत चुके हैं इस समय २८ वाँ कलियुग चल रहा है।

सतयुग -- इस युग की उत्पत्ति कार्तिक शुक्ला नवमी बुधवार को प्रथम प्रहर में हुई थी, इसकी आयु १७२८,००० वर्ष की थी। इसमें भगवान के चार अवतार १. मत्स्य २. कच्छप ३. वराह और ४. नृसिंह हुए हैं। इस युग में पुण्य २० पाप ० विश्वे थ। स्त्रियां पद्मिनी-पतिव्रता थी और प्रधान तीर्थ पुष्कर था।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया सोमवार को द्वितीय प्रहर में आरम्भ हुआ था। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी। इसमें भगवान् के वामन, परशुराम, रामचन्द्र ये तीन अवतार हुये हैं। इस युग में पुण्य १५ पाप ५ विश्वे, स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता और प्रधान तीर्थ नैमिषारण्य था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार को तृतीय पहर में आरम्भ हुआ था। इसकी आयु ८६४००० वर्ष रही थी। इसमें भगवान्के श्रीकृष्ण व बलराम केवल दो अवतार हुये थे। इस युग की स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता, पाप १० पुण्य १० विश्वे तथा पवित्र तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग—की उत्पत्ति भाद्र कृष्ण १३ रविवार को ठीक मध्यरात्रि के समय हुई थी। इसमें भगवान् के २ अवतार होते हैं। जिनमें १ बुद्धावतार तो हो चुका है तथा २ कल्कि अवतार कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहने पर सम्भल ग्राम में होगा। इस युग में पुण्य ५ पाप १५ विश्वे होगा। धूर्तों की पूजा होगी, स्त्रियों में व्यभिचार अत्यधिक होगा। छोटी आयु में पिता के घर में ही गर्भ धारण होंगे। धर्म-कर्म श्रवणगोचर मात्र होंगे। तीर्थ स्थान गंगातट मात्र रहेंगे। इस कलियुग की कुल आयु ४३२००० वर्ष है; जिसमें से ५०८३ वर्ष बीत चुके हैं तथा ४२६९१७ वर्ष शेष हैं। इस कल्प (श्वेत वाराह) के आरंभ से १९७२९४९०८३ वर्ष बीत चुके हैं। इन्हें ही ब्रह्मा के १ दिवसीय गताब्द कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ से १९५५८८५०८३वर्ष तथा वैवस्वत मनु के ३०६७२०००० वर्षों में से १२०५३३०७६ गताब्द एवं १८६१८६९२४ शेषाब्द हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को श्रीमद्विक्रम सम्वत २०३९, शक सम्वत १९०४ श्रीकृष्ण जन्मसंवत ५२१८ तथा ईस्वी सन् १९८२-८३ प्रवर्तित हैं। इस दिन सृष्ट्यादि अहर्गण ७१४४०४१५१२१७ एवं कलियुगादि अहर्गण १८५६५९१ हैं। स्वल्पाकृत केतकी अहर्गण ३३०७ हैं। गुरुमान से वर्षादि में 'युवा' नामक सम्वत्सर प्रवर्तित है। मेषार्क के समय इसके विगत भासादि ५।८।५१।४४ तथा भोग्य भासादि ६।२१।०८।१६ हैं। तदनुसार मार्गशीर्षकृष्णा सप्तमी ७ नवम्बर १९८२ रविवार को घं० १०।३६ बजे 'धाता' सम्वत्सर आरम्भ होगा। वर्षारम्भ का स्पुट चित्रापक्षीय अयनांश २३°।३६'।१५",वार्षिक अयन गति ५०"·२७ विकला है। वर्षारम्भ की मध्यम परमक्रान्ति २३°।२६'।३०" तथा स्पुट परमक्रान्ति २३°।२६'।२०" है। पञ्चांग में सर्वत्र ही तिथ्यादि एवं अन्य गणित प्रत्यक्ष वेधसिद्ध सूक्ष्म दृग्गणितानुसार किया गया है। समस्त कुमाऊँ में ही नहीं देश-प्रदेश के अधिकांश भागों में इस गणित की सराहना की गई है कि यह बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय सिद्ध हो रहा है। अतः इस पञ्चांग को आगे भी इसी गणित से और अधिक उपयोगी रूप में दिया जाता रहेगा। सम्वत्सर एवं दशाधिकारियों आदि के फल अग्रिमोक्त हैं :—

—ः अथ फलम् ः—

अथ युवा सम्वत्सर का फल :—प्रभूत पयसो गावः सुखिनःसर्व जन्तवः ।
सर्वकामक्रियासक्तो युवाब्दे युवतीजनः ॥

'युवा'नाम के सम्वत्सर में गायें (तथा अन्य पशु) पर्याप्त दूध देने वाली होती हैं। सभी प्राणी सब प्रकार सुखी तथा स्त्रियों में काम क्रीड़ा के प्रतिविशेष आसक्ति रहती है और बनाव-शृंगार में अधिक व्यय होता है ॥

मतान्तर—युवा वर्ष का स्वामी शुक्र है। इसमें प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प व बाढ़ादि का भय रहता है। चैत्र-वैशाख में रोग उत्पात, ज्येष्ठ में आँधी, लू व नेत्र रोग, आषाढ़ में अत्यधिक वर्षा (शुक्ल पक्ष में विशेषकर) श्रावण में तेज हवा व अन्नादि में महँगाई। भादों में १४ दिन तक महावर्षा, व्याकुलता, राज विग्रह (सत्ता में उलट फेर), उत्तर में अकाल (महँगाई) से कष्ट, पूर्व में खेती की हानि, दक्षिण में वैर, विरोध अराजकता हो। मार्गशीर्ष में विषमता-मतभेद-प्रजा को कष्ट (पश्चिमी भागों में विशेषकर), अकाल, रसादि पदार्थ महँगे होंगे। कार्तिकादि दो मास उत्तम, पौष-माघ मध्यम तथा फाल्गुन में कुछ-कुछ कष्टकर समय रहेगा।।

१. राजा शुक्र का फल :—शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः ।
फलन्तिवृक्षाः बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिवसौख्य संयुताः ॥

(शुक्र के राज्य में फसलें पर्याप्त हों, नदियों में जल की अधिकता रहे, वृक्ष अच्छे फल देवें, गायें अधिक ब्यावें और उनमें पर्याप्त दूध हो, राजाधिकारी लोग पृथ्वी में हर प्रकार से सुखी रहें, और पृथ्वी भी राजाओं से सुखी रहे।)

२. मंत्री मंगल का फल :—अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना ।
जनपदेषु जयं सुखसंचयं न बहुगोपयसो द्विजकर्म च ॥

(मंगल के मन्त्रित्व में प्रजा को चोर डाकुओं व भिखारियों से कष्ट होता है। फिर भी सभी राज्य सुखी, गायों में दूध कम तथा ब्राह्मण लोग अपने कर्म में निरत रहते हैं।)

३. सस्येश शुक्र का फल :—शुक्रो यदा सस्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम् ।
गोधूमशालीक्षु फलं सुधान्यं वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि ॥

(पृथ्वी पर वर्षा उत्तम हो, गेहूँ, धान, गन्ना, नागरमोथा, कौंगनी और वृक्षों में फल-फूल पर्याप्त व सुखदायक हों।)

४. धान्येश बुध का फल :—बुधे धान्याधिपे मेघा जलं मुंचन्ति वै भृशम् ।
मेघरे नगर देशे च माघवोऽन्यं च वर्षति ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(जब बुध धान्येश हो तो मेघ बहुत वर्षा करेंगे परन्तु सिन्ध तथा लाट देशों में वर्षा न होने से वहाँ के लोग दु:खी रहते हैं अन्यत्र सुख सौहार्द बना रहता है ।)

५. मेघेश चन्द्र का फल :—शशिनि तोयदपे यदि गोमहिष्यजखरादिषु दुग्धरसं सदा ।
फलवतीधनधान्यवती धरा विविध भोगवती ननु भामिनी ॥

(गाय-भैंस व बकरियों (आदि चौपायों)में पर्याप्त दूध होगा । वर्षा-कृषि आदि अच्छी होगी । रसादि पदार्थ सस्ते व सुलभ होंगे, पृथ्वी फल-फूल धन धान्य से परिपूर्ण रहेगी । स्त्रियों को भोगादि सुख पर्याप्त मिलेंगे ।)

६. रसेस सूर्य का फल :—रसपतौ तरणौ धारिणी तदा विरसभागरताल्प पयोधरा ।
वसनतैल घृतप्रियमानवाः सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः ॥

(वर्षा कम हो । रस-कस व घृत तैलादि पदार्थों के लिए लोग लालायित रहें । वस्त्रादि-दैनिक प्रयोग की वस्तुएं मँहगी होंवे, शासक-नेता लोगों में जनतांत्रिक भावना की कमी से प्रजा अशान्त रहे । अराजकता व रोगोपद्रव खूब बढ़ें ।)

७. नीरसेश शुक्र का फल :—कर्पूरागरुगन्धानां हेममौक्तिक वाससाम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि ॥

(सूखेफल, कर्पूर अगर आदि सुगन्धित पदार्थ, श्रृंगारिक वस्तुयें सोना-चाँदी मोती आदि मणियाँ तथा सभी प्रकार के कपड़ों में सामान्य मँहगी आती है । इनके भाव चढ़ते उतरते रहते हैं । प्रजा में हर प्रकार से सुख रहता है । वर्षा पर्याप्त होती है । शासक लोग नीति से चलते हैं ।)

८. फलेशचन्द्र का फल :—यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुतावल्लिभिः कुसुमैर्युताः ।
द्विजसुखावरभोग समन्विता नृपतयो नयनाटन तत्पराः ॥

(वृक्षों में फल-फूल पर्याप्त मात्रा में लगेंगे । विद्वानों व ब्रह्मणों को मिष्ठान्न आदि उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ प्राप्त होने से वे सन्तुष्ट रहेंगे । सरकारी तन्त्र सुदृढ़ बने होने का नाटक करेगा । फिर भी उपद्रवों, हड़तालों का कड़ाई से दमन होनेपर सर्वत्र शान्ति-सुरक्षा की भावना बनी रहेगी ।)

९. धनेश गुरु का फल :—सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः ।
फलित-पुष्पिता भूमिरुहाः सदा विविध द्रव्य युता भुवि मानवाः ॥

(जन-मानस में सुन्दर भावनाओं का उदय होगा, व्यापारी लोग विशेष सुखी रहेंगे । वृक्ष पुष्पित व पल्लवित होकर अच्छे फल देंगे । सभी मनुष्य विविध प्रकार के द्रव्यों एवं सुख-साधनों से युक्त रहेंगे । देश की आर्थिक व्यवस्था (मुद्रास्फीति) में विशेष सुधार आयेगा ।)

१०. दुर्गेश चंद्र का फल :—गढ़पतिः शशलांछनको यदा नृपसुराज्य विकासित पीरजाः ।
बहुधनेक्षुज गोरस भोगिनो नरवरा नरवर्णित विग्रहाः ॥

(विकास कार्यों के साथ ही अस्त्रशस्त्रादि निर्माण कार्य भी प्रगति करें, शत्रुओं की सुरक्षा व्यवस्था में सुधार होने से प्रजा सुसन्तुष्ट होगी । मन्त्रीगण इसमें कुछ रुचि लेंगे । दूध-घी-ईख आदि रसादिकों पदार्थों का पर्याप्त उत्पादन होगा, पश्चिमोत्तर से भारत पर युद्ध का खतरा रहेगा । उच्चपदस्थ लोगों में विग्रह की भावना बढ़ेगी ।)

वर्षनाम चैत्र फलम् :—सस्यानि घृतकार्पासस्तैलादि सुख संचयः ।
चैत्रवर्षे भवेद्वृद्धिर्नृप सौख्यफलप्रदाः ॥

—: स्तम्भ चतुष्टय का फल :—

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग लगभग ५६% होने से 'जलस्तम्भ' पूर्ण है । अतः वर्षा अच्छी होगी, नदियों में बाढ़ें आयेंगी । कहीं-कहीं वर्षा की कमी भी रहेगी । वैशाख शुक्ल प्रतिपदा के दिन भरणी नक्षत्र परिपूर्ण है । अतः 'तृणस्तम्भ' सुदृढ़ होने से घास, चारा, पाट, जूट, सन आदि की उत्पत्ति अच्छी होगी, ये वस्तुयें अधिक मँहगी नहीं रहेंगी, खेती में खरपतवार के बढ़ने से हानि होगी । ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगसिरा नक्षत्र का संयोग लगभग सामान्य होने से 'वायुस्तम्भ कमजोर हो गया है । परिणामतः वायुवेग सम्बन्धी उपद्रवों में कमी रहेगी, आंधियाँ कम (नाममात्र) चलेंगी । आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा के दिन पुनर्वसु नक्षत्र का सुयोग भी नाम-मात्र ही है अतः अन्नस्तम्भ दुर्बल हो गया है । अतः वर्षा के उत्तम होने पर भी पैदावार में कमी रहेगी । बाहर से अन्न मँगाने के लिए विचार बनेंगे । फिर भी कुछ प्रदेशों में उत्पादन ठीक रहेगा, मूल्यवृद्धि बनी रहेगी ॥

—: नाग फल :—

इस द्वादश नागों में 'जलेन्द्र' नामक नाग का आधिपत्य है । अतः "जलेन्द्रः प्लवते महीम्" के अनुसार पर्याप्त (सीमा से अधिक) वर्षा से कहीं-कहीं जन-धन की हानि होगी । अन्यत्र उत्पादन उत्तम रहेगा ।

—: मेघ फल :—

इस वर्ष आवर्तादि नव मेघों में से 'काल' तथा चारमेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ हैं । इनमें काल का फल 'अल्पवृष्टिश्च काले स्यात्' (मामूली वर्षा हो) तथा पुष्कर नामक मेघ का फल भी यही "पुष्करे मन्द वृष्टिः स्यात्" है ।

—: रोहिणी निवास फल :—

इस वर्ष 'रोहिणी' का निवास 'तट' पर है, इसका फल उत्तम वर्षा है । यथा—"ग्लौवल्लभा चेत् पतिता तटस्थले वृष्टिः प्रभूता कर्णावित्त वर्द्धनम्" अर्थात् समयानुकूल वर्षा से धन-धान्य [illegible] की वृद्धि होगी ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: समय निवास व वाहन फल :—

इस वर्ष समय का निवास 'धोबी के घर में है। 'रजके वृष्टिरुत्तमा' के अनुसार वर्षा अच्छी होगी, नदी, तालाब आदि जल से भरे रहेंगे। कुछ स्थानों में वर्षा की न्यूनता भी रहेगी।

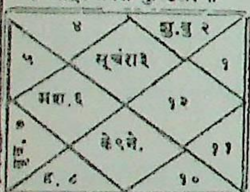
समय का वाहन दर्दुर (मेंढक) है। इस का फल उत्तम वर्षा है। देश के इतस्ततः भागों में दंगे भड़केंगे जिन्हें कठोरता से दबाया जायेगा, उच्चपदस्थ लोगों में विचारों का वैषम्य प्रबल हो जायेगा। नेता लोग मेंढक की चाल चलेंगे।

शनि की दृष्टि दक्षिण में है। अतः दक्षिणी भागों में उत्पात, भूकम्प, दंगे, जलोपद्रवादि से प्रजा को कष्ट होगा। खाद्यान्न समस्या का समाधान भी पूर्णतया नहीं हो पायेगा, कृषि में उपयोगी साधन मँहगे होंगे। प्रजा सुखी नहीं रहेगी। आकाशीय कौंसिल में शनि को इस वर्ष कोई भी पद (अधिकार) नहीं मिला है अतः शनिदेव कुपित होकर व विपक्षीय दलों का नेतृत्व करेंगे।

—: आर्द्रा प्रवेश फल :—

श्री सम्वत् २०३९ शके १९०४ आषाढ़ शुक्ला १ मंगल वार को नैनीताल में श्रीसूर्य बिम्बार्धोदयात् इष्टघटी १ पल १० पर, तदनुसार २२ जून १९८२ को भारतीय प्रमाणिक समय (स्टै० टा०) से घं. ५ मि. ४६ बजे निरयण सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। इस समय नैनीताल के इष्ट साम्पातिक काल घं. २३ मि. ३३ से.२८ (R. A. M. C.) के द्वारा निरयण लग्नस्पष्ट २।१३°।४'।२१" है। तात्कालिक स्थित्या—तिथि प्रतिपदा,

॥ आर्द्रा प्रवेश कुण्डली ॥



वार मंगल, नक्षत्र आर्द्रा, वृद्धि योग, बव करण तथा मिथुन राशि में चन्द्रमा होगा। तिथि फल :— प्रतिपद्दिवसे भानोर्यदार्द्रायां प्रवेशनम्। नृणां गृहे-गृहे तर्हि भवेन्मंगलवर्धनम् ॥ (प्रजा में सौख्य व मंगल भावना बढ़े)। वार फल :—भौमवारे यदा भानोरौद्रभे चेत् प्रवेशनम्। शस्त्राघातैर्नरेशाणां भवेन्मृत्युर्न संशयम् ॥ (किसी बड़े राज्याधिकारी नेता की मृत्यु हो, युद्ध भी होवे)। नक्षत्रफल :—रौद्रनक्षत्रे चैव रौद्रभं याति चेद्रविः। सकला प्राणिनस्तर्हि रौद्रकर्म प्रकुर्वते ॥ (प्रजा में उग्रता बढ़े)। योगफल— तरणेर्यदि रौद्रर्क्षप्रवेशे वृद्धियोगकः। पुत्रपौत्रादिभिर्वृद्धिः स्याद्यज्ञादि कर्म च ॥ (यज्ञादि शुभ कर्म होवें)। अन्यफल भी सामान्य रूपेण मिश्रित हैं। लग्न में मिथुन राशि है जो कि पूर्णतया निर्जलराशि है। राशि का स्वामी बुध द्वादश में स्वक्षेत्री शुक्र के साथ अर्धजलीय राशि में बैठा है जिस पर किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। दूसरी ओर यह बुध मं. श. शु. रा. द्वारा अधिष्ठित राशियों का स्वामी है। इस प्रकार यहाँपर अशुभ प्रभाव अधिक है। सप्तम भाव (अर्धजलीय धनु राशि) जो कि कृषि-उत्पादन का स्थान है, में केतु की स्थिति पूर्णतया अशुभ नहीं है। नेपच्यून भी शुभग्रह माना गया है और जल का देवता भी है। सप्तमेश गुरु पंचम (कोण) में पुनः पादजलीय राशि तुला में बैठकर कृषि-उत्पादन क्षेत्र में प्रगति कारक फल देगा, राज्येश कर्मेश शनि चतुर्थ (केन्द्र) में जाकर शुभ हो गया है। फलतः प्रजा व विरोधियों के लगातार कुप्रयत्नों को शासन प्रबलता से शमन करेगा। प्रजा कुछ कुछ संत्रस्त सी रहेगा, वर्षा समयानुकूल कम होगी, फिर भी पर्याप्त उत्पादन की सम्भावना प्रत्यक्ष है। मँहगाई ऊँच-नीच करती रहेगी ॥ यत्र तत्र प्राकृतिक प्रकोपों से हानि होगी।

—: विंशोपक विवरण :—

समय विंशवा १८। जलाढका १००
(समुद्रे ५०, पर्वते ३०, भूमौ २०) सर्वेविंशोपकाः ११३

वृष्टि	५	परचक्र	१९	जन्म	५	पित्त प्रकोप	१५
धान्य	१५	रत्नादि	१७	देशोपद्रव	७	कफ प्रकोप	३
तृण	१३	वस्त्र	११	देशशान्ति	११	सन्निपात	११
शीत	१७	घृत	७	चोरभय	१९	यश	१५
उष्ण	५	तैल	१७	चोरनाश	१५	अपयश	१९
वायु	१३	दुकूल (वस्त्र)	१७	अग्निभय	१७	सत्य	५
वृद्धि	१५	ऊर्णवस्त्र	११	अग्निनाश	९	असत्य	११
विनाशः	१५	क्षौमाणि	३	विषभय	९	पाप	१८
विग्रह	११	कपास	१५	विषनाश	१९	पुण्य	२
क्षुधा	३	वल्कल	१९	सेवकत्व	५	धर्म	११
तृषा	१३	सुवर्ण	१५	स्वामित्व	१९	अधर्म	१८
निद्रा	१५	ताम्र	३	निजत्व	११	ऐक्य	१०९
आलस्य	७	वंग	१९	परत्व	१५	गर्व	५
उद्यम	९	रौप्यं	१७	द्यूतकर्म	१५	उग्रता	७
शान्ति	१३	लौह	११	पुंश्चलिकर्म	११	प्रपञ्च	९
क्रोध	५	खर्पर	१९	जारत्व	३	भूतबाधा	११
दम्भ (पाखण्ड)	५	पित्तल	९	जारत्व नाश	९	भूतबाधा नाश	१३
भेद	३	सीसक	१३	मारण	१३	ग्रहदोष	१५
मैत्री	१५	कांस्य	१७	मारण नाश	१५	ग्रहदोष नाश	१७
रस निष्पत्ति	९	उग्र प्रकृति	१३	मोहन	९	मैथुन	१५
फल निष्पत्ति	१३	सौम्य प्रकृति	३	मोहन नाश	३	द्वन्द्वज	७
उत्साह	११	पाप प्रकृति	१९	स्तम्भन	१५	अंडज	३
शलभा	१९	पुण्य प्रकृति	१३	स्तम्भन नाश	१३	जरायुज	३
शुका	५	व्याधि	५	उच्चाटन	१३	स्वेदज	३
मूषका	७	औषधि	१७	उच्चाटन नाश	५	उद्भिज	३
अतिवृष्टि	५	आचार	१९	वशीकरण	१३	सर्वनिष्पत्ति	५७
अनावृष्टि	९	अनाचार	१३	वशीकरण नाश	३	उत्पत्तिवि.	९९
स्वचक्र १७, लोम	३	मरण	१९	वात प्रकोप	९	खपति वि	१२६

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: आयव्यय चक्र :—

१. विन्ध्योत्तरनिवासियों के लिये—विंशोत्तरी मतेन ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	१०	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	१०
फल	लाभ विजय	सुख संतोष	लोका-पवाद	रोग कष्ट	रोग कष्ट	लोका-पवाद	सुख संतोष	लाभ विजय	सुख संतोष	लाभ विज	लाभ विजय	सुख संतोष

२ विन्ध्य से दक्षिण निवासियो के लिये—अष्टोत्तरी मतेन ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	२	११	१४	११	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय	८	११	११	८	५	११	१४	८	१४	८	८	१४
फल	लाभ विजय	हानि अपमा.	हानि अपमा.	सुख संतोष	लाभ विजय	हानि अपमा.	हानि अपमा.	लाभ विजय	सुख संतोष	लाभ विज.	लाभ विज.	सुख सन्तोष

आय-व्यय का विशेष फल :—अपनी राशि के आय-व्यय को देखें। सामान्य रूप में आय से व्यय कम होना ठीक है। विशेष रूप में आय व्यय को आपस में जोड़कर १ कम-कम करके ८ से भाग दें, यदि १ शेष बचे तो लाभ, २ से सुख सौहार्द, ३ से क्लेश व चिन्ता, ४ से रोग कष्ट, ५ से बदनामी, ६ से यश सन्मान, ७ से विजय व लाभ तथा ८ या ० शेष बचे तों हानि होती है। सारांश यह है कि सामान्य व विशेष दोनों विधियों से शुभ हो, तो अधिक शुभ, अशुभ हो तो विशेष अशुभ तथा एक विधि से अशुभ दूसरी से शुभ हो मध्यम फल होंगे। यदि १,२,६,७ शेष बचे तो इस वर्ष में भाग्योदय, लाभ व धन्धे में प्रगति होगी। ३,४,५,० शेष बचे तो व्यर्थ ही धन का अपव्यय बढ़ेगा, चिन्ता बनी रहेगी ॥ ऊपर दिये गये चक्रों से सब सुस्पष्ट है।

—: विषुवति संक्रान्ति चक्र व फल :— ⓐ

स्थान	मेष संक्रान्ति वशात्	फल	तुला संक्रांति वशात्
शीर्ष (मस्तक) में	मू., ज्ये., अनु. वि., स्वा., चि., ह.,	भूमि लाभ, सुख	चि., ह., पूफा. उफा. मघा, श्ले. पुष्य
मुख में	मघा पूफा. उफा.	अच्छाभोजन पांडित्य	मृग., आर्द्रा. पुन.
हृदय में	मृग., आ., पुष्य, पुन. अश्ले.,	धनप्राप्ति, विजय	रे., आ., भ., कृ., रो.
दक्षिण हस्त में	भ., कृत्तिका, रोहणी	स्त्रीसुख, दाम्पत्य प्रेम	शत., पूभा., उभा
वाम हस्त में	उभा., रेवती. अश्विनी	रोग, दरिद्रता	उषा., श्रव., धनि.
दक्षिण पाद में	धनिष्ठा. शत., पूभा.	यात्रा में कष्ट, व्यय	ज्ये., मूल., पूषा.
वाम पाद में	पूषा., उषा., श्रवण	ज्वरादि प्रकोप, दुःख	स्वा., विशा., अनु.

शास्त्रोक्ति—कपाले भूलाभस्तदनुवदनेपण्डितवरो. धनाध्यक्षो वक्षेऽनुपमवधू दक्षिणकरे।
ⓐ करे वामे भैक्ष्यं भ्रमणमथवा दक्षिणपदे, पदेवामे मृत्युर्निजनिज नक्षत्राद्गणनया ॥

—: अथ गुरु-शनि फलम् :—

गुरु—इस वर्ष के प्रारम्भ में देवगुरु 'बृहस्पति' तुला राशि (के १५'४वें अंश) में तथा २५ नवम्बर ८२ गुरुवार भा० स्टै० टा० से घं. २९।२९ बजे वृश्चिक राशि में प्रवेश करके वर्षान्त में वृश्चिक राशि (के १७वें अंश) में अपनी स्पष्ट गत्या गमनशील रहेंगे। तुला के गुरु में देश का भविष्य सामान्यतया ठीक है। वर्षा ठीक तथा समय से होगी, मंजीठ नारियलादि पदार्थ मँहगे होवे, राजा लोग परस्पर युद्ध में तत्पर होने लगें। घी तैल तथा अन्य रसादि पदार्थ अधिक मँहगे नहीं होंगे, मार्गशीर्ष व पौष महीनों में धान्य सस्ता रहेगा (संग्रह करना लाभदायक होगा) पाँच माह बाद भाव बढ़ेगा। किसी प्रदेश में (विशेषकर दक्षिणपूर्व में) छत्रभंग या अन्य प्रकार की अराजकता होगी। रसादि पदार्थों के सस्ते होने तथा धातुओं के मँहगा होने से इसके विक्रेताओं को लाभ होगा।

—: शास्त्रोक्ति :—

गुरोस्तुल्लायां मेघाख्य तक्षकोवत्सरोऽश्विनः (चैत्र)।
तद्गातिवृष्टि मंजिष्ठ नारिकेलसमर्घता।
अन्योन्य राज्य युद्धानि समर्घताघाज्यतैलयोः।
मार्गशीर्षे तथा पौषे द्वये धान्यस्य संग्रहः ॥
लाभः स्यात् पंचमेमासे मार्गात्प्रारभ्य चैत्रतः।
छत्र भंगोऽपिवा राजविग्रहः क्वापि मंडले।
रसक्रयाणकादीनां संग्रहेण चतुर्गुणः।
लाभश्चतुर्थके मासे धातूनां च समर्घता ॥

वृश्चिक राशि के गुरु में खण्ड वृष्टि, फसलें कम तथा भयोत्पातादि अधिक होवें। गृह कलह, मँहगाई से प्रजा संत्रस्त रहे। सोना चाँदी कांसा ताँबा तिल तैल घी श्रीफल कपास नमक श्वेत वस्त्र सभी मँहगे बिके। पशुओं में भैंस बैल घोड़े आदि सस्ते बिकने लगें। मध्य भारत में प्राकृतिक पीड़ा महामारी तथा मुसलमान-प्रधान भूभागों में भयंकर उत्पात युद्ध व मार काट तथा न समझ में आने वाली बीमारियाँ होंगी। कहीं शासन भंग होन के से आसार दीखेंगे, अल्प वृष्टि व स्त्री रोगों से मरु व नागपुर प्रदेश की प्रजा क्लेशित रहेगी.

—: शास्त्रोक्ति :—

वृश्चिकस्थे गुरौ वृष्टिर्धान्यमल्पं भयं महत्।
गृहे परस्परं वैरमष्टौ मासा न संशयः ॥ →

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आद्राश्विनकार्तिकाख्या-
स्त्रयोमासा महर्घता ।
हेम रूप्यं कांस्यताम्र
तिलाज्य श्रीफलादिषु ॥

महर्घं गुरु कार्पास
लवणश्वेत वस्त्रकम् ।
महिषी वृषभा अश्वाः
समर्घाम्भ्यमण्डले ॥

पीडा स्यात् म्लेच्छ लोकानां
महोत्पातश्चसंभवेत् ।
देशभंगोऽप्यल्पवृष्टिः
स्त्रीणामपि च दुःखिता ॥

मरौ नागपुरे देशे
भवेत् क्लेशाकुलाः प्रजाः ॥

शनिः—शनि देव वर्ष के प्रारम्भ में कन्या राशि में विराजमान हैं, तथा ५ अक्तूबर १९८२ को भा० स्टै० टा० से घं. २१।२९ बजे अपनी स्पष्ट गति से तुला राशि में प्रवेश करेंगे, कन्या राशि के शनि का फल सामान्यतया ठीक नहीं रहा है। सभी लोग उसका अनुभव कर रहे हैं और बहुत कुछ कर चुके हैं। इसका फल यह भी है कि देश में सर्व-सम्पदा के रहते हुए भी प्रजा क्लेशित सी रहती है। सभी पदार्थों में भयानक तेजी आती चली जाती है। अनेक प्रकार के विग्रह तथा परिवर्तन देखने को मिलते हैं। लगभग यही फल तुलास्थ शनि के भी हैं। जैसा कि कहा भी है :—

फल—लक्ष्मीं याति नाशं हयवरदलितं विग्रहं तत्र कुर्याद्वस्त्रं धातुरौप्यं गजहयवृषभं छागलं माहिषं च ॥
मंजिष्ठाकुंकुमाद्यं रसकस सहितं यान्ति सर्वैमहर्घंकन्यायां सूर्यपुत्रे सकल जनसुखं संग्रहेत्सर्वधान्यम् ॥ } कन्या में शनि

धान्यानां च महर्घता गरगरलधरा क्लेशपूर्णाश्चदेशाः पृथिव्याकम्पमाशा सकलमुनिवरैर्देह पीडापिनत्यम् ।
सर्वे ते यान्ति नाशं नरपुरनगराण्यम्बुदोऽप्यलतोयाश्चबाधातो जनानां सुखधनरहिताः सूर्यपुत्रे तुलायाम् ॥ } तुला में शनि

—: प्रत्येक राशि के लिये गुरु. शनि एवं राहु का फलाफल :—

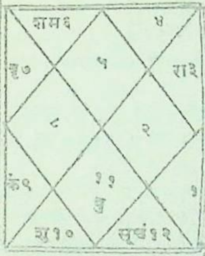
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
वृश्चिक का गुरु	दुश्चिन्ता अपव्यय हानि	लाभ हर्ष भाग्योदय शुभ	सद्व्यय प्रगति लाभ	भाग्य-कर्म हर्ष-लाभ सौख्य	गृहपीड़ा सन्तति कष्ट	धर्मरुचि सुसंगति लाभ	पदोन्नति कार्यसिद्धि विजय	हानिकष्ट मनोव्यथा अपयश	सामान्य लाभालाभ व हानि	अभीष्ट सिद्धि कार्य लाभ	पदोन्नति धन-यश भ शुभ	शरीर कष्ट धर्म में रुचि
तुला का गुरु	सम्मान व दम्पति सु. लाभ	रोग शोक शत्रुकृत कष्टादि	सामाजिक सुयश पुत्रसौख्य	धनहानि विरोध अपव्यय	भयादि रोगोपद्रव चिन्ता	धनधान्य लाभ सुख यश	अरिष्टादि भयप्रद उद्वेग	देह पीड़ा भयकारक यात्रा व्यय	सुख लाभ सम्मान प्रतिष्ठादि	अर्थ नाश राज भय कर्म हानि	धर्म रुचि मान प्राप्ति सुयश	मृत्युसम कष्ट रोग अपव्यय
कन्या का शनि	सुख यश प्रतिष्ठा हर्ष लाभ	मनस्ताप सन्तति कष्ट	रोगोपद्रव शत्रुबाधा हानि	लाभोन्नति सर्वसिद्धि सौख्य	विपत्ति अपव्यय दुश्चिन्ता	पराजय हानि दुःख अपवाद	शत्रु बाधा धन-धर्म हानि कष्ट	अभीष्ट सिद्धि हर्ष विजयादि	सामान्य लाभ हर्ष प्रतिष्ठा	क्रोध व्यय असंतुलन अति कष्ट	शरीर कष्ट अपव्यय दुश्चिन्ता	तनाव व कलहोद्वेग अपव्यय
तुला का शनि	दायकारक नाना रोग उद्वेग	सुख शान्ति लाभादि धनप्राप्ति	धनहानि पुत्रकष्ट अपमान	शत्रुविरोध अपव्यय नानाकष्ट	सुखार्थ लाभ सम्मान	शोकादि अपव्यय चिन्ता	अनेक कष्ट मानसिक कुविचार	अति कष्ट अर्थ नाश चोट रोग	सुखादि वित्त लाभ यश	कुविचार मातृ कष्ट अपयश	पापप्रद अपव्यय अतिकष्ट	पीड़ा शत्रु बाधा रोग व्रण
मिथुन का राहु	अतिशुभ विजय धनाप्ति	अतिदुख व्यय व अपमान	हानि कष्टभय रोग	अपमान अपव्यय अशुभ	निरोगता धनप्राप्ति शुभ	विरोध शोककष्ट रोग	हानि पुत्र-कष्ट व्यय	सौख्य लक्ष्मी प्राप्ति	दम्पति कष्ट ज्वरादि	सुख व भय सम कष्टकर	पापकर्मों में रुचि यात्रा	राजभय सम्मान सुख

शनि का विशेष विचार :—

जब तक शनिदेव कन्या राशि में भ्रमणशील रहेंगे तब तक मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ राशि वालों को अशुभ फल दिया करेंगे। इनमें से सिंह, कन्या, तुला वालों को साढ़ेसाती तथा मिथुन—कुम्भ को ढैया रहेगी। इस बीच मिथुन, कन्या, कुम्भ राशि वालों को शनि महाराज कमर दर्द, वायु विकार, अस्वस्थता, आर्थिक संकट एवं व्यर्थ यात्राओं से, तुला को इस सब के साथ अरब्य तथा सिंह राशि वाले लोगों को सभी प्रकार के कष्टों से भी परेशान करेंगे। तदुपरान्त तुला के शनि में कन्या, तुला, वृश्चिक राशि वालों को साढ़ेसाती तथा कर्क, मीन राशि वालों को ढैया रहेगी। इन राशियों पर भी शनि देव की कृपा से व्ययाधिक्य, अस्वस्थता, गुप्तेन्द्रियजन्य रोग, यात्राओं में कष्ट, व्यर्थ परेशानी, न्यायिक उलझनें एवं वायु-विकार से कष्ट होता रहेगा। हनुमत्स्तोत्र, शनि स्तोत्र, महामृत्युंजय जप, हनुमत्बाहुक व हनुमान चालीसा के पाठ से शनि देव कुछ-कुछ प्रसन्न हो [illegible] भी लाभदायक रहता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वर्ष लग्न कुण्डली



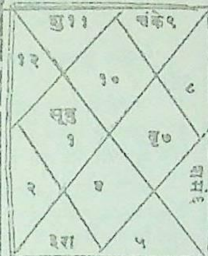
२५मार्च१९८२भा.स्टै.टा.
घ. १५।४७

❀ ग्रह स्थिति ❀

ल.	४	७	१	२३	ल.	९	२४	११	११
सू.	११	१०	५८	५	सू.	०	०	०	०
चं.	११	१०	५०	५	चं.	८	१	१४	२७
मं.	५	१९	२	३३	मं.	५	११	४५	२०
बु.	१०	२४	५३	१८	बु.	०	२	२४	०
बृ.	६	१५	२६	०	बृ.	६	१३	२३	०
शु.	९	२४	३७	३६	शु.	१०	१४	४	०
श.	५	२९	२५	०	श.	५	२४	५५	०
रा.	२	२५	१०	०	रा.	२	२४	८	०
के.	८	२५	१०	०	के.	८	२४	८	०

R.A.M.C.	R.A.M.C.
घं ३।४४।९३	घ.११।४६।४४

वर्षेश लग्न कुण्डली



१२।१४ अप्रैल१९८२
भा.स्टै.टा.घं.२६।४२

इस वर्ष का वर्ष प्रवेश (सम्वत् २०३८ का पर्यान्त) चैत्र कृष्णा १० गुरुवार को तदनुसार दिनांक २५ मार्च को भा० प्र० समय से दिन के ३ बजकर ४७ मिनट पर हुआ है। पंचांग केन्द्र स्थल के पूर्वीय क्षितिज में उस समय सिंह लग्न का ७°।१९'।२३" अंशादि तथा दिल्ली में ४°।४९'।५४" अंशादि उदय हो रहा है। वर्ष प्रवेश के समय सिंह लग्न का फल शास्त्रों में सामान्यतया ठीक ही है। यथा—

सिंहलग्नोदये यस्यां दक्षिणभयमुदीर्यते। धान्ये समर्घता मास षट्कं यावद्धनो महान्॥
पश्चिमायां धातु वस्त्रफलादीनां महर्घता। उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च॥
पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिः श्रेयोऽग्रे मास पंचकात्। मध्यदेशे राजयुद्धं मास पंचकमुद्धतम्॥

अर्थात् वर्ष प्रवेश के समय यदि सिंह लग्न हो तो दक्षिणी प्रदेशों में सर्व भय की अधिकता रहती है। छः मास तक धान्यादि सस्ता रहता है। संग्रह करके बाद में अच्छे धन की प्राप्ति होती है। पश्चिमी प्रदेशों में धातु-वस्त्र व फलादि पदार्थ काफी मँहगे रहते हैं। उत्तरी भाग में वर्षा अधिक होने से हानि होती है। परन्तु राज्य व प्रजा को सदा सुख रहता है। पूर्वी प्रदेशों में कृषि आदि की उपज तथा अन्य उपलब्धियाँ आधी ही होती है। परन्तु ५ माह बाद कल्याण होता है। देश के मध्य भागों में राज्यों की स्थिति युद्ध काल की तरह हो जाती है। ५ महीने बड़े कठिन रहते हैं। इस वर्ष के वर्षराज शुक्रदेव जहाँ एक सौम्य ग्रह हैं वहाँ महामात्य मंगल क्रूर ग्रह तो हैं ही उन्होंने शनि जैसे पापी ग्रह से भी गठबन्धन किया हुआ है। शनि को इस वर्ष एक भी अधिकार (पद) प्राप्त नहीं हो पाया है। इस प्रकार मंत्री मंगल का ऐसे असन्तुष्ट ग्रह से गठबन्धन करना राष्ट्रहित के लिए ठीक नहीं है। धन (कोष) स्थान पर इसका सीधा प्रभाव आर्थिक परेशानी, मुद्रास्फीति में विषमता एवं ऊँचे-ऊँचे ऋणों पर पड़ेगा। देश को किसी बड़े राष्ट्र से या अन्तर्राष्ट्रीय बैंक से [illegible] आर्थिक ढाँचा स्थिर नहीं हो पायेगा। चूँकि शनि + मंगल का शत्रु योग भी है अतः ब्लैकियों, जमाखोरों व काला बाजारियों को विशेष परेशानी होगी। अधिकांश भाग शासन लेहीलेगा। पैट्रोलियम व विद्युत उत्पादन में कमी बनी रहने के कारण इन पदार्थों के मूल्य स्थिर नहीं हो पायेंगे। सभी अधिकारी लोग समाज कल्याण की बातें तो खूब करेंगे भी और विशेष सोचेंगे भी परन्तु सभी अंगों का वास्तविक सहयोग शासन को नहीं मिल पायेगा। विपक्ष का दल सदैव ही विध्वंसात्मक होगा। इस वर्ष शुक्र ने राज्येश होते हुये भी २ और पद (सिंचाई विभाग व अन्न विभाग) भी लिए हैं। प्रत्यक्ष सिद्ध है कि वर्षा पर्याप्त होकर धन-धान्य की सतत वृद्धि होगी। फसलों के भावों में कुछ गिरावट आयेगी। विदेशों से अन्न नहीं मँगाना पड़ेगा। वायुमंडल फल विभाग व सैन्यसंगठन चन्द्र के पास है। सेना का मनोबल ऊँचा रहेगा। नये शस्त्रास्त्रों की होड़, खरीद आदि का वातावरण बना रहेगा। भारत की राजनैतिक विजय होना निश्चित है। बड़े बड़े राष्ट्र तक इसकी नीति को देखकर चकित हो जायेंगे। अर्थ मंत्री गुरु की अर्थनीति गूढ़ भाव से युक्त रहेगी। विश्व में तनाव-युद्ध एवं उपद्रवों का वातावरण रहते हुये भी भारत में शान्ति का सा वातावरण मिलेगा। शुक्र-मंगल (राजा + मंत्री) की पारस्परिक शत्रुता भारत के लिए अच्छी नहीं है। शुक्र दैत्य ग्रह हैं। अतः उच्च पदासीन प्रमुख शासकों की नीति यवन जाति, विदेशी जाति के लिए पक्षपात पूर्ण रहेगी, फिर भी भारत के मुस्लिम प्रधान भागों में साम्प्रदायिक दंगे होने में सन्देह नहीं। इसमें विदेशी हाथ के लिए शनि + मंगल का संकेत है। प्रमुख राजनैतिक पार्टियों में परस्पर मतभेद बढ़ेगा, शासन को गिराने व बदनाम करने के २–१ प्रयास बढ़े तो निम्नस्तर के किये जायेंगे। प्रमुख विरोधी नेताओं के प्रति शासन कुछ कड़े पग भी उठा सकता है। राष्ट्र की शिक्षा नीति के समग्र विकास के बारे में कुछ नवीन तथा ठोस पग उठाये जाने के संकेत हैं। सितम्बर से बाद का समय देश-विदेश के लिए युद्ध की विभीषिका के समान उग्र है। पश्चिमी देशों (ईरान, इराक, पाकिस्तान अफगानिस्तान आदि यवन प्रधान) में भयंकर उपद्रव, दैवी प्रकोप, मार-काट अग्निकाण्ड तथा विमान अपहरण व दुर्घटनाओं की प्रबलता होगी। पशुओं को संक्रामक बीमारी, अनाज की मँहगाई से प्रजा पीड़ित होगी, कहीं-कहीं (भारत के राज्यों व विश्व के देशों में) शासन परिवर्तन तथा राजनेताओं की हत्याएँ होना निश्चित है। नमक, कपास व रसादि पदार्थों का अभाव होने लगेगा और इनमें महा तेजी आयेगी। गुड़, चीनी तेल घी भी विशेष तेज होंगे। तुला का शनि उत्तरीय भूभागों में भयंकर हाहाकार करेगा। म्लेच्छों के लिए जीवन मरण का समय रहेगा। किसी प्रदेश के मुख्य मंत्री या अन्य कोई बड़ा नेता अथवा विश्व स्तर के किसी नेता की हत्या या मृत्यु (हृदय गति रुकने से) होगी। मध्य भारत में उपद्रविक समय होगा। इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग अधिक होंगे। ज्वरप्रकोप की एक लहर सी चलेगी, लोगों को कमर दर्द की शिकायतें रहेंगी। मिथुन, वृश्चिक, धनु, मीन राशि वाले लोगों को चोट-भय से कष्ट होगा। शासक वर्ग की प्रजा की [illegible] व [illegible] का विशेष ध्यान रखना होगा। अन्यथा—छत्राभिमास, विश्व-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

घस्र पक्ष, एक मास के दो ग्रहण, ५–६ ग्रहीय योग भयकर करामातें दिखाकर सत्ता को गिराने में सहायक होंगे। विरोधी पक्ष (शनि) इसमें जी जान से जुट जायेगा। प्राकृतिक प्रकोप–जैसे भूकम्प, बाढ़ चक्रपात एवं सूखा भी प्रजा को चैन नहीं लेने देंगे। अतः शासक वर्ग सावधान रहे। प्रजा को भी जागरुक रहना होगा।

मास-फल

चैत्र—वर्ष के प्रारम्भ के समय से ही शनि-मंगल का योग चालू है। यह योग ३ दिसम्बर १९८१ से आरम्भ हुआ था और २२ सितम्बर १९८२ तक रहेगा। इसके प्रभाव के कारण प्रजा में बना हुआ भय व उमस का वातावरण और अधिक बढ़ेगा। विरोधी लोग अनेकानेक कुचालें चलेंगे। प्राकृतिक तथा भौतिक उत्पात्, मोटर, रेल व यान दुर्घटनाओं की वृद्धि होगी। पेट्रोलियम पदार्थ, अनाज, रुई, रसकस, बिनौला, तेल, घी, पशु, सोना, चाँदी, काली दालें, कम्बल व बिजली का सामान तेज होगा, गेहूँ समान रहेगा। राजाओं, व्यापारियों के लिए कष्टकर समय है। अप्रेल प्रथम सप्ताह में भाव पलटने की सम्भावना है। हल्की बूँदा-बाँदी सामान्य वेग की आँधी से कहीं हानि होगी व अग्निकाण्ड की सूचनाएं मिलेगी। चैत्रकृष्ण (२०३८) में तिथि की वृद्धि तथा चैत्र शुक्ल में तिथिक्षय के कारण कम पैदावार का योग दृष्टव्य है—

चैतबदी में तिथि बढ़े, तथा सुदी घटि जाय।
पैदावारी कम रहे, खड़ा फसल हट जाय॥

कन्या राशि में शनि + मंगल के एक साथ वक्री होने से राजा-प्रजा में अशान्ति, हिंसा व अग्निकांड व यान दुर्घटनाओं का योग है। "कन्यायां मीन सिंहे वृष धनुषि-यवा वक्रौ भौम मन्दौ, पृथ्वीशाः क्रूरूरा बहुरिपुदलिता विग्रहश्चैव पीडा। "दुर्भिक्षं सस्यनाशो ग्रहगतिभयदापित्त रोगाः प्रजानां पीड्यन्ते चात्रिगोत्रानृपमहिषगजास्तच्चिवृत्तौ तु यावत्"॥ अनेक रोग भी होंगे व भय का वातावरण बना रहेगा। हस्तगत शनि भी ठीक नहीं है।

वैशाख मास—इस मास में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ गेहूँ, चावल, घी, तेल, चीनी, सोना चांदी, बारदाना व मूँगफली आदि पूर्ववत् तेज रहेंगे। गुरु के वक्री होने से कुछ मंदी रहेगी जो नगण्यवत् है। प्राकृतिक प्रकोप होंगे। देश के दक्षिणी भागों में कहीं हल्के भूकम्प के झटके, कहीं राजनैतिक विद्रोह, कहीं अत्यधिक सूखा व आंधी होगी। वर्षा के कारण गेहूँ की फसल को हानि होगी। अग्निकाण्ड की दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। प्रजा संत्रस्तसी रहेगी। भावों में घटाबढ़ी अधिक चलेगी। अप्रेल के अन्त में तीव्र प्रकार आँधी व वर्षा से कहीं हानि एवं कहीं चैन मिलेगा। हस्त नक्षत्र में शनिदेव का भ्रमण भी सामान्य अशुभ फलदायक है। "यदा हस्त गतः सौरिः प्रजानां संक्षयो भवेत्। धेनु विप्रादि नाशः स्यादल्प वृष्टिर्भवेत्तदा।" वर्षा कम, प्रजा को कष्ट एव गायों को रोग होवें। आगे कृष्ण पक्ष में तिथि की वृद्धि तथा क्षय एक ही पक्ष में होने से सभी वस्तुओं में कुछ सस्तापन [illegible]

"जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाहि में घटि जाय।
सभी वस्तु मन्दी बिकें मँहगाई हटि जाय।"

वैशाख शुक्ला पंचमी को बुधवार होने से वर्ष में आँधी-पानी का प्रकोप अधिक रहेगा।

"पाँचें वैशाखे सुदी बुधवारी जिस वर्ष। आँधी-पानी-वायु का रहता है संघर्ष" २८ अप्रेल से समय कुछ ठीक चलेगा कुछ मंदी का समय आ रहा है; (इस मास के) पाँच शुक्रवार भी सुख शान्ति में बढ़ोत्तरी करेंगे।

ज्येष्ठ मास—राजकीय व्यवस्था में अनेकानेक सुधारों की योजनाएं बनेंगी जिनमें से अधिकांश प्रयोग में नहीं आ पायेंगी, नेता दल एक दूसरे की निन्दा करने में प्रवृत होंगे जिससे जनता में अशान्ति प्रत्यक्ष दिखाई देगी, समझ में न आने वाले ज्वरादि रोग, अग्निभय एवं प्रबल वायुप्रकोप से जन-धन की हानि होगी। लू लगने की अनेक घटनाएं होंगी, धान्य, अलसी, मूँग, मोठ-दालें तेज होंगी, सभी प्रकार की धातुओं में भी तेजी दिखाई देगी, चाँदी में १०–२० रुपये तक मंदी होकर फिर तेजी चमकेगी, बीजापुर, पूना (महाराष्ट्र) के लिए कष्टकर समय है। लाल रंग की वस्तुओं को बेचने से अच्छा लाभ मिलने की सम्भावना है। गरमी का प्रकोप आश्चर्यजनक रूप में बढ़ जायेगा, तेजी का नफा अभी ले ले क्योंकि आगे को मंदी के आसार हैं। इस मास के ५ रविवार व ५ शनिवार अनेक प्रकार के रोग शोक व विग्रहोत्पात् करेंगे। "शनिवारा यदा पच जायन्ते रवि पंचकम्, महार्घ दि भवेद् धान्यं रोग शोकाकुला मही॥" कृष्ण पक्ष में पड़वा की वृद्धि व शुक्ल में द्वितीया की हानि भी महगाई करेगी, सावधान एवं राष्ट्रीय नियमों में फेरबदल होने का योग है।

आषाढ़ मास—वैसे तो ग्रहयोग मंहगी व सस्ती दोनों प्रकार के हैं; परन्तु सस्तेपन का लाभ जनसामान्य तक नहीं पहुँचेगा, रसादि पदार्थ, घी, तेल, दालें (मूँगादि), लाल रंग की वस्तुएं, चौपायें पशु, गुड़-खाँड़ में भयकर तेजी के योग हैं। कृष्ण पक्ष षष्ठी के साथ शनिवार का योग गेहूं में मंदी (सग्रह करने) का आभास दिलाता है। कार्तिक में बेचने पर अच्छा लाभ मिलेगा, "षष्ठी आषाढ़े बदी जो शनिवारी आव। गेहूँ संग्रह कीजिए कातिक दुगुना भाव।" साथ ही कृष्णा १४ को रोहिणी नक्षत्र के होने से देश में उपद्रव, झगड़े व सशस्त्र क्रान्तियाँ होंगी और कर्फ्यू तथा कन्ट्रोल से लोगों को कष्ट होगा, "साढ़ बदी चौदह तिथि होय रोहिणी योग। कर्फ्यू अरु कन्ट्रोल से दुःख पावें सब लोग।" शुक्ल पक्ष की १४ को सोमवार होने से कुछ मंदी का योग है परन्तु शुक्ला ३ का क्षय घी, मूँग तथा दालों को मंहगा करेगा। "किसी मास में तीज या सुदी चार घटि जाय। ग्राहक माँगे मूँग घी विक्रेता नटि जाय॥", मास के पाँच सोमवार शुभ व पाँच मंगलवार होने से अशुभ अर्थात् मध्यम या दोनों फल होंगे, शासक वर्ग को कुछ कठोर निर्णय करने ही पड़ेंगे, गणमान्य लोगों की यान दुर्घटना का योग भी है।

श्रावण—इस मास के पांच [illegible] सामान्यतया शुभ फल देने वाले हैं। "बुधस्य पंचवाराः स्युर्यत्रमासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते" अतः धान्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

आदि के भाव सम रहेंगे, न तो अच्छा मन्दी होगा और न विशेष तेजी हो जायगा, वर्षा यत्र तत्र होगी। कहीं कहीं सूखे के आसार दिखाई देंगे, मिथुन राशि में बुध के अस्त होने से राजा (शासक वर्ग) को कष्ट रहेगा। रूई, घृत तथा अफीम आदि में काफी घटा बढ़ी रहेगी, कर्क राशि के बुध भी प्रजा के लिए कष्ट कारक हैं। अश्लेषा के बुध में (२९ जुलाय) कहीं-कहीं भयंकर वर्षा से जन-धन की हानि होगी, बाढ़ें आयेगी। "आश्लेषायां महावृष्टिर्धान्यनाशः प्रजाभयम्" पूर्वी प्रदेशों में बाढ़ादि से (कहीं-कहीं सूखा) भुखमरी की दशा होगी परन्तु पश्चिम में सुव्यवस्था बनी रहेगी, धान्य, गल्ला, किराना, बारदाना, सूत, पाट, सोना, चांदी रूई घी तेल व सरसों में १०-१५ दिन की घटाबढ़ी चलेगी, १९ जुलाय के आस-पास से बहुत वर्षा, जलोपजीवी लोगों, साधुमहात्माओं, को पीड़ा तथा उत्तर पूर्वीय भाग में उपद्रव होंगे। कोशल, कलिंग तथा दक्षिणी देशों में भी अराजकता पनपेगी। २२ जुलाय से तुला के मंगल में उड़द मूँग कपड़ा, रूई आदि तथा लाल रंग के पदार्थ मँहगे होंगे, "भूमिपुत्र स्तुले जातः सर्वधान्य महर्घता। माषा मुद्गास्तथा सूत्र कार्पासादि विशेषतः॥" ३० जूनको चित्रा में शनि का प्रवेश भी "यदा चित्रागतः सौरिः छत्र भंगो भवेत्तदाः बहुक्षीर घृतागावो बहुवृष्टिर्भवेभ्रयम्॥" सूचक है। छत्रभंग, अधिक वर्षा एवं धनहानि होवे।

भाद्रपद—इसमें पांच गुरुवार होने से सामान्य अशुभ तथा ५ शुक्रवार होने से शुभ समय है। अतः मास फल मध्यम रहेगा। तुला राशि में मंगल + गुरु का योग कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि करने वाला है। सभी व्यापारिक वस्तुओं जैसे—मूँगफली, सोना, चांदी गल्ला किराना अनाज रूईपाट, बारदाना अलसी मूँगफली शेयर कपूर गुड़, खांड में विशेष घटा बढ़ी चलेगी। ९ अगस्त से वायु-वृष्टि में तेजी आने लगेगी। कुछ स्थानों में लोग बूँद के लिए तरसेंगे। इस पक्ष में किसी नामी चोर, हत्यारे या देशद्रोही के पकड़े जाने की पूर्ण सम्भावना है। मासान्त में वर्षा कम होगी। चौपाये पशु बीमार रहेंगे। राष्ट्रों में एक दूसरे से भेद नीति बढ़ेगी। सर्वत्र कूटनीतिज्ञ लोग अपनी चालें दिखायेंगे, विदेशी जासूस लोग सक्रिय हो जायेंगे। इस तरह देश का भविष्य अच्छा नहीं लग रहा है। प्राकृतिक प्रकोपों से भी जन-धन की हानि होगी। बाढ़ व अनावृष्टि से खेती से हानि होगी, भाद्रकृष्णपक्ष प्रतिपदा को गुरुवार श्रवण नक्षत्र का योग शुभ फल दायक है। "भादव पड़वा श्रवण युत जो होवे गुरुवार। बढ़े धान्यधन सम्पदा उत्तम पैदावार।" अर्थात् चौमासी फसल अच्छी होगी, प्रजा सुखी रहेगी। गुरुवारी अमावास्या भी उत्तम फल कारक है। शुभा वृष्टिः सुभिक्षं च कल्याणं दुख नाशनम्, आरोग्यं च प्रजास्वस्था भाद्रमा स्याद् गुरौ यदि॥ प्रजा सर्व प्रकार से सान्त्वना पायेगी॥ शासक वर्ग का ध्यान देश की समस्याओं के प्रति जायेगा॥

आश्विन मास—(७ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक) इस मास में ५ शनिवार व ५ रविवार का होना, छत्र भंग, दुर्भिक्ष, अराजकता, अग्निकांड, दुर्घटनायें तथा अग्निकोण (आसाम-नेपाल आदि) के प्रदेशों के लिए सत्ता परिवर्तन कारक है। अमावास्या को ही सूर्य की कन्या संक्रान्ति होने से खर्पर योग बना है। यह योग बहुत ही अशुभ है। आगे भी ४ मास तक और है। "जिनवारां रवि संक्रमै तिन्हें अमावस होय। खप्पर हत्थी जन फिरै भीख न घालै कोय।" अर्थात् इतना कठिन समय आ जाता है कि माँगने पर भी भीख नहीं मिलती है। इसी अमावस को कन्या में बु. श. च. सू. इन चारों का योग भी बन रहा है, "एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वां रुधिरेण जलेन वा।" यह योग आगे पंच-ग्रही होकर अशुभ से अशुभतर होता चला गया है, द्रविण सौराष्ट्र में विशेष संकट रहेगा। ब्राह्मण लोगों को भी चिन्ता रहेगी। आश्विन अधिक मास (संसर्प) भी है। इससे अगले पक्ष कार्तिक में त्रिंश दस्र पक्ष भी मँहगाई करने वाला है। प्रजा में नाना प्रकार के उपद्रव, आधिव्याधि, रोगभय, भूकम्प, बाढ़ एवं किसी संक्रामक रोग से अनेक कष्ट होंगे, त्राहि त्राहि होगी, शासन भी व्याकुल हो जायेगा, तेजी विशेष बढ़ेगी-घटेगी। पश्चिमी राष्ट्रों (भारत के पश्चिमी राज्यों) में विशेष राजनैतिक उथल-पुथल के आसार रहेंगे।

कार्तिक मास (संसर्प)—यह मास ही नहीं आगे पूरा वर्षोत्तरार्द्ध प्रजा के लिए चिन्ताकारक है। दक्षिणी पश्चिमी प्रदेशों व भूखण्डों में युद्धादि हलचलों, कर्फ्यू, प्राकृतिक प्रकोप, मँहगाई तथा किसी संक्रामक रोग से जन सामान्य संत्रस्त रहेगा। कुछ देशों के मुख्य लोगों को गोली मारी जायेगी या फाँसी लगेगी, मुस्लिम वर्ग में विशेष उत्तेजना रहेगी जो अन्ततोगत्वा विनाशक स्वरूप धारण कर लेगी। अनेक यवन प्रमुख देशों व भूभागों में जन-धन की हानि होगी, बम्ब विस्फोट होंगे, देश के मध्य भाग उत्तर प्रदेश हिमांचल में कुछ नयी व्यवस्थायें जन्म लेगी, कुछ राहत मिलेगी, मारवाड़ एवं पहाड़ी प्रदेशों में रोगोपद्रव होंगे, दुर्भिक्ष जैसा वातावरण बन जायेगा, मंगल का धनु राशि में गमन भी सभी प्रकार की वस्तुओं में तेजी बनाये रक्खेगा। यह मास त्रिंश पक्ष दस्र वाला भी है। "यदा च जायते पक्ष स्त्रियोदश दिनात्मकः। भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमाला युता मही।" अर्थात् सर्वत्र जनक्षय मार-काट विमान दुर्घटनायें व विस्फोटादि होंगे। मंगलवार की शुक्लनवमी मूंग आदि में मन्दी करेगी, संग्रह करने से बाद में लाभ होगा। "नवमी मंगलवार जो शुक्ला आश्विन मास मूंग मोठ चौला बरद संग्रह करो कपास।" परन्तु पांच रविवार छत्र भंग एव दुर्भिक्ष कारक हैं। अशुभ फलों की अधिकता रहेगी। शनि वृश्चिक की तुला में स्थिति अयोध्यादि स्थानों के लिए शुभ नहीं है।

"मन्दार सौरि—सुरराज मन्त्री यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्य लंकापुर मध्य देशे क्षुधाभयं शास्त्रं भयं करोति।"

मार्ग शीर्ष मास — इस मास में पांच मंगलवार छत्रभंग कारक हैं। "यत्रमासे मही सूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेण पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।" सर्वत्र अराजकता हड़तालें लाठीचार्ज, तोड़ फोड़ व दुर्घटनाओं का बोलबाला रहेगा। ता० १३ नवम्बर को घं. १२।१३ बजे से घ. २६।१७ बजे तक प्राचीन मतेन षड्ग्रही तथा नव्यमतेन सप्तग्रही योग बन रहा है। तुलाराशि का प्रभाव भारत के तीर्थ स्थानों पर विशेष है। अतः काशी, गया गमेश्वर अयोध्या, हरिद्वार व जगन्नाथपुरी में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्थिति बिगड़ेगी, भूकम्प एवं वज्रपातों के योग हैं। "ग्रहाणां यन्मासे ननु भवति पञ्चानां निवसतिस्तदा लोको योगः प्रबल पदभिन्द्रोऽपिकसते ॥ नृपाणां नाशः स्यात्प्रचलति वसुधा क्षुब्धलिनदी भवेल्लोको रंकः परिहरति पुत्रं च जननी ॥" अर्थात् प्रजा में सर्वत्र ही आधिव्याधि फैलेगी, मँहगाई से लोग विशेष चिन्ता युक्त होंगे। वैधृत्य में वर्षा की कमी तथा किसी राज्य में राजा (अथवा प्रमुख नेता) की मृत्यु होगी। सभी प्रकार के अनाज, जौ गेहूँ चावल दालें (चना, मटर उड़द मूँग मसूरादि) गल्ला किराना बारदाना मँहगा होकर फिर तेज होगा और कुछ समय तेज रहेगा, सोना, चाँदी, लोहा ताम्बा आदि प्रमुख धातुयें घी गुड़, तेल, कपास, रूई, पाट सन में मन्दी और तेजी साथ साथ चलेंगी। चांदी में मन्दी के योग हैं। आंधी-पानी का प्रकोप होगा। मलेरिया या तत्तुल्य बुखारों से लोग पीड़ित होंगे। डाक्टर लोगों के धन कमाने का योग है।

पौष मास:—सभी प्रकार से यह मास नेष्ट फल दायक है। इस मास पूर्व वर्णित खर्पर योग, सूर्य चन्द्र के दो ग्रहण, देवगण नक्षत्रों में शुक्रोदय, मंगल की मकर में स्थिति ये सब बातें अशुभ फल दायक हैं। "यदैक मासे ग्रहणं जायते चन्द्रसूर्ययोः। शस्त्रकोपैः क्षययान्ति सदा भूपाः परस्परम् ॥" राजाओं में युद्धादि भयकारक कृत्य होवें। मंगल की मकरस्थिति भी शुभ नहीं है "मकरे च स्थिते भौमे घृत तैल महर्घता। सुभिक्ष तत्र धान्यानां लोकानां दुःखपीडनम्" घी, तेल गुड़ शक्कर खाँड़ रूई आदि तेज रहेंगे, अन्नादि (गेहूँ चावल) में कुछ मन्दा परन्तु प्रजा को कष्ट होगा। परन्तु श्रवण का मंगल फिर भयंकर तेजी ला देगा। धनिष्ठा का मंगल पुनः सस्ता करेगा। "उदय-अस्त गुरु शुक्र जो होवे मंगसिर मास। भूखे मरते जन करें जाय विदेश निवास।" लोगों में अशान्ति, रोग, भुखमरी फैलेगी और इधर-उधर भटकेंगे, सर्वत्र ही भय असुरक्षा विग्रह, हिंसा का बोलबाला होगा। विपक्ष भी किंकर्तव्य विमूढ़ सा होकर कुछ नये प्रकार की चालों का जोड़ तोड़ लगायेगा, दिसम्बर से २४ मार्च ८३ तक का समय विश्व के लिए भयकारक है। प्रकृति भी नाराज रहेगी। संविधान में उलट फेर बदल सम्भवः है। स्वाति का शनि उत्तम फल देगा। परन्तु किसी बड़े नेता की मृत्यु होगी।

स्वात्यां चैव यदा सौरिः सुभिक्षं स्याद् धरातले।
भवत्यव न सन्देहो मृत्युः प्रिय जनस्य च ॥ मास फल मध्यम है।

माघ मास (क्षय)—शुक्लादि माघ में मकर कुम्भ दो संक्रान्तियों के हो जाने से क्षय मास हुआ है। पौषकृष्ण में भी खर्पर योग है। क्षयमास का फल समस्त संसार के लिये अशुभ है। यत्र-तत्र विद्रोह, युद्ध, हिंसा, मारकाट एवं दैवी-प्रकोप, यान रेल दुर्घटनाओं व उल्का पात से जन-जन सन्त्रस्त रहेगा, राजा प्रजा सभी मनमानी करेंगे कालाबाजारी-घूसखोरी बहुत बढ़ जायेगी, सर्दी की लहरों से भी अनेकानेक मृत्युयें होंगी। नाना प्रकार की बीमारियाँ, मँहगाई (घटा बढ़ी के साथ) व वस्त्रादि की तेजी होगी। कुछ राज्यों या देशों में शासन की उलट फेर होगी या ऐसी स्थिति आ जायेगी, सर्वत्र अशान्ति का वातावरण बन जायेगा, व्यापारिक क्षेत्र में भारी उथल-पुथल के आसार स्पष्ट हैं। चांदी में विशेष तेजी रहेगी जो मास के मध्य से कम होने लगेगी। लाइन देखकर काम करें।

फाल्गुन मास (प्रथम)—इस मास में ५ शनिवार एवं ५ रविवार तथा खर्पर योग तीनों ही अशुभ फलदायक हैं। शनि का वक्री होना भी मंदी के बाद तेजी को बढ़ायेगा। 'फाल्गुन अथवा चैत्र में शनि मंगल हो वक्र। मंदी रह करके चले फिर तेजी का चक्र।" कृष्ण पक्ष की षष्ठी को चित्रा नक्षत्र का योग उत्तम फलदायक है। "षष्ठी फाल्गुन वदी में चित्रा करे सुभिक्ष," अनाजों के भावों, धान्य, रुई, अफीम मशीनरी सूत पाट, बारदाना, तिल तेल सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि वस्तुओं में घटाबढ़ी चलेगी, फरवरी १२ से (शनि के वक्री होने पर) लम्बी लाइन की तेजी चलेगी मुख्यतः गेहूँ चावल दाल घी तेल शेयर तम्बाकू पशुओं को बेचकर लाभ कमावें, इस माह किसी महामारी जैसी बीमारी का प्रकोप भी रहेगा, मीन का मंगल मीन का शुक्र के साथ ही चन्द्रमा का योग चौपायें पशुओं में मंदी अनावृष्टि एवं अनाज में मंहगा करते हैं. "भौम शुक्र अरु चन्द्रमा मीन राशि को प्राप्त। पशु मन्दे वर्षा नहीं जगमें धान्य समाप्त।" कहीं कहीं युद्ध के आसार भी नजर आयेंगे और कहीं शीत के प्रकोप से बुखार होंगे, ओले बरसने का योग है।

द्वितीय फाल्गुन—इस मास में ५ चन्द्रवार शुभ फलदायक हैं। "सोमस्य पंच वाराश्च यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्य समृद्धिः स्यात् सुखी सर्वत्र मेदिनी।" धनधान्य की वृद्धि, धनागम एवं प्रत्येक प्रकार से सुख का योग है। मीन राशि का शुक्र भी सुभिक्ष कारक है। "मीन राशि गते शुक्रे सुभिक्ष प्रचुरं भवेत्। मेदनी सौख्य सयुक्ता……" मंगल के साहचर्य के कारण घटाबढ़ी होगी, सभी प्रकार के धान्य रुई, अफीम, लोहा, ताँबा, सोना, चाँदी आदि धातुएं सूतपाट बारदाना वा तिल तेल तेज होंये परन्तु मार्च १० ता. से पुनः सस्ते हो जायेंगे, रोगों में विशेष वृद्धि होगी, लोगों के पैरों में रोग होंगे, चोटें लगेगी तथा आपरेशन सम्बन्धी अनेक घटनाएँ सामने आयेंगी। कृष्ण प्रतिपदा को पूफा० नक्षत्र सौख्य कारक है परन्तु होली को उफा० नक्षत्र का अधिकांश भाग पूर्णिमा से युक्त है। पूफा० का थोड़ा भाग ही पूर्णिमा को मिला है। "क्रमश पूनम फागुनी पूफा. उफा. होय, प्रथम सुकाल विचारिये फिरि दुकाल जिमि जोय"॥ पूरण जब उफा० रहे पूनम फागुन मास। रसपदार्थ गुड़ खांड तिल तिलहन धान्य विनाश।" रसादि पदार्थों में सामान्य तेजी आयेगी।

चैत्र मास—इस मास में ५ मंगलवार एवं ५ बुधवार मिश्रित फलदायक है। प्रजा में कुछ असन्तोष एवं पीड़ा व्याप्त रहेगी, बालकों को रोगादि अधिक होंगे, सभी प्रकार की खाद्य वस्तुओं—गेहूँ चावल घी गुड़ तेल में कुछ मंदी के आसार दीखेंगे, बारदाना किराना, मूँगफली तिल सोना चाँदी, शेयर एवं सब्जी के भाव बढ़ेंगे, व्यापारी लोगों को कष्ट होगा, चैत्र कृष्ण में तिथि वृद्धि एवं चैत्र शुक्ल (२०४०) में तिथि का क्षय होना बहुत ही दुर्भिक्ष कारक है। "चैत वदी में तिथि बढ़े तथा सुदी घट जाय। पैदावारी कम रहे खड़ी फसल हट जाय"॥ ग्रीष्म की पैदावार में ओलों आंधी एवं वर्षा से हानि होकर मंहगा होने के आसार हैं। ॐ तत्सत् ॥

ऋषि अभिमत लखि ग्रंथ पढ़ि नाना विधि बहुबार।
[illegible] फल लिख्यो, भोलादत्त विचार ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: सम्वत २०३९ शके १९०४ का वार्षिक राशिफल :—

मेष—(चू चे चो ला ली लू ले लो अ) राशि के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य अच्छा है। आश्विन तक घर-परिवार मे सुख-सन्तोष एवं कार्यों मे सफलता मिलेगी। व्यापार व रोजी रोजगार में लाभ, सहयोग तथा हर्षोल्लास से मन प्रमुदित रहेगा। किसी रुके हुये कार्य या मामले में विजय प्राप्त होगी, शत्रुवश में रहेंगे, धनागम के नये स्रोतों की वृद्धि होगी, किसी विशेष कार्य से अथवा राजनैतिक प्रभाव से यश-सम्मान प्राप्ति की सम्भावना भी है। ५ अक्टूबर से तुला के शनि सप्तम एवं २५ नवम्बर से गुरु अष्टम में चलेंगे। अद्यावधि वर्ष का पूरा उत्तरार्द्ध अशुभ फलदायक है, दाम्पत्य सुख में गड़बड़, स्त्री (पति) को कष्ट, किसी गुप्त रोग की सम्भावना या वृद्धि, भाइयों को कष्ट रहने लगेगा और मनमुटाव बढ़ेगा। स्वास्थ में हानि एवं चोट, व्रण तथा खजली में चिंतित रहेंगे। पूरे वर्ष भर मन में कुविचार आयेंगे और अधर्म में रुचि बढ़ेगी। आर्थिक कष्ट अथवा व्यर्थ अपव्यय से दुःखी होना पड़ेगा। पीला पुखराज पहनने व गुरुस्तोत्र के दैनिक पाठ से कुछ शान्ति मिलेगी।

वृष—(इ उ ए ओ वा वी वु वे वो) राशि के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध ठीक नहीं है। विशेष रूप से सामाजिक अपयश, शैक्षिक अवनति का योग है। धन हानि, चोरी, स्त्री-सन्तान को कष्ट-रोग तथा घुटनो से पीड़ा होगी। ५ अक्टूबर तक पंचमस्थ शनि बुद्धि में अस्थिरता प्रदान करेंगे। विचारे हुये कामों के न बन पाने से मन अशान्त रहेगा। राजकीय न्यायिक संकट से भी सामना हो सकता है। व्यर्थ अपव्यय एवं व्यर्थयात्राओं से अधिक परेशानी रहेगी, परन्तु षष्ठस्थ तुला के गुरु शत्रुओं पर विजय दिलायेंगे। कार्तिक के बाद समय कुछ ठीक रहेगा, रुके हुये कामों के बन जाने, किसी लाभकारी मित्र से सुन्दर शुभ संयोग बनने, अचानक धनागम एवं व्यापार-रोजी रोजगार में नये स्रोतों के खुल जाने से घर-परिवार में हर्षोल्लास का वातावरण बन जायेगा। शत्रुओं पर विजय, शैक्षिक प्रगति, यशोलाभ एवं सार्वभौमिक उन्नति तथा सुख सन्तोष से हर्षित रहेंगे। पूरे वर्ष भर पारिवारिक अशान्ति एवं लीवर या उदर से मानसिक शान्ति नहीं मिलेगी।

मिथुन—(का की कू घ छ के को ह) ५ अक्टूबर तक चतुर्थ शनि की उतरती ढैया है। इससे कुछ परेशानी अनुभव करेंगे। फिर भी पंचमस्थ तुला के गुरु (२५ नवम्बर तक) बौद्धिक सफलता पुत्र या सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, धनागम तथा शुभ समाचारों से अच्छा समय व्यतीत होते हुये भी किसी न किसी प्रकार के व्यर्थ झंझट-विवाद सदैव लगे रहेंगे। इससे मन असंतुलित रहेगा। काम आधे बनेंगे। आधे में बिना बात की रुकावटें आयेंगी। कार्तिक के उपरान्त समय में और बिगाड़ आयेगा। स्वभाव में चिड़चिड़ापन, चिन्ता, गृहकलह स्वास्थ में गड़बड़ी से दुःखी रहना होगा। शत्रुओं से वाद-विवाद बढ़ जायेंगे, कार्यों में रुकावटें, माता-पिता को कष्ट, लगभग वर्ष भर ही लगा रहेगा, यदा-कदा चोट-चपेट, दुर्घटना, अग्निभय या गिरने [illegible] के प्रति सावधान रहें। नीलम, पुखराज और लाजवर्त (अथवा नवग्रह अंगूठी) पहनें। शनि, गुरु की शान्ति करावें।

कर्क—(ही हु हे हो डा डी डू डे डो) राशि के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य शुभ तथा बाद का समय अशुभ फलदायक है, शैक्षिक एवं बौद्धिक प्रगति के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध ठीक रहेगा। पूर्वार्ध में तृतीयस्थ शनि एवं चतुर्थस्थ गुरु पराक्रम, भूमि-जमीन-जायजाद से लाभ देंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सुख की प्राप्ति के साथ ही किसी रूप में वाहन सुख की भी उपलब्धि हो सकती है। रोजी रोजगार व व्यापारादि में सोचे नये कार्य कुछ रुक-रुक कर आंशिक रूप में पूरे होते रहेंगे। उत्तरार्द्ध में ५ अक्टूबर बाद शनि की ढैया रहेगी। असफलता, झगड़ा, मानसिक अशान्ति, शारीरिक कष्ट तथा शुभ कामों में रुकावटें बढ़ जायेंगी, सन्तान व पिता को कष्ट, माता को रोग, कमजोरी, धन व्ययकी अधिकता पूरे वर्ष बनी रहेगी, स्वाभाविक शान्ति के स्थान पर चिढ़ पैदा हो जायेगी। गुप्तेन्द्रिय में रोग, चोट का भय है। मुकदमे आदि से बचे रहना। नीलम पहनें तो शुभ है।

सिंह—(म मी मू मे मो टा टी टू टे) लगभग पूरा वर्ष ही अशुभ है। ५ अक्टूबर तक शनि की उतरती साढ़ेसाती है। सभी कार्यों मे बाधायें, असफलतायें लगी रहेंगी। स्वयं को भी अनेकानेक रोग, मानसिक तनाव, उलझन तथा भाइयों को भी कष्ट रहेगा, पूर्वार्द्ध में तो विशेष अपव्यय, पारिवारिक अशान्ति, कलह तथा व्यर्थ की यात्राओं से दुःखी रहना होगा। लीवर व पेट के रोग विशेष होंगे। ५ अक्टूबर या २५ नवम्बर के उपरान्त व्यापार में आंशिक उन्नति, न्यायिक सफलता तथा गये हुये धन (सम्पत्ति) के लौटने के संकेत हैं। शैक्षिक क्षेत्र में प्रगति, पद, प्रतिष्ठा, माता के स्वास्थ में उतार-चढ़ाव, मित्रों से सहयोग तथा सामाजिक सुयश मिलेगा। शासन सम्बन्धी मामलों से बचे रहना चाहिये। पीला पुखराज धारण करें। पूर्वार्द्ध में शनि की जपतप-पूजा शुभ रहेगी। समय मध्यम है।

कन्या—(टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) राशि वाले लोगों के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य शुभ है। शनि की मध्य साढ़ेसाती के कारण सामान्य लाभ के अवसर मिलते रहेंगे। किसी वैदेशिक कार्य अथवा वैतनिक कार्य में अवश्य ही सफलता मिलने के योग मिलेंगे, प्रयत्न करते रहें। औद्योगिक अथवा श्रम सम्बन्धी कार्यों में आंशिक सफलता ही मिलेगी। मित्रों के सहयोग की कमी के कारण बनते काम रुकते हुये से लगेंगे। मुँह का स्वाद बिगड़ा-बिगड़ा सा रहेगा। मानसिक-असुविधा, असंतुलन एवं क्लेश बढ़ जायेंगे। पूर्वार्द्ध में जो सफलतायें आदि मिल रही थी वे सब ५ अक्टूबर से कम होने लगेंगी। अशुभ विचार, अवनति एवं चिन्तायें बढ़ने लगेंगी। पूरे वर्ष भर पारिवारिक कलह (अशान्ति) बनी रहेगी। धन का विशेष व्यय संचित पूँजी को घटा देगा। स्वास्थ में विशेष गिरावट, अपचन, उदररोग, लीवर की गड़बड़ी तथा माता-पिता को भी कष्ट रहेंगे। मित्र विरोध होगा। शत्रु परेशान करेंगे। अग्निभय का भी डर है। ५ अक्टूबर से नवग्रह [illegible] या नीलम पहनना ठीक रहेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तुला—(रा री रू रे रो ता ती तू ते) राशि के लिये पूरा वर्ष अनिष्टकारी है, शनि की साढ़ेसाती से अनेक प्रकार के कष्ट होंगे, स्वास्थ में गड़बड़ी, वायु रोग, अर्थ संकोच एवं व्यर्थ हानि से मन खिन्न रहेगा। धार्मिक भावना प्रबल रहने पर भी कोई शुभ-धार्मिक कार्य नही हो पायेंगे। २५ नवम्बर से देव गुरु वृहस्पति धन स्थान पर चलेंगे। इससे व्यापार, रोजी-रोजगार में आंशिक सफलता मिलेगी। सोचे हुये कार्य कुछ बनते से लगेंगे। ५ अक्तूबर से शनि की मध्य साढ़ेसाती चलेगी। पशु-धन एवं कार्यहानि से चिन्तित रहना होगा, बन्धु-बान्धुओं से मनमुटाव, कलह एवं पड़ोसी से बैर की सम्भावना है। अतः सावधान रहें। स्वास्थ में विशेष गड़बड़ी होगी, पेट-लीवर के रोगों के प्रति उदासीन न रहें। शैक्षिक, राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में सफलता, यश व प्रतिष्ठा प्राप्त करने का सुयोग है। श्रम सम्बन्धी कार्यों में लाभ होगा। वाणी पर नियन्त्रण रक्खें। नीलम धारण करने, शनिस्तोत्र पाठ, हनुमानबाहुक या हनुमान चालीसा के पाठ से शान्ति होगी। वर्षफल नेष्ट रहेगा।

बृश्चिक—(तो न नी नू ने नो या यी यु) ५ अक्टूबर से शनि की प्रथम साढ़ेसाती चलेगी, अपव्यय स्वास्थ हानि, पारिवारिक कलह, सामूहिक कष्ट, कार्यहानि से बहुत ही खिन्न रहने का समय है। अधिक से अधिक प्रयत्न करने पर भी सफलता कम ही मिलगी। बन्धु बान्धवों से विरोध, मित्रों से अचानक ही अनबन हो जायेगी। घर में दाम्पत्य सुख घटेगा, मन में एक प्रकार का भय सा सदैव ही समाया रहेगा। मानसिक शान्ति कम हो जायेगी, रक्त चाप बढ़ जाने से अनेक बार कष्ट आयेंगे, अधर्म की ओर विशेष झुकाव हो जायेगा, परिवार में एक न एक व्यक्ति को सदैव ही ज्वर-पीड़ा लगा रहने से धन व्यय बढ़ जायेगा। किसी अच्छे कार्य में, भूमि जमीन जायजाद में उत्सवों में भी या सीमा से अधिक धन लगा देंगे। लीवर, अमाशय चोट-चपेट, अग्निभय, गिरने से शरीर में कष्ट होगा। भूख कम लगेगी। पाचन क्रिया बिगड़ जाने से दुःखी रहेंगे। पीला पुखराज, लाजवर्त या नीलम धारण करें। ब्राह्मणों को दान देवें। दुर्गापाठ करावें।

धनु—(य यो भा भी भू भे ध फ ढ) वर्ष का पूर्वार्द्ध विशेष शुभ तथा उत्तरार्ध सामान्य कष्ट कारक है। वात विकार, गैस ट्रबल, अपचन, स्त्री कष्ट एवं पारिवारिक अशान्ति से मन व्यथित रहेगा। कन्या का दशमस्थ शनि सामाजिक सुयश, प्रतिष्ठा, भाग्योदय एवं धनागम से लाभान्वित करेगा। किसी शुभ काम के करने से नाम कमायेंगे, तुला के लाभस्थ शनि में शत्रुओं एवं ऋण के बढ़ने से मन खिन्न रहेगा परन्तु शत्रु परास्त ही नही होंगे अपितु उनके द्वारा धन लाभ भी होगा। किसी अनैतिक ढंग से भी धन कमायेंगे। लग्नस्थ केतु उदर विकार एवं मानसिक चिन्ता देंगे। २५ नवम्बर के बाद व्ययस्थ गुरु धनागम में रोक लगायेंगे। व्यय बढ़ जायेगा परन्तु अच्छे कार्यों में होगा। तीर्थ यात्रा या किसी प्रमुख यात्रा से मन प्रमुदित होगा। स्वास्थ वर्ष भर बिगड़ा रहेगा। माता-पिता की गम्भीर चिन्तायें दूर होंगी। शत्रु कुछ जाल रचेंगे। चिन्ता न करें। विजय होगी। नवरत्न मुद्रिका पहने तो अति उत्तम है।

मकर—(भो ज जी खी खू खे खो ग गी) वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतया असफलता का परिसूचक है। पूरे वर्ष भर अनायास व्यय होता रहेगा। सोचे गये कार्यों में कुछ रुकावट के बाद किसी राजकीय पुरुष या नेता के द्वारा सफलता मिलेगी। अतिरिक्त व्यय करना पड़ेगा, यह निश्चित है। शत्रुओं को पराजय का मुख देखना पड़ेगा। अनेकानेक छल प्रपंचों के बाद भी शत्रु अपने कुप्रयास में सफल नहीं हो पायेंगे। मामा तथा मातृ पक्ष के लिए कष्ट रहेगा, सन्तान एवं शैक्षिक पक्ष से महान् उन्नति का समय है। प्रयास करें। सामाजिक मान प्रतिष्ठा के बढ़ने-बढ़ाने का सुअवसर आ चुका है। पुत्र प्राप्ति सम्भव है, अन्यथा यश-सम्मान मिलेगा। नये मित्र बनें, आय-व्यय बढ़े-चढ़े रहने से बचत कम होगी। ५ अक्टूबर के बाद समय और सुधर जायेगा। मानसिक व्यथा होने पर या ऋण की दशा में सम्पुट पाठ करायें।

कुम्भ—(गु गे गो स सी सू से सो द) वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है, अष्टम कन्या का शनि आयु बढ़ाने में सहायक होगा। शरीर को रोगी बनाकर जर्जर अवश्य कर देगा। स्वास्थ में कमी रहेगी शिक्षा के क्षेत्र में असफलता, पारिवारिक संकट, मनस्ताप बना रहे। ५ अक्टूबर तक शनि की ढैया रहेगी। तदुपरान्त समय ठीक है। दशमस्थ वृश्चिक के बृहस्पति राजनैतिक, सामाजिक एवं श्रमिक सम्बन्धी विषयों में आशातीत सफलता देंगे. पिता के लिये कष्टकर समय है। माता भी रोगी रहे। अनैतिक मार्ग से अथवा अचानक लाभ मिलेगा। सन्तान को कष्ट, चिढ़, चिन्ता, वायुविकार, उदर (लीवर) रोग से पाचन-शक्ति में कमी, दाम्पत्य अनबन एवं मित्रों से विरोध रहेगा। कार्तिक से समय बदलेगा। सुख-शान्ति बढ़ेगी, किसी शुभ कार्य में व्यय होगा। एक सुन्दर यात्रा करेंगे, नीलम या पीला पुखराज पहले। शनि-गुरु स्तोत्रों का पाठ करें।

मीन—(दी दू थ झ दे दो च ची) राशि वालों के लिए आश्विन तक का समय सामान्य है। बाद में भी किसी उत्तम दशा का योग नही है। ५ अक्टूबर के अष्टम में शनि से ढैया चलेगी। सप्तम तुला का गुरु दाम्पत्य सुख में कमी करेंगे पर व्यापारादि में सामान्य लाभ होगा। पारिवारिक चिन्ता, निराशा, कार्यबाधा से दुःखी रहेंगे। सामाजिक सुयश तो मिलेगा पर स्वास्थ में कमी रहेगी, वायु-विकार, चर्म-रोग, गुप्तेन्द्रिय जन्य रोगों पर धन व्यय होगा, लाभ कम रहेगा, साधारण रूप मे पूरा साल ही मध्यम फलदायक है। ऊँच-नीच लगी रहेगी। व्यर्थ के विवादों मे उलझाव, मानसिक व्यथा, अशान्ति, माता-पिता को व्याधि तथा कष्ट से मन खिन्न रहेगा। २५ नवम्बर के बाद गुरु की शुभ स्थिति से रुके काम बनेंगे, मित्रमिलाप, धनागम, पुत्रमुख तथा किसी शुभ कार्यादि वश हर्षित होंगे, नीलम, लाजवर्त एवं पीला पुखराज पहने देवी कवच का पाठ करें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्षयाधिमासीय व्रत पर्व व्यवस्था–

सुविज्ञ पाठक ! इस वर्ष के पंचांग-गणित-विधान में 'क्षयाधिमास' की एक जटिल समस्या समुपस्थित हो जाने से व्रत-पर्वों के निर्णय में विवाद हो रहा है। इस सम्बन्ध में अनेकानेक सम्मेलनों की प्रक्रिया के बाद भी कोई 'अन्तिम निर्णय' न हो सकने से भ्रम का वातावरण बना हुआ है। जन सामान्य के बोध के लिये हम भी निर्णय सिन्धु, धर्मसिन्धु पुरुषार्थचिन्तामणि, कीर्तिप्रकाश, कृत्यशिरोमणि, कालमाधवीय, स्मृतिसारोद्धार कृत्यसारसमुच्चय (बम्बई संस्करण) तथा निर्णयामृत आदि ग्रन्थों का अध्ययन करके कतिपय वाक्यों के साथ वास्तविक तथ्य व धर्मशास्त्र के आदेश आपके सामने रख रहे हैं।

सर्वप्रथम गणित की ओर चलें और पता करें कि ये क्षयाधिमास कब और क्यों आते हैं ? इसका कारण सौर–मास एवं चान्द्र–मासों की लम्बाई में अन्तर होना है। हमारे पचांगों में सौर–चान्द्र दोनों प्रकार के मासों का विधान रहता है। उनके सामञ्जस्य को बनाये रखने के लिये ही प्राचीन ऋषियों ने अधिमास की व्यवस्था बनाई थी। सभी सुधीजन जानते हैं कि वर्ष में जितनी सूर्य संक्रान्तियां होती हैं उतने ही 'सौरमास' भी होते हैं। उसी प्रकार जितनी अमावास्यायें या पूर्णिमायें होती हैं उतने ही 'चन्द्रमास' होते हैं। चूंकि क्षयाधिमास व्यवस्था को अमान्तीय चान्द्रमासों से परिगणित करते है, अतः आगे के विवरण में अमान्तीय अर्थात शुक्लादि चान्द्रमास ही कहे गये हैं। अन्यथा उत्तर भारत में कृष्णादि मास ही प्रचलित हैं।

सूर्य अपनी स्पष्टगति से गमनशील होकर जब भचक्र (१२ राशियों या ३६० अंशों) को पार करता है तब ३६०÷१२= ३० अंश चलने पर एक सौरमास पूर्ण होता है। मध्यममान से सूर्य को भचक्र भ्रमण करने में ३६५' २५६३६२८ दिन (अर्थात ३६५ दि. ६ घ. ९ मि ९·७से.) लगते हैं। इस प्रकार एक सौरमास ३०.४३८०३ दिनों का ही होता है। चन्द्रमा सूर्य की अपेक्षा बहुत तेज चलता है। इस कारण अपनी परिक्रमा की अवधि में सूर्य के साथ चन्द्रमा की लगभग बारह बार भेंट होती है। इसी भेंट का नाम 'आमावास्या' है। इस तरह की १२ अमान्तों अर्थात १२×३०=३६० तिथियों का भोग करने में चन्द्रमा को मध्यममानेन ३५४.३६७०८ दिन (३५४ दि०, ८ घं०, ४८ मि०, ३५°७ से०) लगते है। स्पष्ट हो गया है कि मध्यम सौरवर्ष से चान्द्र वर्ष १० दि. २१ घ २० मि· ३४से० छोटा हाता है अर्थात १ सौर वर्ष में ३७१.०६२३७-२३७ तिथियां भुक्त होती है। इसी अन्तर को पूरा करने केलिये प्रति तीसरे वर्ष एक चन्द्रमास या ३० तिथियों का लोप किया जाता है। जिसे 'अधिमास' कहते हैं। तात्पर्य यह हुआ कि जितने समय में सूर्य की ३२ संक्रान्तियां होती हैं उतने समय में चन्द्रमा की ३३ अमान्तें हो जाती हैं। मध्यममान से यह क्रम लगभग ९७४ दिनों के बाद पूर्ण होता है। परन्तु गति वैलक्षण्य के कारण यह स्थिति ८६२ से १०५८ दिनों में कभी भी आ सकती है। मध्यममान का गणित देखिये :– (मध्यम चान्द्र मास=२९.५३०५९ दिन)। सौरमास ३२×३०.४३८०३ =९७४°०२ दिन। इसी तरह ३३ चा॰मा॰×२९.५३०५९=९७४·५१ दिन।

अब यह विचार करते हैं कि यह अधिमास प्रतिभासित कैसे होता है ? चूंकि यह स्पष्ट हो ही चुका है कि दिनादि चान्द्रमास सौरमास से छोटा होता है। अतः जिस गते या तारीख को किसी वर्ष किसी चान्द्रमास की पूर्ति होगी, अगले वर्ष उससे लगभग ११ दिन पहले ही वह घटना हो जायेगी। यही कारण है कि यवन (मुस्लिम) मत के पर्व 'ईद' आदि हमारे 'गते' से ११ दिन पहले होते जाते हैं। २ वर्ष तक घटने की यह क्रिया हमारे यहां भी होती है। तीसरे वर्ष 'अधिशेष' से बने एक चान्द्रमास को बहिष्कृत करके क्रमशः घट रहे क्रम को ठीक कर देते हैं। यह हमारे भारतीय ज्योतिष की एक विलक्षण परन्तु अनिवार्यतम आवश्यकता है। यदि आर्ष ग्रन्थों में यह व्यवस्था न होती तो सौर अश्विन में होने वाले पार्वण १५ वर्ष के बाद चैत (सौर) में हो रहे होते। जैसा कि सं० २०३८ में 'ईदुल जुहा' विजयादशमी के दूसरे दिन ९ अक्टू० १९८१ को हुई थी और १५ वर्ष पूर्व सं० २०२३ में चैत नवरात्रों के बाद १ अप्रल को हुयी थी। आगे भी सं० २०५४ में पुनः चैत्र शुक्ल में १८ अप्रैल को होगी। अधिमास का यह महत्व हमारे धर्मशास्त्रों से पूर्णतया परिपालित है। ईद आदि का उदाहरण देकर लेख को बड़ा करने से हमारा तात्पर्य है कि पाठक वृन्द 'अधिमास' के स्वरूप के साथ ही उसकी गति के बारे में भी सम्यक् रुपेण जान लेंकि प्रत्येक तीसरे वर्ष आने वाले इसी अधिमास का नाम 'मलमास' है। धर्म ग्रन्थों के 'मलमासे वर्ज्यम्' में जो कृत्य वर्जित हैं वे केवल इसी प्रति तीसरे वर्ष आने वाले 'मलमास' के निमित्त हैं। क्योंकि प्रतिमास में लगभग १ दिन (या १ तिथि) 'मल' बचता है। यही मल एकत्र होते-होते जब एक चान्द्र मास के तुल्य हो जाता है। उसी का नाम 'मलमास या 'मलिम्लुच' है। गृह्यपरिशिष्ट में इसकी स्पष्ट परिभाषा दी गई है—

"मलं वदन्ति कालस्य मासं कालविदोऽधिकम्"। इति

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में भी यही बात प्रकारान्तर से कही गई है। अपनी स्पष्ट गति से चलते हुये जब कभी दो चान्द्रमासान्तो (अमान्तों) के बीच में सूर्य-संक्रान्ति नहीं हो पाती, उस वर्ष वह चान्द्रमास ६० तिथियों का होता है। ऐसे मलमास के बाद २९ से ३५ महिनों के बाद ऐसा ही मलमास आता जाता है। केवल ऐसे ही मलमासों को सभी शुभ कार्यों में वर्जित किया गया है।

चूंकि पहले बता चुके हैं कि मध्यम सौरमास मध्यम चान्द्रमास से सदैव .९०७३४ दिन बड़ा होता है। परन्तु कभी–कभी १९वें या १४१ वें वर्ष (२ शताब्दी में ३ वार) में जब सूर्य अपने मन्दनीच के निकट गमनशील रहता है तो उसकी दैनिक गति ६१.२ कला तक हो जाने से स्पष्ट सौरमास भी २९.४१२ दिन का अर्थात मध्यम चान्द्रमास से छोटा हो जाता है। ऐसी दशा में दो अमान्तों के बीच में सूर्य की भी दो संक्रान्तियां हो जाती हैं। ऐसे 'द्विसंक्रान्त चान्द्रमास' को हमारे निर्णय ग्रन्थों में 'अंहस्पति' के नाम से पुकारा गया है। यह प्रक्रिया १९वें या १४१ वर्षों में निम्न रूप से पूरी होती है :—

अर्थात्

सौर मान से:-(१९×१२)×३०.४३८०३=६९३९.८७०८ दिन या २२८ सौ॰ मा॰। } १९ वर्ष में
चान्द्रमान से:-(१९×११+७)×२९.५३०५९=६९३९.६८८७ दिन या २३५ चा॰मा॰ } ७ अधिमास

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

{सौर-मान से:-(१४१×१२)×३०.४३८०३=५१५०१.१४७ दिन या १६९२ सौरमास
चान्द्रमान से:-(१४१×१२+५२)×२९.५३०५९=५१५०१.३४९ दिन या १७४४ चान्द्रमास}

{अर्थात १४१ वर्ष में केवल ५२ अधिमास ही हो सकते हैं। इनमें 'संसर्प' की गणना नहीं है।}

जिस वर्ष द्विसंक्रात क्षयमास पड़ता है उसवर्ष दो चान्द्रमास असंक्रान्त (भानुलंघित) होते हैं। एक तो अंहस्पति संज्ञक क्षयमास से १-३ मास पूर्व, दूसरा १-३ मास बाद में। ध्यान रहे कि क्षयमास वाले वर्ष में इन मासों की "मलमास" यह (सामान्यतया तीसरे वर्ष आने वाली) संज्ञा नहीं रहती। इस वर्ष द्विसंक्रान्त चन्द्रमास को 'अंहस्पति', इससे पूर्व के असंक्रान्त चान्द्रमास को 'संसर्प' तथा क्षयमास के बाद वाले असंक्रान्त मासको 'मलिम्लुच' कहते हैं। इनमें से 'संसर्प' नामक असंक्रान्त मास 'अधिमास' या मलमास नहीं होता है। इसका प्रमाण भी देखिये--"एक वर्षे ह्यसंक्रान्तौ द्वौ चेत्संसर्प आदिमः। क्षयमासो द्विसंक्रान्तः स चांहस्पति संज्ञकः"॥ (१९-कालमाधवकारिका) क्योंकि इस समय तक प्रत्येक मास में बढ़ने वाला अधिशेष (मल) एक चान्द्रमास के तुल्य नहीं हो पाता है। यदि ऐसा न होता तो आगे के केवल ३-४ मास बाद दूसरा अधिमास नहीं हो सकता। आज से १९ वर्ष पूर्व शके १८८५ में और उससे भी १४१ वर्ष पूर्व शके १७४४ में क्षयमास हुआ था। आगे २०४५ में पुनः क्षयमास होगा। यदि प्रत्येक क्षयमास वाले वर्ष में दो-दो अधिमास मानें (जैसा कि कुछ लोग मानने का व्यर्थ दुराग्रह करते हैं) तो अधिमासों के दिनों की संख्या अशुद्ध हो जायेगी। देखें—

१२(१४१+१९)×३०·४३८०३=५८४४१·०१८ दिन या १९२० सौर मास होंगे। जब कि चान्द्र मान से १२(१४१+१९)+५९×२९·५३०५८=५८४४१·०१८ दिन=१९२०+५९ अधिक मास=१९७९ चान्द्रमास होंगे। इसी प्रकार शके १७४४ से शके २०४५ तक के ३०१ वर्षों में कुल ३६१२ सौर मास होते हैं। इनमें १११ अधिमास मिलाने से ३७२३ चान्द्रमास होंगे आइये इनका माध्यम गणित भी देखें—(संसर्प को अधिमास माननेसे ३७२७ अधिमास?)

१२×३०१×३०·४३८०३=१०९९४२·१६ दिन। (१२×३०१+१११)×२९·५३०५८=१०९९४२·३५ दिन। स्पष्ट है कि संसर्प को भी अधिमास मानने से यह गणित कथमपि ठीक नहीं मिल सकता है। अतः गणित से तो सिद्ध हो गया कि क्षयमास वाले वर्ष में मलिम्लुच संज्ञक एक ही वास्तविक अधिमास होता है क्योंकि संसर्प मास को "शुद्धिकौमुदी" के "कर्माणि सम्यक् सर्पतीति संसर्प संज्ञस्यवक्ष्यते" तथा कालमाधव के 'कर्मार्हः सन् सम्यक् सर्पतीति संसर्पः' वचनानुसार असंक्रान्त होते हुये भी अधिमास नहीं माना गया है। स्पष्ट है कि वे लोग इस गणित सिद्ध तथ्य को पूर्णतया जानते व समझते थे। निर्णय सिन्धु के टीकाकार श्री कृष्ण भट्ट मीमांसक ने भी यही तथ्य मानकर ही संसर्प में अधिमास-कृत्यों (पुरुषोत्तममास व्रत एवं अपूपदानादि) का विरोध किया है:—"संसर्प नाधिमासकम्, कालस्यानाधिक्यात्"। 'धर्मसिन्धु' में तो और भी स्पष्ट कहा है कि 'संसर्प' अधिमास नहीं है। असंक्रान्तत्व के कारण विवाहादि अन्य गतिक कृत्यों का विरोध करना युक्तियुक्त ही है। धर्मसिन्धु के काशी से प्रकाशित सं० २०२५ के संस्करण में पृष्ठ १० में स्पष्ट उल्लेख है— (भाष्यकार श्री वशिष्ठदत्त मिश्र, भू० पू० धर्मशास्त्राध्यापक काशी हिन्दू विश्व विद्यालय)।

"तत्र क्षयमासात्पूर्वोऽधिमासः संसर्पसंज्ञः सर्वकर्मार्हः शुभकर्मणि न त्याज्यः। अंहस्पतिसंज्ञः क्षयमासस्तदुत्तरभाव्यधिकमासश्च सर्वकर्मसु वर्ज्यः। एवं त्रिवत्सरान्तरस्थः केवलोऽधिकमासोऽपि वर्ज्यः।"

(अर्थात हर तीसरे वर्ष में आने वाला तथा क्षयमास के बाद का अधिकमास ही प्रत्येक कार्य में वर्जित है। संसर्पमास वर्जित नहीं है।) पुनश्च—

"अनन्यगतिकं नित्यं नैमित्तिकं काम्यं च अधिकमासक्षयमासयोः कर्तव्यम्। सगतिकं नित्यं नैमित्तिकं काम्यंच वर्ज्यम्।" आगे पृष्ठ १२ में पुनः स्पष्ट करते हैं— "क्षयात्पूर्वोऽधिमासः संसर्पसंज्ञकः पूर्वमुक्तः। तत्र चूड़ाकर्मव्रतबंधविवाहाग्न्याधान यज्ञोत्सवमहालयराज्याभिषेका एव वर्ज्याः, नान्यानिकर्माणि।" इतनी सुन्दर व्याख्या के बाद कुछ भी शंका शेष नहीं है कि क्षयमास से पहले असंक्रान्त (संसर्प) मास में तिथि-मास प्रयुक्त व्रतोपवास अवश्य ही होने चाहिये। यही तथ्य महाराष्ट्र (पुणे) से शके १८२९ में छपी 'पुरुषार्थचिन्तामणि के पृष्ठ २०-२१ में निम्नभांति स्पष्ट किया गया है—

"संसर्पांहस्पत्योर्निन्दित्वं विवाहादिशुभकार्यविषयम्"····"रविणा लंघितोमासो ह्यनर्हः सर्वकर्मसु" इत्यादि वचनानि क्षयमासात्प्राचीनसंसर्पाख्येऽसंक्रान्ते न प्रवर्त्तन्ते किन्तूत्तरासंक्रान्तमासे एव प्रवर्तन्ते।······तस्माद्विवाहाद्यतिरिक्त श्रौतस्मार्तादिकर्मसु संसर्पो योग्य एव। यस्तु तस्मिन्नधिकशब्दप्रयोगः सोऽसंक्रान्तत्वाभिप्रायेण न तु कर्मानर्हत्वाभिप्रायेण।"

इतने ठोस और स्पष्ट आदेश के बाद भी ऋषियों की आज्ञा का उल्लंघन कथमपि धर्मशास्त्रसम्मत नहीं हो सकता। निर्णयसिन्धु में भी यही बात उल्लखित है—

"एकः क्षयात्पूर्वः, परश्चैक इत्यधिमासद्वयं भवतीत्यर्थः। अत्र विशेषमाह जाबालिः—'मासद्वयेऽब्दमध्ये तु संक्रान्तिर्न यदा भवेत्। प्राकृतस्तत्र पूर्वः स्यादधिमासस्तथोत्तरः' ॥ इति ॥ उत्तर एव कालाधिक्यं, न पूर्वस्मिन्नित्यर्थः। यत्तु ब्रह्मसिद्धान्ते—'चैत्रादर्वाङ्नाधिमासः परतस्त्वधिको भवेत्। (दृष्टाहि सर्वशास्त्रेषु तस्मिन्मूर्तिस्त्रयोदशी)। इति।' अतः आश्विन को 'मलमास' कहना शास्त्रविरोध है।

मुनि शतातप का भी यही वचन है—'एकत्रमासद्वितयं यदि स्याद्वर्षेऽधिकं तत्र परोधिमासः'। कुछ लोग इन विशेष वाक्यों को पूर्णतया भाड़ में झोंककर प्रति तीसरे वर्ष आने वाले सामान्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मलमासोक्त वचनों को, ऋषियों की आज्ञा के विरुद्ध, संसर्पाहस्पति में प्रयोग करते हैं; यह शास्त्र-विरुद्ध है। जैसे कि–"मासः कन्यागतेभानौ असंक्रान्तो भवेद्यदा। दैवं पित्र्यं तदा कर्म तुलास्थे कर्त्तरक्षयम्।।' यह वाक्य उस वर्ष के लिए है जिस वर्ष आश्विन अधिक मास हो। जैसा कि १८८६ शक में हुआ था और आगे १९१५ में भी होना है। तब यह वाक्य लागू होता आया है और आगे भी होगा। संसर्प आश्विन के लिए तो दूसरा नियम है।'घटकन्यागतेसूर्ये वृश्चिके वाथ धन्वनि। मकरे वाऽथ कुंभे वा नाधिमासो विधीयते।" अर्थात् जिस वर्ष क्षय-मास हो उस वर्ष कन्या से लेकर कुंभ तक के सूर्यों में असंक्रान्त होने पर भी अधिमास नहीं होता है। मुनि वशिष्ठ ने भी इस बात को मुक्त कंठ से स्वीकार किया है। यथा–"मासप्रधानाखिलमेव कर्म मुक्त्वाखिलं कर्म न कार्यमत्र।" संसर्प को ३० तिथ्यात्मक मानकर व्रत-पर्व प्रयत्नपूर्वक मनाने चाहिये, जिससे उनके स्वाभाविक सनातनक्रम में अन्तर न हो। विवाहोत्सव, यज्ञोत्सव एवं गृहप्रवेशादि अन्य मंगल-कार्यों में इन (संसर्प-अहंस्पति-मलिम्लुच) तीनों मासों को प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिये। 'प्रयत्न से' का तात्पर्य विशेषस्थिति में विशिष्ट वाक्यों से है, 'मासत्रयं त्याज्यमिदं प्रयत्नाद् विवाह-यज्ञोत्सवमंगलेषु'। चौखम्बा संस्कृत सिरीज आफिस-काशी द्वारा सं० १९९२ में प्रकाशित 'वीरमित्रोदयस्य समयप्रकाशः' के पृष्ठ १४३-१४४ में भी यह तथ्य निम्नवत् स्पष्ट किया है–

"यस्मिन्मासे न संक्रान्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा। संसर्पाहस्पति एतावधिमासश्च निन्दितः।।

अत्र पूर्वासंक्रान्त द्विसंक्रान्तय: संसर्पाहस्पति संज्ञा, उत्तरासंक्रातस्याधिमासत्वं क्रमेण अव-धानात् अवगम्यते इति–मदनरत्नः। संसर्पश्च न मलमासः किन्तु शुद्धः। उत्तरस्तु अशुद्धः—

एकस्मिन्नपि वर्षे चेत् द्वौ मासावधिमासकौ। पूर्वोमास प्रशस्तः स्यादपरस्तु मलिम्लुचः।।

इति जाबालि वचनात्। ······ इदं च संसर्पस्य शुद्धत्वप्रतिपादनं विवाहादि अतिरिक्त क्षयाहादि श्राद्धादि विषयम्।।"

देखिये पाठक वृन्द ! कि संसर्प को 'मलमास' न मानने का कितना स्पष्ट और सीधा आदेश (संसर्पश्च न मलमासः) ऋषियों ने हमें दिया है, जिसमें सन्देह का तो स्थान ही नहीं है। अहमदाबाद के सम्मेलन में एक विद्वान-पुरुष ने 'क्षयाहादि श्राद्धादि विषयम्' के आधार पर टिप्पणी की थी कि–'संसर्प का शुद्धत्व केवल श्राद्ध के लिये है।' परन्तु यह बात गलत है। क्योंकि श्राद्ध तो सामान्य मलमास में भी होता ही है और फिर संसर्प के 'मलमास' न होने पर वह समस्त श्रौत-स्मार्त मासप्रयुक्त-व्रतोत्सवों के लिए स्वयं ही योग्य हो गया है। केवल असंक्रान्तत्व के कारण विवाह, उपनयन व यज्ञादि तथा चातुर्मासादि लम्बे व्रतोत्सवों को प्रारम्भ करने के लिए योग्य नहीं है। अतः जहां पर 'संसर्प' शब्द का स्पष्ट उल्लेख करके निषेध होगा, केवल वहीं पर ही 'संसर्प' अशुद्ध है, अन्यत्र नहीं। इसका प्रमाण भी देखिये—

"त्रयस्त्याज्या विवाहादौ संसर्पाहस्पती उभौ। शुद्धौ श्रौते तथा स्मार्ते मलमासो विविच्यते।।"

इति विवाहादौ शुभकार्ये त्रयो ह्येते वर्जनीयाः। तदुक्तं ज्योतिषे–'यस्मिन्मासे न······ निन्दिताः।।' तत्र विशेषमाह संसर्पेति–'संसर्पः प्रथमासंक्रान्तः। अंहस्पति क्षयमासः। एतौ द्वौ श्रौते स्मार्ते च कर्मणि शुद्धौ ग्राह्यौ इत्यर्थः। तदुक्तं–'मासद्वयेऽब्द मध्येतु·· अधिमासस्तथोत्तरः'। इति प्राकृतः शुद्धः। अत एव सम्यक् संसर्पन्ति कर्माणि यस्मिन्निति योगात्संसर्प संज्ञा। एवं क्षयमासोऽपि।' (कालमाधवकारिका-आनंदाश्रम पूना का द्वितीय संसकरण शके १८९९ पृष्ठ ९)।

अहमदाबाद के सम्मेलन में एक और विशेष बात हुयी थी। एक वयोवृद्ध विद्वान सज्जन ने स्पष्ट कहा था कि "यदि कोई यह लिखा हुआ दिखा दे कि 'संसर्प' में नवरात्र, दीपावली आदि कृत्य होते हैं तो हम मान लेंगे।" उस समय प्रो० श्री प्रियव्रत शर्मा जी के द्वारा ऐसा वाक्य दिखाये जाने को उद्यत होने पर भी सभापति महोदय की ओर से इसकी आज्ञा नहीं मिली। पता नहीं क्यों ? शायद ······ ···। इसलिये उन श्रद्धेय के प्रीत्यर्थ ही हमने " संसर्पाहस्पती उभौ शुद्धौ श्रौते तथा स्मार्ते " कालमाधव कारिका का उक्त वचन देकर उनकी शंका का समाधान किया है। हम समझते हैं कि नवरात्र एवं दीपावल्यादि चान्द्र-मास–प्रयुक्त पर्वों को श्रौत - स्मार्त - सीमा से बाहर नहीं माना जा सकता। अस्तु।।

गणित से, निर्णयग्रंथों से एवं व्यवहारिकता से भी संसर्प को ३० तिथि वाला मास मानना ही तथ्यात्मक सिद्ध हुआ है, हो रहा है। इस सम्बन्ध में 'कीर्तिप्रकाश' के पृष्ठ ४३-४४ का अन्तिम निचोड़ भी विशेष दृष्टव्य है :–

"अत एतत्सिद्धम्। एक वर्षीयासंक्रान्तद्वये यत्रकालाधिक्येन असंक्रान्तत्वं सोऽधि-मासः। यत्र द्विसंक्रान्तमासान्तरीयकतया संक्रान्तिराहित्यं सः संसर्पः। उभय–त्रापि पूर्वोमासः शुद्धः संक्रान्ति रहितोऽपि।"

अब यह कहना एकदम ही अशास्त्रीय होगा कि संसर्प अशुद्ध है'। हम पुनः अन्तिमेत्थम् रूप में कह रहे हैं कि यत्र यावत्र कहीं पर भी 'संसर्प' का विरोध, मास-प्रयुक्त व्रतोत्सवादि हेतु नहीं है ! जबकि 'मलिम्लुच' का निषेध है यथा—

"मलिम्लुचस्तु यो मासः स मासः पापसंज्ञितः।

वर्जितः पितृदेवाभ्यां सर्वकर्मसु तं त्यजेत्।।"

अर्थात 'मलिम्लुच' मास प्रत्येक कार्य हेतु वर्जित है। 'संसर्प' मास असंक्रान्त होते हुये भी मलमास या अधिमास नहीं है। कुछ कार्यों में 'संसर्प' एवं मलमास दोनों की निषेधोक्ति से यह भली भांति स्पष्ट है। प्रमाण देखिये :—

"वापी कूपतडागादि प्रतिष्ठा यज्ञ कर्म च।

न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पाहस्पतौ तथा।। (वशिष्ठ)

गृह प्रवेश गोदान स्थानासन महोत्सवम्।।

न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पाहस्पतौ तथा।। (मरीचि)

मुनि वशिष्ठ एवं मरीचि के उक्त वचनों में तीनों प्रकार के मासों को कुवें बावड़ी की प्रतिष्ठा, यज्ञ कर्म, गृह प्रवेश, गोदान एवं स्थानासनादि के महोत्सवों हेतु पूर्णतया वर्जित कहा गया है। "मासत्रयं त्याज्यमिदं प्रयत्नाद्विवाह यज्ञोत्सव मंगलेषु"। से भी तो यही स्पष्ट होता है। परन्तु पूर्वोक्त आर्ष वाक्यों को अपने पचांग में मोटे-मोटे अक्षरों में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छापकर भी कुछ पंचांगकार जनता जनार्दन को भ्रमित करने में लगे हैं। कहीं-कहीं तो सम्पादकों के आगे प्रकाशकों की लक्ष्मी ने अपना मायाजाल तानकर उनकी लेखनी को गूंगा कर दिया है। काशी महाराष्ट्र एवं गुजरात के कुछ पंचांगों में ऋषियों के वाक्यों तथा प्रतिवर्ष प्रयोग में आनेवाले निर्णय सिन्ध्वादि ग्रंथों की जानबूझकर होली जलाते हुए मास प्रयुक्त व्रतपर्वों के सनातन क्रम में असह्य अन्तर ला दिया है। पीछे आ चुका है कि शके १८६६ में आश्विन अधिमास था। तब माघ मासीय स्नान का लोप क्यों नहीं हुआ होगा? तब मार्गशीर्षशुक्ल पूर्णिमा के दिन माघस्नानारम्भ क्यों नहीं किया गया था? जैसा कि इस वर्ष हो रहा है।

हमारी प्रार्थना पर ध्यान दें तो शके १८६६ का कोई भी पंचांग उठा लें। सभी में मौनी-अमावास्या शिवरात्रि से पहले लिखी होगी क्योंकि यह पर्व अनादिकाल से ही 'महाशिवरात्रि' से लगभग २८-२९ दिन पहले ही होता आया है। हम नहीं जानते कि इस वर्ष यह मौनी ३० शिवरात्रि के दूसरे दिन⊛ कौन से जादू से लिखी जा रही है। कुछ पंचांगों में 'माघस्नानारम्भ' तथा 'मौनी अमा०' का उल्लेख ही नहीं है। शायद उनकी आत्मा ने इस अशुद्धि को नहीं स्वीकारा होगा। एक आश्चर्य ही नहीं भयंकर धाबाधड़ी की बात भी कुछ पंचांगों में देखने को मिल रही है। वह यह कि 'महाशिवरात्रि व्रत' ११ फरवरी १९८३ को है। जबकि १५ जनवरी से १२ फरवरी तक 'अंहस्पति संज्ञक द्विसंक्रान्त क्षयमास' है। हमारी मान्यतानुसार तो संसर्प तथा अंहस्पति ये दो मास कालमाधव की उक्ति 'संसर्पाहस्पती उभौ शुद्धौ श्रौते तथा स्मार्ते' के आधार पर शुद्ध हैं। क्योंकि समय निरन्तर गतिशील है, उसका लोप या वृद्धि नहीं होती। केवल चान्द्रमासीय व्रतपर्वों को सौरमासों से निरन्तर ही सम्बद्ध किये रखने के लिये तीसरे वर्ष 'मल' से बने एक चान्द्रमास को नगण्य कर दिया जाता है। परन्तु 'मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड संस काशी से छपी कृत्याशिरोमणि पुस्तक के पृष्ठ २७ के "वस्तु-तस्तु यद्वर्षे क्षयाख्यमासस्तत्र पूर्वापरमधिमासद्वयं तत् त्रितयमपि सर्वकर्म बहिष्कृतम्॥" वचनानुसार अंहस्पति को भी सर्वकर्म बहिष्कृत कर दें तो फिर ११ फरवरी को 'महाशिवरात्रिव्रत' नहीं हो पायेगा। क्योंकि द्विसंक्रांतत्व के कारण शुक्लादि माघ (माघ शुक्ल, फाल्गुन कृष्ण) अशुद्ध हो गया है। यदि द्विसंक्रान्त अंहस्पति [अंहस्य पापस्य पतिरिति] में काशीविश्वनाथ की महापूजा हो सकती है तो फिर 'संसर्पो योग्य एव' के बाद भी २७ सितम्बर को विजयदशमी क्यों नहीं हो सकती? वह कौन सा विधान है कि 'न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पांहस्पतौ तथा' के बाद भी अंहस्पति [द्विसंक्रान्त] मास [१५.१.८३ से १२.२.८३ तक] में दो-दो मासों के व्रत पर्व कैसे हो रहे हैं? संसर्प तो एक पर्व के लिये भी अयोग्य और अंहस्पति दो-दो पर्वों के लिये भी योग्य क्योंकर हुआ होगा? एक ओर निषेधाज्ञाओं के गीत, दूसरी ओर अंहस्पति में व्रतपर्व, यह सब भ्रमोत्पादक हो तो है। १५ नवम्बर को दीपावली होगी नानक जयन्ती १५ दिन पहले होगी, क्यों?

कुछ और भी गड़बड़ हो रही है जिस पर पाठकों का ध्यान खींच रहे हैं। उत्तरी भारत में सदैव ही पहले कृष्ण पक्ष आता है और बाद में शुक्ल पक्ष। परन्तु अपने को धर्मशास्त्रीय कहने वाले पंचांगों में माघ कृष्ण ४ को आने वाली संकटचौथ का व्रत माघशुक्ल के बाद फाल्गुन कृष्ण में लिखा गया है⊛ इसी प्रकार गुरुपर्वों में भी असह्य गड़बड़ी की गई है। श्री गुरु गोविन्द सिंह की जयन्ती वर्षों से ही बसन्त पंचमी से २७, २८ दिन पूर्व आती रही है। आगे भी आती रहेगी। फिर क्यों इस वर्ष बसन्त पंचमी के २ दिन⊛ बाद लिखी गई है? 'जगो धर्म हिन्दुक तुरक द्वन्द्व भाजै' का नाद करने वाले धर्म गुरु के साथ भी हमारे धर्म-शास्त्रियों ने अन्याय किया है। कृष्णपक्ष के व्रतपर्व बाद में और शुक्ल पक्ष के पहले मनाने के लिए हम 'भांगखाकर' भी तैयार नहीं हैं। न व्रतपर्वों को लोप करना ही हमें अभीष्ट है।

भारत सरकार के पचांग विभागीय पत्रांक N. ०२१०४/११ दिनांक ११.९.८१ के अनुसार हमें २६ सितम्बर को दशहरा एवं १६ अक्टूबर को दीपावली का आदेश मिला था उसी के अनुसार धर्मग्रन्थों का सम्यक् अध्ययन करके ही इस पचांग के व्रत पर्व लगे हैं। क्षयाधिमास के बारे में अनेकानेक लेख अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। अल्मोड़ा से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक 'शक्ति' के २५ दिसम्बर १९८२ के अंक में लखनऊ के प्रसिद्ध ज्योतिषी एवं 'आनन्द भास्कर पंचांग' के प्रधान सम्पादक आचार्य भास्करानन्द लोहनी जी का लेख विशेष पठनीय है। क्योंकि इससे आचार्य के धर्मशास्त्रीय अध्ययन का प्रमाण मिलता है। आपने 'कन्यार्क में दीपावली' को शास्त्र के विरुद्ध बताया है। 'तुलार्क' से दीपावली को सम्बन्धित करते हुये शीर्षक के अन्त में आप लिखते हैं—"जब कभी कन्या के सूर्य में दीपावली नहीं हुयी तो इस बार क्यों होगी?" यदि कन्यार्क की दीपावली अशास्त्रीय है तो स्वयं श्री लोहनी जी के द्वारा समर्थित सम्वत् २००१ के विश्व पंचांग में '३१ गते कन्यार्क' को दीपावली छप चुकी है। किंच देश के सभी पंचांगों में उस वर्ष कन्यार्क में १६ अक्टूबर १९४४ को दीपावली लगी होने से इस विक्रम शताब्दी का शुभारम्भ ही 'कन्यार्क की दीपावली' से हुआ है। सौर मतानुयायी श्री लोहनी जी ने इसे क्यों भुला दिया होगा? अपि च सम्वत् २०२० में भी सभी दृश्यमतानुयायी पंचांगों में कन्यार्क (१६।१०।१९६४) में दीपावली हो चुकी है। अतः जाने-अनजाने में भ्रमित हुये लोगों से हमारी प्रार्थना है कि वे अतीत के पृष्ठों को खोलकर सत्यता पता कर लेवें। अस्तु॥

इस लेख में जो भी शास्त्रीय प्रमाण दिये गये हैं उनमें से अधिकांश पुस्तकें काशी या महाराष्ट्र से ही प्रकाशित हैं। सभी पंचांगकार लोग वर्षों से जिन धर्मसिन्धु, निर्णय-सिन्धु, पुरुषार्थ-चिन्तामणि तथा कामलाकरादि ग्रन्थों की सहायता से निर्णय देते आये हैं; उन्हें हम भाड़ में नहीं झोंक सकते। क्योंकि भविष्य में भी तो सिंहस्थ-मकरस्थ गुरु तथा अन्य विवादों में उनकी आवश्यकता पड़ेगी। तब हम कौन सा मुंह लेकर उन ग्रंथों के आश्रित होंगे? यदि काशी महाराष्ट्र या गुजरात के विद्वान पंचांगकार लोग अपने यहाँ छपे ग्रंथों को मान्यता न देकर धर्मशास्त्रीय मतभेद पैदाकर रहे हों तो 'दीपक तले अंधेरा' वाली बात ही तो है। हमें पूर्ण आत्म-सन्तोष है कि विषम आर्थिक परिस्थितियों में भी हमने धर्मशास्त्र का दामन नहीं छोड़ा। अतः धर्मो रक्षति रक्षितः इस धर्मवाक्य की परीक्षा भी हो गई है। शेष ३४ पृष्ठ में

⊛ या फिर जानबूझ कर नहीं लिखा है। हमारे पाठक उन लोगों से अवश्य पूछें।

क्षमा प्रार्थना :—

प्रस्तुत लेखों में जहाँ कहीं पर भी कठोर अथवा श्रुति-कटु शब्दों का प्रयोग, न चाहते हुये भी हो गया है, उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।..........

—सम्पादक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

धर्मशास्त्र-सम्मत पंचांग कौन ?

तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण इन पांच अंगों की पुस्तिका का नाम ही पंचांग है। 'काल' अर्थात समय रूपी ईश्वर का अंग होने से यह पूजनीय मना गया है। भारतवर्ष में अनेक प्रकार के पंचांग बनते आ रहे हैं और अब भी बन रहे हैं। पंचांग के पांचों अंगों सहित लगभग सभी पदार्थ सूर्य-चन्द्र के द्वारा बनते हैं। प्राचीन भारतवर्ष में सरस्वती के चिर-उपासक विद्वानों ने सिद्धांत गणित के अनेकानेक ग्रंथों का निर्माण तात्कालिक स्फुटता का शतप्रतिशत पालन करने के बाद ही किया था। नलिकादि यन्त्रों से ध्रुवकों की राशियों क्रान्ति, अयनांश एवं शरों का प्रत्यक्ष वेध करके ही उन्हें ग्रन्थों में लिखा था। तदुत्तरवर्ती विद्वानों ने बाद में जब-२ भी उन ध्रुवकों मूलांकों एवं ग्रहस्थितियों में अन्तर पाया, उनमें काल-भेद संस्कार करते रहे और इस प्रकार नित नये ग्रंथों की श्रृंखला बनते-२ अद्यावधि भी विद्यमान है। हमारे सुविज्ञ पाठक मनन करेंगे तो वे हमारे प्रमाणों की सत्यता को अवश्य स्वीकारेंगे।

सुदूर पूर्वकाल में महर्षि लगध ने वेदांग ज्योतिष की रचना की। उसमें वर्णित वर्षमान ३६६ दिन है। स्पष्ट है कि यह ग्रंथ सूर्य-सिद्धांत से अवश्य ही प्राचीन रहा होगा, अन्यथा सूर्यसिद्धांत के सूक्ष्मतर वर्षमान ३६५।१५।३१।३१।२४ दिनादि के बदले ३६६ दिन का स्थूल वर्षमान क्यों स्वीकार्य होता ? परन्तु तात्कालिक दृग्गणितीय सूर्य सिद्धांत, ब्रह्मस्फुटसिद्धांत, वशिष्ठसिद्धान्त आदि ग्रंथों के द्वारा गणितागत ग्रहों को जब प्रत्यक्ष वेध क्रिया के द्वारा आकाश में देखा जाना दुरूह हो गया तो आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, केशव दैवज्ञ एवं गणेश दैवज्ञ ने आकाशस्थ ग्रहों का सतत वेध करके 'आर्यभट्टीय' एवं 'सिद्धांतशिरोमणि' ग्रन्थों की रचना की। श्री केशव दैवज्ञ ने सूर्य सिद्धांत तथा आर्यसिद्धांत के प्रत्यक्षीकरण के बाद 'ग्रहकौतुक' का निर्माण किया। उस समय इस ग्रहकौतुक द्वारा साधित ग्रहभोगांश, ग्रहणस्पर्श- मोक्ष एवं अन्य तिथ्यादि पदार्थ पूर्णतया दृक्तुल्य थे। परन्तु केवल साठ वर्ष पश्चात ही श्री केशव के पुत्र गणेश दैवज्ञ को जब अपने पूज्य पिता के सिद्धान्तागत ग्रहों में वेध क्रिया के द्वारा अन्तर दीखने लगा तो उन्होंने 'ग्रहलाघव' एवं 'बृहत्तिथिचिन्तामणि' नामक दृग्गणितीय ग्रंथों का निर्माण किया। आपने लिखा है :-

ब्रह्माचार्य वशिष्ठ कश्यपमुखैर्यत्खेटकर्मोदितं तत्तत्कालजमेव तथ्यमथतद् भूरीक्षणेऽभूच्छ्लथम्। प्रपातोऽथमयासुरः कृतयुगान्तेऽर्कात्स्फुटात्तोषितात् तच्चास्तिस्मकलौतुसान्तरमथा भूच्चात्रपाराशरम्॥ तज्ज्ञात्वार्यभटः खिलंबहुतिथेः कालेकरोत्प्रस्फुटं तत्सुस्तं किल दुर्गसिंहमिहिराद्यैस्तत्रिबद्धंस्फुटम्। तच्चाभूच्छिथिलं तु जिष्णुतनयेनाकारि वेधात्स्फुटं ब्रह्मोक्त्याश्रितमेतदप्ययबहोकालेऽभवत्सान्तरम्॥

अर्थात् ब्रह्माचार्य, वशिष्ठ तथा कश्यपादि ने सतयुगादि से पूर्व जिन ब्रह्मस्फुट, वशिष्ठ एवं पाराशर सिद्धान्तों की रचना की थी वे सभी काल-भेद के कारण कुछ ही समयोपरान्त अशुद्ध हो गये तो मयासुर नामक दानव ने सतयुग के अन्त में सूर्यसिद्धान्त ग्रन्थ बनाया। सूर्य सिद्धान्त के अशुद्ध हो जाने पर पाराशर ने पाराशर-सिद्धान्त, उसकी अशुद्धि के बाद आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्टीय सिद्धान्त' तदुपरान्त दुर्ग सिंह, मिहिराचार्य, जिष्णुतनय ब्रह्मगुप्तादि विद्वानों ने अपने-२ सिद्धान्त या करण ग्रन्थों की रचना की। इन सब में भी जब बहुत अन्तर दीखने लगा तो श्री केशव दैवज्ञ ने स्फुटतर वेधसिद्ध गणित का 'ग्रहकौतुक' नामक ग्रन्थ बनाया :-

श्री केशवः स्फुटतरं कृतवान्हि सौरार्यासन्नमेतदपि षष्ठिमिते गताब्दे। दृष्ट्वा श्लथं किमपि तत्तनयो गणेशः स्पष्टं यथा ह्यकृत दृग्गणितैक्यमत्र"।

इस 'ग्रहकौतुक' ग्रन्थ में केवल साठ वर्ष में ही अन्तर आ गया तो श्रीगणेश दैवज्ञ ने अपने पिताजी के 'ग्रहकौतुक' को दृक्तुल्य बनाकर जिस ग्रन्थ की रचना की वह आज भी 'ग्रहलाघव' के नाम से प्रसिद्ध है। शके १४४२ के आस-पास 'ग्रहलाघव' का गणित इतना शुद्ध था कि बिना ज्या चापीय गणित के भी उसके ग्रहोदयास्त, युति-प्रतियुति एवं ग्रहणों के स्पर्शमोक्ष वर्तमान 'नाविक पंचांग' तुल्य सूक्ष्म होते थे। श्री गणेश को इस बात का पक्का पता था कि आने वाले समय में बिना ज्या चाप का लाघवीय गणित अवश्यमेव अशुद्ध हो जायेगा। अतः कालान्तर में इसको सुधार करके ही प्रयोग करने का निम्न स्पष्ट आदेश उन्होंने स्वयं ही दिया है——

"कथमपि, यदीदं चेद् भूरिकाले श्लथं स्यात् मुहुरपि परिलक्ष्येन्दु ग्रहादृक्षयोगात्।
सदमलगुरुतुल्यप्राप्तबोधः प्रकाशैः कथितसदुपपत्या शुद्धिकेन्द्रे प्रचाल्ये"॥

यदि क, च, ट, त.प यादि वर्ग पद्धति से 'भूरि' का अर्थ करें तो ४२ वर्ष होता है। अर्थात शके १५०० के आस-पास से ही 'ग्रहलाघव' में अन्तर आ जाना चाहिये था। लाघव के कारण इस अन्तर पर तब किसी ने ध्यान नहीं दिया। तथापि १११ वर्ष के बाद श्री विश्वनाथ ने शके १५५३ में ग्रहलाघवीय गणित में सुधार किया था—

"यानेब्दे ग्रहलाघवस्य धरणीक्षोणीक्षपेणोन्मिते संवीक्ष्य क्षणदाकरोष्णतनयः पूर्वार्यरक्षाश्रितम्। क्षेपान्सध्रुवकान् रवीन्दुशशभृत्तुंगोद्भवान्भादिकान् दृष्टिप्रत्ययकारकान् गणितवित् श्रीविश्वनाथो ब्रुवे।"

इन शास्त्रीय प्रमाणों से स्पष्ट है कि पूर्वकाल के पंचांगकार आजकल के कतिपय नामधारी पंचांगकारों की तरह तिथ्यादि पचांग पूर्वोक्त ब्रह्म-सूर्यसिद्धान्त से करके ग्रहणों आदि का गणित 'नाविक पचांग' से नहीं लेते होंगे। काशी में अनेक पंचांग आज भी निर्बीज सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव एवं मकरन्द से बनते हैं। सभी में ही सूर्यक्रान्ति, बेलान्तर, स्टैन्डर्ड अन्तर एवं ग्रहणों का परिलेख-स्पर्श-मोक्ष 'नाविक पंचांग' से ज्यों के त्यों ले लिये जाते हैं। हमारे कुमाऊं में भी काशी के अक्षांश-रेखांश पर बना एक अशुद्ध गणित का पंचांग प्रचलित है। उसमें दी जाने वाली सूर्यक्रान्ति सूर्यसिद्धान्त के नियमानुसार न होकर

नोट - यूरेनस (हर्शल), नेपचून व वैंकटेश (प्लूटो) ये तीन ग्रह सूर्यसिद्धान्तीय पंचांगों में नहीं होते हैं। इसमें हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अंग्रेजी पंचाग के तुल्य होती है। सूर्योदयास्त के घ० मि० तो एक दम ही अशुद्ध हैं । जिन्हें कुमाऊँ में प्रयोग करना तो दूर काशी या केन्द्र-स्थल में प्रयोग करना ही धर्मविरुद्ध होगा । सूर्यसिद्धान्त में परमक्रान्ति २४ अंश स्थिर मानी गई है इससे क्रान्ति साधन का सूत्र निम्न है—

"परमापक्रमज्या तु सप्तरन्ध्रगुणेन्दव: तद्गुणा ज्या त्रिजीवाप्ता तच्चापं क्रान्तिरुच्यते (२ । ८)

बेलान्तर, स्टे०अन्तर किरणवक्रीभवन का सूर्यसिद्धान्तादि ग्रंथों में कहीं उल्लेख भी नहीं है। सूर्यसिद्धान्त को धर्म-कर्मों में प्रयोज्य बताने वाले लोग वर्तमान में वेधशालाओं द्वारा प्राप्त सूक्ष्म भूकेन्द्रीय ग्रहों को 'अंग्रेजी पंचांगों' की नकल कहते हैं। वास्तव में यह 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' वाली बात है। यही प्रश्न अमृतसर में दिनांक १९-११-६४ को हुये द्विदिवसीय सम्मेलन में काशी के पं० रामव्यास पाण्डेय जी ने किया था। सम्पूर्ण शास्त्रार्थ अभी भी टेप है और ज्यों का त्यों प्रकाशित भी हो चुका है। उसका एक अंश देखें——

पं० रामव्यास जी पाण्डेय काशी—"वास्तव में ये दृश्य गणितवादी 'नाटिकेल ऐल्मनाक' (बिलायती) पचांग से गणित करते हैं अत: अंग्रेजी गणित धर्मशास्त्रोपयोगी नहीं है और सूर्य-सिद्धान्त से आगत तिथ्यादि भारतीय पद्धति की हैं अत: धार्मिक कार्यों में वही माननी चाहिये"।

प्रो० प्रियव्रत —"यह पब्लिक को धोखे में डालने के लिये हमारे ऊपर झूठा आरोप लगाया जाता है। हम…………आप लोगों के सामने ही५००० वर्ष पुराना और ५००० वर्ष आगे का …………गणित करके दे सकते हैं। हाँ स्थूल गणितवादी प० रामव्यास जी पाण्डेय ऐसा जरूर करते हैं। ग्रहण, उदयास्त, ग्रहयुति-प्रतियुति चन्द्रश्रृंगोन्नति आदि का का गणित विलायती पचांग से लेते हैं। यह सरासर पब्लिक को धोखा नहीं तो और क्या है" ? (पृ० ३५/३६)

यही बातें हमारे 'जीवन विजय पंचांग' के बारे में कही जा सकती है। यह सच है कि हमने सं० २०३८ का पंचांग अधिकांश रूप में नवलगढ़ (राज०) के सरस्वती पंचाग की सहायता से तैयार किया था और उसमें २–३ स्थलों पर हमने इस बात का उल्लेख भी कर दिया था। तिथ्यादि समस्त पदार्थ गत वर्ष भी पूर्णतया शुद्ध थे, इस वर्ष भी हैं और भविष्य में भी रहेंगे। गत वर्ष भी हमारे पास कलात्मक तथा विकलात्मक सूक्ष्म ग्रह थे परन्तु पंचांग में उन्हें न देकर सौ वर्षीय सरस्वती पंचांग से साप्ताहिक ग्रह-स्पष्ट देने का आशय यह था कि उसी प्रकार १०० वर्षीय पंचांग के ग्रह उठाकर बनाया गया एक 'महत्वाकांक्षी' पंचांग कुमाऊँ में विगत २३–२४ वर्षों से यत्र-तत्र प्रयोग किया जा रहा है। खेद है कि उस पंचांग के तिथि-नक्षत्र योगादि के घटीपल एकदम ही अशुद्ध हैं। इस समय बाजार में उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव तथा मकरन्द आदि किसी भी ग्रन्थ से उन घटी-पलों को नहीं लाया जा सकता है। कुमाऊं के लिये उसमें नाम मात्र भी गणित नहीं है। फिर भी २०३८ में श्री जीवन विजय के ग्रह उससे मिले। यही तथ्य जनता के सामने लाने के लिये हमने उस सौ वर्षीयपंचाग के पदार्थ लिये थे ताकि यह सिद्ध हो जाय कि हमारे पंचांग को 'नकल' बताने वाले भी 'चोरी का पंचांग' बनाते हैं।

थोड़ी देर के लिए मान भी लें कि हमने विलायती पंचांग से ही अपना पंचांग बनाया है तो क्या हुआ ? विलायत में यह विद्या कहाँ से गई ? [illegible] म्लेच्छ ही था। श्री सुधाकर द्विवेदी जी ने सम्प्रति प्रचलित सूर्यसिद्धान्त को हिपार्कस नामक यवन ज्योतिषी के ग्रन्थ के आधार पर बना हुआ स्वीकार किया है। ऐसी दशा में वह हमारे धर्म से सीधे सम्बन्धित कैसे हो गया ? इस विषय पर एक रोचक विवरण उ० प्र० शासन द्वारा प्रकाशित "भारतीय ज्योतिष का इतिहास" के पृष्ट २१९ में किया है——

"तिथियाँ अदृश्य घटनायें है, उन्हें सूर्यसिद्धान्त के अनुसार बनाना चाहिये, ग्रहण दृश्य घटना है, उसकी गणना आधुनिक ज्योतिष से करनी चाहिये। उ० प्र० के कई पंचांग आज भी इसी सिद्धान्त पर बनते हैं, जिसका मुख्य कारण यही जान पड़ता है कि सूर्यसिद्धान्त का नाता लोगों ने धर्म से जोड़ रक्खा है और इसलिये पूजा-पाठ की गणना के लिये उसके बदले किसी अन्य ग्रन्थ को ठीक मानना अनुचित समझते हैं, परन्तु यदि वे ग्रहण को भी गणना सूर्यसिद्धान्त से करते हैं तो घण्टों का अन्तर पड़ जाता है और जनता भी देख लेती है कि ज्योतिषीगण अज्ञानी और ढोंगी हैं"।

कितनी कटु सत्यता है इस बात में; वास्तव में देखा जाय तो जब से अशुद्ध गणित के ढोंगी पंडितों को सूर्यसिद्धान्तादि ग्रन्थों की अशुद्धियों का पता लगा तभी से वे लोग कुछ पदार्थ शुद्ध पंचांगों से चोरी छुपे लेने लग गये। क्या ग्रहण का सम्बन्ध धर्म से नहीं है ? क्या विलायती पंचांग का होने के कारण ग्रहण के सूतक, स्नान एवं दानादि त्याज्य हैं? यह तो 'शुद्ध गाय के घी के नाम पर चर्बी बेचने' के समान है। धर्म यह है कि वही तिथि समस्त शुभाशुभ कृत्यों हेतु ग्राह्य है जिससे सिद्ध किये ग्रहणादि पदार्थ प्रत्यक्ष दिखायी दें। यहाँ पर भूकेन्द्रीय एवं भूपृष्ठीय भेद-जन्य जो लम्बन, नति आदि के संस्कार हैं वह केवल भूपृष्ठस्थ दृष्टा के लिए ही ग्राह्य हैं। जातक एवं मुहूर्तादि में भूकेन्द्रीय दृश्य गणित ही मान्य हैं। प्रमाण देखें——

" तेभ्य: स्याद्ग्रहणादि दृक्सममिदं प्रोक्ता मया सा तिथि: ।
ग्राह्या मंगल-धर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा ।। " (ति० चि०)

सफेद झूठ कहा जाता है :—

जी हाँ, यह सफेद झूठ है कि सूर्यसिद्धान्त ग्रहलाघव में तिथि की वृद्धि ५ घटी एवं क्षय ६ घटी अर्थात "बाण वृद्धि:, रस: क्षय:" कहा गया है। सू० सि०, ग्र० ला० आदि में यह वाक्य कहीं भी नहीं है। कुछ लोग बिना पूरे ग्रन्थ का अध्ययन किये ही २-४ श्लोक देकर अपने मत की पुष्टि का प्रयत्न करते हैं। यही कारण है कि "अदृष्ट फल सिध्यर्थ निर्बीजार्कोक्तिमेवहि" यह श्लोकांश भी लोगों को भ्रम में डालने के लिये कुछ पापात्मा लोग प्रयोग करते हैं। ग्रहलाघव, सूर्यसिद्धांत, मकरन्द एवं सि० शिरोमणि में यह श्लोकांश कहीं भी किसी अध्याय में नहीं है। यह श्लोक कमलाकर भट्ट के 'सिद्धान्त तत्व विवेक' में मध्यमाधिकार के ३२६ वें तथा स्पष्टाधिकार के ५०२ वें श्लोक का कुछ विकृत रूप है। इसका पूर्ण स्पष्टीकरण स्वयं ग्रन्थकार ने त्रिप्रश्नाधिकार के १४२, १४३, १४४ वें श्लोकों में किया है। अत: दृष्टादृष्ट का चक्कर चलाकर [illegible] के प्रति हम कुछ और क्यों कहें, स्वयं ब्रह्मा ने ही जब रौरव नर्क बना दिया है तो कोई क्या कर सकता है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

एक और धोखा !

लखनऊ से प्रकाशित होने वाली 'आग्रहायण' पत्रिका में 'दृश्यगणित एक धोखा' शीर्षक से एक लेख हमारे पंचांग के विरोध में छपा था। उस लेख में 'बाणवृद्धिः रसक्षयः' वाली तिथि को ही धर्मशास्त्र सम्मत मानने के प्रमाणार्थ निम्न श्लोकों से हमारे शुद्ध गणित को अशुद्ध बताया है।

"रवीन्दुमन्द संसिद्धात्तत्तिथ्यादि भोगतः। स्यातां तत्कालबीजोत्थौ बाण वृद्धि रसक्षयौ।
अतः पैत्रिककर्मादौ तत्काल चरबीजकैः। बाणवृद्धा रसक्षीणा ग्राह्या नान्या तिथिः क्वचित्॥"

वैखानस संहिता के इन दो श्लोकों में 'तात्कालिक चर बीजों' के द्वारा तिथि के क्षीण होने पर ५ घटी बढ़ाने एवं वृद्धि होने पर ६ घटी घटाने की बात कही गई है। यह तात्कालिक चर बीज क्या है ? यह बात उन सज्जन ने नहीं बताई है। हम यहाँ पर उक्त दो श्लोक लिखने वालों की बुद्धि पर पड़े पर्दे को उसी 'वैखानस संहिता' के आधार से ही हटाने का प्रयत्न करते हैं।

"रवीन्दुमन्द .... क्वचित्" के बाद उसी वैखानस संहिता में स्पष्ट लिखा है कि——

"बीजोपनय भाष्यान्ते भास्कराद्यैः प्रपंचिता-साधितैश्चर बीजाढ्यैः स्वार्धं दृक्कर्मभिर्ग्रहैः॥
तिथ्यादिकं समानीतं गृहीणीयात्पैतृकादिषु। भचक्रनाभि दृक्सिद्धे कुर्याच्छ्राद्धव्रतादिकम्॥
भचक्रनाभि दृश्यस्य कर्मांगत्वेन हेतवः। तस्मात्केवल दृक्सिद्धैनैव श्राद्धादिकं चरेत्।"

(अर्थात् भूकेन्द्रीय दृक्तुल्य गणित द्वारा सिद्ध तिथ्यादि से ही श्राद्धादि कृत्य करने चाहिये।)

अब तो पाठक विचारेंगे कि किस गणित का पंचांग धर्मशास्त्र विरोधी है और किस गणित का धर्मशास्त्रसम्मत। तात्कालिक चर बीजों का सचित्र गणित विवरण २०४० के पंचांग में देखें। जिज्ञासु लोगों को 'दृश्यगणितमीमांसा' तथा 'शास्त्रीय पंचांग मीमांसा' नामक ग्रंथ पठनीय हैं।

पुराणों की सहमति भी हमारे पक्ष में

धर्मप्राण भारतीय जनमानस को पुराणों के उल्लेख से भी डराया जा रहा है कि दृश्यमत के पंचांग ग्राह्य नहीं हैं। कुछ चाटुकार प्रवृत्ति के अज्ञानी लोग स्कन्दपुराण का निम्न श्लोक इसके प्रमाणार्थ देते हैं——

"दृक्सिद्ध खेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात्।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षय दुर्गतिमाप्नुवन्ति॥
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते॥

स्कन्द पुराण के 'कलिमहात्म्य, के अर्न्तगत ये दो श्लोक उन कलयुगी ढोंगी पंडितों की पोल खोल रहे हैं जिन्हे भूपृष्ठीय तथा भूकेन्द्रीय तिथि–भेद का ज्ञान नहीं है और नामधारी पंचांगकार बनकर अच्छी खासी वंशपरम्परा का नाम डुबा रहे हैं। स्कन्द पुराण के इन श्लोकोंमें 'सूर्यांशजोक्तार्जित' तिथि की बात कही गई है। सूर्यांश पुरुष ने तिथि की स्पष्ट परिभाषा दी है —

" अर्काद्विनिसृतः प्राचीं यद्यात्यहरहः शशी। तच्चान्द्रमानमंशेस्तुज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः।" (१४/१२) अर्थात भूकेन्द्रीय स्पष्ट सूर्य-चन्द्रान्तर के प्रति १२ अंशात्मक दूरी से ही तिथि बनानी चाहिये। पाठकों को हम एक बात और बता दें कि अयनांश की भिन्नता के कारण तिथि में कोई अन्तर नहीं आता है। स्कन्द पुराण कहता है कि कुछ लोग भूपृष्ठीय दृश्य तिथि से ही श्राद्धादिक कार्य करते हैं (उन दिनों जिष्णुतनय ब्रह्मगुप्ताचार्य का यही मत था) जो कि पितरों को प्रिय नहीं होने से पुण्यक्षयकारक है, क्योंकि स्पष्टचन्द्र – स्पष्टसूर्य = अन्तर्लक्षणा (भूगर्भीय) सूर्यसिद्धान्तीय तिथि होती है। इसमें स्वस्थानीय लम्बन, नति व शर संस्कार के द्वारा वेधोपयोगी भूपृष्ठीय दृश्य तिथि बनाई जाती है। नैनीताल में सूर्यग्रहण, चन्द्र-शृंगोन्नति साधनार्थ, पंचांग से ऐसी दृश्य तिथि बनाने के लिए अधोलिखित संस्कार करने होंगे :—

१– ज्या विश्लेष × कोज्या वि० ल० नतांश × भूविज्या × वि० प० ल० = स्फुट लम्बन
२– ज्या नतांश × स्फुट परमलम्बन = नति संस्कार।
३– पंचांगीयतिथि + लम्बन संस्कार = भूपृष्ठीय दृश्य तिथि। (= क)
४– चन्द्रशर + नति = दृश्य चन्द्र शर। (= ख)
५– कोज्या क × कोज्या ख = कोज्या सितवृत्तीय दृश्य तिथि॥ (भूपृष्ठीय)

इसका गणित-विवरण पाठकों की मांग पर भविष्य में दिया जायेगा। अब हमारे पाठकों को भली भाँति ज्ञात हो गया होगा कि स्कन्द पुराण में उक्त ५ संख्या वाली भूपृष्ठीय दृश्य-तिथि का ही धार्मिक कार्यों के लिए निषेध है। 'जीवनविजय' के सामान शुद्ध गणित वाली (भूकेन्द्रीय) तिथि के बारे में महर्षिवेदव्यास ने अपना मत वराह पुराण के चतुर्मास कल्प में श्लोक १६ से ३० तक स्पष्ट रूप में निम्न भाँति दिया है :—

– पार्वत्युवाच –

कथमेतद्विजानीयां सूर्यश्चन्द्रमसोर्गतिम्। यथा भवन्ति तिथयस्त्रिंशच्च कथितास्त्वया॥
चक्षुषा नैव सा ज्ञातुं शक्यते व्योमगाः स्थितिः। अतिसूक्ष्मतया यस्माद् व्रतहानिर्भवेद् ध्रुवम्॥
ज्ञानोपायस्ततस्तस्याः यथावत् वद मे प्रभो। शिव उवाच —

"यदा तौ मिलितौ स्याताममावास्या तदा भवेत्। यदा द्वादश भागानामन्तरं स्यात्तयोर्द्वयोः॥
प्रतिपन्नाम सा ज्ञेया तदन्ते विधुदर्शनम्। भागद्वादशकैनैव प्रत्यहं हि तिथिर्भवेत्॥
दृष्टं पुरा वेदचक्षुः ज्योति शास्त्र मयाद्भुतम्। ततः सूर्यश्च मुनयः स्वं स्वं सिद्धान्तमूचिरे।
यस्मिन्देशे यदाकाले यत्सिद्धान्त मार्गतः। उदयास्तौ ग्रहाणां स्यात् ग्रहणं सूर्यचन्द्रयोः॥
विधोर्विलोकनं चापि भवेत्तत्पक्षमाश्रितः। इष्टकाले स्फुटौ कृत्वा चन्द्रसूर्यौ प्रयत्नतः॥
तिथिमासाश्चकुर्वीत नान्यथा तु कथंचन। प्रमादान्मत्सराल्लोभाद् भयाद्वा लज्जयाऽथवा॥
यो व्रतं मेऽन्यथा कुर्यान्ममद्रोही न संशयः। ब्रह्महत्यादि पापानां कदाचिन्निष्कृतिर्भवेत्॥
मम द्रोहार्जितं पापं, निधनं नैव गच्छति। यो मनसापि मे द्रुह्येत् कर्मणा वचसापिवा॥
स द्रोही सर्व देवानां भवत्येव न संशयः॥ (—वराह पुराण, चतुर्मास कल्प १६–२६॥)"

वाराह पुराण के इस कथन से स्पष्ट है कि हमारे पंचांग में दी जाने वाली तिथि का प्रयोग करना ही धर्म शास्त्र की आज्ञा है। (देव द्रोही बने रहें तो अलग बात है)।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ज्योतिष-सम्मेलनों में पुष्टि

आज तक जितने भी ज्योतिष सम्मेलन हुये हैं सभी में शुद्ध एवं प्रत्यक्ष वेध-सिद्ध गणित के विद्वानों की ही विजय हुई है। अमृतसर के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ बने स्थूल मतावलम्बी एक व्यक्ति विशेष को "मैं ज्योतिष नहीं जनता" कहना पड़ा था। आज उन ज्योतिष न जानने वाले महानुभाव का ज्योतिष सम्बन्धी विषयों के निर्णयों पर हस्तक्षेप एवं कुछ पँचांगों में उनके नाम का उल्लेख देखकर "उष्ट्राणां लग्नवेलायां गर्दभाः स्तुति पाठकाः। परस्परं प्रशंसन्ति अहोरूपमहो ध्वनिः" वाली उक्ति सत्य लगती है। विगत वर्षों में दिल्ली, अहमदाबाद, देहरादून, अमृतसर, हरिद्वार तथा सहारनपुर के सम्मेलनों में सर्वसम्मत्या, प्रत्यक्ष-वेध-सिद्ध गणित की पुष्टि तथा विजय हुयी थी।

दृश्य गणितमीमांसा के रचियता त्रिस्कन्धज्योतिषाचार्य प० ईश्वरदत्त शर्मा जी ने रुपये ५०० की तथा श्री मार्तण्ड पंचांग के सम्पादकों ने रुपये १०,००० के पुरस्कार की घोषणा की थी कि पुरातन स्थूल गणित को सोपपत्तिक सत्य करके वेधसिद्ध गणित को गणितीय प्रक्रिया के साथ असत्य सिद्ध करने वाले विद्वान को उक्त धन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। खेद है कि आज दिन तक कोई भी पुरुष सिंह यह पुरस्कार प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ है। दूसरी ओर कुमायूं में प्रचलित एक पंचांग में ४-५ वर्ष पहले "एक हजार रुपये" इनाम की घोषणा छपा करती थी कि उस पंचांग के निर्णयों को अशुद्ध सिद्ध करने वाले व्यक्ति को यह इनाम दिया जायेगा अन्यथा कड़ी कार्यवाही की जायेगी। इन पंक्तियों के लेखक ने सप्रमाण उस पंचांग के गणित को असत्य सिद्ध करके जब इनाम की मांग की तो पंचांगकार ने इनाम देने के बजाय घोषणा ही हटा दी। इससे उस पंचाङ्ग की अप्रमाणिकता स्वयमेव परिलक्षित हो रही है।

विलायती पंचांग की नकल ?

भारत सरकार द्वारा १२ भाषाओं में प्रकाशित 'राष्ट्रीय पंचांग' तथा अंग्रेजी के 'नाविक पंचांग' (Nautical Almanac) का सारा गणित विद्युत-कम्प्यूटर से भारत में ही किया जाता है, विलायत में नहीं। नाविक पंचांग का मूल्य ७५ रुपये तथा राष्ट्रीय पंचांग का मूल्य केवल दो रुपये है। पाठक इन्हें, "दि कन्ट्रोलर आफ पब्लिकेशन्स, सिविल लाइन्स दिल्ली ११००५४, से मंगा सकते हैं। सत्यता पाठकों के सामने आ जायेगी। मन समझाने के लिए यदि यह मान भी लें कि श्री जीवन विजय पंचांग तुल्य सभी पंचांग अंग्रेजों की नकल हैं; तो भी कुछ अन्तर नहीं पड़ता। पृष्ठ१४में दिये ग्रहणों के मूलांकों को देखियेगा। इनके द्वारा सिद्ध किए गये चन्द्र-सूर्य के ग्रहणों का धर्म से सीधा सम्बन्ध है। लोग अनुष्ठानादि-सिद्धि के लिए व्यग्रता से ग्रहणों की प्रतीक्षा करते हैं। सूर्य सिद्धान्तादि के गणित से इन ग्रहणों का सम्भवासम्भव ही संदिग्ध हो जाता है। ऐसी दशा में सूर्य सिद्धान्तादि के नाम पर धर्म की दुहाई देना उन्मत्त-प्रलाप ही तो है। सुवर्ण एवं विद्या दोनों की तुलना में विद्या सोने से कदापि कम नहीं है। जब हम विलायती सोने के बने आभूषणादि का पूजा-पाठ एवं धार्मिक कृत्यों में प्रयोग कर लेते हैं, विदेशी घड़ियों के समय से मुहूर्त व जन्म-कुण्डली बना लेते हैं, विदेशी कपड़े पहन लेते हैं तथा विदेशों से आयातित ऑटोमेटिक मशीनों में वेदों को छाप लेते हैं तो विदेशी गणित "अछूत" कैसे हो गया? हमारे पाठक इन ज्वलन्त प्रश्नों का उत्तर तथाकथित धर्मशास्त्रियों (?) से अवश्य पूछेंगे। केतकराचार्य के शब्दों पर भी ध्यान दीजियेगा——

"स्वर्णं नैव विचारयन्ति मनुजा उत्पादितं केन वा
कस्माद्देशत आगतं प्रथमतः काले कदा निर्मितम्।
शुद्धिं श्यामलतां निरीक्ष्य निकषे क्रीणन्ति निःशंकिता-
स्तद्वद् दृक्समतां परीक्ष्य चतुराः स्वीकुर्वतां मत्कृतिम्॥"

आशा है कि सुविज्ञ पाठक हमारी बातों का मनन करके कहीं भी शंका होने पर हमसे सम्पर्क करेंगे। लेख बढ़ जाने से पंचांग का कलेवर भी अधिक हो गया है। अतः हमें विवश होकर कुछ उपयोगी विषय कम करने पड़े हैं। उन सभी को आगामी अंक में विस्तार पूर्वक दिया जायेगा। इस हेतु आपके सुझावों की उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी। लिखित शास्त्रार्थ हेतु सदैव तत्पर हैं।

क्षयाधिमास सम्बन्धी पृष्ठ ३० का शेषांश

व्रत-पर्वों में जो क्रम-भंग हुआ है, उसे आप देख चुके हैं। यह भी आपको ज्ञात हो चुका है कि चान्द्रवर्ष ३५४ दिन का होता है। जिस वर्ष भी अधिमास होता है, वह वर्ष लगभग ३८४ दिन का होता है। संवत २०३७ देखें। इस वर्ष का प्रवेश २६ मार्च ८२ शुक्रवार को तथा समाप्ति १३ अप्रेल १९८३ को ३८४ दिन बाद होगी। देखें कि ३८४-३५४ = ३० दिन या १ मास 'अधिक' हुआ है। 'क्षय' का तात्पर्य लोप नहीं है। 'क्षय' तो द्विसंक्रान्त मास का नाम है। इस विषय में अनेक सम्मेलनों के बाद भी 'सहमति' न हो सकी। कांचीमठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्य की अध्यक्षता में १७-१९ अग॰ ८१ को एक सभा 'गुरुवायूर' में सम्पन्न हुई; क्योंकि अहमदाबाद में हमारे विरोध के कारण कोई एकमत निर्णय नहीं हो पाया था। गुरुवायूर की तथा १४।२।८२ की दिल्ली की सभा में हमारे पक्ष की विजय हुई। काशी में दूसरे पक्ष की विजय के बावजूद श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि॰ विद्यालय का पंचांग हमारे पक्ष के अनुसार है। कुमाऊँ का लोकप्रिय 'रामदत्तजी का पंचांग' भी सत्य-मार्ग पर है। अन्य अशुद्ध हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ चैत्र शुक्लपक्ष | आ.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र सञ्चार | दिनांक क्रम

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	योग	स्टैं.टा. घं.	मि	करण	स्टैं.टा. घं.	मि	सू.उ. घं.	मि	मध्या. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि	रा.	घं.	मि	गते	सौ.	रा.	मु.	ई.
३०	२३	१	शु.	१९	५	१३	५१	रे.	४५	३०	२४	२५	ब्र.	१०	२५	बा.	२४	४३	६	१३	१७	५२	१८	२३	मे.	२४	२५	१३	१३	५	२९	२६
३०	२८	२	श.	१३	२५	११	३४	अ.	४१	२५	२२	४६	ऐं.	२८	३६	तै.	२२	२१	६	१२	१७	३४	१८	२३	मे.	—	—	१४	१४	६	ज॰१	२७
३०	३२	३	र.	७	२०	९	९	भ.	३७	३	२१	०	वि.	२५	८	व.	१९	५०	६	११	१७	१६	१८	२४	वृ.	२६	३४	१५	१५	७	२	२८
३०	३६	४	चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृ.	३२	४२	१९	१५	प्री.	२१	५९	ब.	१७	१९	६	१०	१६	५९	१८	२४	वृ.	—	—	१६	१६	८	३	२९
३०	४१	६	मं.	४९	८	२५	४८	रो.	२७	२३	१७	३६	आ.	१८	५३	कौ.	१४	५५	६	९	१६	३९	१८	२५	मि.	२८	५०	१७	१७	९	४	३०
३०	४५	७	बु.	४३	५०	२३	३९	मृ.	२५	०	१६	९	सौ.	१५	५६	ग.	१२	४५	६	७	१६	२१	१८	२५	मि.	—	—	१८	१८	१०	५	३१
३०	५०	८	गु.	३९	०	२१	४२	आ.	२१	५०	१४	५०	शो.	१३	९	वि.	१०	४०	६	६	१६	३	१८	२६	मि.	—	—	१९	१९	११	६	अ.
३०	५४	९	शु.	३४	५०	२०	१	पु.	१९	१८	१३	४८	अ.	१०	३५	बा.	८	४८	६	५	१५	४५	१८	२६	क.	८	३	२०	२०	१२	७	२
३०	५८	१०	श.	३१	१५	१८	३४	ति.	१७	२४	१३	९	सु.	[illegible]	[illegible]	तै.	[illegible]	[illegible]	६	४	१५	२८	१८	२९	क.	—	—	२१	२१	१३	८	३
३१	३	११	र.	२८	२०	१७	२३	श्ले.	१६	३	१२	३८	शू.	२८	३	व.	२८	५१	६	३	१५	१०	१८	२८	सिं.	१२	२८	२२	२२	१४	९	४
३१	७	१२	चं.	२६	५	१६	२८	म.	१५	२२	१२	११	गं.	२६	१९	कौ.	२८	७	६	२	१४	५३	१८	२८	सिं.	—	—	२३	२३	१५	१०	५
३१	११	१३	मं.	२४	४०	१५	५२	पू.	१५	३०	१२	१२	वृ.	२४	५१	ग.	२७	४०	६	०	१४	३५	१८	२९	कं.	१८	१५	२४	२४	१६	११	६
३१	१६	१४	बु.	२४	१०	१५	३८	उ.	१६	२८	१२	३४	ध्रु.	२३	४१	वि.	२८	३९	५	५९	१४	१८	१८	२९	कं.	—	—	२५	२५	१७	१२	७
३१	२०	१५	गु.	२४	३५	१५	४८	ह.	१८	२५	१३	२०	व्या.	२२	५१	बा.	२८	३	५	५८	१३/१४	१	१८	३०	तु.	२५	५३	२६	२६	१८	१३	८

उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्तऋतु, (२६ मार्च से ८ अप्रैल १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६'-१४", केतकी अहर्गण ३२७७
चक्र ५, परमक्रान्ति २३°-२६'-२७" (भ = भद्रा)

सम्वत्सर प्रतिपदा, 'युवा' सं. ना., संकल्पार्थं वर्षनर्यन्त, चैत्रनवरात्रारम्भ A
जमादिलाखर मु.६ मा.प्रा., सिपारा२, मत्स्यज. ३ । [Cमें घं.७।८ ।
भ.घं.१९।५०से, गणगौरव्रत३, गौरी३, त्रेतायुगादि मन्वादि३, सौभाग्य३, B
भ. घं.६।३५तक, कल्पादि ५, लक्ष्मीपूजा, श्रीपञ्चमी५, बुधास्तपूर्वमें ।
श्रीसूर्यषष्ठी ६ व्रत, अशोक ६, स्कन्द ६, बुध उभा.में घं. १०।२० ।
भ.घं.२३।३९से, नवपदओलीप्रा.(जैन), सूर्यरेवतीमें घं.१३।५, शुक्र कुंभC
भ.घं.१०।४०तक, अप्रैल४मा.प्रा., अशोकाष्टमी, दुर्गा८, कुमारीपूजा, मया-D
श्रीरामनवमीव्र.सबका, मध्याह्न कर्कलग्नमें रामावतार श्रीदुर्गा९, ताराज.।
भ.घं.२९।५५से ।[Dव्युत्पत्ति, अशो. कलिष्टप्रपान, सिद्धियो.घं १४।५०से ।
भ.घं.१७।२३तक, कामदा११व्रत, पुत्रदा११व्रत, लक्ष्मीकान्तदोलोत्सव, E
सोमप्रदोषव्रत, हरिदमनकोत्सव, अनङ्ग१३व्र । [Eयमघंटयो घं.१२।२८से।
महावीरज.(जैन), शिवविष्णुदमनकोत्सव प्रदोषमें, बुधरेव.में घं.१०।४१F
भ. घं.१५।३८ से घं.२८।३९ तक, व्रतकीपूर्णिमा, घातेशुक्रः घं.२४।० ।
मन्वादि, हनुमानज., स्नानदानार्थचित्रायुतामहा चैत्रीपूर्णि. ओलीस.(जैन)G
[Aघटस्था., कल्पादि मन्वादि १, गौतमज., गुड़ीपड़वा, असियो, पंचक॰
[Bश्रीरामदोलोत्सवप्रा., वैनायकी श्रीगणे.४व्रत, दमनक४. मीनेबु.घं.१४।०

चैत्रशु. ८ गुरौ इ. ५८।२८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	११	१८	१९	१५	५९	९	रे.
मं.	५	१६	९	०	-२३	व.	ह.
बु.	११	८	३१	०	११४	अ.	उ.
गु.	६	१३	४३	०	-७	व.	स्वा.
शु.	१०	१	५३	०	६०	उ.	ध.
श.	५	२५	११	०	-४	व.	चि.
रा.	२	२४	४५	५५	३	११	पु.
के.	८	२४	४५	५५	३	३१	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घं.	मि	सिंह घं.	मि	कन्या घं.	मि	तुला घं.	मि	वृश्चि. घं.	मि	धनु घं.	मि	मकर घं.	मि	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
२६	शु	७	५	५९	८	४०	१०	३५	१२	५३	१५	११	१७	२८	१९	४५	२२	५	२४	२४	२६	३२	२८	११	२९	३८
२७	श.	७	२	३	८	३६	१०	३१	१२	४९	१५	७	१७	२४	१९	४१	२२	१	२४	२०	२६	२८	२८	७	२९	३४
२८	र.	६	५८	७	८	३२	१०	२७	१२	४५	१५	३	१७	२०	१९	३७	२१	५७	२४	१६	२६	२४	२८	३	२९	३०
२९	चं.	६	५४	११	८	२९	१०	२३	१२	४१	१४	५९	१७	१७	१९	३३	२१	५३	२४	१२	२६	२०	२७	५९	२९	२६
३०	मं.	६	५०	१५	८	२५	१०	१९	१२	३७	१४	५५	१७	१३	१९	३०	२१	४९	२४	८	२६	१६	२७	५५	२९	२२
३१	बु.	६	४६	१९	८	२१	१०	१५	१२	३३	१४	५१	१७	९	१९	२६	२१	४६	२४	५	२६	१२	२७	५१	२९	१८
अ.	बृ.	६	४२	२३	८	१७	१०	१२	१२	२९	१४	४९	१७	५	१९	२२	२१	४२	२४	१	२६	८	२७	४७	२९	१४
२	शु.	६	३८	२७	८	१३	१०	८	१२	२५	१४	४३	१७	१	१९	१८	२१	३८	२३	५७	२६	४	२७	४३	२९	१०
३	श.	६	३४	३१	८	९	१०	४	१२	२१	१४	३९	१६	५७	१९	१४	२१	३४	२३	५३	२६	०	२७	३९	२९	६
४	र.	६	३०	३५	८	५	१०	०	१२	१७	१४	३५	१६	५३	१९	१०	२१	३०	२३	४९	२५	५६	२७	३५	२९	२
५	चं.	६	२६	३९	८	१	९	५६	१२	१३	१४	३१	१६	४९	१९	६	२१	२६	२३	४५	२५	५२	२७	३२	२८	५८
६	मं.	६	२२	४३	७	५७	९	५२	१२	९	१४	२७	१६	४५	१९	२	२१	२२	२३	४१	२५	४८	२७	२८	२८	५४
७	बु.	६	१८	४७	७	५३	९	४८	१२	५	१४	२३	१६	४१	१८	५८	२१	१८	२३	३७	२५	४४	२७	२४	२८	५१
८	बृ.	६	१४	५१	७	४९	९	४४	१२	२	१४	१९	१६	३७	१८	५४	२१	१४	२३	३३	२५	४०	२७	२०	२८	४७

।। मास फल ।।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से विक्रमी चान्द्र - सम्वत्सर का आरम्भ होता है, इसी दिन से 'महानवरात्रारम्भ' का व्रत प्रारम्भ करते हैं । इन नवरात्रों में नवदुर्गाओं के पूजनादि का विधान लोक व्यापित है। वैष्णव सम्प्रदाय के लोग 'अखंड रामायण' का पाठ भी करते हैं । मध्याह्न व्यापिनी नवमी में भगवान राम का दशरथ, कौशल्या आदि के साथ पूजन करना चाहिये । चैत्रशु. १५से वैशाखस्नानारम्भ करते हैं ।

[Cमं. २४।२५वजेत., चन्द्रदर्शन, मु. ३०।
[Fमहा(व्य.)पात स्प.घं.-१०/३ मो.घं.२/२६।
[Gसिद्धाचलया (जैन) वैशा.स्नानारंभ.

चैत्रशु. १५गुरौ इ. ५८।४८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	११	२५	१२	३६	५८	५५	रे.
मं.	५	१३	२९	०	-२२	व.	ह.
बु.	११	२६	१६	०	१२२	अ.	रे.
गु.	६	१६	५९	०	-७	व.	स्वा.
शु.	१०	८	५६	०	६२	उ.	ध.
श.	५	२५	१९	०	-५	व.	चि.
रा.	३	२४	२३	३७	३	११	पु.
के.	८	२४	२३	३७	३	११	पु.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ वैशाख कृष्णपक्ष

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	भा.प्र.स. नैनीताल सू.उ. घं.	सू.उ. मि.	मध्या. मि.	मध्या. से.	सू.अ. घं.	सू.अ. मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	क्रम दिनांक गते	सौ.	रा.	मु.	अं.
३१	२४	१	शु	२६	१८	१६	२८	चि	२१	३३	१४	३४	ह.	२२	२५	तै	२८	५९	५	५७	१३	४५	१८	३१	तु.	—	—	२७	२७	१९	१४	९
३१	२८	२	श	२९	२५	१७	३८	स्वा	२५	५५	१६	१८	व.	२२	२३	ग.	१७	३८	५	५६	१३	२९	१८	३१	तु.			२८	२८	२०	१५	१०
३१	३२	३	र	३३	३३	१९	२०	वि	३१	३०	१८	३१	से	२२	४४	व.	६	२५	५	५५	१३	१२	१८	३२	वृ.	११	५५	२९	२९	२१	१६	११
३१	३६	४	चं	३८	५५	२१	२८	अ.	३८	१५	२१	१८	व्य	२३	२६	ब.	८	२१	५	५४	१२	५७	१८	३२	वृ.			३०	३०	२२	१७	१२
३१	४१	५	मं	४५	१०	२३	५९	ज्ये	४५	४५	२४	११	व.	२४	२२	कौ	१०	४०	५	५३	१२	४१	१८	३३	ध.	२४	११	३१	वै.	२३	१८	१३
३१	४५	६	बु	५१	४८	२६	३४	मू.	५३	३८	२७	१८	प.	२५	२५	ग.	१३	१४	५	५१	१२	२६	१८	३३	ध.			वै.	२	२४	१९	१४
३१	४९	७	गु	५८	८	२९	५	पू.	६०	०	—	—	शि	२६	२३	वि	१५	५०	५	५०	१२	११	१८	३४	ध.			२	३	२५	२०	१५
३१	५३	८	शु	६०	०	—	—	पू.	१	१२	६	१८	सि	२७	६	बा	१८	११	५	४९	११	५६	१८	३५	म.	१३	१	३	४	२६	२१	१६
३१	५७	८	श	३	३३	७	१३	उ.	७	५३	८	५७	सा	२७	२३	तै.	२०	३	५	४८	११	४२	१८	३५	म.			४	५	२७	२२	१७
३२	१	९	र	७	२५	८	४५	श्र	१३	५	११	१	शु	२७	६	व.	२१	१४	५	४७	११	२८	१८	३६	कुं.	२३	४६	५	६	२८	२३	१८
३२	५	१०	चं	९	२५	९	३२	ध.	१६	२५	१२	२०	शु.	२६	१२	ब.	२१	३६	५	४६	११	१५	१८	३६	कुं.			६	७	२९	२४	१९
३२	१०	११	मं	९	२०	९	२९	श	१७	४५	१२	५१	ब्र.	२४	३७	कौ	२१	८	५	४५	११	२	१८	३७	कुं.			७	८	३०	२५	२०
३२	१४	१२	बु	७	१०	८	३६	पू.	१७	३	१२	३६	ऐं.	२२	२५	ग.	१९	५०	५	४४	१०	४९	१८	३८	मी	६	४०	८	९	वै.	२६	२१
३२	१८	१३	गु	३ / ५४	८ / ३०	६ / २८	८ / ४३	उ.	१४	३०	११	३१	वै.	१९	४१	वि	१७	५४	५	४३	१०	३७	१८	३८	मी.			९	१०	२	२७	२२
३२	२२	३०	शु	५०	४३	२५	५९	रे.	१०	३०	९	५४	वि	१६	२९	च.	१५	२३	५	४२	१०	२५	१८	३९	मे.	९	५४	१०	११	३	२८	२३

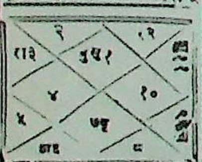
उत्तरायण, उत्तरगोल, बसन्त-ग्रीष्मऋतु, (९अप्रैल से २३अप्रैल१९८२तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-१६″, केतकी अहर्गण ३२९१

कच्छपावतार१, चान्द्र वैशाखारम्भ, जलकुंभादिदान, तुलसीदल से विष्णुA
आशामाईव्रत (स्त्रीणां) त्रिपु.यो.घं. १६।१८ से घं. १७।३८ तक, सर्वार्थB
भ.घं.६।२५से घं.१९।२०तक, संकष्टी श्रीगणेश४व्रत, मृत्युयो. घं.१८।३१C
अश्वि.मेषे बुधः घं.२३।२० । [Aपूजा, गुडफ्राइडे । [Cसे. ईस्टरसन्डे ।
अश्विनी मेष में सूर्य घं.२६।४२ संक्रान्ति पुण्यकाल अग्रिमदिन घं. ९।६ D
भ. घं.२६।२४से, संक्रान्तिपुण्यकाल, वक्री गुरु स्वाती२ च. में घं.११।२९,E
भ. घं.१५।५० तक । [Dतक, सौर वैशाखप्रा., बगसम्वत् १३८९ प्रा.।
कालाष्टमी ८ व्रत, शीतलाष्टमी ८, पर्युषितान्न (बासीभोजन) भक्षण ।
सर्वार्थ सिद्धि.यो.घ.८।५७से । [F७।२५वक्री [illegible] ल उफा.में घं.१८।११ ।
भ.घं.२१।१४से, पञ्चकप्रा. घं.२३।४६से, महा(वै.)पात स्र. घ.२८।४२ ।
भ.घं.९।३२तक, पातमोक्ष घं.९।५७, शुक्रपूभा.में घं.१८।१४बुध भरणीमेंF
वरूथिनी ११ व्रत, सबका, सूर्यसायन वृषमें घं. १५।३८ ग्रीष्मऋतु प्रा.,G
राष्ट्री.वैशा.बारं., प्रदोषव्र.। [Gश्रीवल्लभाचार्यज., मृत्युयो घं.१२।५१तक।§
भ घं.६।५८सेघं.१७।५४तक, मासशिवरात्रिव्र. सर्वार्थसि यो. घं.११।३१से।
देवपितृकार्यार्थ३०अमा. असियो-ससियो. घं.९।५४ से, सक्तुदान, पञ्चकH
[Hसमा.घं.९।५४ वीर्कुंवरसिंह दिवस । [Bसिद्धियोग घं.१६।१८ तक ।

वैशाखकृ.८ गुरौ इ. ५९।८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू	०	२	४	२०	५८	४८	अ.
मं	५	११	४	०	-४९	व	ह.
बु	०	६	५२	०	१२६	अ	अ.
गु	६	१३	७	०	-८	व.	स्वा
शु	०	१६	१४	०	६४	मा	श
श	५	२४	४७	०	-५	व.	चि
रा	२	२४	१	२१	३	११	पु.
के	८	२४	१	२१	३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मेष मि.	मेष से.	वृष घं.	वृष मि.	मिथुन घं.	मिथुन मि.	कर्क घं.	कर्क मि.	सिंह घं.	सिंह मि.	कन्या घं.	कन्या मि.	तुला घं.	तुला मि.	वृश्चि. घं.	वृश्चि. मि.	धनु घं.	धनु मि.	मकर घं.	मकर मि.	कुम्भ घं.	कुम्भ मि.	मीन घं.	मीन मि.
९	शु	६	१०	५६	७	४५	९	४०	११	५८	१४	१६	१६	३३	१८	५०	२१	१०	२३	२९	२५	३७	२७	१६	२८	४२
१०	श	६	७	०	७	४१	९	३६	११	५४	१४	१२	१६	२९	१८	४६	२१	६	२३	२५	२५	३३	२७	१२	२८	३८
११	सू	६	३	४	७	३७	९	३२	११	५०	१४	८	१६	२५	१८	४२	२१	२	२३	२१	२५	२९	२७	८	२८	३४
१२	चं	५	५९	८	७	३३	९	२८	११	४६	१४	४	१६	२१	१८	३८	२०	५८	२३	१७	२५	२५	२७	४	२८	३०
१३	मं	५	५५	१२	७	३०	९	२४	११	४२	१४	०	१६	१८	१८	३५	२०	५४	२३	१३	२५	२१	२७	०	२८	२६
१३	मं	२९	५१	१६	⊗																					
१४	बु	२९	४७	२०	७	२६	९	२०	११	३८	१३	५६	१६	१४	१८	३१	२०	५१	२३	१०	२५	१७	२६	५६	२८	२२
१५	गु	२९	४३	२४	७	२२	९	१७	११	३४	१३	५२	१६	१०	१८	२७	२०	४७	२३	६	२५	१३	२६	५२	२८	१८
१६	शु	२९	३९	२८	७	१८	९	१३	११	३०	१३	४८	१६	६	१८	२३	२०	४३	२३	२	२५	९	२६	४८	२८	१४
१७	श	२९	३५	३२	७	१४	९	९	११	२६	१३	४४	१६	२	१८	१९	२०	३९	२२	५८	२५	५	२६	४४	२८	१०
१८	सू	२९	३१	३६	७	१०	९	५	११	२२	१३	४०	१५	५८	१८	१५	२०	३५	२२	५४	२५	१	२६	४०	२८	६
१९	चं	२९	२७	४०	७	६	९	१	११	१८	१३	३६	१५	५४	१८	११	२०	३१	२२	५०	२४	५७	२६	३७	२८	२
२०	मं	२९	२३	४४	७	२	८	५७	११	१४	१३	३२	१५	५०	१८	७	२०	२७	२२	४६	२४	५३	२६	३३	२७	५८
२१	बु	२९	१९	४८	६	५८	८	५३	११	१०	१३	२८	१५	४६	१८	३	२०	२३	२२	४२	२४	४९	२६	२९	२७	५४
२२	बृ	२९	१५	५२	६	५४	८	४९	११	७	१३	२४	१५	४३	१७	५९	२०	१९	२२	३८	२४	४५	२६	२५	२७	५१
२३	शु	२९	११	५६	५	५०	८	४५	११	३	१३	२१	१५	३८	१७	५५	२०	१५	२२	३४	२४	४२	२६	२१	[illegible]	[illegible]

⊗मंगलवार को मेष लग्न का उदय दो बार होगा।

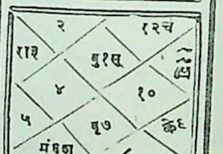
॥ सक्रान्ति-फल ॥

वैशाखकृष्ण ५ मंगलवार को सूर्योदयात् ५२।३ पर मूल नक्षत्र में सूर्य की मेष संक्रान्ति हुई है, वार नाम-महोदरी (चोरों को सुखदायक) नक्षत्रनाम-राक्षसी (अन्त्यजों को शुभ) प्रौढ़ावस्था (बैठी) ३०मुहूर्त, धान्यादि भावों में समता रहे, मंगलवार का फल नेष्ट है—मार्च ३१, अप्रैल१,२,६, ७,८,१४,१५, १६,२१, २२,२३, २७, २८. २९ मई ४, ५, ६ को सामान्य वृष्टि व तीव्र हवा के योग हैं। [§ तदुपरि त्रिपुष्कर।

[E[illegible]।१८ तक।

वैशा.कृ.३०गुरौ इ.५९।२५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू	०	८	५४	३८	५८	३०	अ.
मं	५	९	५	०	-१५	व.	उ.
बु	०	२१	२०	०	११६	अ.	भ.
गु	६	१२	१४	०	-८	व.	स्वा
शु	१०	२२	५४	०	६५	मा	पू.
श	५	२४	१५	०	-४	व.	चि.
रा	२	२३	३९	५	३	११	पु.
के	८	२३	३०	५	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ वैशाख शुक्लपक्ष | भा.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र संचार | दिनांक क्रम

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या घं.	मि.सं.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	घं.	मि.	गते वैशाख	सौ वैशाख	रा. वैशाख	मु. रज्जब	अं. अप्रैल
३२	२५	१	श.	४३	८	२२	५६	अ.	६०	४५	२९	३३	प्री.	१२	५९	किं.	१२	२८	५	४१	१२	१४	१८	३९	मे.			११	१२	४	२९	२४
३२	२९	२	र.	३५	१३	१९	४५	कृ.	५३	४०	२७	८	आ.	२८	३६	बा.	९	२०	५	४०	१०	३	१८	४०	वृ.	१०	५९	१२	१३	५	३०	२५
३२	३३	३	चं.	२६	११	१६	३५	रो.	४७	५३	२४	४८	सौ.	२५	५४	तै.	२३	६	५	३९	९	५२	१८	४१	वृ.			१३	१४	६	१	२६
३२	३७	४	मं.	१९	५५	१३	३१	मृ.	४०	३५	२२	४०	अ.	२२	२४	व.	२४	८	५	३८	९	४२	१८	४१	मि.	११	४८	१४	१५	७	२	२७
३२	४१	५	बु.	१२	५८	१०	४९	आ.	३८	५	२०	५१	सु.	१९	१०	कौ.	२१	३२	५	३७	९	३३	१८	४२	मि.			१५	१६	८	३	२८
३२	४५	६	बृ.	७	५	८	२६	पु.	३४	३५	१६	२६	धृ.	१६	१६	ग.	१९	२२	५	३६	९	२४	१८	४२	क.	१३	४४	१६	१७	९	४	२९
३२	४८	७	शु.	६०	२८	२८	५६	पु.	३२	३	१८	२५	शू.	१३	४१	वि	१७	७	५	३६	९	१६	१८	४३	क.			१७	१८	१०	५	३०
३२	५२	९	श.	५५	३६	२९	४९	श्ले.	३०	४१	१७	११	गं.	११	२८	बा.	१६	२५	५	३५	९	८	१८	४४	सिं.	१७	५१	१८	१९	११	६	म१
३२	५६	१०	र.	५४	३	२७	११	म.	३०	२५	१६	४४	वृ.	९	३७	तै.	२५	२६	५	३४	९	१	१८	४४	सिं.			१९	२०	१२	७	२
३२	५९	११	चं.	५३	३३	२६	५८	पू.	३१	१५	१८	३	ध्रु.	८	८	ब.	१५	१	५	३३	८	५४	१८	४५	क.	२४	१३	२०	२१	१३	८	३
३३	०२	१२	मं.	५४	५	२७	१०	उ.	३३	५	१८	४६	व्या	६	५८	ब.	१५	१	५	३२	८	४८	१८	४५	कं.			२१	२२	१४	९	४
३३	७	१३	बु.	५५	४०	२७	४७	ह.	३५	५७	१९	५४	ह.	६	९	कौ	१५	२५	५	३१	८	४३	१८	४६	कं.			२२	२३	१५	१०	५
३३	१०	१४	बृ.	५८	१३	२८	४८	चि	३९	४५	२१	२५	व.	५	४०	ग.	१६	१४	५	३१	८	३८	१८	४७	तु.	८	३८	२३	२४	१६	११	६
३३	१४	१५	शु.	६०	०	—	—	स्वा	४४	३८	२३	२१	सि	५	३१	वि	१७	२८	५	३०	८	३३	१८	४७	तु.			२४	२५	१७	१२	७
३३	१७	१५	श.	१	५६	६	१५	वि	५०	३०	२५	४१	व्य	५	३७	बा	१७	७	५	२९	१३	२९	१८	४८	वृ.	१९	६	२५	२६	१८	१३	८

उत्तरायण, उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु (२४ अप्रैल से ८ मई १९८२ तक)

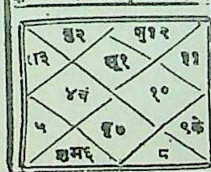
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°३६'१७" केतकी अहर्गण ३३०६

[A २४।३२ रात्रिप्र०प्र०व्या०३ मेंपरशुरामजय त्रिपुष्करयोगघं.१९।४५तक।

बुधोदय पश्चिम में,नैनातालमें अगस्त्यास्त घ.६।१५ । [K बुद्ध जयन्ती । चन्द्रदर्शन मु०३० । प्राचीनमत से शिवाजी जयन्ती, बुध कृतिका में घं.A भ.घं.२७।२से,अक्षय ३तृतीया कल्पादि,युगादि मातंगी जय.,टैगोर जय.,B भ घं.१३।२४तक, वैना. गणेश४व्रत, सूर्यभरणीमेंघं.१८।४३ बुधवृषमेंघं.C श्रीआद्यशंकराचार्यजय.५,श्रीसूरजय. शुक्रमीनमेंघं.२३।१८पुन१राहु-पूषाD श्रीरामानुजाचार्यजय., चन्दन६,गंगोत्पत्ति श्रीगंगा७,अमृत सिद्धियोगवं E भ. घं.६।२७ से घं.१७।३७तक, दुर्गाष्टमी८ व्रत,श्रीबगुलामुखी जयन्ती८F श्रीजानकी नवमी(वै.) शुक्रउभा. में घं २३।४०, महा(व्य०)पातस्प. घं G रविदशमी, महा(व्य०)पात मोक्ष घं.५।५७, यमघंट योग घ.१७।४४तक । भ घं.१५।१से घं.२६।५८तक, मोहनी११एकादशी व्रत(स्मा०वै०) चन्द्र H मोहनी११व्र.(निम्बा०),बुधरोहणीमेंघं.७।५५,त्रिपुष्करयोगघं.१८।४६तक। प्रदो.व्र.ससियो. घं.१९।५४ तक ।[H वराचार्य महाप्रभुजी का प्रादुर्भाव । भ.घं.२८।४८से,श्रीनृसिंह१४,छिन्नमस्ताजय.,वक्रीशनिहस्त४मेंघं १७।२९। भ.घं.१७।२८तक, व्रत की वैशाखी पूर्णिमा, कूर्मजय.,कवीन्द्र रवीन्द्रजय.। विशाखायुतामहावैशाखी१५स्नानदानार्थ,यमकुंभदान, वैशाखस्नानसमा.,K [B मु०रज्जब मासप्रा., ससियो घं २४।४८तक। [D ३ केतघं. २९।२९।

वैशा.शु.७ शुक्रेष्ट ५९।४२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	०	१६	४१	४२	५८	१४	भ.
मं.	५	७	४२	०	-१	व.	उ.
बु.	१	५	३२	०	९४	उ.	कृ.
बृ.	६	११	१३	०	-२	व.	स्वा
शु.	११	२	३०	०	६७	मा	पू.
श.	५	२३	४१	०	-४	व.	चि
रा	२	२३	१३	३९	३	११	पु.
के.	८	२३	१३	३९	३	११	पू.



दैनिक लग्न सारणी (नैनीताल में निरयण लग्नों का आरम्भ काल भा.प्र. समय में)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
२४	श.	२९	८	१	६	४६	८	४१	१०	५९	१३	१७	१५	३४	१७	५१	२०	११	२२	३०	२४	३८	२६	१७	२७	४४
२५	र.	२९	४	५	६	४२	८	३७	१०	५५	१३	१३	१५	३०	१७	४७	२०	७	२२	२६	२४	३४	२६	१३	२७	४०
२६	चं.	२९	०	९	६	३८	८	३३	१०	५१	१३	९	१५	२६	१७	४३	२०	३	२२	२२	२४	३०	२६	१०	२७	३६
२७	मं.	२८	५६	१३	६	३५	८	२९	१०	४७	१३	५	१५	२३	१७	३९	१९	५९	२२	१८	२४	२६	२६	६	२७	३२
२८	बु.	२८	५२	१७	६	३१	८	२५	१०	४३	१३	१	१५	१९	१७	३५	१९	५५	२२	१४	२४	२२	२६	२	२७	२८
२९	बृ.	२८	४८	२१	६	२७	८	२१	१०	३९	१२	५७	१५	१५	१७	३२	१९	५२	२२	११	२४	१८	२५	५८	२७	२४
३०	शु.	२८	४४	२५	६	२३	८	१८	१०	३५	१२	५३	१५	११	१७	२८	१९	४८	२२	७	२४	१४	२५	५४	२७	२०
म१	श.	२८	४०	२९	६	१९	८	१४	१०	३१	१२	४९	१५	७	१७	२४	१९	४४	२२	३	२४	१०	२५	५०	२७	१६
२	र.	२८	३६	३३	६	१५	८	१०	१०	२७	१२	४५	१५	३	१७	२०	१९	४०	२१	५९	२४	६	२५	४६	२७	१२
३	चं.	२८	३२	३७	६	११	८	६	१०	२३	१२	४१	१४	५९	१७	१६	१९	३६	२१	५५	२४	२	२५	४२	२७	८
४	मं.	२८	२८	४१	६	७	८	२	१०	१९	१२	३७	१४	५५	१७	१२	१९	३२	२१	५१	२३	५८	२५	३८	२७	४
५	बु.	२८	२४	४५	६	३	७	५८	१०	१५	१२	३३	१४	५१	१७	८	१९	२८	२१	४७	२३	५४	२५	३४	२७	१
६	बृ.	२८	२०	४९	५	५९	७	५४	१०	११	१२	२९	१४	४७	१७	४	१९	२४	२१	४३	२३	५०	२५	३०	२६	५७
७	शु.	२८	१६	५३	५	५५	७	५०	१०	८	१२	२५	१४	४३	१७	०	१९	२०	२१	३९	२३	४६	२५	२६	२६	५३
८	श.	२८	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ संक्रान्ति-फल ॥

शास्त्रों में वैशाख-स्नान का बड़ा महत्त्व कहा है। इसे मेष संक्रान्ति या चैत्र शुक्ल १५ से १ मास तक किया जाता है। वैशाख शुक्ल ३ को 'अक्षय तृतीया' का व्रत होता है। यह स्वयं सिद्ध मुहूर्त भी है। इस दिन मध्याह्न में भगवान् परशुराम की पूजा होती है।

[C २०।५३ यम घंटयोग घं. २२।४०से। [E१९।२६तकससियो. दिन-रात, गुरु पुष्यामृत योग घं. १९।२६ से [F मृत्युयोगघं.१८।२५ से पुन. १ राहु, पूषा ३ केतु घं. २९।२९। [G २३।४९, 'मई' मास प्रारम्भ. मजदूरदिवस।

वैशा.शु.१५ शनौ इष्ट०।०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	०	२३	२८	३८	५८	१	भ.
मं.	५	७	५२	०	-३	व.	उ.
बु.	१	१४	३[illegible]	०	६१	उ.	रो.
बृ.	६	१०	२१	०	-८	व.	स्वा
शु.	११	१०	१८	०	६७	मा.	उ.
श.	५	२३	१४	०	-४	व.	ह.
रा.	२	२२	५१	२३	३	११	पु.
के.	८	२२	५१	२३	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ ज्येष्ठकृष्णपक्ष

ति. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	भा.प्र.स. नैनीताल सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.
३३	२०	१	र.	६	३३	८	५	अ.	१७	१५	२८	२०	व.	६	३	तै.	२१	८	५	२८	१२ ८	२६	१८	४८	वृ.		
३३	२३	२	चं.	१२	३	१०	१७	ज्ये	६०	०	—	—	प.	६	४७	व.	२३	२८	५	२८	८	२४	१८	४९	वृ.	—	—
३३	२७	३	मं.	१८	१५	१२	४५	ज्ये	४	२४	७	२०	शि	७	४४	व.	२६	२	५	२७	८	२१	१८	५०	ध.	७	२९
३३	३०	४	बु.	२४	४८	१५	२१	मू.	१२	३३	१०	२७	सि.	८	४८	कौ.	२८	३८	५	२६	८	२०	१८	५०	ध.		
३३	३३	५	बृ.	३१	१३	१७	५५	पू.	२०	२०	१३	३१	सा.	९	५२	तै.	१७	५५	५	२६	८	१९	१८	५१	म.	२०	१८
३३	३६	६	शु.	३६	५८	२०	१२	उ.	२७	४०	१६	२९	शु.	१०	४९	ग.	७	६	५	२५	८	१८	१८	५२	म.		
३३	३९	७	श.	४१	३३	२२	१	श्र.	३३	५३	१८	५९	शु.	११	२६	वि	९	११	५	२४	८	१८	१८	५२	म.		
३३	४२	८	र.	४४	२५	२३	१०	ध.	३८	२८	२०	४९	ब्र.	११	३६	बा.	१०	४१	५	२४	८	१९	१८	५३	कुं.	७	६
३३	४५	९	चं.	४५	२०	२३	३१	श.	४१	१३	२१	५३	ऐं.	११	१२	तै.	११	२६	५	२३	८	२०	१८	५३	कुं.		
३३	४८	१०	मं.	४४	५	२३	१	पू.	४१	५०	२२	९	वै.	१०	८	ब.	११	२१	५	२३	८	२२	१८	५४	मी.	१६	२
३३	५१	११	बु.	४०	४५	२१	४०	उ.	४०	२८	२१	[illegible]	वि.	८	२४	ब.	१०	२५	५	२२	८	२४	१८	५५	मी.		
३३	५४	१२	बृ.	३५	३३	१९	३५	रे.	३७	८	२०	[illegible]	प्री.	[illegible]	[illegible]	कौ.	८	४३	५	२२	८	२९	१८	५५	मे.	२०	१३
३३	५६	१३	शु.	२८	४८	१६	५२	अ.	३२	१८	१८	[illegible]	आ.	२३	३५	ग.	[illegible]	[illegible]	५	२१	८	३०	१८	५६	मे.		
३३	५९	१४	श.	२०	४८	१३	४०	भ.	२६	१५	१५	५१	शो.	१९	४७	च.	२३	५९	५	२१	८	३४	१८	५६	वृ.	२१	१०
३४	२	३०	र.	१२	५	१०	१०	कृ.	११	३६	१३	९	अ.	१५	४३	किं.	२०	२२	५	२०	१२	३९	१८	५७	वृ.	—	—

दिनांक क्रम

गते	ई.	रा.	मु.	अं.
२६	२७	१९	१४	९
२७	२८	२०	१५	१०
२८	२९	२१	१६	११
२९	३०	२२	१७	१२
३०	३१	२३	१८	१३
३१	ज्ये	२४	१९	१४
ज्ये	२	२५	२०	१५
२	३	२६	२१	१६
३	४	२७	२२	१७
४	५	२८	२३	१८
५	६	२९	२४	१९
६	७	३०	२५	२०
७	८	३१	२६	२१
८	९	ज्ये	२७	२२
९	१०	२	२८	२३

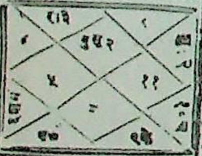
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (९ मई से २३ मई १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-१९″, केतकी अहर्गण ३३२१

मृत्युयोग घं. २८।२२ तक, चान्द्र ज्येष्ठारम्भ. वनविहार प्रा. (जैन)।
भ. घ.२३।२८ से, वक्री गुरु स्वाती १ में घं. २६।३, नारद जयन्ती।
भ. घ.१२।४५तक, संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, सूर्य कृतिकामें घं. १२।३१।
यमघंटयोग घ.१०।२७ तक,मंगल मार्गी।[Eस.सि.यो.घ.१८।१६तक।
शुक्र रेवती में घं.२१।२२। [Aकाल घ.१७।११ से सूर्यास्त तक।
भ. घं. २०।१२ से, सूर्य वृष में घं. २३।३५ संक्रान्ति का परम पुण्यA
भ. घं.९।११तक,स.सि.यो.घं.१८।५७तक,द्विपुष्प घं.१८।५७सेघं.२२।१B
कालाष्टमी८,शीतलाष्टमी (पर्युषितान्नभोजन). पञ्चकारम्भ घं.७।५६से।
[Bतक, महा(वै)पात स्प. घं१०।३४ मो.घं. १९।१६। [Fक्वचित्।
भ. घं. ११।२१ से घं. २३।१ तक, सर्वार्थ सि.यो. घं.२२।७ से।
अपरा११एकादशी व्रत सबका, अचला ११। [Dघं.१४।५३, बुध वक्रीE
प्रदोष व्रत, गोविन्दद्वादशी. मधुसूदन१२, पंचगौड़ों का त्रिदिवसीय वट-C
भ. घं.१६।१२से घं.२७।१९तक, मासशिवरात्रिव्रत, सूर्य सायन मिथुनमेंD
राष्ट्रीय ज्येष्ठारम्भ पितृकार्यार्थ अमा.,पञ्चगौड़ों का वटसावित्रीव्रत समा.।
हरियाली३०, भावुका३०, स्नान-दानादि कार्यार्थ अमावस्या,वटसावित्री
[Cसावित्री व्रतारम्भ, पञ्चक समाप्त घं.२०।१३, स.सि यो. दिनरात।

ज्येष्ठकृ. ८ रवौ इ. ०।१३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	१	१	१२	४	५७	५०	कृ.
मं.	५	६	५३	०	४	मा	उ.
बु.	१	२०	३२	०	२२	उ.	रो.
गु.	६	९	२५	०	-७	व.	स्वा
शु.	११	१९	२०	०	६८	उ.	रे.
श.	५	२२	४७	०	-३	व.	ह.
रा.	२	२२	२५	५७	३	११	पु.
के.	८	२२	२५	५७	३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता. मई	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
९	र.	२८	९	२	५	४७	७	४२	१०	०	१२	१८	१४	३५	१६	५२	१९	१२	२१	३१	२३	३९	२५	१८	२६	४५
१०	चं.	२८	५	६	५	४३	७	३८	९	५६	१२	१४	१४	३१	१६	४८	१९	८	२१	२७	२३	३५	२५	१४	२६	४१
११	मं.	२८	१	१०	५	३९	७	३४	९	५२	१२	१०	१४	२८	१६	४४	१९	४	२१	२३	२३	३१	२५	१०	२६	३७
१२	बु.	२७	५७	१४	५	३६	७	३०	९	४८	१२	६	१४	२४	१६	४०	१९	०	२१	१९	२३	२७	२५	६	२६	३३
१३	बृ.	२७	५३	१८	५	३२	७	२६	९	४४	१२	२	१४	२०	१६	३७	१८	५७	२१	१६	२३	२३	२५	२	२६	२९
१४	शु.	२७	४९	२२	५	२८	७	२३	९	४०	११	५८	१४	१६	१६	३३	१८	५३	२१	१२	२३	१९	२४	५८	२६	२५
१५	श.	२७	४५	२६	५ २४; २९	२४; २०	[illegible]	[illegible]	९	३६	११	५४	१४	१२	१६	२९	१८	४९	२१	८	२३	१५	२४	५४	२६	२१
१६	र.	२७	४१	३०	२९	१६	७	१५	९	३२	११	५०	१४	८	१६	२५	१८	४५	२१	४	२३	११	२४	५०	२६	१७
१७	चं.	२७	३७	३४	२९	१२	७	११	९	२८	११	४६	१४	४	१६	२१	१८	४१	२१	०	२३	७	२४	४६	२६	१३
१८	मं.	२७	३३	३८	२९	८	७	७	९	२४	११	४२	१४	०	१६	१७	१८	३७	२०	५६	२३	३	२४	४३	२६	९
१९	बु.	२७	२९	४२	२९	४	७	३	९	२०	११	३८	१३	५६	१६	१३	१८	३३	२०	५२	२२	५९	२४	३९	२६	५
२०	बृ.	२७	२५	४६	२९	०	६	५९	९	१६	११	३४	१३	५२	१६	९	१८	२९	२०	४८	२२	५५	२४	३५	२६	२
२१	शु.	२७	२१	५१	२८	५६	६	५५	९	१३	११	३०	१३	४८	१६	५	१८	२५	२०	४४	२२	५१	२४	३१	२५	५८
२२	श.	२७	१७	५५	२८	५२	६	५१	९	९	११	२७	१३	४४	१६	१	१८	२१	२०	४०	२२	४७	२४	२७	२५	५४
२३	र.	२७	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५	५०

⑧ शनिवार को वृष लग्नोदय दोबार होगा।

॥ संक्रान्ति-फल ॥

ज्येष्ठ कृष्णा ६ शुक्रवार को सूर्योदयात् घं. ४५।२५ पर श्रवण नक्षत्र में सूर्य की वृष संक्रान्ति ३० मुहूर्त, वृद्धावस्था(बैठी)दशा में हुई वार नाम—मिश्रा (पशुओं को सौख्य) नक्षत्र नाम—महोदरी (चौ. सु.) होने से धान्यादि भावों में समता रहे, शुक्रवारी संक्रान्ति के कारण हाथी, घोड़ा, ऊँटों एवं गुड़ महँगे होंगे, इस मास में मई ११, १२,१३,१८,१९,२०,२४,२५,२६ को साधारण वृष्टि के योग हैं कहीं-कहीं आँधी भी चलेंगी।

ज्येष्ठकृ.३० रवौ इ.०।२३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	१	७	५६	३०	५७	४१	कृ.
मं.	५	७	३२	०	९	मा.	उ.
बु.	१	२१	२६	०	-११	उ.	रो
गु.	६	८	४१	०	-६	व.	स्वा
शु.	११	२९	१९	०	६९	उ.	रे.
श.	५	२२	२९	०	-२	व.	ह.
रा.	२	२२	३	४१	३	११	पु.
के.	८	२२	३	४१	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ ज्येष्ठ शुक्लपक्ष																					मा.प्र.स. नैनीताल							चन्द्र सञ्चार			दिनांक क्रम				
दि.घ.	मा.प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं.	मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	घं.	मि.	गते सौर	ता.	रा.	मु.	अं.	
३४	४	१	बृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रो.	१२	३०	१०	२०	सु	११	४१	बा	१६	४३	५	२०	[illegible]	४४	१८	५८	मि.	२०	५७	१०	११	३	२९	२४	
३४	६	३	सं.	४५	२८	२२	३१	मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धृ.	[illegible]	[illegible]	तै.	१३	१८	५	२८	८	४९	१८	५८	मि			११	१२	४	शा	२५	
३४	९	४	बु.	३७	४५	२०	२५	पु.	५३	५३	२६	५२	गं.	२४	१६	व.	९	५५	५	१९	८	५५	१८	५८	क.	२१	२६	१२	१३	५	२	२६	
३४	११	५	बृ.	३१	१०	१७	४७	पु.	४९	४०	२५	११	वृ.	२१	६	ब.	[illegible]	[illegible]	५	१९	९	२	१८	५९	क.			१३	१४	६	३	२७	
३४	१३	६	शु.	२५	५३	१५	४०	श्ले.	४६	४८	२४	२	ध्रु.	१८	२४	ग.	२६	४९	५	१९	८	८	१९	०	सिं	२४	२	१४	१५	७	४	२८	
३४	१५	७	श.	२२	५	१४	८	म.	४५	३३	२३	३१	व्या	१६	१०	वि	२५	३९	५	१८	९	१६	१९	०	सिं			१५	१६	८	५	२९	
३४	१७	८	र.	१९	५२	१३	१५	पू.	४५	४८	२३	३९	ह.	१४	२७	बा.	२५	३	५	१८	९	२४	१९	१	सिं			१६	१७	९	६	३०	
३४	१९	९	चं.	१९	८	१२	५७	उ.	४७	२७	२४	१७	व.	१३	१३	तै.	२५	३	५	१८	९	३२	१९	१	कं.	५	४३	१७	१८	१०	७	३१	
३४	२१	१०	मं.	१९	५५	१३	१५	ह.	५०	३३	२५	३०	सि	१२	२७	व.	२५	३६	५	१७	९	४१	१९	२	कं.			१८	१९	११	८	जू.१	
३४	२३	११	बु.	२३	०	१४	५	चि	५४	५३	२७	१४	व्य	१२	७	ब.	२६	४१	५	१७	९	५०	१९	२	तु.	१४	२१	१९	२०	१२	९	२	
३४	२५	१२	बृ.	२५	१५	१५	२३	स्वा	६०	०	—	—	व.	१२	९	कौ	२८	१२	५	१६	१०	०	१९	३	तु.			२०	२१	१३	१०	३	
३४	२७	१३	शु.	२९	३३	१७	६	स्वा	०	१५	५	२३	प.	१२	३०	तै.	२७	६	५	१७	१०	१०	१९	३	वृ.	२५	१५	२१	२२	१४	११	४	
३४	२८	१४	श.	३४	४३	१९	१०	वि	६	३३	७	५४	शि	१३	८	ग.	६	६	५	१७	१०	२०	१९	४	वृ.			२२	२३	१५	१२	५	
३४	२९	१५	र.	४०	३०	२१	२१	अ.	१३	३३	१०	४२	सि	१३	५९	वि	८	१८	५	१७	[illegible]	३१	१९	४	वृ.			२३	२४	१६	१३	६	

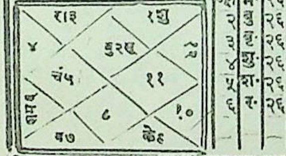
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (२४ मई से ६ जून १९८२ई०तक)।

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-२१″ केतकी अहर्गण ३३३६

[Gज्येष्ठा १५, स्नानदानार्थ घं.१०।४२से २१।२९तक, कबीरज., मृत्युयोगH
चन्द्रदर्शन मु.३०, गंगादशहरा स्नानारम्भ, कारादन सोपपदा २, बुधास्तA
मु. 'शाबान' मासारंभ, यमघंटयो. घं.७।३४से घं.२९।२तक, सूर्य रोहणीमें घं.B
भ.घं.९।५५से घं.२०।२५तक, महा(व्य.)पात रा.घं.५।४१मो.घं.१७।१६C
गुरु पुष्यामृत-ससिअसि योग घं. २५।११ तक, श्रुति पञ्चमी (जैन), L
मृत्युयोग घं.२४।२ तक, अरण्य ६, विन्ध्यवासिनी-पूजा ६।
भ.घं. १४।८से घं.२५।३७तक। [Dश्रीजवाहरलाल नेहरू, पुण्यतिथि।
दुर्गाष्टमी ८, शुक्लादेवीजय., धूमावतीजय., ससियो. घं. २३।३७ से।
महेशनवमी९, नवमीमें उपपोषण पूर्वक शुक्लादेवीपूजन। [Fप्रदोष व्रत।
भ.घं.२५।२६से, गंगादशहरा, (योग८), गंगावतरण१०, सेतुबन्धु रामेश्वरE
भ. घ.१४।५ तक, निर्जला११ एकादशी व्रत, भीमसेनी ११।
चम्पक १२, त्रिविक्रम पूजा, रामद्वादशी, मंगल हस्त में घं. १७।२९, F
दक्षिणात्यों का वटसावित्री व्रतारम्भ, (पूर्णिमापक्ष)। [Hघं.१०।४२ तक।
भ. घं. १९।१० से, शुक्र भरणी में घं. २६।०।
भ. घं.८।१८तक, वटसावित्रीव्रत (गुज.) मन्वादि१५, ज्येष्ठा युता महा-G
[Cउमाजय., वैनायिकी श्रीगणेश ४ व्रत, गुरुअर्जुनदेव बलिदानदिवस।
[Eप्रतिष्ठा बटुकभैरवजयन्ती, दशहराव्रत समाप्त, 'जून' मासारम्भ।

ज्येष्ठशु.८ रवौ इ. ०।२८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	१	१४	३९	५२	५७	२२	रो.
मं.	५	८	४४	०	१२	मा	उ.
बु.	१	१८	५५	०	-१२	अ.	रो.
बृ.	६	८	३	०	-८	व.	स्वा.
शु.	०	५	२३	०	७०	उ.	अ.
श.	५	२२	१२	०	-२	व.	ह.
रा.	२	२१	४१	२५	३	११	पु.
के.	८	२१	४१	२५	३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
२४	चं.	२७	१०	३	२८	४४	६	४३	९	१	११	१९	१३	३६	१५	५३	१८	१३	२०	३२	२२	४०	२४	१९	२५	४६
२५	मं.	२७	६	७	२८	४१	६	३९	८	५७	११	१५	१३	३३	१५	४९	१८	९	२०	२८	२२	३६	२४	१५	२५	४२
२६	बु.	२७	२	११	२८	३७	६	३५	८	५३	११	११	१३	२९	१५	४५	१८	५	२०	२४	२२	३२	२४	११	२५	३८
२७	बृ.	२६	५८	१५	२८	३३	६	३१	८	४९	११	७	१३	२५	१५	४२	१८	१	२०	२०	२२	२८	२४	७	२५	३४
२८	शु.	२६	५४	१९	२८	२९	६	२७	८	४५	११	३	१३	२१	१५	३८	१७	५८	२०	१७	२२	२४	२४	३	२५	३०
२९	श.	२६	५०	२३	२८	२५	६	२४	८	४१	१०	५९	१३	१७	१५	३४	१७	५४	२०	१३	२२	२०	२३	५९	२५	२६
३०	र.	२६	४६	२७	२८	२१	६	२०	८	३७	१०	५५	१३	१३	१५	३०	१७	५०	२०	९	२२	१६	२३	५५	२५	२२
३१	चं.	२६	४२	३१	२८	१७	६	१६	८	३३	१०	५१	१३	९	१५	२६	१७	४६	२०	५	२२	१२	२३	५१	२५	१८
जून१	मं.	२६	३८	३५	२८	१३	६	१२	८	२९	१०	४७	१३	५	१५	२२	१७	४२	२०	१	२२	८	२३	४७	२५	१४
२	बु.	२६	३४	४०	२८	९	६	८	८	२५	१०	४३	१३	१	१५	१८	१७	३८	१९	५७	२२	४	२३	४४	२५	१०
३	बृ.	२६	३०	४४	२८	५	६	४	८	२१	१०	३९	१२	५७	१५	१४	१७	३४	१९	५३	२२	०	२३	४०	२५	७
४	शु.	२६	२६	४८	२८	१	६	०	८	१७	१०	३५	१२	५३	१५	१०	१७	३०	१९	४९	२१	५६	२३	३६	२५	३
५	श.	२६	२२	५२	२७	५७	५	५६	८	१४	१०	३१	१२	४९	१५	६	१७	२६	१९	४५	२१	५२	२३	३२	२४	५९
६	र.	२६	१८	५६	२७	५३	५	५२	८	१०	१०	२८	१२	४५	१५	३	१८	२२	१९	४१	२१	४८	२३	२८	२४	५५

॥ मास-फल ॥

ज्येष्ठ मास की अमावस्या को स्त्रियों का सौभाग्य वर्द्धक 'वट-सावित्री' व्रत होता है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ वट-वृक्ष की परिक्रमा पूजा के बाद सावित्री-सत्यवान की कथा सुनती हैं, कहीं इसको ज्येष्ठ शु. १५ को मनाते हैं। गंगादशहरा—ज्येष्ठ शु. १० को होता है, इसे "यत्र योग बाहुल्यं सैव ग्राह्या" के अनुसार ग्रहण करना चाहिये।

[Aपश्चिममें ससियोदिनरात अमृत सिद्धि घं. १०।२० से।

[B८।४८ शुक्र मेषमें घं. १३।२९, रम्भा ३ व्रत, राणाप्रतापजयन्ती।

ज्येष्ठशु.१५ रवौ इ.०।३०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	१	२१	२२	८	५७	२४	रो.
मं.	५	१०	२४	०	९	मा	ह.
बु.	१	१५	८	०	-२८	अ.	रो.
बृ.	६	७	३२	०	-४	व.	स्वा
शु.	०	१३	३०	०	७०	उ.	भ.
श.	५	२२	१	०	-१	व.	ह.
रा.	२	२१	१९	९	३	११	पु.
के.	८	२१	१९	९	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ आषाढ़ कृष्णपक्ष | भा.प.स. नैनीताल | चन्द्र सञ्चार | दिनांक क्रम

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	योग	स्टैं.टा. घं.	मि	करण	स्टैं.टा. घं.	मि	सू.उ. घं.	मि	मध्या. घं. म	से.	सू.अ. घं.	मि	चन्द्र रा.	घं.	मि	गते ज्येष्ठ	मी. ज्येष्ठ	रा. ज्येष्ठ	मु. शा.बा.	अं. जून
२४	२१	१	चं.	४६	४४	१३	१९	ज्ये	२१	३	१२	४२	सा	१४	५९	बा	१०	४३	५	१९	१२	४२	१९	५	ध.	१३	४०	२४	२५	१७	१४	७
२४	२२	२	मं.	५३	१५	२६	३४	मू.	२८	५३	१९	४९	शु.	१६	४	तै.	१३	१९	५	१६	१०	५३	१९	५	ध.			२५	२६	१८	१५	८
२४	२३	३	बु.	५९	३३	२२	५	पू.	३६	४०	१९	५६	शु	१७	९	व.	१५	५०	५	१६	११	५	१९	६	म.	२६	४१	२६	२७	१९	१६	९
२४	२४	४	गु.	६०	०	—	—	उ.	४४	५	२२	५४	ब.	१८	८	ब.	१८	१६	५	१६	११	१९	१९	६	म.			२७	२८	२०	१७	१०
२४	२५	४	शु.	५	१८	७	२३	श्र.	५०	४५	२५	३४	ऐं.	१८	५४	कौ.	२०	२५	५	१६	११	२९	१९	९	म.			२८	२९	२१	१८	११
२४	२६	५	श.	१०	१०	९	२०	ध.	५६	१५	२७	४६	वै.	१९	२०	ग.	२२	७	५	१६	१०	४१	१९	९	कु.	१४	४४	२९	३०	२२	१९	१२
२४	२७	६	र.	१३	५४	१०	४५	श.	६०	०	—	—	वि	१९	१८	वे	२३	१३	५	१६	११	५३	१९	९	कुं			३०	३१	२३	२०	१३
२४	२८	७	चं.	१५	३५	११	३०	श.	०	१३	५	२१	प्री	१८	४४	बा	२३	३६	५	१६	१२	६	१९	८	मी	२४	५	३१	३२	२४	२१	१४
२४	२९	८	मं.	१५	३३	११	३०	पू.	२	२२	६	१४	आ.	१७	३४	तै.	२३	१३	५	१९	१२	१८	१९	८	मी			आ	आ	२५	२२	१५
२४	३९	९	बु.	१३	३५	१०	४३	उ.	२	४०	६	२१	सौ	१५	४६	व.	२२	२	५	१९	१२	३१	१९	८	मी			२	२	२६	२३	१६
२४	४०	१०	गु.	९	४३	९	१०	रे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शो.	१३	२१	व.	२०	७	५	१९	१२	४४	१९	९	मे.	५	४१	३	३	२७	२४	१७
२४	४०	११	शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.	५२	३५	२६	१९	अ.	१०	२८	कौ	१७	३३	५	१९	१२	५७	१९	९	मे.			४	४	२८	२५	१८
२४	४०	१३	श.	४८	४०	२४	४१	कृ.	५६	२५	२३	५१	सु	[illegible]	[illegible]	ग.	१४	२७	५	१९	१३	१०	१९	९	वृ.	९	४४	५	५	२९	२६	१९
२४	४०	१४	र.	३९	४८	२१	८	रो.	३९	२८	२१	४	शू.	२३	९	वि	२०	५८	५	१९	१३	३३	१९	९	वृ.			६	६	३०	२७	२०
२४	४०	३०	च.	३०	१३	१७	२२	मृ.	३२	१०	१८	९	गं.	१८	५०	च.	[illegible]	[illegible]	५	१९	[illegible]	३६	१९	१०	मि	७	३७	७	७	३१	२८	२१

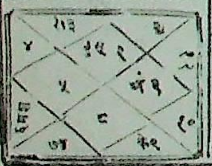
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (७ जून से २१ जून १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-२६'-२४", केतकी अहर्गण ३३५०

चान्द्र आषाढ़ मासारम्भ, गुरुहरगोविन्द जयन्ती, लक्ष्मीबाई पुण्यतिथि।
सूर्य मृगशीर्ष में घं. ६।४७। [B११ एकादशी व्रत(स्मा.) H
भद्रा घं. १५।५० से २९।५ तक। [H पंचक समाप्त घं. ५।४१।
संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, बुधोदय पूर्वे।
स.सि.यो. घं. २५।३४ तक। [Fदेवों का मध्याह्न, भारत में G
पञ्चक प्रा. घं.१४।४४ से। [Gअदृश्य खण्डग्रास सूर्यग्रहण।
भ. घं. १०।४५से २३।१३ तक। [Cद्वादशी १२व्रत (गोविन्दपूजन)।
बुध मार्गी। [A घं.६।१४ से, सूर्यकी मिथुन संक्रान्ति घं.६।१३ परम I
कालाष्टमी८ व्रत, शीतलाष्टमी, बौहरा८, त्रिशूलयात्रा, सर्वार्थ सिद्धियो.A
भ. घं. २२।२ से। [I पुण्यकाल घं. १२।३७ तक।
भ.घं.९।१०तक, ससियो अहोरात्र, शुक्र कृतिकामें घं.११।३४, योगिनीB
योगिनी ११ व्रत (वै.) मतान्तर से सबका, शनि मार्गी, त्रिस्पृशा महा-C
भ. घं. २४।४५ से, प्रदोष व्रत, शनि प्रदोष, ससियो-अमृत सिद्धियोगD
भ. घं. १०।५८ तक, शुक्र वृष में घं. ७।३१। [Dघं. २३।५१ से।
देव-पितृकार्येऽमा ३०, सोमवती ३०, ससिअसियो. घं. १८।९ तक. E
[Eसायन कर्केऽर्क घं. २२।५३ दक्षिणायनारंभः. दैत्यों का निशीय F

आषाढ़ कृ. ७चन्द्रे इ.०।३२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	१	२९	०	५८	७५	१८	मृ.
मं.	५	१२	४८	०	२०	मा	ह.
बु.	१	१३	४	०	२	उ.	रो.
बृ.	६	७	७	०	-३	व.	स्वा.
शु.	०	२३	५१	०	७०	उ.	भ.
श.	५	२१	५४	०	०	स्त	चि.
रा.	२	२०	५३	४३	३	११	[illegible]
के.	८	२०	५३	४३	३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टैं. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घं.	मि	सिंह घं.	मि	कन्या घं.	मि	तुला घं.	मि	वृश्चि. घं.	मि	धनु घं.	मि	मकर घं.	मि	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
७	चं.	२६	१५	०	२७	४९	५	४८	८	६	१०	२४	१२	४१	१४	५८	१७	१८	१९	३७	२१	४५	२३	२४	२४	५१
८	मं.	२६	११	४	२७	४६	५	४४	८	२	१०	२०	१२	३७	१४	५४	१७	१४	१९	३३	२१	४१	२३	२०	२४	४७
९	बु.	२६	७	८	२७	४२	५	४०	७	५८	१०	१६	१२	३४	१४	५०	१७	१०	१९	२९	२१	३७	२३	१६	२४	४३
१०	गु.	२६	३	१२	२७	३८	५	३६	७	५४	१०	१२	१२	३०	१४	४६	१७	६	१९	२५	२१	३३	२३	१२	२४	३९
११	शु.	२५	५९	१६	२७	३४	५	३२	७	५०	१०	८	१२	२६	१४	४३	१७	२	१९	२२	२१	२९	२३	८	२४	३५
१२	श.	२५	५५	२०	२७	३०	५	२९	७	४६	१०	४	१२	२२	१४	३९	१६	५९	१९	१८	२१	२५	२३	४	२४	३१
१३	र.	२५	५१	२४	२७	२६	५	२५	७	४२	१०	०	१२	१८	१४	३५	१६	५५	१९	१४	२१	२१	२३	०	२४	२७
१४	चं.	२५	४७	२८	२७	२२	५	२१	७	३८	९	५६	१२	१४	१४	३१	१६	५१	१९	१०	२१	१७	२२	५६	२४	२३
१५	मं.	२५	४३	३२	२७	१८	५	१७	७	३४	९	५२	१२	१०	१४	२७	१६	४७	१९	६	२१	१३	२२	५२	२४	१९
					(क)		२१	३ (ख)																		
१६	बु.	२५	३९	३६	२७	१४	२९	९	७	३०	९	४८	१२	६	१४	२३	१६	४३	१९	२	२१	९	२२	४९	२४	१५
१७	गु.	२५	३५	४१	२७	१०	२९	५	७	२६	९	४४	१२	२	१४	१९	१६	३९	१८	५८	२१	५	२२	४५	२४	११
१८	शु.	२५	३१	४५	२७	६	२९	१	७	२२	९	४०	११	५८	१४	१५	१६	३५	१८	५४	२१	१	२२	४१	२४	८
१९	श.	२५	२७	४९	२७	२	२८	५७	७	१८	९	३६	११	५४	१४	११	१६	३१	१८	५०	२०	५७	२२	३७	२४	४
२०	र.	२५	२३	५३	२६	५८	२८	४३	७	१५	९	३२	११	५०	१४	७	१६	२७	१८	४६	२०	५३	२२	३३	२४	०
२१	चं.	२५	१९	५७	२६	५४	२८	४९	७	११	[illegible]	[illegible]	११	४६	१४	३	१६	२३	१८	४२	२०	४९	२२	२९	२३	५६

(क) मंगलवार ... [illegible]

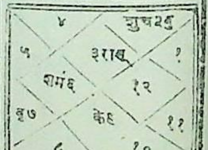
॥ सक्रान्ति-फल ॥

आषाढ़ कृष्णा ८ भौमे सूर्योदयात् घं. २।२० पर पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में सूर्य की मिथुन संक्रान्ति है। वारनाम—महोदरी (चौ. सु.) नक्षत्र नाम—घोरा (शूद्रों को सुख दायक, मुहूर्त ४५ गतालकाऽलकावस्था (उकडूं) होने से धान्य आदि के भावों में मंदीकारक है। मोमावती अमावास्या भी इसमें सहायक है, मंगलवार का योग ठीक नहीं है। जून मास की ७,८, ९,१५,१६,२१,२२,२३,२७,२८, २९ एवं जुलाय ४,५,६ को आंधी-पानी-बादल बृष्टि का योग है।

—०—

आषाढ़ कृ. ३०चन्द्रे इ.०।३०

ग्र	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	२	५	४२	२	५७	१७	मृ.
मं.	५	१५	१३	०	२३	मा	ह.
बु.	१	१४	५३	०	३४	उ.	रो.
बृ.	६	६	५४	०	-१	व.	स्वा.
शु.	१	१	५	०	७०	उ.	कृ.
श.	५	२१	५४	०	०	स्त	चि.
रा.	२	२०	३१	२८	३	११	पु.
के.	८	२०	३१	२८	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ आषाढ़ शुक्लपक्ष

दि. घ.	मा. प.	तिथि	वार	घ. प.		स्टैं. टा. घं.	मि	नक्षत्र	घ. प.		स्टैं. टा. घं.	मि.	योग	स्टैं. टा. घं.	मि	करण	स्टैं. टा. घं.	मि	आ.प्र.म. नैनीताल सू. उ. घं.	मि	मे.द्वा. घं. मि	से.	सू. अ. घं.	मि	चन्द्र संचार रा.	घं.	मि.	दिनांक क्रम ग्रे.	सौ.	रा.	मु.	अं.
३४	४०	१	मं.	२०	४८	१३	३७	आ.	२४	५०	१५	१४	वृ.	१४	४०	बा.	२३	४८	५	१८	१४	४९	१९	१०	मि.			८	८	१	२९	२२
३४	४०	२	बु.	११	५०	१०	२	पु.	१८	३	१२	३१	ध्रु.	१०	४०	तै.	२०	२	५	१८	१४	२	१९	१०	क.	७	१०	९	९	२	१	२३
३४	४०	३	बृ.	[illegible]		[illegible]		पु.	१२	८	१०	९	व्या	[illegible]		व.	१७	२०	५	१८	१४	१५	१९	१०	क.			१०	१०	३	२	२४
३४	४०	५	शु.	५१	२०	२५	५०	श्ले.	७	२६	८	१७	ह.	२४	४७	ब.	१४	११	५	१८	१४	२७	१९	१०	सिं	८	१७	११	११	४	३	२५
३४	४०	६	श.	४७	३०	२४	१९	म.	४	१५	७	१	सि	२२	३०	कौ	१२	१९	५	१९	१४	४०	१९	११	सिं			१२	१२	५	४	२६
३४	३९	७	र.	४५	३५	२३	३३	पू.	२	५०	६	२७	व्य	२०	४८	ग.	११	११	५	१९	१४	५२	१९	११	कं.	१२	२५	१३	१३	६	५	२७
३४	३९	८	सो.	४५	३०	२३	३१	उ.	२	१५	६	३७	व.	१९	४२	वि	११	२६	५	१९	१५	५	१९	११	कं.			१४	१४	७	६	२८
३४	३८	९	मं.	४७	१३	२४	१३	ह.	५	२५	७	२०	प.	१९	१०	बा.	११	४६	५	२०	१५	१७	१९	११	तु.	२०	१२	१५	१५	८	७	२९
३४	३७	१०	बु.	५०	२५	२५	३०	चि	९	२०	९	४	शि	१९	८	तै.	१२	४९	५	२०	१५	३०	१९	११	तु.			१६	१६	९	८	३०
३४	३६	११	बृ.	५४	५५	२७	१८	स्वा	१४	३८	११	११	सि	१९	३२	व.	१४	२२	५	२०	१५	४२	१९	११	तु.			१७	१७	१०	९	जु.१
३४	३५	१२	शु.	६०	०	—	—	वि	२१	३	१३	४६	सा	२०	१५	ब.	१६	२२	५	२१	१५	५३	१९	११	वृ.	७	६	१८	१८	११	१०	२
३४	३४	१२	श.	०	२३	५	३०	अनु.	२८	१७	१६	४०	शु.	२१	११	कौ.	१८	४२	५	२१	१६	४	१९	११	वृ.			१९	१९	१२	११	३
३४	३३	१३	र.	६	२८	७	५७	ज्ये.	३५	५८	१९	४५	शु.	२२	१५	ना.	२१	१३	५	२२	१६	१५	१९	११	ध.	१९	४५	२०	२०	१३	१२	४
३४	३२	१४	सो.	१२	५०	१०	२०	मू.	४३	४५	२२	५२	ब्र.	२३	२१	वि	२३	४६	५	२२	१६	२६	१९	११	ध.			२१	२१	१४	१३	५
३४	३१	१५	मं.	१९	८	१३	२	पू.	५१	२०	२५	५५	ऐं.	२४	२३	बा.	२६	१५	५	२३	१६	३७	१९	११	ध.			२२	२२	१५	१४	६

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु. (२२ जून से ६ जुलाई १९८२ तक)

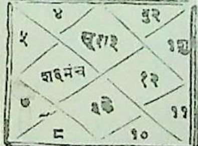
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६'-२७", अहर्गण ३३६५

[⊕ ५।२१स्त्री पु. चं. चं योग, वा. चातकश्रेष्ठवर्षा (भारतमें अदृश्यखग्रा. चं. ग्रहण)

राष्ट्रीय आषाढ़, चन्द्रदर्शनमु. ४५, यमघट घं. १५।५४तक, नि. सूर्य A
रथयात्रा जगन्नाथपुरी रथोत्सव २, श्रीबलरामजगदीशरथोत्सव, मु. B
स. घं. १७।२, से घ. २८।१ तक, वैनायकी श्रीगणेश४ व्रत, अक्षि अक्षि C
आषाढ़ी५, मृत्युयोग घं. ८।१७तक स्कन्द पञ्चमी। [B रमजान (रोजाआ.)
कुमार६, कसुंबा ६, [G १२व्र. संकर्षणपूजन [C शुक्लपुष्यामृतपं. १०।९ तक।
भ. घं. २३।३३ से, त्रिपुष्कर श्री. २३।३३ तक। ससियोग घं. D
भ. घं. ११।२६ तक, दुर्गाष्टमी ८। [H मिथुने बुधः घं. १८।२४
कन्दर्प ९, भडढली ९, शुभादि ९, शुक्ररोहिणी में घ. १६।१८।
मन्वादि १०, सोपपदा १०, वेदारम्भ में अनध्याय, मृगे बुधः घं. E
भ. घं. १४।२२ से २७।१८ तक, देवशयनी ११व्रत (स्मा. वै.) F
हरिशयनी ११ व्रत, (निम्बा.) हरिवासराऽभाव वञ्जुली महाद्वादशी G
प्र. व्रत, (शनि प्र.) [E २०।२९, आर्द्रा४ राहुःपूफा २ केतु घं. २७।२८
जयापार्वती व्रत। [F चातुर्मास्य व्रतारम्भ, तुलसीरोपण, जुलाय ७मा.।
भ. घं. १०।१०से२३।४६ तक। चौमासी १४, व्रतकीपूर्णिमा, १५, H
गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा१५, स्नान दानकी आषाढ़ी पूर्णिमा, मन्वादि१५,*
*सन्यासियों का चातुर्मास्यारंभ कनखल स्नान, सूर्य पुनर्वसु में घं. ⊕

आषाढ़ शु. ८ चं. इ. ०।२३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	२	१२	२२	४६	५७	१३	मृ.
मं.	५	१८	५	०	२५	आ	ह.
बु.	१	२०	२३	०	६४	उ.	रो.
बृ.	६	६	५०	०	०	स्त	स्वा
शु.	१	९	२१	०	७१	उ.	कृ.
श.	५	२१	५८	०	१	आ	ह.
रा.	२	२०	९	१२	३	११	पु.
के.	८	२०	९	१२	३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल आ. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि	कन्या घं.	मि	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि	धनु घं.	मि	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
२२	सं.	२५	१६	१	२६	५०	२८	४५	७	७	९	२५	११	४२	१३	५९	१६	१९	१८	३८	२०	४५	२२	२५	२३	५२
२३	बु.	२५	१२	५	२६	४७	२८	४१	७	३	९	२१	११	३८	१३	५५	१६	१५	१८	३४	२०	४२	२२	२१	२३	४८
२४	बृ.	२५	८	१०	२६	४३	२८	३७	६	५९	९	१७	११	३५	१३	५१	१६	११	१८	३०	२०	३८	२२	१७	२३	४४
२५	शु.	२५	४	१४	२६	३९	२८	३३	६	५५	९	१३	११	३१	१३	४७	१६	७	१८	२६	२०	३४	२२	१३	२३	४०
२६	श.	२५	०	१८	२६	३५	२८	३०	६	५१	९	९	११	२७	१३	४४	१६	४	१८	२३	२०	३०	२२	९	२३	३६
२७	र.	२४	५६	२२	२६	३१	२८	२६	६	४७	९	५	११	२३	१३	४०	१६	०	१८	१९	२०	२६	२२	५	२३	३२
२८	सो.	२४	५२	२६	२६	२७	२८	२२	६	४३	९	१	११	१९	१३	३६	१५	५६	१८	१५	२०	२२	२२	१	२३	२८
२९	मं.	२४	४८	३०	२६	२३	२८	१८	६	३९	८	५७	११	१५	१३	३२	१५	५२	१८	११	२०	१८	२१	५७	२३	२४
३०	बु.	२४	४४	३४	२६	१९	२८	१४	६	३५	८	५३	११	११	१३	२८	१५	४८	१८	७	२०	१४	२१	५३	२३	२०
जु. १	बृ.	२४	४०	३९	२६	१५	२८	१०	६	३१	८	४९	११	७	१३	२४	१५	४४	१८	३	२०	१०	२१	४९	२३	१६
२	शु.	२४	३६	४३	२६	११	२८	६	६	२७	८	४५	११	३	१३	२०	१५	४०	१७	५९	२०	६	२१	४५	२३	१२
३	श.	२४	३२	४७	२६	७	२८	२	६	२३	८	४१	१०	५९	१३	१६	१५	३६	१७	५५	२०	२	२१	४२	२३	९
४	र.	२४	२८	५१	२६	३	२७	५८	६	२०	८	३७	१०	५५	१३	१२	१५	३२	१७	५१	१९	५८	२१	३८	२३	५
५	चं.	२४	२४	५५	२५	[illegible]	२७	५४	६	१६	८	३४	१०	५१	१३	८	१५	२८	१७	४७	१९	५४	२१	३४	२३	१
६	मं.	२४	२०	५९	२५	५५	२७	५०	६	१२	८	३०	१०	४७	१३	४	१५	२४	१७	४३	१९	५०	२१	३०	[illegible]	[illegible]

॥ मास-फल ॥

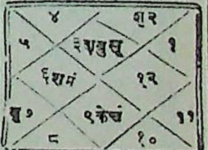
आषाढ़ में रथयात्रा (शु० २), हरशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रतारम्भ (शु० ११) एवं गुरु पूर्णिमा (शु० १५) पर्व मुख्य हैं। चातुर्मास्य व्रत आषाढ़ (शु० ११ से कार्तिक शु० ११ तक चलता है। इस व्रत में, नीबू, राजमाष, मूली कद्दू, गन्ना आदि त्याज्य है।

[A आर्द्रा में घं. ५।४६ स्त्री स्त्री चं. चं. योग वा. अश्व वर्षा नेष्ट, त्रिपुष्कर यो. घ. १५।१४ से।

[D ६।२७ से विवस्वत सूर्य पूजा ७. विजया ७. गुरुमार्गी।

आषा. शु. १५ भो. इ. ०।१५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	२	२०	०	१८	५७	११	पु.
मं.	५	२१	३६	०	२८	मा	ह.
बु.	२	०	४२	०	९४	उ.	रो.
बृ.	६	६	५६	०	१	मा	स्वा
शु.	१	१८	५१	०	७१	उ.	रो.
श.	५	२२	९	०	२	मा	ह.
रा.	२	१९	४३	४५	३	११	पु.
के.	८	१९	४३	४५	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत २०३९ शाके १९०४ श्रावणकृष्णपक्ष																			भा.प्र.स. नैनीताल						चन्द्र सञ्चार			दिनांक क्रम				
दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	घं.	मि.	सौ	मी	रा.	मु.	अं. जुलाई
३४	२९	१	बु.	२५	८	१५	२६	उ.	४८	३३	२८	४८	वै.	२५	१८	तै.	२८	३३	५	२३	१२/१६	४७	१९	११	म.	८	४०	२३	२३	१६	१५	७
३४	२८	२	गु.	३०	३०	१७	३५	श्र.	६०	०	—	—	वै	२५	५९	ग.	१७	३५	५	२३	१६	५७	१९	११	प.			२४	२४	१७	१६	८
३४	२६	३	शु	३५	२	१९	२४	श्र.	५	०	७	२४	प्री	२६	२४	व.	६	३३	५	२४	१७	६	१९	११	कु.	२०	३४	२५	२५	१८	१७	९
३४	२५	४	श.	३८	३३	२०	४९	ध.	१०	३३	९	३७	आ	२६	२८	ब.	८	१०	५	२४	१७	१५	१९	१०	कुं.			२६	२६	१९	१८	१०
३४	२३	५	र.	४०	४३	२१	४२	श	१४	५५	११	२३	सौ	२६	७	कौ.	९	२०	५	२५	१७	२३	१९	१०	कुं.			२७	२७	२०	१९	११
३४	२१	६	चं.	४१	२७	२२	०	पू.	१८	०	१२	३७	शो	२५	१८	ग.	९	५६	५	२५	१७	३१	१८	१०	मी	६	२२	२८	२८	२१	२०	१२
३४	१९	७	मं.	४०	३७	२१	४१	उ.	१९	१०	१३	१४	अ.	२३	५८	वि	९	५६	५	२६	१७	३९	१९	१०	मी.			२९	२९	२२	२१	१३
३४	१८	८	बु.	३८	१३	२०	४२	रे.	१९	२८	१३	१२	सु.	२२	८	बा.	९	१७	५	२६	१७	४६	१९	९	मे.	१३	१२	३०	३०	२३	२२	१४
३४	१५	९	गु.	३४	८	१९	६	अ.	१७	४८	१२	३५	धृ.	१९	४६	तै.	७	५९	५	२७	१७	५३	१९	९	मे.			३१	३१	२४	२३	१५
३४	१३	१०	शु.	२८	३८	१६	५४	भ.	१३	५७	११	१९	शू.	१६	५५	व.	३	३६	५	२७	१७	५९	१९	९	वृ.	१६	५४	श्रा	श्रा	२५	२४	१६
३४	११	११	श.	२१	४८	१४	११	कृ.	१०	८	९	३१	गं.	१३	३०	कौ	४	३९	५	२८	१८	४	१९	९	वृ.			२	२	२६	२५	१७
३४	९	१२	र.	१३	५५	११	२	रो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ.	१०	१	ग.	२१	२१	५	२८	१८	९	१९	८	मि.	१८	१	३	३	२७	२६	१८
३४	६	१३	चं.	[illegible]	[illegible]	२८	[illegible]	आ	५१	१३	२५	१८	ध्रु.	[illegible]	[illegible]	वि	१७	५०	५	२९	१८	१३	१९	८	मि.			४	४	२८	२७	१९
३४	४	३०	मं.	४७	४८	२४	२०	पु	४४	१८	२३	१२	ह.	२२	९	च.	१४	१४	५	२९	१२/१८	१७	१९	७	क.	१७	[illegible]	५	५	२९	२८	२०

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु. (७जुलाई से २०जुलाई १९८२ तक)

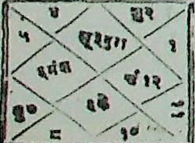
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-२९″, केतकी अहर्गण ३३८०

[Mआर्द्रामें घं.२७।९ भारतमें अदृश्य खण्डग्रास सूर्यपर्व, दर्शदीप-पूजन।

श्रीलोकमान्यतिलक पुण्यतिथि, चान्द्र श्रावण: [illegible], अशून्यशयन२ व्रत,A
जयापार्वती व्रत समाप्त।[A (चन्द्रोदय घं.२०।१०व्यापिनी द्वितीयामें)।
भ.घं.६।३३से१९।२५तक,पंचक प्रा.घं.२०।३४से,बुध आर्द्रामें घं.२०।२९B
[Bमृगे शुक्रे घ.२३।४९ चित्रा.भौम घं.२२।[illegible] संकष्टीश्रीगणेश४व्रत,स.C
नागपञ्चमी ५ व्रत (मरुस्थले)। [Cसि. यो.घं. ७।२४ तक।
भ. घं.२२।०से,श्राव.सोम व्रत(प्रदोषवत)। [Eतक,भौम व्रत दुर्गापूजा।
भ. घं.९।५६तक,बुधास्तपूर्वे लोकमान्यतिल[illegible]जय.,सिद्धियो घं.१३।१४E
कालाष्टमी८व्रत,मृत्यु योग घं.१३।१३ से, पञ्चक समाप्त घं. १३।१३।
शुक्र मिथुन में घं. १३।४९। [Hघं. ९।३१ से। [Kमा. घं.१९।५
भ.घं ६।४से १६।५४तक,कर्केऽर्कः (कर्कसंक्रान्ति) घं.१७।६संक्रान्ति पुण्य F
कामदा११व्रत(सर्वे.), पवित्रा११,कामिका११ स.सि.यो.अमृतसिद्धियो.H
प्रदोषव्रत, द्विपु.यो. घं,७।१६से११।२तक, म[illegible](व्य.)पात स्प घं ८।४२K
भ.घं.७।३७से१७।५०तक, मासशिवरात्रिव्रत,पृथ्वेरवि घं.२८।५४स्त्री.स्त्री.L
हरियाली ३० अमा, देवपितृकार्येऽमा, सोमवती ३०, भौमव्रत, शुक्रM
[Lचं.च.यो. वा,गज वर्षा नेष्ट, अमृतसिद्धि घं.२८।४२तक, सोमव्रत।
[Fकाल सूर्योदयसे,संकल्पार्थ दक्षिणायनवर्षाऋतु-सौ.श्रा.आरंभ,हरियालाG

श्रावणकृ.८ बुधे इ. ०।८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	२	२७	३७	५९	५७	१४	पु.
मं.	५	२५	२७	०	४९	मा	चि
बु.	२	१४	४८	०	११८	अ.	आ.
बृ.	६	७	१३	०	३	मा	[illegible]
शु.	१	२८	२७	०	७२	उ.	मृ.
श.	५	२२	२६	०	२	मा	ह.
रा.	२	१९	१८	१९	३	११	आ.
के.	८	१९	१८	१९	३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टें. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
७	बु.	२४	१७	३	२५	५१	२७	४६	६	८	८	२६	१०	४३	१३	०	१५	२०	१७	३९	१९	४७	२१	२६	२२	५३
८	गु.	२४	१३	७	२५	४८	२७	४२	६	४	८	२२	१०	४०	१२	५६	१५	१६	१७	३५	१९	४३	२१	२२	२२	४९
९	शु.	२४	९	११	२५	४४	२७	३८	६	०	८	१८	१०	३६	१२	५२	१५	१२	१७	३१	१९	३९	२१	१८	२२	४५
१०	श.	२४	५	१५	२५	४०	२७	३४	५	५६	८	१४	१०	३२	१२	४९	१५	८	१७	२७	१९	३५	२१	१४	२२	४१
११	र.	२४	१	१९	२५	३६	२७	३०	५	५२	८	१०	१०	२८	१२	४५	१५	५	१७	२४	१९	३१	२१	१०	२२	३७
१२	चं.	२३	५७	२३	२५	३२	२७	२७	५	४८	८	६	१०	२४	१२	४१	१५	१	१७	२०	१९	२७	२१	६	२२	३३
१३	मं.	२३	५३	२७	२५	२८	२७	२३	५	४४	८	२	१०	२०	१२	३७	१४	५७	१७	१६	१९	२३	२१	२	२२	२९
१४	बु.	२३	४९	३१	२५	२४	२७	१९	५	४०	७	५८	१०	१६	१२	३३	१४	५३	१७	१२	१९	१९	२०	५८	२२	२५
१५	गु.	२३	४५	३५	२५	२०	२७	१५	५	३६	७	५४	१०	१२	१२	२९	१४	४९	१७	८	१९	१५	२०	५४	२२	२१
१६	शु.	२३	४१	३९	२५	१६	२७	११	५	३२	७	५०	१०	८	१२	२५	१४	४५	१७	४	१९	११	२०	५१	२२	१७
१७	श.								५	२८ ⊛																
१७	श.	२३	३७	४३	२५	१२	२७	७	२९	२४	७	४६	१०	४	१२	२१	१४	४१	१७	०	१९	७	२०	४७	२२	१३
१८	र.	२३	३३	४८	२५	८	२७	३	२९	२१	७	४२	१०	०	१२	१७	१४	३७	१६	५६	१९	३	२०	४३	२२	१०
१९	चं.	२३	२९	५२	२५	४	२६	५९	२९	१७	७	३८	९	५६	१२	१३	१४	३३	१६	५२	१८	५९	२०	३९	२२	६
२०	मं.	२३	२५	५६	२५	०	२६	५५	२९	१३	७	३५	९	५२	१२	९	१४	२९	१६	४८	१८	५५	२०	३५	२२	२

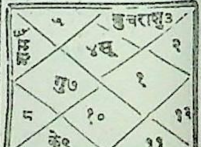
॥ संक्रान्ति-फल ॥

श्रावण कृष्णा १० शुक्रे सूर्योदयात् घं.२९।८ पर कृतिका नक्षत्र में सूर्य की कर्क संक्रान्ति है (कुछ पञ्चांगों में ५२ घटी तक होगा, जो ठीक नहीं है) वार तथा नक्षत्र नाम-मिश्रा (पशु. सु.) मुहूर्त ३० बाल्यावस्था (बैठी) होने से भावों में समता हो, शुक्रवार का योग द्रष्टव्य है—हाथी आदि पशु मँहगे, धान्य सस्ते, पर्याप्त जल एवं विदेशों से लाभ होता है। जुलाई में १२,१३,१४,१८,१९,२०,२४,२५ २६ तथा अगस्त में १, २, ३ को बादलवृष्टि व आँधी-पानीकेयोगहै।

[G[illegible] घं. १९।४४।

श्रावणकृ.३० भौमे इ.०।०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	३	३	२१	२२	५७	१८	पु.
मं.	५	२८	२९	०	३१	मा	चि
बु.	२	२९	७	०	१३३	अ.	पु
बृ.	६	९	३३	०	४	आ	[illegible]
शु.	२	५	३५	०	७२	उ.	मृ.
श.	५	२२	४२	०	३	मा	ह.
रा.	२	१८	५९	१४	३	११	आ
के.	८	१८	५९	१४	३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

⊛ शनिवार १७ता. को कर्क लग्न का उदय दो बार होगा।

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ श्रावण शुक्लपक्ष																				भा.प्र.स. नैनीताल						चन्द्र			दिनांक क्रम				
दि·मा घ·	प·	तिथि	वार	घ·	प·	स्टैं.टा. घं·	मि·	नक्षत्र	घ·	प·	स्टैं.टा. घं·	मि·	योग	स्टैं.टा. घं·	मि·	करण	स्टैं.टा. घं·	मि·		सू·उ· घं·	मि	मध्या. घं. मि·	से·	सू·अ· घं·	मि	संचार रा·	घं·	मि	पते जुलाई	सौर श्रावण	श्रा· शव्वाल	मु· हिं·	अं· जुलाई
३४	[illegible]	१	बु·	३८	४८	२१	१	पु·	३७	४२	२०	३५	व·	१८	४?	कि	१०	४?		५	३०	१२	२१	१९	७	क·			६	६	३०	२९	२१
३३	५९	२	गु·	३०	५९	१७	५३	श्ले·	३१	५९	१८	१७	सि	१४	३१	बा	२३	३३		५	३०	१८	२३	१९	६	सि	१८	१९	७	७	३१	३०	२२
३३	५७	३	शु	२४	२५	१५	१३	म·	२७	१०	१६	२६	व्य	११	१२	व·	१६	६		५	३१	१८	२६	१९	६	सि			८	८	आ	ग१	२३
३३	५४	४	श·	१९	३	१३	९	पू·	२४	१०	१५	१२	व·	८	२२	व·	२४	२२		५	३२	१८	२७	१९	५	कं·	२१	५	९	९	२	२	२४
३३	५१	५	र·	१५	३८	११	५९	उ·	२२	५३	१४	४१	प·	[illegible]	[illegible]	कौ	२३	२४		५	३२	१८	२८	१९	५	कं·			१०	१०	३	३	२५
३३	४८	६	चं·	१४	१०	११	१३	ह·	२३	२९	१४	५६	सि	२७	२६	ग·	२३	१४		५	३३	१८	२९	१९	४	तु·	२७	२४	११	११	४	४	२६
३३	४५	७	मं·	१४	४५	११	२७	चि	२६	५	१५	५९	सा	२७	३	वि	२३	५२		५	३३	१८	२९	१९	३	तु·			१२	१२	५	५	२७
३३	४३	८	बु·	१७	१२	१२	२७	स्वा	३०	३४	१७	४९	शु·	२७	१२	बा·	२५	१३		५	३४	१८	२८	१९	३	तु·			१३	१३	६	६	२८
३३	४०	९	गु·	२१	२०	१४	७	वि	३६	२८	२०	१०	शु·	२७	५०	तै·	२७	९		५	३५	१८	२७	१९	२	वृ·	१३	२४	१४	१४	७	७	२९
३३	३७	१०	शु·	२६	४५	१६	१९	अ·	४३	२५	२३	१	ब्र·	२८	४५	व·	२९	३०		५	३५	१८	२५	१९	२	वृ·			१५	१५	८	८	३०
३३	३४	११	श·	३२	५३	१८	४५	ज्ये	५१	१२	२६	५	ऐं·	—	—	वि	१८	४५		५	३६	१८	२३	१९	१	ध·	२६	५	१६	१६	९	९	३१
३३	३१	१२	र·	३९	२०	२१	२०	मू·	५९	३	२९	१३	ऐं·	५	४?	व·	८	२		५	३६	१८	२०	१९	०	ध·			१७	१७	१०	१०	अ१
३३	२७	१३	चं·	४५	३३	२३	५०	[illegible]	६०	०	—	—	वै·	६	५?	कौ	१०	३६		५	३?	१८	१६	१९	०	ध·			१८	१८	११	११	२
३३	२४	१४	मं·	५१	१५	२६	७	पू·	६	३२	८	१४	वि	७	५४	ग·	१३	१		५	३९	१८	१२	१८	५९	म·	१४	५६	१९	१९	१२	१२	३
३३	२१	१५	बु·	५६	५	२८	४	उ·	१३	२५	११	०	प्री	८	४२	वि	१५	८		५	३९	१८	७	१८	५८	म·			२०	२०	१३	१३	४

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु. (२१ जुलाई से ४अगस्त/१९८२ तक)

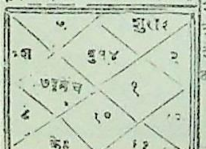
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-३१″, केतकी अहर्गण ३३९४

[हसिद्धियो घं १६।२६से हरियाली३[cयोग घं. ११।२७ तक, भौम.व्रत।

मासावधिक नक्तव्रतारंभ, शिव-विष्णुपूजनारंभ.बुधकर्क में घं.१४।६
चन्द्रदर्शन मु.३०।सिधारा३ठकुराईनजय.३(चंद्रोदय श्रा.२ में)मंगलतुलामें b
भ.घं.२६।६सेसायन सूर्य सिंहमेंघं. ९।४६, रा.श्रा. मु. शव्वाल१० 'ईद' मधुC
भ. घं.१३।९ तक, वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत, वाराह जयन्ती (मता)
नागपञ्चमी५व्र मध्याह्नमें नागपूजा, कल्कि जय.६ ससियोमहो.असियोG
वर्णषष्ठी६। सूपौदन६। सोमवार व्रत. [bघं.२६।२९ पूर्व्येबु.घं.२७।३६
भ.घं. ११।२७से२३।५२तक, शीतला७। गोस्वामी तुलसी ज. द्विपुष्करe
दुर्गाष्टमी ८ व्रत। सूर्यग्रहण तुल्य बुधाष्टमी पर्व, श्रीशिव पवित्रारोपण
निउरी नवमी. बुध अश्ले.मेंघं.१२।२२ससियो घं.२०।१०से[Gघं.१४।४१से
भ.घं. २९।३०से ससियो घं. २३।१ तक चित्रा १ शनिघं २३।२९। महाA
भ.घं.१८।४५तक। पुत्रदा११व्रत (सर्वे) शुक्र पुनर्वसु में घं २८।३०
पवित्रा१२ अगस्त८मा सर्वार्थ सिद्धियोग घं २९।१३ तक।[cत्सवा ३तीज्ञg
सोम-प्रदोषव्रत, सूर्य अश्लेषा में घं. २७।२५ (स्त्री पु.चं.चं. योग वा.B
भ.घं.२६।७से मंगल स्वाती में घं.२८।४७। भौमवार व्रत[Bमहूक श्रेष्ठ वर्षा)
भ.घं.१५।१८ तक. श्रावणी उपाकर्म (यजु व्रतकी श्रा १५, भद्रोपरिH
[Hरक्षाबन्धन, (राखी। संस्कृत दिवस, हयग्रीव जयन्ती, नारयली १५

श्रावणशु.८भौमे इ. ५९।५०

ग्र.	रा·	अं·	क·	वि·	गति	न·
सू·	३	१६	५९	५३	५७ २२	पु·
मं·	६	२	४६	१०	३३ सा	चि
बु·	३	१४	२	०	१२३ अ·	पु·
वृ·	६	८	९	०	६ मा	वि
शु·	२	१५	१३	०	७३ उ·	आ
श·	५	२३	९	०	४ मा	चि
रा·	२	१८	३३	४७	−३ ११	आ
के·	८	१८	३३	४७	−३ ११	पू·



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल से निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता·	वा	मेष घं	मि	से·	वृष घं·	मि	मिथुन घं·	मि	कर्क घं·	मि	सिंह घं·	मि	कन्या घं·	मि	तुला घं·	मि	वृश्चि. घं·	मि	धनु घं·	मि	मकर घं·	मि	कुम्भ घं·	मि	मीन घं·	मि
२१	बु·	२३	२२	०	२४	५६	२६	५१	२९	९	७	३१	९	४८	१२	५	१४	२५	१६	४४	१८	५२	२०	३१	२१	५८
२२	गु·	२३	१८	४	२४	५३	२६	४७	२९	५	७	२७	९	४४	१२	१	१४	२१	१६	४०	१८	४८	२०	२७	२१	५४
२३	शु·	२३	१४	८	२४	४९	२६	४३	२९	१	७	२३	९	४१	११	५७	१४	१७	१६	३६	१८	४४	२०	२३	२१	५०
२४	श	२३	१०	१२	२४	४५	२६	३९	२८	५७	७	१९	९	३७	११	५३	१४	१३	१६	३२	१८	४०	२०	१९	२१	४६
२५	र·	२३	६	१६	२४	४१	२६	३६	२८	५३	७	१५	९	३३	११	५०	१४	९	१६	२९	१८	३६	२०	१५	२१	४२
२६	चं	२३	२	२०	२४	३७	२६	३२	२८	४९	७	११	९	२९	११	४६	१४	६	१६	२५	१८	३२	२०	११	२१	३८
२७	मं	२२	५८	२४	२४	३३	२६	२८	२८	४५	७	७	९	२५	११	४२	१४	२	१६	२१	१८	२८	२०	७	२१	३४
२८	बु·	२२	५४	२८	२४	२९	२६	२४	२८	४१	७	३	९	२१	११	३८	१३	५८	१६	१७	१८	२४	२०	३	२१	३०
२९	गु	२२	५०	३२	२४	२५	२६	२०	२८	३७	६	५९	९	१७	११	३४	१३	५४	१६	१३	१८	२०	१९	५९	२१	२६
३०	शु	२२	४६	३६	२४	२१	२६	१६	२८	३३	६	५५	९	१३	११	३०	१३	५०	१६	९	१८	१६	१९	५५	२१	२२
३१	श	२२	४२	४०	२४	१७	२६	१२	२८	२९	६	५१	९	९	११	२६	१३	४६	१६	५	१८	१२	१९	५२	२१	१८
अ१	र·	२२	३८	४४	२४	१३	२६	८	२८	२५	६	४७	९	९	११	२२	१३	४२	१६	१	१८	८	१९	४८	२१	१५
२	चं	२२	३४	४८	२४	९	२६	४	२८	२२	६	४३	९	१	११	१८	१३	३८	१५	५७	१८	४	१९	४४	२१	११
३	मं	२२	३०	५२	२४	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	बु·	२२	२६	५७	२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१	३

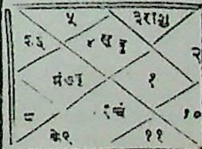
॥ संक्रान्ति-फल ॥

श्रावण मासीय सोम-मंगल के व्रत का बड़ा महत्व है। इन्हें प्रदोष व्रत करते हैं। श्रावण शु. ५ को नागपञ्चमी व्रत होता है। "पञ्चमी नाग पूजायां ग्राह्या षष्ठी समन्विता" के अनुसार परविद्धा ग्राह्य है। इस दिन दरवाजों के दोनों ओर गोबर सर्पाकार बनाकर पूजने से सर्पभय नहीं होता पूर्णिमा को 'रक्षाबन्धन' एवं उपाकर्म किया जाता है। उपाकर्म भद्रा में भी होता है जबकि रक्षा बन्धन भद्रा में नहीं किया जाता है।

[illegible] ३७ यो. २२।०. कल्कि जयन्ती (मता)

श्रावणशु. १५बुधे इ.५९।३८

ग्र	रा·	अं·	क·	वि·	गति	न·
सू·	३	२७	४१	३०	५७ २६	श्ले·
मं·	६	६	४१	२७	३५ मा	चि
बु·	३	२७	५७	०	११३ अ·	श्ले·
वृ·	६	८	४९	०	६ मा	स्वा
शु·	२	२३	४१	०	७२ उ·	पु·
श·	५	२२	३८	०	४ मा	चि
रा·	२	१८	११	३१	−३ ११	आ
के·	८	१८	११	३१	−३ ११	पू·



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ भाद्रपद कृष्णपक्ष

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.
३३	१७	१	गु.	५९	५५	२९	३७	श्र.	१९	२५	१३	२५	आयु	९	१३	बा	१६	५३
३३	१४	२	शु.	—	—	२९	३७	ध.	२४	२५	१५	२५	सौ	९	२५	तै.	१८	१३
३३	११	२	श.	२	३८	६	४३	श	२८	२०	१७	०	शो	९	१७	व.	१९	७
३३	७	३	र.	४	१८	७	२३	पू.	३१	१३	१८	९	अ.	८	४८	व.	१९	३३
३३	४	४	चं.	४	४५	७	३५	उ.	३२	५३	१८	५०	सु.	७	५६	कौ	१९	३१
३३	०	५	मं.	४	५	७	१९	रे.	३३	२५	१९	३	धृ.	[illegible]	[illegible]	ग.	१९	१
३२	५७	६	बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.	३२	४८	१८	४९	गं.	२७	९	वि	१८	३
३२	५३	८	गु.	१५	१०	२७	४६	भ.	३१	५	१८	८	वृ.	२४	४९	बा.	१६	३८
३२	४९	९	शु.	४९	५८	२५	४२	कृ.	२८	१५	१७	१	ध्रु.	२१	८	तै.	१४	४७
३२	४६	१०	श.	४३	५०	२३	१६	रो.	२४	२५	१५	३०	व्या	१९	८	व.	१२	३२
३२	४२	११	र.	३६	५५	२०	३०	मृ.	१९	४५	१३	३८	ह.	१५	५१	व.	९	५५
३२	३८	१२	चं.	२९	२३	१७	३०	आ.	१४	२३	११	३०	व.	१२	२१	कौ	[illegible]	[illegible]
३२	३४	१३	मं.	२१	३३	१४	२२	पु.	८	३८	९	१२	सि	[illegible]	[illegible]	वि	२४	४८
३२	३१	१४	बु.	१३	४०	११	१४	पु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व.	२५	२९	च.	२१	४३
३२	२७	३०	गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म.	५२	१८	२६	४१	प.	२२	६	कि	१८	५१

तिथि	भा.प्र.स. नैनीताल सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	क्रम दिनांक ग्रेगो.	सौ.	रा.	मु.	अं.
१	५	३९	[illegible]	७	१८	५८	कुं.	२६	२९	२१	२१	१४	१४	५
२	५	३९	१७	५५	१८	५७	कुं.	—	—	२२	२२	१५	१५	६
२	५	४०	१७	४९	१८	५६	कुं.			२३	२३	१६	१६	७
३	५	४०	१७	४२	१८	५५	मी	११	५२	२४	२४	१७	१७	८
४	५	४१	१७	३४	१८	५४	मी.			२५	२५	१८	१८	९
५	५	४१	१७	२५	१८	५३	मे.	१९	३	२६	२६	१९	१९	१०
६	५	४२	१७	१६	१८	५३	मे.			२७	२७	२०	२०	११
८	५	४२	१७	६	१८	५२	वृ.	२३	५१	२८	२८	२१	२१	१२
९	५	४३	१६	५७	१८	५१	वृ.			२९	२९	२२	२२	१३
१०	५	४४	१६	४६	१८	५०	मि.	२६	३५	३०	३०	२३	२३	१४
११	५	४४	१६	३४	१८	४९	मि.			३१	३१	२४	२४	१५
१२	५	४५	१६	२३	१८	४८	क.	२७	४७	३२	आ	२५	२५	१६
१३	५	४५	१६	१०	१८	४७	क.			आ	२	२६	२६	१७
१४	५	४६	१५	५७	१८	४६	सि	२८	३०	२	३	२७	२७	१८
३०	५	४६	[illegible]	४०	१८	४५	सि			३	४	२८	२८	१९

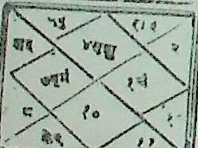
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-ऋतु, (५ से १९ अगस्त १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-१६″, केतकी अहर्गण ३२९१
[A घं.२६।२७से [P घं.११।४४, महा.(व्य.)पात घं.२१।२७से २७।५ तक

चान्द्र भाद्रपदारम्भ, मघासिंहे च बुधः घं. ७।३८, पञ्चक आरम्भ A
अशून्यशयन२व्रत,मता.) [B दय पश्चि. में, सातूती ज कविद्र रविद्रपुण्यतिथि
भ.घं.१९।७से, कज्जली ३, कजली निमित्त जागरण (फूलकाजली) बुधो-B
भ. घं.७।२३ तक ससि. घं. १८।९से, संकष्टी श्रीगणे ४ व्रत, बहुला४ व्रत
कर्के शुक्र घं.१०।२५ [D घं. १८।४९ तक, पुष्ये शुक्रः घं. २८।१०
चन्द्रषष्ठी, हलषष्ठी६व्रत (ललही छठ) ससियो.अमृतसिद्धि घं.१९।३से C
भ. घं ६।३६ से १८।३ तक, शीतला ७ सप्तमी (क्वचित्) मृत्युयोगः D
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मा.वै.), महानिशीथकाल घं.२३।५५ से २४।३९ F
गोगा ९ नवमी, नन्दमहोत्सव। यमघंट योग घं. १७।१ से,
भ.घं. १२।३२से घं. २३।१६ तक ससियो-अमृतसिद्धि यो. घं. १५।३० G
अजा११व्रत (सर्वे.)जया११, भारतीय स्वतन्त्रता दिवस (३६वां वर्षारंभ)
श्रीवत्स१२व्र., सोम प्रदोष व्र., मघासिंहे सूर्यः घं.२५।२९(सौरभाद्र) H
भ.घं.१४।२२से२४।४८तक, संक्रान्ति पुण्यकालघ.७।५३ तक,पौराणिक K
कुशोत्पाटिनी ३० (ॐ हुँ फट् मंत्रेण), पिठोरी ३०, पितृकार्येऽमा.
मन्वादि ३०, सती पूजा लोहार्गलयात्रा-स्नान। देव कार्येऽमा। शिव E
[F तक। मन्वादि गोकुलाष्टमी, यमघंट योग घं. १८।८से बुध पूफा में P

भाद्रपद कृ.८ गुरौ इ. ५९।२७

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू	३	२५	२१	२६	५७	३४	[illegible]
मं	६	१९	२१	०	३६	मा	[illegible]
बु	४	१२	२०	०	१०१	उ	म
बृ	६	९	४३	०	७	मा	स्वा
शु	३	३	२४	०	७३	उ	पु
श	५	२४	१४	०	५	मा	चि
रा	२	१७	४६	५	-३	११	आ
के	८	१७	४६	५	-३	११	पू



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

तारीख	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
५	बृ.	२२	२३	१	२३	५७	२५	५२	२८	१०	६	३२	८	४९	११	६	१३	२६	१५	४५	१७	५२	१९	३२	२०	५९
६	शु.	२२	१९	५	२३	५४	२५	४८	२८	६	६	२८	८	४५	११	२	१३	२२	१५	४१	१७	४८	१९	२८	२०	५५
७	श.	२२	१५	९	२३	५०	२५	४४	२८	२	६	२४	८	४२	१०	५८	१३	१८	१५	३७	१७	४४	१९	२४	२०	५१
८	र.	२२	११	१३	२३	४६	२५	४०	२७	५८	६	२०	८	३८	१०	५४	१३	१४	१५	३३	१७	४०	१९	२०	२०	४७
९	चं.	२२	७	१७	२३	४२	२५	३७	२७	५४	६	१६	८	३४	१०	५१	१३	११	१५	३०	१७	३६	१९	१६	२०	४३
१०	मं.	२२	३	२१	२३	३८	२५	३३	२७	५०	६	१२	८	३०	१०	४७	१३	७	१५	२६	१७	३२	१९	१२	२०	३९
११	बु.	२१	५९	२५	२३	३४	२५	२९	२७	४६	६	८	८	२६	१०	४३	१३	३	१५	२२	१७	२८	१९	८	२०	३५
१२	बृ.	२१	५५	२९	२३	३०	२५	२५	२७	४२	६	४	८	२२	१०	३९	१२	५९	१५	१८	१७	२५	१९	४	२०	३१
१३	शु.	२१	५१	३३	२३	२६	२५	२१	२७	३८	६	०	८	१८	१०	३५	१२	५५	१५	१४	१७	२१	१९	०	२०	२७
१४	श.	२१	४७	३७	२३	२२	२५	१७	२७	३४	५	५५	८	१४	१०	३१	१२	५१	१५	१०	१७	१७	१८	५७	२०	२३
१५	र.	२१	४३	४१	२३	१८	२५	१३	२७	३०	५	५२	८	१०	१०	२७	१२	४७	१५	६	१७	१३	१८	५३	२०	१९
१६	चं.	२१	३९	४५	२३	१४	२५	९	२७	२६	५	४८	८	६	१०	२३	१२	४३	१५	२	१७	९	१८	४९	२०	१६
१६	नं								⊛		२९.४४ ⊛															
१७	मं.	२१	३५	५०	२३	१०	२५	५	२७	२३	२९.४०		८	२	१०	१९	१२	३९	१४	५८	१७	५	१८	४५	२०	१२
१८	बु.	२१	३१	५४	२३	६	२५	१	२७	१९	२९.३७		७	५८	१०	१५	१२	३५	१४	५४	१७	१	१८	४१	२०	८
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

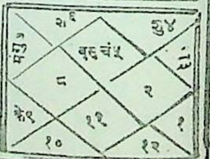
॥ सङ्क्रान्ति-फल ॥

भाद्रपद कृष्णा १२ चन्द्रे सूर्योदयात् घं.४९।२० पर पुनर्वसु नक्षत्र में सूर्य की सिंह संक्रान्ति है। (जिन पंचागों में अगले दिन लिखी है वे अशुद्ध हैं) वारमाम-ध्वांक्षी (वैश्यों को सुखदायक) नक्षत्र नाम-महोदरी मुहूर्त ४५ प्रौढ़ावस्था (बैठी) होने से भावों में मन्दी रहे।

[C पञ्चक समा.घं.१९।३
[E शिवविष्णु पूजन समाप्ति
[H संक्रान्ति का साम.पुण्य अगले दिन
स्त्री स्त्रीचं.चं.योग वा.महिष सा.वर्षा
[G तक। स्वा.१ में गुरु घं.१२।२०
[K अगस्त्योदय घं. २४।२८ मास
शिवरात्रि। कल्पयुगादि १३।

भाद्र. कृ.३० गुरौ इ.५९।१८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू	४	२	५	४	५७	४६	म
मं	६	१५	३	०	३७	मा	स्वा
बु	४	२	३५	०	९०	उ	पू
बृ	६	१०	३९	०	८	मा	स्वा
शु	३	११	५६	०	७४	उ	पु
श	५	२४	५०	०	-५	मा	चि
रा	२	१७	२३	५९	-३	११	आ
के	८	१७	२३	५९	-३	११	स्वा



⊛ १६ ता... को सिंह लग्नोदय दो बार होगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ भाद्रपद शुक्लपक्ष

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.
३२	२३	२	शु.	५३	५५	२७	१७	पू.	४८	२९	२५	८	शि	१९	२	बा.	१६	२५
३२	१९	३	श.	४९	३३	२५	३६	उ.	४५	५८	२४	१८	सि	१६	२४	तै.	१४	२४
३२	१५	४	र.	४७	३	२४	३७	ह.	४५	१०	२३	५८	सा	१४	१९	व.	१३	३
३२	११	५	सो.	४६	३०	२४	२५	चि	४६	२३	२४	२२	शु.	१२	४९	ब.	१२	२८
३२	७	६	मं.	४८	३	२५	२	स्वा	४९	३३	२५	३८	शु.	११	५८	कौ	१२	४४
३२	३	७	बु.	५१	२५	२६	२४	वि	५४	३०	२७	३८	ब्र.	११	४३	ग.	१३	४७
३१	५९	८	गु.	५६	२२	२८	२३	अ.	६०	०	—	—	ऐं.	१२	२	वि	१५	२९
३१	५५	९	शु.	६०	०	—	—	अ.	०	५५	६	१२	वै.	१२	४६	बा.	१७	३९
३१	५१	९	श.	३	२०	६	३७	ज्ये	८	२३	९	१८	वि	१३	४५	तै.	२०	८
३१	४७	१०	र.	८	४५	९	२२	मू.	१६	८	१२	१९	प्री	१४	४९	व.	२२	४२
३१	४३	११	सो.	१५	३	११	५३	पू.	२३	४२	१५	२१	आ	१५	४८	ब.	२५	५
३१	३९	१२	मं.	२०	३५	१४	७	उ.	३०	३०	१८	५	सौ	१६	३३	कौ.	२७	११
३१	३५	१३	बु.	२५	८	१५	५६	श्र.	३६	१८	२०	२४	शो	१६	५८	ग.	२८	४१
३१	३०	१४	गु.	२८	१८	१७	१३	ध.	४०	४८	२२	१३	अ.	१६	५९	वि	२९	४८
३१	२६	१५	शु.	३१	१०	१७	५८	श.	४३	५८	२३	२९	सु.	१६	३४	ब.	१७	५८

भा.प्र.स. नैनीताल सू.उ. घं.	सू.उ. मि.	मध्या. घं. मि.	मध्या. से.	सू.अ. घं.	सू.अ. मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	दिनांक क्रम श. भाद्र	सौ. भाद्र	रा. श्रावण	मु. जिल्काद	अं. अग.
५	४९	१५	३२	१८	४४	सिं.			४	५	२९	२९	२०
५	४९	१५	१५	१८	४३	कं.	६	५१	५	६	३०	१	२१
५	४८	१५	१	१८	४२	कं.			६	७	३१	२	२२
५	४९	१४	४५	१८	४१	तु.	१२	६	७	८	१	३	२३
५	४९	१४	३०	१८	४०	तु.			८	९	२	४	२४
५	५०	१४	१४	१८	३९	वृ.	२१	८	९	१०	३	५	२५
५	५०	१३	५७	१८	३८	वृ.			१०	११	४	६	२६
५	५१	१३	४०	१८	३७	वृ.			११	१२	५	७	२७
५	५१	१३	२३	१८	३६	ध.	९	१२	१२	१३	६	८	२८
५	५२	१३	५	१८	३५	ध.			१३	१४	७	९	२९
५	५२	१२	४७	१८	३३	म.	२२	३	१४	१५	८	१०	३०
५	५३	१२	२९	१८	३२	म.			१५	१६	९	११	३१
५	५३	१२	१०	१८	३१	म.			१६	१७	१०	१२	सि.
५	५४	११	५२	१८	३०	कुं.	९	२०	१७	१८	११	१३	२
५	५४	११	३२	१८	२९	कुं.			१८	१९	१२	१४	३

दक्षिणा. उ. गोल. वर्षा-शरद्ऋतु (२० अग. से ३ सित. १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-३६″, केतकी अहर्गण ३४२४

[दुर्मुघ.२६।१२ [Cरा.भाद्र-शरदर्तुप्रा.बु.कन्यामेंघ.१४।४८ [Jसप्ताहारंभ

चन्द्रदर्शन शु. ३०, सिद्ध या. घ. ५।८ तक [Dप.घं.१९।१३ मा. n
मु. जिल्काद ११माय, मन्वादि३, हरितालिका ३ (तीज व्रत-स्त्रियों केA
भ.घं.१३।३से २४।३७तक, वैनायकी श्रीगणेश ४व्रत,(पत्थरचौथ) हस्तB
ऋषि पंचमी५व्रत, मध्याह्नमें सप्तर्षिपूजा, सूर्यसायनकन्या मेंघं.१६।४५C
सूर्य ६ षष्ठी, लोलार्क छठ(पुत्रार्थियों को कर्तव्य), देव६, महा (वै.) पातD
भ.घं. २६।२४से, मुक्ताभरण सप्तमी७, सन्तान७, अपर.जि७, ससि.E
भ.घं.१५।२६तक ससि. दुर्गाष्टमी८व्र. दुर्वाष्टमी राधाष्टमी। मं. विशा.मेंF
अदुःख नवमी, श्रीचंद्रनवमी, ज्येष्ठा-गौरी का पूजन(ज्येष्ठाव्रत), भागवत् J
[Aलिए आवश्यक) गौरी३,वराहावतार३, मृत्यु यम. यो. घं.२४।१०तकI
भ घं.२२।४२से। दशावतार १०, मूल में ज्येष्ठा गौरी विसर्जन तेजादशमीa
भ.घं ११।५३तक,पद्मा११व्र., जलझूलनी११व्र., परिवर्तिनी११, पूषा मेंb
वामनद्वादशी१२ (मध्या में वामन जन्म) भौम। प्रदोष व्र.त्रिपु.घं.१४।७c
आर्द्रा३में राहु पूषा १ केतु घं. २४।५, सितं९ मा.,[n२४।४१त्रिपु.घं.३५/३८ से
भ.घं.१७।१३से२९।४४तक, अनन्त१४ व्र.। ब. की पूर्णिमा, सिंहे शुक्रःK
प्रोष्ठपदी १५, स्नानदान की पूर्णिमा। प्रोष्ठपदी१५ श्राद्ध भागवत सप्ताहL
[Bमें सामगानां उपाकर्म (मता.)ससि.-असि. घं.२३।५२ तक शुक्र दले.g

भाद्रपदशु. ८ गुरौ इ. ५९।८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	४	९	४७	४४	५७	५६	म.
मं.	६	२०	३४	०	३८	मा	चि.
बु.	५	४	५४	०	७८	उ.	उ.
गु.	६	११	४१	०	१०	मा	स्वा
शु.	३	२१	४५	०	७३	उ.	श्ले.
श.	५	१५	३४	०	६	मा	पू.
रा.	२	१६	५८	२२	-३	११	आ.
के.	८	१६	५८	२२	-३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मेष मि.	मेष से.	वृष घं.	वृष मि.	मिथुन घं.	मिथुन मि.	कर्क घं.	कर्क मि.	सिंह घं.	सिंह मि.	कन्या घं.	कन्या मि.	तुला घं.	तुला मि.	वृश्चि. घं.	वृश्चि. मि.	धनु घं.	धनु मि.	मकर घं.	मकर मि.	कुम्भ घं.	कुम्भ मि.	मीन घं.	मीन मि.
अग २०	गु	२१	२४	२	२२	५८	२४	५३	२७	११	२९	२९	७	५०	१०	७	१२	२७	१४	४६	१६	५४	१८	३३	२०	०
२१	शु.	२१	२०	६	२२	५५	२४	४९	२७	७	२९	२५	७	४६	१०	३	१२	२३	१४	४२	१६	५०	१८	२९	१९	५६
२२	श.	२१	१६	१०	२२	५१	२४	४५	२७	३	२९	२१	७	४३	९	५९	१२	१९	१४	३८	१६	४६	१८	२५	१९	५२
२३	र.	२१	१२	१५	२२	४७	२४	४१	२६	५९	२९	१७	७	३९	९	५५	१२	१५	१४	३४	१६	४२	१८	२१	१९	४८
२४	सो.	२१	८	१९	२२	४३	२४	३८	२६	५५	२९	१३	७	३५	९	५१	१२	१२	१४	३१	१६	३८	१८	१७	१९	४४
२५	मं.	२१	४	२३	२२	३९	२४	३४	२६	५१	२९	९	७	३१	९	४८	१२	८	१४	२७	१६	३४	१८	१३	१९	४०
२६	बु.	२१	०	२७	२२	३५	२४	३०	२६	४७	२९	५	७	२७	९	४४	१२	४	१४	२३	१६	३०	१८	९	१९	३६
२७	गु.	२०	५६	३१	२२	३१	२४	२६	२६	४३	२९	१	७	२३	९	४०	१२	०	१४	१९	१६	२६	१८	५	१९	३२
२८	शु.	२०	५२	३५	२२	२७	२४	२२	२६	३९	२८	५७	७	१९	९	३६	११	५६	१४	१५	१६	२२	१८	१	१९	२८
२९	श.	२०	४८	३९	२२	२३	२४	१८	२६	३५	२८	५३	७	१५	९	३२	११	५२	१४	११	१६	१८	१७	५७	१९	२४
३०	र.	२०	४४	४४	२२	१९	२४	१४	२६	३१	२८	४९	७	११	९	२८	११	४८	१४	७	१६	१४	१७	५४	१९	२०
३१	सो.	२०	४०	४८	२२	१५	२४	१०	२६	२८	२८	४५	७	७	९	२४	११	४४	१४	३	१६	१०	१७	५०	१९	१७
सि. १	मं.	२०	३६	५२	२२	११	२४	६	२६	२४	२८	४२	७	३	९	२०	११	४०	१३	५९	१६	६	१७	४६	१९	१३
२	बु.	२०	३२	५६	२२	७	२४	२	२६	२०	२८	३८	६	५९	९	१६	११	३६	१३	५५	१६	२	१७	४२	१९	९
३	गु.	२०	२९	०	२२	३	२३	५८	२६	१६	२८	३४	६	५५	९	१२	११	३२	१३	५१	१५	५८	१७	३८	१९	५

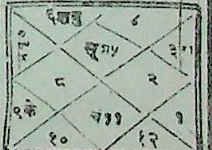
॥ संक्रान्ति-फल ॥

भाद्र कृ. ३ को कजरी तीज मनाने की परम्परा काशी आदि में स्त्रियों के लिए है।

[Iसाम उपाकर्म,बुध उफा.में घं.७।७
[Eअसि. घ.२७।३८ से [Fघं.८।१
नन्दाष्टमीमेला अनु. में ज्येष्ठा-गौरी
का आवाहन दधीचि जय. [aमेला
रामदेव नवलगढ़। सिद्धि यो. घ.
१२।२९ तक [b सूर्य घं.२१।१२
(स्त्री पु.) सू. च. यो वा. जम्बूक
वर्षा क्षम। [c तक। हस्ते बुधः
घं. ६।५१ नैनीताल में अगस्तोदय
घं. १६।० भुवनेश्वरी जयन्ती।
[Kघं२२।४० पंचकारंभ घं.९।२०से
[Lसं. अनन्ता आरंभ।

भाद्रपद शु १५ शुक्रे, इ. ५८।५८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	४	१७	३१	४८	५८	७	पू.
मं.	६	२५	४१	०	४०	मा.	वि
बु.	५	१४	२५	०	६२	उ.	पू.
गु.	६	१३	१	०	१०	मा.	स्वा
शु.	४	१	३५	०	७४	उ.	म.
श.	५	२६	२३	०	६	व.	चि.
रा.	२	१६	३२	५६	-३	११	आ
के.	८	१६	३२	५६	-३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ शुद्ध आश्विन कृष्णपक्ष																						भा.प्र.स. नैनीताल						चन्द्र संचार			दिनांक क्रम				
दि मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या घं. मे सं.		सू.अ. घं.	मि.			रा.	घं.	मि.	गते	सौर	रा.	मु.	अं.
३१	२२	१	श.	३०	४३	१८	१२	पू.	४५	५५	२४	१७	घ.	१५	४६	बा.	६	१	५	५५	१२	१३	१८	२८			मी.	१८	४	१९	२०	१३	१५	४
३१	१८	२	र.	३०	८	१७	५८	उ.	४६	४५	२४	३९	शू.	१४	३४	तै.	[illegible]	[illegible]	५	५५	१०	५३	१८	२६			मी.			२०	२१	१४	१६	५
३१	१४	३	चं.	२८	३०	१७	२०	रे.	४६	३८	२४	३५	गं.	१३	३	व.	२८	५३	५	५६	१०	३३	१८	२५			मे.	२४	३५	२१	२२	१५	१७	६
३१	१०	४	मं.	२६	५	१६	२१	अ.	४५	४३	२४	१३	वृ.	११	१५	कौ.	२७	४५	५	५६	१०	३०	१८	२४			मे.			२२	२३	१६	१८	७
३१	५	५	बु.	२२	४८	१५	४	भ.	४४	५	२३	३५	ध्रु.	९	१८	ग.	२६	२०	५	५७	९	५३	१८	२३			वृ.	२९	२३	२३	२४	१७	१९	८
३१	१	६	बृ.	१८	५८	१३	३२	कृ.	४१	५०	२२	४१	व्या.	[illegible]	[illegible]	वि.	२४	४१	५	५७	९	३२	१८	२२			वृ.			२४	२५	१८	२०	९
३०	५७	७	शु.	१४	३०	११	४५	रो.	३९	५	२१	३५	ह.	२५	५०	बा.	२२	४९	५	५८	९	११	१८	२१			वृ.			२५	२६	१९	२१	१०
३०	५३	८	श.	९	३५	९	४८	मृ.	३५	४५	२०	१६	सि.	२३	८	तै.	२०	४४	५	५८	९	५०	१८	१९			मि.	८	५६	२६	२७	२०	२२	११
३०	४८	९	र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ.	३२	०	१८	४७	व्य.	२०	६	व.	१८	२९	५	५९	८	२९	१८	१८			मि.			२७	२८	२१	२३	१२
३०	४४	११	चं.	५८	१०	२८	५१	पु.	२७	५५	१७	९	व.	१७	२	ब.	१६	५	५	५९	८	८	१८	१७			क.	११	३४	२८	२९	२२	२४	१३
३०	४०	१२	मं.	५४	५५	२४	२२	पु.	२३	३८	१५	२७	प.	१३	५५	कौ.	१३	३७	६	०	७	५७	१८	१६			क.			२९	३०	२३	२५	१४
३०	३५	१३	बु.	३९	५०	२१	५६	श्ले.	१९	२०	१३	४४	शि.	१०	४७	ग.	११	८	६	०	७	२६	१८	१४			सिं.	१३	४४	३०	३१	२४	२६	१५
३०	३१	१४	बृ.	३४	५	१९	३९	म.	१५	२०	१२	९	सि.	[illegible]	[illegible]	वि.	८	४८	६	१	७	४	१८	१३			सिं.			३१	आ.	२५	२७	१६
३०	२७	३०	शु.	२९	५	१७	३९	पू.	११	५८	१०	४८	शु.	२६	१६	च.	[illegible]	[illegible]	६	१	६	४३	१८	१२			क.	१६	३८	आ.	२	२६	२८	१७

दक्षिणायन, उत्तरगोल शरद्ऋतु (४ सितम्बर से १७ सित. १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°३६'३७" केतकी अहर्गण ३४३९

[A सर्वार्थसिद्धियोग घ. २४।३७ तक, स्वा. ३ में गुरु घं. २७।५१ I तक, अशून्यशयन २व्रत

चान्द्र आश्विनमासारम्भ, पितृपक्ष प्रा. प्रतिपदाश्राद्ध त्रिपु. घं. १८।१२ से २४।१

भ. घं. २९।४२ से. द्वितीया श्राद्ध, अशून्यशयन २व्रत (केचित्) पिङ्गक दिवस A

भ. घं. १७।२० तक, तृतीया श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेश ४व्रत, चित्रा. २में शनि H

चतुर्थी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग अमृत सिद्धि घ. २४।१३ तक,

पंचमी श्राद्ध, भरणीश्राद्ध, सर्वार्थसिद्धि योग घं २३।३५ से चन्द्रषष्ठी ६व्रत

भ. घं. १३।३२ से २४।४१ तक, षष्ठी-सप्तमी श्राद्ध, यमघंटयोग घं. २२।४१ तक

अष्टका, अष्टमीश्राद्ध, कालाष्टमी ८व्रत, यमघंट योग घं. २१।३५ तक, B

अन्वष्टका, मातृनवमी, नवमी श्राद्ध, (सौभाग्यवतीनां), अविधवा ९, C

भ. घं. १८।२९ से २९।१८ तक, दशमीश्राद्ध [C महालक्ष्मी (जीवतिया:) व्र समा.

एकादशी श्राद्ध, इन्दिरा ११ व्रत सबका, सूर्य उफा. में घं. १५।२५ D

द्वादशी श्राद्ध, (संन्यासियों का श्राद्ध), इन्दिरा ११ व्रत (निम्बा०)

भ. घं. २१।५६ से, त्रयोदशीश्राद्ध, प्रदोष व्रत, कलयुगादि १३, मासशिव

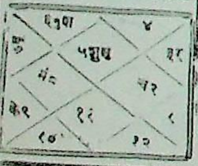
भ. घं. ८।४५ तक, चतुर्दशीश्राद्ध (शस्त्राग्निहतानां) सूर्य कन्यामें घं. २५।२३ E

महालया ३०, सर्वपैत्री ३०, पितृविसर्जन ३०, सिद्धि योग घं. १४।४८ तक, =

[= महालया समा. पार्वणश्राद्ध में अपराह्न व्यापिनी एकोदिष्ट श्राद्ध में मध्याह्न व्यापिनी तिथि लेते हैं।

शु. आश्विन क. ८ शुक्रेड. ५८।४८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	४	२४	१९	२१	५८	३१	पु.
मं.	७	०	१८	५२	४०	मा	वि.
बु.	५	२०	२१	०	४०	उ.	ह.
बृ.	६	१४	१२	०	११	मा	स्वा.
शु.	४	१०	१४	०	७४	उ.	म.
श.	५	२७	७	०	७	मा	चि.
रा.	२	१६	१०	४०	-३	११	आ.
के.	८	१६	१०	४०	-३	११	पू.



दैनिक लग्न सारणी (नैनीताल में निरयण लग्नों का आरम्भ काल भा.प्र. समय में)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चिक घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
४	श.	२०	२५	४	२१	५९	२३	५४	२६	१२	२८	३०	६	५१	९	८	११	२८	१३	४७	१५	५५	१७	३४	१९	१
५	र.	२०	२१	८	२१	५६	२३	५०	२६	८	२८	२६	६	४८	९	४	११	२४	१३	४३	१५	५१	१७	३०	१८	५७
६	चं.	२०	१७	१२	२१	५२	२३	४६	२६	४	२८	२२	६	४४	९	०	११	२०	१३	३९	१५	४७	१७	२६	१८	५३
७	मं.	२०	१३	१६	२१	४८	२३	४२	२६	०	२८	१८	६	४०	८	५७	११	१६	१३	३६	१५	४३	१७	२२	१८	४९
८	बु.	२०	९	२०	२१	४४	२३	३९	२५	५६	२८	१४	६	३६	८	५३	११	१३	१३	३२	१५	३९	१७	१८	१८	४५
९	बृ.	२०	५	२४	२१	४०	२३	३५	२५	५२	२८	१०	६	३२	८	४९	११	९	१३	२८	१५	३५	१७	१४	१८	४१
१०	शु.	२०	१	२८	२१	३६	२३	३१	२५	४८	२८	६	६	२८	८	४५	११	५	१३	२४	१५	३१	१७	१०	१८	३७
११	श.	१९	५७	३२	२१	३२	२३	२७	२५	४४	२८	२	६	२४	८	४१	११	१	१३	२०	१५	२७	१७	६	१८	३३
१२	र.	१९	५३	३६	२१	२८	२३	२३	२५	४०	२७	५८	६	२०	८	३७	१०	५७	१३	१६	१५	२३	१७	२	१८	२९
१३	चं.	१९	४९	४०	२१	२४	२३	१९	२५	३६	२७	५४	६	१६	८	३३	१०	५३	१३	१२	१५	१९	१६	५९	१८	२५
१४	मं.	१९	४५	४५	२१	२०	२३	१५	२५	३२	२७	५०	६	१२	८	२९	१०	४९	१३	८	१५	१५	१६	५५	१८	२२
१५	बु.	१९	४१	४९	२१	१६	२३	११	२५	२९	२७	४६	६	८	८	२५	१०	४५	१३	४	१५	११	१६	५१	१८	१८
१६	बृ.	१९	३७	५३	२१	१२	२३	७	२५	२१	२७	४३	६	४	८	२१	१०	४१	१३	०	१५	७	१६	४७	१८	१४
१६												⊗	३०	० ⊗												
१७	शु.	१९	३३	५७	२१	८	२३	३	२५	२१	२७	३९	२९	५६	८	१७	१०	३७	१२	५६	१५	३	१६	४३	१८	१०

⊗ १६ ता. गुरुवार को कन्या लग्नोदय दो बार होगा

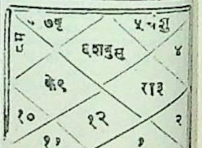
॥ संक्रान्ति-फल ॥

आश्विन कृष्ण १४ गुरुवार को सूर्योदयात् घं ४८।२५ पर पूफा. नक्षत्र में सूर्य की कन्या संक्रा है।

[H घं. २५।२९, महा(व्य.)पातस्प. घं. ६।६ मोक्ष घं. १०।४४ पंचक समाप्त घं. २४।३५, [B मंगलवृश्चि. में घ. १८।४१, महा लक्ष्मी व्रत, जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, (जीउतिया), काली जयन्ती [D (स्त्री.स्त्री.सूर्यचं. योग वा. मयूर, श्रेष्ठ वर्षा) [F रा. व्रत, माघ त्रयो. श्राद्ध, घ. १३।४४ से मंगल अनुराधा में घं. १८।२२ [E संकल्पार्थ शरदृतुंवसौर आश्वि. प्रा. बुध चित्रा में घं. ६।५४

शु. आश्वक्. २० शुक्रेड. ५८।४

ग्र.	रा.	अं.	क.	दि	गति		
सू.	५	०	१०	१	५८	३४	उ
मं.	७	४	१९	०	४१	मा	
बु.	५	२३	३६	०	१२	उ.	
बृ.	६	१५	१७	०	११	मा	
शु.	४	१७	४०	०	७४	उ.	
श.	५	२७	४७	०	७	मा	
रा.	२	१५	५१	३६	-३	११	
के.	८	१५	५१	३६	-३	११	



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत २०३९ शाके १९०४ आश्विन (संसप) शुक्लपक्ष | भा.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र | दिनांक क्रम

दि.मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	सञ्चार रा.	घं.	मि.	गते	सौ.	रा.	मु.	अं.
३०	२२	१	श.	२५	८	१६	५	उ.	९	३०	९	५०	शु.	२४	४	बा.	२७	३०	६	२	१२	२१	१८	११	कं.			२	३	२	२९	१८
३०	१८	२	र.	२२	३५	१५	४	ह.	८	२०	९	२२	ब्र.	२२	२०	तै.	२६	४१	६	२	६	०	१८	१०	तु.	२१	२६	३	४	२८	मं.	१९
३०	१४	३	चं.	२१	३३	१४	४४	चि.	८	४५	९	३३	ऐं.	२१	९	व.	२६	५०	६	३	५	३८	१८	८	तु.			४	५	२९	२	२०
३०	९	४	मं.	२२	४०	१५	७	स्वा.	१०	५८	१०	२६	वै.	२०	३३	ब.	२७	३५	६	३	५	१९	१८	७	वृ.	१०	३४	५	६	३०	३	२१
३०	५	५	बु.	२५	२७	१६	१५	वि.	१४	५५	१२	२	वि.	२०	३१	कौ.	२९	४	६	४	४	५६	१८	६	वृ.			६	७	३१	४	२२
३०	०	६	गु.	२९	५५	१८	२	अ.	२०	३५	१४	१८	प्री.	२०	५८	तै.	१८	[illegible]	६	४	४	३५	१८	५	वृ.			७	८	अ१	५	२३
२९	५६	७	शु.	३५	४०	२०	२	ज्ये.	२७	२५	१७	४	आ.	२१	४७	ग.	७	९	६	५	४	१४	१८	३	ध.	१७	४	८	९	२	६	२४
२९	५२	८	श.	४२	५	२२	५५	मू.	३५	५	२०	८	सौ.	२२	४८	वि.	२	३६	६	६	३	५३	१८	२	ध.			९	१०	३	७	२५
२९	४८	९	र.	४८	३०	२५	३०	पू.	४२	५०	२३	१४	शो.	२२	४७	बा.	१२	१४	६	६	३	३२	१८	१	ध.			१०	११	४	८	२६
२९	४३	१०	चं.	५४	१५	२७	४९	उ.	४९	५८	२६	६	अ.	२४	३८	तै.	१४	४३	६	७	३	१२	१८	०	म.	५	५०	११	१२	५	९	२७
२९	३९	११	मं.	५८	५०	२९	३९	श्र.	५६	०	२८	३१	सु.	२५	६	ब.	१६	४९	६	७	२	५२	१७	५९	म.			१२	१३	६	१०	२८
२९	३४	१२	बु.	६०	०	—	—	ध.	६०	०	—	—	धृ.	२५	९	व.	१८	२१	६	८	२	३२	१७	५७	कुं.	१७	२६	१३	१४	७	११	२९
२९	३०	१२	बृ.	१	५३	६	५३	ध.	०	३०	६	२०	शू.	२४	३८	कौ.	१९	१४	६	८	२	१२	१७	५६	कुं.			१४	१५	८	१२	३०
२९	२६	१३	शु.	३	१२	७	२६	श.	३	२५	७	३१	ग.	२३	३८	ग.	१९	२०	६	९	१	५३	१७	५५	मी.	२५	५६	१५	१६	९	१३	अक्टू.१
२९	२१	१४	श.	२	५७	७	२०	पू.	४	४५	८	३	वृ.	२२	८	वि.	१९	३	६	९	१	३३	१७	५४	मी.			१६	१७	१०	१४	२
२९	१७	१५	र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३९	उ.	४	३८	८	६	ध्रु.	२०	११	बा.	१८	९	६	१०	[illegible]	१४	१७	५३	मी.			१७	१८	११	१५	३

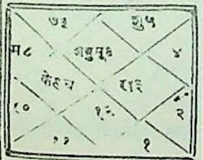
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदऋतु. (१८ सित. से ३ अक्टूबर १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६'-३८", केतकी अहर्गण ३४५३

[F पूजन, महानिशापू. भद्रकालीअवता महानिशीथका. घ.२३।४०से, घं२४।२८ चन्द्रदर्शनम् ३०, शारदीयनवरात्रार. (घटस्थापन-ध्वजारोपण), मृत्युयमg मु. जिल्हेज १२मास. द्विपु. दो. घं.९।२२से१५।४तक ससि असियो घं.९।२२e भ.घ.२६।१०से, [g योग घ.९।५०से मातामह श्राद्ध [e तक बुध वक्री भ.घ.१५।७ तक, वैनायकी श्रीगणेश४व्र. [c वक्री बुध हस्तमें २०।४५ उपागललिता५व्रत, (मध्याह्नव्यापिनी५में ससि अमृतसिद्धिघं.१२।२ सेc सायनसूर्यतुलामेंघं.१४।१६ग.आश्वि.प्रा [a सरस्वती आवाहनघं १७।४से भ.घं २०।२१से, शुक्रउफा.में घं.११।१९स्वा.४में गुरुघं.१४।१३, मूल में a भ घ.९।३७तक, दुर्गाष्टमी८, महाष्टमी८व्र. कुमारीपूजा, पूषामें सरस्व F महानवमी९ व्रत, मन्वादि९. उषामेंसरस्वतीदेवीके निमित्त बलिदानादिB विज.दशमी१०, विजयमुहू. घं.१४ २से१४।५०तक श्रव.मेंसरस्वतीविस.A भ.घ १६।४१से२९।३९ तक, पापांकुशा ११ व्रत (स्मा.वै.) भरत मिलन पापांकुशा११व्र.,(निम्बा.)राष्ट्रभाषादिवस, पंचकआरम्भ घ.१७।२६सेH प्रदोष व्रत, [B ससियोघं.२३।१४से, शुक्र.कन्यामेंघं.२७।३४, बुधास्त प. अक्टूबर १० मास, शनि अस्त पश्चि., [H वैकुण्ठी महाद्वादशी भ.घ ७।२०से, १९।३तक, गांधी जयन्ती, शास्त्री जयन्ती, कोजाग.पू.१५E स्नानदान की आश्वि.पूर्णि. कार्ति.स्नानारं. वाल्मीकिजय., संसपंअवि.K

स.आश्वि.शु.८शनी इ.५८।२८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	५	८	५८	१०	५८	४१	उ.
मं.	७	१०	२९	०	४२	मा	अ.
बु.	५	२१	२६	०	-४१	घ.	ह.
बृ.	६	१६	५१	०	१२	उ.	स्वा.
शु.	४	२८	५१	०	१५	उ.	उ.
श.	५	२८	२९	०	७	मा	चि.
रा.	२	१५	२२	५९	-३	११	आ.
के.	८	१५	२२	५९	-३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१८	श.	१९	३०	१	२१	४	२२	५९	२५	१७	२७	३५	२९	५२	८	१३	१०	३३	१२	५२	१५	०	१६	३९	१८	६
१९	र.	१९	२६	५	२१	०	२२	५५	२५	१३	२७	३१	२९	४९	८	९	१०	२९	१२	४८	१४	५६	१६	३५	१८	२
२०	चं.	१९	२२	९	२०	५७	२२	५१	२५	९	२७	२७	२९	४५	८	५	१०	२५	१२	४४	१४	५२	१६	३१	१७	५८
२१	मं.	१९	१८	१३	२०	५३	२२	४७	२५	५	२७	२३	२९	४१	८	१	१०	२१	१२	४०	१४	४८	१६	२७	१७	५४
२२	बु.	१९	१४	१७	२०	४९	२२	४४	२५	१	२७	१९	२९	३७	७	५८	१०	१७	१२	३६	१४	४४	१६	२३	१७	५०
२३	बृ.	१९	१०	२२	२०	४५	२२	४०	२४	५७	२७	१५	२९	३३	७	५४	१०	१४	१२	३३	१४	४०	१६	१९	१७	४६
२४	शु.	१९	६	२६	२०	४१	२२	३६	२४	५३	२७	११	२९	२९	७	५०	१०	१०	१२	२९	१४	३६	१६	१५	१७	४२
२५	श.	१९	२	३०	२०	३७	२२	३२	२४	४९	२७	७	२९	२५	७	४६	१०	६	१२	२५	१४	३२	१६	११	१७	३८
२६	र.	१८	५८	३४	२०	३३	२२	२८	२४	४५	२७	३	२९	२१	७	४२	१०	२	१२	२१	१४	२८	१६	७	१७	३४
२७	चं.	१८	५४	३८	२०	२९	२२	२४	२४	४१	२६	५९	२९	१७	७	३८	९	५८	१२	१७	१४	२४	१६	४	१७	३०
२८	मं.	१८	५०	४२	२०	२५	२२	२०	२४	३७	२६	५५	२९	१३	७	३४	९	५४	१२	१३	१४	२०	१६	०	१७	२६
२९	बु.	१८	४६	४७	२०	२१	२२	१६	२४	३४	२६	५१	२९	९	७	३०	९	५०	१२	९	१४	१६	१५	५६	१७	२३
३०	बृ.	१८	४२	५१	२०	१७	२२	१२	२४	३०	२६	४८	२९	५	७	२६	९	४६	१२	५	१४	१२	१५	५२	१७	१९
अ१	शु.	१८	३८	५५	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६	४४	[illegible]	[illegible]	७	२२	९	४२	[illegible]	[illegible]	१४	८	१५	४८	[illegible]	१५
२	श.	१८	३४	५९	२०	९	२२	४	२४	२२	२६	४०	२८	५७	७	१८	९	३८	११	५७	१४	४	१५	४४	१७	११
३	र.	१८	३१	३	२०	५	२२	०	२४	१८	२६	३६	२८	५३	७	१४	९	३४	११	५३	१४	०	१५	४०	१७	७

॥ संक्रान्त-फल ॥

मास प्रयुक्त व्रतोत्सवादिके निमित्त आश्विनका संसर्प मानकर क्रमशः व्रत पर्व लगाये गये हैं।

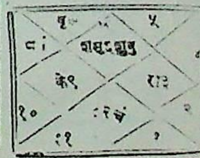
[A शमी अपराजिता शस्त्र पूजा नीलकंठदर्शन, बौद्धावतार, मन्वादि श्रीमाधवाचार्य जयन्ती मृत्यु योग घं२६।६तक, असियोग घं.२६।६से सूर्यहस्त में घं.६।४२ स्त्री पुरु.सू. च योग वा.गज वर्षा श्रेष्ठ बकरीद

[E व्रतकी शरद् पूर्णिमा महा(व्य) पात स्प. घं.१५।४९ मोक्ष २०।२१

[K मास प्रारम्भ, कृषक भूमि पू. कार्तिक आकाशदीपदान, प्रारम्भ, ससि योग घं ८।१ तक।

अश्वि.शु. १५रवो इ.५८।१८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	५	१६	४९	३८	५९	५	ह.
मं.	७	१६	५	[illegible]	४२	मा	अ.
बु.	५	१३	०	०	-६१	अ.	ह.
बृ.	६	१८	३४	०	१२	मा	स्वा.
शु.	५	८	४९	०	७५	ट.	ह.
श.	५	२९	४६	०	७	अ.	चि.
रा.	२	१४	५७	३२	-३	११	आ.
के.	८	१४	५७	३२	-३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत२०३९ शाके १९०४ कार्तिक (संसर्प) कृष्णपक्ष | आ.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र संचार | दिनांक क्रम

ति. घ.	मा. प.			घ.	प.	स्टैं. टा. घं.	मि.		घ.	प.	स्टैं. टा. घं.	मि.		स्टैं. टा. घं.	मि.		स्टैं. टा. घं.	मि.	सू. उ. घं.	मि.	मध्या. घं. मि.	से.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	घं.	मि.	गते	सौ.	रा.	मु.	अं.
२९	१३	२	चं.	५४	२२	२७	५५	भ.	३	२३	७	३१	व्या	१७	५८	तै.	१६	४४	६	१०	१२ ०	५६	१७	५१	म.	७	३१	१८	१९	१२	१६	४
२९	८	३	मं.	४९	५०	२६	७	अ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह.	१५	२७	व.	१५	३	६	११	०	३८	१७	५०	मे.			१९	२०	१३	१७	५
२९	४	४	बु.	४४	५३	२४	९	कृ.	५५	१०	२८	१६	व.	१२	४७	ब.	१३	९	६	१२	०	२०	१७	४०	वृ.	११	१४	२०	२१	१४	१८	६
२९	०	५	गु.	३९	४५	२२	६	रो.	५१	४५	२६	५८	सि	१०	१	कौ.	११	८	६	१२	०	२	१७	४८	वृ.			२१	२२	१५	१९	७
२८	५५	६	शु.	३७	०	२१	१	मृ.	४८	३३	२५	३८	व्य	[illegible]	[illegible]	गा.	९	४	६	१३	[illegible]	४५	१७	४	मि.	१४	१८	२२	२३	१६	२०	८
२८	५१	७	श.	२९	२३	१७	५८	आ.	४५	१२	२४	१८	प.	२५	३५	वि.	[illegible]	[illegible]	६	१३	५९	२८	१७	४६	मि			२३	२४	१७	२१	९
२८	४७	८	र.	२४	१५	१५	५६	पु.	४१	१८	२३	१	शि	२२	४८	कौ.	२६	५६	६	१४	५९	१२	१७	४५	क.	१७	२१	२४	२५	१८	२२	१०
२८	४२	९	चं.	१९	१८	१३	५७	पु.	३८	५५	२१	४८	सि	२०	५	व.	२५	०	६	१४	५८	५६	१७	४३	क.			२५	२६	१९	२३	११
२८	२८	१०	मं.	१४	३०	१२	३	श्ले.	३६	०	२०	३९	सा	१७	२५	ब.	२३	९	६	१५	५८	४१	१७	४२	सिं	२०	३९	२६	२७	२०	२४	१२
२८	३४	११	बु.	१०	०	१०	१६	म.	३३	२५	१९	३८	शु.	१४	५१	कौ.	२१	२६	६	१६	५८	२६	१७	४१	सिं			२७	२८	२१	२५	१३
२८	३०	१२	गु.	५	५८	८	३९	पू.	३१	२२	१८	४९	शु.	१२	२६	बा.	१९	५५	६	१६	५८	११	१७	४०	क.	२४	४०	२८	२९	२२	२६	१४
२८	२५	१३	शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.	२९	५८	१८	१६	ब्र.	१०	१३	वि	१८	४१	६	१७	५७	५८	१७	३९	क.			२९	३०	२३	२७	१५
२८	२१	३०	श.	५८	१०	२९	३४	ह.	२९	२५	१८	४	ऐं.	८	१५	च.	१७	४९	६	१८	५९	४४	१७	३८	तु.	३०	९	३०	३१	२४	२८	१६

दक्षिणायन,उत्तरगोल,शरदृतु,(४ अक्टूबर से १६ अक्टूबर१९८२ तक

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६'-४०", केतकी अहर्गण ३४६।
[Aमासप्रा.शुक्र हस्तमेंघं२८।१२,पंच.समा.घं.७।३१,ज्ये.मेंमंग-घं.२५।

मासप्रयुक्तव्रतपर्वनिर्णयाय कार्तिककृष्णपक्षतुल्य शुद्ध(संसर्पअाश्विनाधि.)
भ. घं. १५।३ से २७।७ तक, ससियोग असि योग घं. ६।३९ तक
संकष्टी श्रीगणेश४व्रत,करक४(करवाचौथ)व्रत, दशरथ४, सर्वार्थसिद्धिB
मृत्यु योग घं.२६।५८ से, वक्रीबुध उफा. में घं. २१।१५
भ.घं.२१।१से बुध उदय पूर्वमें [Bअहोरा.घं.२८।१८,C

शुक्रास्त
११अक्टूबर

भ. घं ७।२९ तक, चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में अहोई ८ व्रत,
राधाष्टमी८व्रत, कालाष्टमी, सूर्यचित्रामें घं१९।२९(स्त्री.स्त्री.सू.चं.योग*
भ.घं.२५।०से, बुधमार्गी,सर्वार्थसिद्धियोग घं २१।४८तक, पूर्व पौराणि.
भ. १२।३ तक, [C तक, तुला (चि.३) में शनि घं. ५।२९
रम्भा११एकादशीव्रत,(सबका), गोवत्स१२द्वादशी(प्रदोष व्या.१२में) H
प्रदोषव्रत, धनत्रयोदशी१३,अपमृत्यु निवारणार्थ यमदीपदान,गोत्रिरात्रव्र.
भ.घं.७।१५से१८।४१तक,मासशिवरात्रिव्रत,नरक१४व्रत,रूपचतुर्दशी१४
देवपितृकार्येऽमा, श्रीमहालक्ष्मीपूजा (दीपावली)खाता(बसना) पूजन =
[= मृत्यु-यमयोगघं.१८।४तक। [Fशुक्रचित्रामेंघं.१४।७,धनवन्त.जय.
[Hबुध हस्त में घं. २८।४४,महा(वै.)पात स्प.घं.१७।१० मो.२१।३५
[*वा.मंडूक श्रेष्ठवर्षा] गुरु विशाखा१में घं.२९।२९,रविपुष्यामृतघं.२३।

कार्ति.(संस.)कृ.प्र.इ.५८।१०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	५	२२	४४	२१	५९	१९	ह.
मं.	७	२०	२१	०	४३	मा	ज्ये
बु.	५	८	५६	०	-७	उ.	उ.
बृ.	६	११	४८	०	१२	अ.	स्वा
शु.	५	१६	१८	०	७५	उ.	ह.
श.	६	०	२९	०	७	आ.	चि
रा.	२	१४	३८	३७	-३	११	आ.
के.	८	१४	३८	३७	-३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल आ. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
४	चं.	१८	२३	७	२०	२	२१	५६	२४	१४	२६	३२	२८	५०	७	१०	९	३०	११	४९	१३	५७	१५	३६	१७	३
५	मं.	१८	२३	११	१९	५८	२१	५२	२४	१०	२६	२८	२८	४६	७	६	९	२६	११	४५	१३	५३	१५	३२	१६	५९
६	बु.	१८	१९	१५	१९	५४	२१	४८	२४	६	२६	२४	२८	४२	७	३	९	२२	११	४१	१३	४९	१५	२८	१६	५५
७	गु.	१८	१५	१९	१९	५०	२१	४५	२४	२	२६	२०	२८	३८	६	५९	९	१९	११	३७	१३	४५	१५	२४	१६	५१
८	शु.	१८	११	२३	१९	४६	२१	४१	२३	५८	२६	१६	२८	३४	६	५५	९	१५	११	३४	१३	४१	१५	२०	१६	४७
९	श.	१८	७	२७	१९	४२	२१	३९	२३	५४	२६	१२	२८	३०	६	५१	९	११	११	३०	१३	३७	१५	१६	१६	४३
१०	र.	१८	३	३१	१९	३८	२१	३३	२३	५०	२६	८	२८	२६	६	४७	९	७	११	२६	१३	३३	१५	१२	१६	३९
११	चं.	१७	५९	३५	१९	३४	२१	२९	२३	४६	२६	४	२८	२२	६	४३	९	३	११	२२	१३	२९	१५	८	१६	३६
१२	मं.	१७	५५	३९	१९	३०	२१	२५	३	४२	२६	०	२८	१८	६	३९	८	५९	११	१८	१३	२५	१५	५	१६	३२
१३	बु.	१७	५१	४४	१९	२६	२१	२१	२३	३८	२५	५६	२८	१४	६	३५	८	५५	११	१४	१३	२१	१५	१	१६	२८
१४	गु.	१७	४७	४८	१९	२२	२१	१७	२३	३४	२५	५३	२८	१०	६	३१	८	५१	११	१०	१३	१७	१४	५७	१६	२४
१५	शु.	१७	४३	५२	१९	१८	२१	१३	२३	३१	२५	४९	२८	६	६	२७	८	४७	११	६	१३	१३	१४	५३	१६	२०
१६	श.	१७	३९	५६	१९	१४	२१	९	२३	२७	२५	४५	२८	२	६	२३	८	४३	११	२	१३	९	१४	४९	१६	१६
१७	र.	१७	३६	०	१९	१०	२१	५	२३	२३	२५	४१	२७	५८	६	१९	८	३९	१०	५८	१३	६	१४	४५	१६	१२

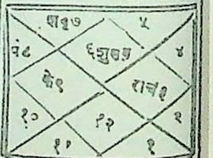
॥ दीपावली ॥

कार्तिक कृष्णा ३० को 'दीपावली' का उत्सव होता है। जिस वर्ष क्षयाधिमास होते हैं उस वर्ष क्षयमास तक के व्रतपर्वों में विसंगति के निवारणार्थ पार्वण श्राद्ध, नवरात्र एवं दीपावली आदि मासिक पर्व क्रमागत रूप में लगाये जाते हैं। सरकारी पंचांग के पृष्ठ ४४३में १६ अक्टूबर को ही दीपावली का निर्णय है। जनता भ्रम में न पड़े यही हमारा सुझाव है।

[E ... (कर्मांबलेऽपि)।

का.(संस.)कृ.३०शइ२७।५८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	५	२९	४०	३९	५९	२४	चि
मं.	७	२५	२३	०	४४	मा	[illegible]
बु.	५	११	३७	०	५८	उ.	ह.
बृ.	६	२१	१६	०	१२	उ.	वि
शु.	५	२५	४	०	७५	अ.	चि
श.	६	१	२०	०	७	अ.	चि
रा.	२	१४	१६	१२	-३	११	आ.
के.	८	१४	१६	१२	-३	११	पू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ कार्तिक शु. पक्ष																		
दि.मान घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.
२८	१७	१	र.	५७	५५	२९	२८	वि	३०	८	१८	२१	प्री.	२६	३६	कि	१७	२९
२८	१३	२	चं.	५९	५	२९	५७	स्वा	३२	१०	१९	११	प्री.	२८	४३	बा	१७	३८
२८	८	३	मं.	६०	०	—	—	वि	३५	४५	२०	३७	आ.	२८	२८	तै.	१८	२६
२८	४	३	बु.	१	५२	७	५	अ.	४०	५०	२२	४०	सौ	२८	४२	व.	१९	५२
२८	०	४	गु.	६	१०	८	४९	ज्ये	४७	१५	२५	१५	शो.	२९	१९	ब.	२१	५४
२७	५६	५	शु.	११	५०	११	५	मू.	५४	४०	२८	१३	अ.	३०	१४	कौ	२४	२१
२७	५२	६	श.	१८	२५	१३	४०	पू.	६०	०	—	—	सु	—	—	ग.	२७	१
२७	४८	७	र.	२४	५५	१६	२१	पू.	२	२५	७	२१	सु.	७	१५	वि	२९	३८
२७	४४	८	चं.	३१	८	१८	५०	उ.	१०	३	१०	२४	धृ.	८	१३	ब.	१८	५०
२७	४०	९	मं.	३६	१२	२०	५३	श्र.	१६	४५	१३	६	शू.	८	५५	बा.	७	५६
२७	३६	१०	बु.	३९	४२	२२	१८	ध.	२२	५	१५	१५	गं.	९	१२	तै.	९	४१
२७	३२	११	गु.	४१	२०	२२	५८	श.	२५	३८	१६	४१	वृ.	८	५६	व.	१०	४४
२७	२८	१२	शु.	४१	३	२२	५१	पू.	२७	२०	१७	२२	ध्रु.	८	५	ब.	११	०
२७	२४	१३	श.	३८	४५	२१	५९	उ.	२७	८	१७	१८	व्या	२८	३७	कौ	१०	३७
२७	२०	१४	र.	३४	५५	२०	२६	रे.	२५	३	१६	३५	ह.	२६	२	ग.	९	१३
२७	१६	१५	चं.	२९	५८	१८	२९	अ.	२२	१२	१५	२१	सि	२३	११	वि	[illegible]	[illegible]

आ.प्र.स. नैनीताल सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं. म	से.	सू.अ. घं.	मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	दिनांक क्रम नवं.	सौ. कार्तिक	श. कार्तिक	मु.	अं. अक्टू.
६	१८	११	३१	१७	३७	तु.	—	—	२१	१	२५	२९	१७
६	१९	५७	१९	१७	३६	तु.			का.	२	२६	३०	१८
६	१९	५७	८	१७	३५	वृ.	१४	१६	२	३	२७	मु.१	१९
६	२०	५६	५९	१७	३४	वृ.			३	४	२८	२	२०
६	२१	५६	४६	१७	३३	ध.	२५	१५	४	५	२९	३	२१
६	२१	५६	३९	१७	३२	ध.			५	६	३०	४	२२
६	२२	५६	२८	१७	३१	ध.			६	७	का	५	२३
६	२३	५६	२०	१७	३०	म.	१४	७	७	८	२	६	२४
६	२३	५६	१२	१७	२९	म.			८	९	३	७	२५
६	२४	५६	५	१७	२८	कुं.	२६	१३	९	१०	४	८	२६
६	२५	५५	५९	१७	२७	कुं.			१०	११	५	१०	२७
६	२६	५५	५४	१७	२६	कुं.			११	१२	६	११	२८
६	२७	५५	४९	१७	२५	मी	११	१	१२	१३	७	१२	२९
६	२७	५५	४६	१७	२५	मी			१३	१४	८	१३	३०
६	२८	५५	४३	१७	२४	मे.	१६	३५	१४	१५	९	१४	३१
६	२८	५५	४०	१७	२३	मे.			१५	१६	१०	१५	नव.१

दक्षिणायण, उत्तरगोल,शरदृतु:(१७अक्टू. से १नवम्बर१९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६'-४१", कैतकी अहर्गण ३४८२
[F घ.१३।१७, संक्रा.पुण्यकाल घं.९।१७से,१७।१७तक। सौरकार्तिकप्रा.

अन्नकूट१,गोवर्ध.पू.१,बलिपू.,बलिप्रतिपा.,गोक्रा.व्र.समा.सूर्यतुलामें F
चन्द्रदर्शनमु.१५, यमद्वितीया,भ्रातृद्वितीया (भैयादूज),बग्वाली(कूर्माचले)I
मोहर्रम(मु.१मा.)हिजरीसन्१४०३प्रा.[I भगिनीगृहभोजन,यमघंट.योगD
प्र.घं.१९।५३ से, वैनायकी श्रीगणेश४व्रत, ससि नसियोग घं. २२।४०A
भ.घ.९।४९तक, [Dघं.१९।११ से, [A तक, शुक्र तुला में घं. २८।१२
सौभाग्य पंचमी,[B रा.क्रांति प्रा.भौमधनुमेंघं.१३।७सूर्यस्वा.मेंघं.२०।१७E
सूर्यषष्ठी६व्रत.(डालाछठ)अग्निपू.६,सूर्यसायन वृश्चिकमेंघं.२३।२८हेमन्तB
भ घ.१६।२१से२९।३८तक,कल्पादि७, त्रिपु.यो.घं.७।२१से१६।२१तकH
गोपाष्टमी८व्रत,दुर्गाष्टमी८व्रत,सहस्रार्जुनजय.,बुधचित्रामें घं.२४।४६मृत्युG
पञ्चक घं.२६।१३से,अक्षय नवमी९व्रत,कूष्माण्ड९, कृतयुगादि, स्वत्यांशु.@
महा(व्य.)पात स्व. घं.२६।० [@ घं१९।५३, विशाखा २ गुरु घं.२२।६
भ.घं ९।४१से२२।५८तक, देव प्रबोधिनी११एकाद.व्रत, तुलसीविवाह, =
बुधा.पूर्वमें, हरिवासराभाव:, मन्वादि१२,महाकविकालिदास जयन्ती +
प्रदोषव्रत.(शनिप्रदोष),बुधतुलामेंघं.९।९, निशीथ व्यापिनी१४में,वैकुण्ठ X
भ.घं.२०।२६से,वैकुण्ठ१४,(मतान्तरे),श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिवस p
भ.घं.७।२६तक,व्रतपर्वकी कौमिकी पूर्णिमा कार्तिकस्नानपूर्ति भीष्मपंच.,p

का.शु. ८चन्द्रे इ.५७।४५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	६	७	२८	४	५९	४१	स्वा
मं.	८	१	१४	०	४५	सा	मू.
बु.	५	२१	५०	०	९२	उ.	ह.
गु.	६	२२	५८	०	१३	उ.	वि
शु.	६	५	५	०	७५	अ.	स्वा
श.	६	२	२८	७	८	अ.	चि
रा.	२	१३	५०	४५	-३	११	आ
के.	८	१३	५०	४५	-३	११	पु.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टैं. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१७	र.													@	३०	१५	@									
१८	चं.	१७	३२	४	१९	६	२१	१	२३	१९	२५	३७	२७	५५	३०	११	८	३५	१०	५४	१३	२	१४	४१	१६	८
१९	मं.	१७	२८	८	१९	३	२०	५७	२३	१५	२५	३३	२७	५१	३०	७	८	३१	१०	५०	१२	५८	१४	३७	१६	४
२०	बु.	१७	२४	१२	१८	५९	२०	५३	२३	११	२५	२९	२७	४७	३०	४	८	२७	१०	४६	१२	५४	१४	३३	१६	०
२१	गु.	१७	२०	१६	१८	५५	२०	४९	२३	७	२५	२५	२७	४३	३०	०	८	२३	१०	४२	१२	५०	१४	२९	१५	५६
२२	शु.	१७	१६	२०	१८	५१	२०	४६	२३	३	२५	२१	२७	३९	२९	५६	८	२०	१०	३८	१२	४६	१४	२५	१५	५२
२३	श.	१७	१२	२४	१८	४७	२०	४२	२२	५९	२५	१७	२७	३५	२९	५२	८	१६	१०	३५	१२	४२	१४	२१	१५	४८
२४	र.	१७	८	२८	१८	४३	२०	३८	२२	५५	२५	१३	२७	३१	२९	४८	८	१२	१०	३१	१२	३८	१४	१७	१५	४४
२५	चं.	१७	४	३२	१८	३९	२०	३४	२२	५१	२५	९	२७	२७	२९	४४	८	८	१०	२७	१२	३४	१४	१३	१५	४०
२६	मं.	१७	०	३६	१८	३५	२०	३०	२२	४७	२५	५	२७	२३	२९	४०	८	४	१०	२३	१२	३०	१४	९	१५	३६
२७	बु.	१६	५६	४०	१८	३१	२०	२६	२२	४३	२५	१	२७	१९	२९	३६	८	०	१०	१९	१२	२६	१४	६	१५	३२
२८	गु.	१६	५२	४५	१८	२७	२०	२२	२२	३९	२४	५७	२७	१५	२९	३२	७	५६	१०	१५	१२	२२	१४	२	१५	२९
२९	शु.	१६	४८	४९	१८	२३	२०	१८	२२	३६	२४	५३	२७	११	२९	२८	७	५२	१०	११	१२	१८	१३	५८	१५	२५
३०	श.	१६	४४	५३	१८	१९	२०	१४	२२	३२	२४	५०	२७	७	२९	२४	७	४८	१०	७	१२	१४	१३	५४	१५	२१
३१	र.	१६	४०	५७	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
न.	चं.	१६	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

@ १७ ता. रविवार को तुला लग्नोदय दो बार होगा।

॥ सङ्क्रान्ति-फल ॥

कार्तिक शु.१ रविवार को सूर्यो. घं.१७।२८पररवि.सू.कीतुलासंक्रा.है।

[H भानुसप्तमी, (सूर्य ग्रहण तुल्य) परम पुण्य काल, घं. १६।२१.तक विवस्वत ७। [E स्त्री, पुष.सूर्य व. मूषक वाहन श्रेष्ठ वर्षा। [G योग घ.१०।२४तक।ससियोगघं.१०।२४ [= भीष्म पंचका र. चातुर्मास्य व्रत,पूर्ति, ताजिया (मु.)महा(व्य.) पात भोग घं.७।३३, [+ गुरु अ. कूर्माचले।[X १४ व्रत,महाविष्णु पूजा, [p पंचक समा. घं.१६।३५ [p क्षमा.मन्वादि, मत्स्यजयन्ती श्री गुरुनानक जयन्ती, निम्बार्क जय. पुष्कर यात्रा. [illegible] मेलारम्भ

का. शु. १५चन्द्रे इ.५७।३३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	६	१५	३९	२०	६०	३	स्वा
मं.	८	७	१०	०	४५	उ.	मू.
बु.	६	४	४०	०	९९	अ.	चि
गु.	६	२४	४२	०	१३	अ.	वि.
शु.	६	१५	६	०	७६	अ.	वि
श.	६	३	१६	०	७	अ.	चि
रा.	२	१३	२५	१९	-३	११	आ
के.	८	१३	२५	१९	-३	११	पु.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	योग	स्टैं.टा. घं.	मि	करण	स्टैं.टा. घं.	मि	भा.प्र.स. नैनीताल सू.उ. घं.	मि	सायण मि.	से.	सू.अ. घं.	मि	चन्द्र संचार रा.	घं.	मि	दिनांक क्रम कार्ति.	सौ.	रा.	मु.	नवं.
२७	१२	१	मं.	२३	५५	१६	३	म.	१८	२८	१३	४३	व्य.	२०	०	तै.	२६	४६	६	२९	[illegible]	३९	१७	२२	वृ.	१९	१५	१६	१७	११	१५	२
२७	८	२	बु.	१७	२०	१३	२६	फ़ु.	११	२२	११	५१	व.	१६	४०	व.	२४	५	६	३०	५५	३८	१७	२१	वृ.			१७	१८	१२	१६	३
२७	४	३	गु.	१०	३०	१०	४३	उ.	८	२५	९	५३	प.	१३	१६	ब.	२१	२३	६	३१	५५	३९	१७	२१	मि	२०	५५	१८	१९	१३	१७	४
२७	१	४	शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सि.	९	५५	कौ.	१८	४५	६	३२	५५	४०	१७	२०	मि			१९	२०	१४	१८	५
२६	५७	६	श.	५१	३३	२७	९	पु.	५४	५५	२८	३०	सि.	[illegible]	[illegible]	ग.	१६	१८	६	३२	५५	४२	१७	१९	क.	२८	५०	२०	२१	१५	१९	६
२६	५३	७	र.	४६	१८	२५	४	पु.	५१	३०	२७	९	शु.	२४	४२	वि.	१४	५	६	३३	५५	४५	१७	१८	क.			२१	२२	१६	२०	७
२६	५०	८	चं.	४१	४५	२३	१६	श्ले.	४८	४५	२६	४	शु.	२२	३	बा.	१२	८	६	३४	५५	४८	१७	१८	सिं	२६	४	२२	२३	१७	२१	८
२६	४६	९	मं.	३८	०	२१	५७	म.	४६	४८	२५	१८	ब्र.	१९	३९	तै.	१०	२९	६	३५	५५	५२	१७	१७	सिं			२३	२४	१८	२२	९
२६	४३	१०	बु.	३५	५	२०	३७	पू.	४५	४३	२४	५२	ऐं.	१७	३०	व.	९	९	६	३५	५५	५९	१७	१६	सिं			२४	२५	१९	२३	१०
२६	३९	११	गु.	३२	५७	१९	४७	उ.	४५	२५	२४	४६	वै.	१५	३८	ब.	८	१८	६	३६	५६	३	१७	१६	कं.	६	४९	२५	२६	२०	२४	११
२६	३६	१२	शु.	३१	५३	१९	२२	ह.	४६	५	२५	३	वि.	१४	३	कौ.	७	३३	६	३७	५६	१०	१७	१५	कं.			२६	२७	२१	२५	१२
२६	३२	१३	श.	३१	४८	१९	२१	चि.	४८	२१	२५	४३	प्री.	१२	४७	ग.	७	१८	६	३८	५६	१७	१७	१५	तु.	१३	१३	२७	२८	२२	२६	१३
२६	२९	१४	र.	३२	४८	१९	४६	स्वा.	५०	३०	२६	५१	आ.	११	५०	वि.	७	३०	६	३९	५६	२६	१७	१४	तु.			२८	२९	२३	२७	१४
२६	२६	३०	चं.	३५	३	२०	४०	वि.	५४	२८	२८	२५	सौ.	११	१६	च.	८	९	६	३९	५६	३५	१७	१४	वृ.	२२	२	२९	३०	२४	२८	१५

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तर्तुः, (२ नवम्बरसे १५ नवम्बर १९८२तक)

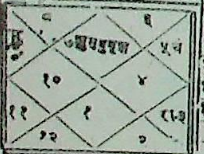
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-४३″, कलकी अहर्गण ३४९८

मास प्रयुक्त व्रतो त्सवादि निर्णयार्थं मार्गशीर्ष चान्द्रमासारम्भ:
भ.घं.२४।५से, बुध स्वाती में घं.१०।३४ आर्द्रा २ राहु-मूले ४ केतुA
भ. घं. १०।४३ तक, संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, पौराणिक गुरु अस्त
शुक्र विशाखा में घं. २७।१५, शनि उदय पूर्व में
भ.घं.२७।९से, सूर्य विशाखा में घं,१४।१७
भ.घं.१४।५ तक, रविपुष्यामृतयोग घं.२७।९ तक
कालाष्टमी ८, कालभैरवाष्टमी८व्रत, भैरव जयन्ती (प्रदोषव्यापि.में८)
[Aघं.२१।३४, भविष्योक्त अशून्य शयन२व्रत, ससियोग घं.११।५१तक
भ.घं.९।९से,२०।३७तक, पूषा में मंगल घं.१०।४२, विशाखा ३ में B
उत्पन्ना एकादशी ११ व्रत, बुध विशाखा में घं १३।४९
मल्ल द्वादशी, [Bगुरुघं.२६।३, श्रीमहावीरस्वामी दीक्षा दिवस (जैन)
भ.घं.१९।२१से, शनिप्रदोषव्रत, ससियो.घं.२५।४३से, मासशिवरात्रिD
भ.घं.७।३० तक, बालदिवस, श्रीजवाहरलाल नेहरू जयन्ती
सोमवती ३०, देवपितृकार्यार्थं अमावास्या, कमलाजयन्ती

[D व्रत वृश्चिके शुक्र घं. २६।१७

मार्गशी.कृ.८चं.इ.५७।१८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		नै.
सू.	६	२२	३८	२१	६०	१७	वि.
मं.	८	१२	२५	०	४५	आ	मू.
बु.	६	१६	११	०	९८	अ.	स्वा.
गु.	६	२६	१५	०	१३	अ.	वि.
शु.	६	२३	५३	०	७६	अ.	वि.
श.	६	४	६	०	७	उ.	चि.
रा.	२	१३	३	३	-३	११	आ.
के.	८	१३	३	३	-३	११	पू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घं.	मि	सिंह घं.	मि	कन्या घं.	मि	तुला घं.	मि	वृश्चि. घं.	मि	धनु घं.	मि	मकर घं.	मि	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
२	मं.	१६	३३	५	१८	७	२०	२	२२	२०	२४	३८	२६	५६	२९	१२	७	३६	९	५५	१२	२	१३	४२	१५	९
३	बु.	१६	२९	९	१८	४	१९	५८	२२	१६	२४	३४	२६	५२	२९	८	७	३२	९	५१	११	५८	१३	३८	१५	५
४	गु.	१६	२५	१३	१८	०	१९	५४	२२	१२	२४	३०	२६	४८	२९	५	७	२८	९	४७	११	५५	१३	३४	१५	१
५	शु.	१६	२१	१८	१७	५६	१९	५०	२२	८	२४	२६	२६	४४	२९	१	७	२४	९	४३	११	५१	१३	३०	१४	५७
६	श.	१६	१७	२२	१७	५२	१९	४६	२२	४	२४	२२	२६	४०	२८	५७	७	२१	९	४०	११	४९	१३	२६	१४	५३
७	र.	१६	१३	२६	१७	४८	१९	४२	२२	०	२४	१८	२६	३६	२८	५३	७	१७	९	३६	११	४३	१३	२२	१४	४९
८	चं.	१६	९	३०	१७	४४	१९	३९	२१	५६	२४	१४	२६	३२	२८	४९	७	१३	९	३२	११	३९	१३	१८	१४	४५
९	मं.	१६	५	३४	१७	४०	१९	३५	२१	५२	२४	१०	२६	२८	२८	४५	७	९	९	२८	११	३५	१३	१४	१४	४१
१०	बु.	१६	१	३८	१७	३६	१९	३१	२१	४८	२४	६	२६	२४	२८	४१	७	५	९	२४	११	३१	१३	११	१४	३७
११	गु.	१५	५७	४२	१७	३२	१९	२७	२१	४४	२४	२	२६	२०	२८	३७	७	१	९	२०	११	२७	१३	७	१४	३३
१२	शु.	१५	५३	४७	१७	२८	१९	२३	२१	४०	२३	५८	२६	१६	२८	३३	६	५७	९	१६	११	२३	१३	३	१४	३०
१३	श.	१५	४९	५१	१७	२४	१९	१९	२१	३७	२३	५४	२६	१२	२८	२९	६	५३	९	१२	११	१९	१२	५९	१४	२६
१४	र.	१५	४५	५५	१७	२०	१९	१५	२१	३३	२३	५१	२६	८	२८	२५	६	४९	९	८	११	१५	१२	५५	१४	२२
१५	चं.	१५	४१	५९	१७	१६	१९	११	२१	२९	२३	४७	२६	४	२८	२१	६	४५	९	४	११	११	१२	५१	१४	१८

॥ मास-फल ॥

इसमास में पांच मंगलवार तथा पंचग्रही- योग युद्धोत्पात् एवं विग्रह कारक है। सोमवती अमावास्या से कुछ मन्दी का योग बन सकता है। कीटाणु से कृषि की हानि होवे, सर्राफा तिलहन घी तेल, खनिज पदार्थ (डीजल पेट्रोल) रासायनिक द्रव्य तथा सोना चांदी में कुछ मन्दी के बाद विशेष तेजी आने से प्रजा को कष्ट हो। किसी बड़े राष्ट्रीय नेता के पदत्याग या मृत्यु की सम्भावना है।

मार्गशी.कृ.३०चं.इ.५७।५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		नै.
सू.	६	२९	४१	०	६०	२९	[illegible]
मं.	८	१७	४३	०	४६	उ.	[illegible]
बु.	६	२७	३०	०	९६	अ.	[illegible]
गु.	६	२७	४८	०	१३	अ.	[illegible]
शु.	७	२	४१	०	७५	अ.	[illegible]
श.	६	४	५५	०	७	उ.	[illegible]
रा.	२	१२	४०	४८	-३	११	[illegible]
के.	८	१२	४०	४८	-३	११	[illegible]



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष | भा.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र सञ्चार | दिनांक क्रम

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	गते मार्ग.	सौ मार्ग.	रा. कार्ति.	मु.	अं. नवं.
२६	२३	१	मं.	३८	३०	२२	४	अ.	५९	३५	३०	२०	शो	११	४	किं	९	१८	६	४०	११/५६	४५	१७	१२	वृ.			१	१	२५	२९	१६
२६	१९	२	बु.	४३	१०	२३	५७	ज्ये	६०	०	—	—	अ.	११	१४	बा.	१०	५९	६	४१	५६	४६	१७	१३	वृ.			२	२	२६	३०	१७
२६	१६	३	बृ.	४८	५५	२६	१६	ज्ये	५	४८	९	१	सु.	११	४६	तै.	१३	४	६	४२	५७	८	१७	१२	ध.	९	१	३	३	२७	११	१८
२६	१३	४	शु.	५५	४५	२८	५४	मू.	१२	५६	११	५४	धृ.	१२	३४	व.	१५	३३	६	४३	५७	२०	१७	१२	ध.			४	४	२८	२	१९
२६	१०	५	श.	६०	०	—	—	पू.	२०	४२	१५	१	शू.	१३	३३	ब.	१८	१६	६	४४	५७	३४	१७	१२	म.	२१	४९	५	५	२९	३	२०
२६	७	५	र.	२	१८	७	३९	उ.	२८	४०	१८	१२	गं.	१४	३५	कौ	२१	०	६	४४	५७	४८	१७	११	म.			६	६	३१	४	२१
२६	४	६	चं.	८	५३	१०	१८	श्र.	३६	५	२१	११	वृ.	१५	२९	ग.	२३	३१	६	४५	५८	३	१७	११	म.			७	७	मा	५	२२
२६	२	७	मं.	१४	४०	१२	३८	ध.	४२	३०	२३	४६	ध्रु.	१६	९	वि	२५	३५	६	४६	५८	१९	१७	११	कुं.	१०	३०	८	८	२	६	२३
२५	५९	८	बु.	१९	०	१४	२२	श.	४७	२३	२५	४४	व्या	१६	१८	बा.	२७	१	६	४७	५८	३६	१७	१०	कुं.			९	९	३	७	२४
२५	५६	९	बृ.	२१	३५	१५	२६	पू.	५०	२३	२६	५७	ह.	१५	५६	तै.	२७	३९	६	४८	५८	५४	१७	१०	मी.	२०	३८	१०	१०	४	८	२५
२५	५४	१०	शु.	२२	८	१५	३९	उ.	५१	२५	२७	२२	व.	१४	५६	व.	२७	२६	६	४८	५९	१२	१७	१०	मी.			११	११	५	९	२६
२५	५१	११	श.	२०	३३	१५	२	रे.	५०	२५	२६	५९	सि	१३	१७	ब.	२६	२५	६	४९	५९	३१	१७	१०	मे.	२६	५९	१२	१२	६	१०	२७
२५	४९	१२	र.	१६	५८	१३	३७	अ.	४७	२५	२५	५२	व्य	११	०	कौ	२४	३९	६	५०	५९	५१	१७	१०	मे.			१३	१३	७	११	२८
२५	४७	१३	चं.	११	४०	११	३१	भ.	४३	८	२४	६	व.	[illegible]	[illegible]	ग.	२२	१३	६	५१	१२/०	१२	१७	१०	वृ.	२९	३८	१४	१४	८	१२	२९
२५	४४	१४	मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृ.	३७	४०	२१	५६	शि	२५	११	वि	१९	२८	६	५२	१२/०	३३	१७	९	वृ.			१५	१५	९	१३	३०

दक्षिणायन, उत्तरगोल, हेमन्तर्तुः (१६ से ३० नवम्बर १९८२ ई० तक)।

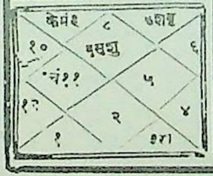
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६'-४५" केतकी अहर्गण ३५१२

[b गुरु ग्रन्थ साहेबजी का वार्षिकोत्सव, [D उदयकूर्माचल

सूर्य वृश्चिक में घं.१३।२ संक्रान्ति पुण्यकाल सूर्योदय से घं. १३।२तकb चन्द्रदर्शन मु.१५, बुध वृश्चिक में घं.१८।५८ [F अनुरा.में घं.१७।५८A सफर २ माह (मु.)[hसंकल्पार्थं हेमन्तर्तु व सौर मार्गशीर्ष प्रा. शुक्रF भ.घं.१५।३३ से २८।५४ तक, वैनायकी श्रीगणेश४व्रत, अनुरा.में सूर्यC गुरुतेगबहादुर बलिदान दिवस [Cघं.२०।१७, अनु.में बुध घं. २१।२४, गुहषष्ठी६ द्वितीय नागपंचमी [§रा.मार्गशी.रंभ ससियोगघं.२१।११तकH श्रीस्कन्दषष्ठी ६ चम्पाषष्ठी (महाराष्ट्र) सूर्य सायन धनुमें घं. २०।५४ § भ.घं.१२।३८से२५।३५तक, मित्रसप्तमी७, भक्त श्रीनरसीमहताजयन्तीM दुर्गाष्टमी८,[Hमहा(व्य.)पात घं.७।५४से१७।०तक[Mपंच.घं.१०।३०सेd नन्दा९, नवमीमें विष्णुपू.,कलादि९,विशा.४वृश्चिके गुरुःघं२९।२९ गुरु D भ.घं.२७।२६से समि असियोग घं.२७।२२से[dद्विपु.योग घं.१२।३८तक भ.१५।२तक,मोक्षदा११एकादशी व्रत, मौनी११। गीताजयन्ती, शुक्र G प्रदोष व्रत, ससियोग घं.२५।१० तक, बुध ज्येष्ठा में घ. ९।३ पिशाचमोचन१४, काशीपिशाचमोचन यात्रा व श्राद्ध कपर्दीश्वर पूजन,B भ.घ.८।५३से१९।२२तक,व्रतपर्वकी आग्रहायणी पूर्णिमा, दत्तात्रेयजयन्तीe [eश्रीविद्याजय.धान्य१५ गरु उदय (पौराणिक), ससियोगघं.२१।५६तक

कार्तिकशु.८भौमेइ. ५६।४८

ग्र.	रा.	अं.	कं.	वि.	गति		न.
सू.	७	७	४५	३५	६०	४०	अ
मं.	८	२३	५०	०	४६	मा	पू.
बु.	७	१०	१०	०	९४	अ.	अ.
बृ.	६	२९	२४	०	१३	अ.	चि.
शु.	७	१२	४४	०	७५	अ	अ
श.	६	५	४९	०	६	उ	वि
रा.	२	१२	१५	२१	−३	११	आ
के.	८	१२	१५	२१	−३	११	मु



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१६	मं.	१५	३८	३	१७	१२	१९	७	२१	२५	२३	४३	२६	०	२८	१७	६	४१	९	०	११	८	१२	४७	१४	१४
१६	मं.																ⓐ ३०	३७ ⓐ								
१७	बु.	१५	३४	७	१७	९	१९	३	२१	२१	२३	३९	२५	५७	२८	१३	३०	३३	८	५६	११	४	१२	४३	१४	१०
१८	बृ.	१५	३०	११	१७	५	१८	५९	२१	१७	२३	३५	२५	५३	२८	९	३०	२९	८	५२	११	०	१२	३९	१४	६
१९	शु.	१५	२६	१५	१७	१	१८	५५	२१	१३	२३	३१	२५	४९	२८	६	३०	२५	८	४८	१०	५६	१२	३५	१४	२
२०	श.	१५	२२	१९	१६	५७	१८	५१	२१	९	२३	२७	२५	४५	२८	२	३०	२२	८	४४	१०	५२	१२	३१	१३	५८
२१	र.	१५	१८	२३	१६	५३	१८	४८	२१	५	२३	२३	२५	४१	२७	५८	३०	१८	८	४१	१०	४८	१२	२७	१३	५४
२२	चं.	१५	१४	२८	१६	४९	१८	४४	२१	१	२३	१९	२५	३७	२७	५४	३०	१४	८	३७	१०	४४	१२	२३	१३	५०
२३	मं.	१५	१०	३२	१६	४५	१८	४०	२०	५७	२३	१५	२५	३३	२७	५०	३०	१०	८	३३	१०	४०	१२	१९	१३	४६
२४	बु.	१५	६	३६	१६	४१	१८	३६	२०	५३	२३	११	२५	२९	२७	४६	३०	६	८	२९	१०	३६	१२	१५	१३	४२
२५	बृ.	१५	२	४०	१६	३७	१८	३२	२०	४९	२३	७	२५	२५	२७	४२	३०	२	८	२५	१०	३२	१२	११	१३	३८
२६	शु.	१४	५८	४४	१६	३३	१८	२८	२०	४५	२३	३	२५	२१	२७	३८	२९	५८	८	२१	१०	२८	१२	८	१३	३४
२७	श.	१४	५४	४८	१६	२९	१८	२४	२०	४१	२२	५९	२५	१७	२७	३४	२९	५४	८	१७	१०	२४	१२	४	१३	३१
२८	र.	१४	५०	५२	१६	२५	१८	२०	२०	३८	२२	५५	२५	१३	२७	३०	२९	५०	८	१३	१०	२०	१२	०	१३	२७
२९	चं.	१४	४६	५६	१६	२१	१८	१६	२०	३४	२२	५२	२५	९	२७	२६	२९	४६	८	९	१०	१६	११	५६	१३	२३
३०	मं.	१४	४३	०	१६	१७	१८	१२	२०	३०	२२	४८	२५	५	२७	२२	२९	४२	८	५	१०	१३	११	५२	१३	१९

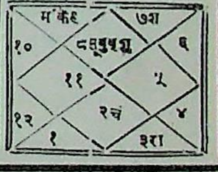
॥ मास-फल ॥

मार्ग. शुक्ला २ मंगलवार को सूर्योदयात् घं. १५।५५ पर अनुरा. में सूर्य की वृश्चिक संक्रान्ति है। वारनाम-महोदरी, नक्षत्रनाम-मन्दा बाल्यावस्था(बैठी)मु.३०। धान्यादि भावों में समता रहे। लालरंग की वस्तुयें, ऊनीवस्त्र सस्ते होंगे। बाद में मंहगे होने पर बेचें। तेज वस्तुयें आगे सस्ती हो जायेगी। वर्षा हल्की हो सकती है। हवा से फसलों में हानि होगी।

[Gज्येष्ठा में घं.८।४१ मंगल उषा में घं. २२।११ पञ्चक समाप्त घं.२६।५९ [A रुद्रव्रत (रिड़ियाव्रत)

कार्ति.शु.१५भौमे इ.५६।२३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	७	१४	१०	३९	६०	४८	अ.
मं.	८	२९	१३	०	४६	उ.	उ.
बु.	७	२१	७	०	९२	अ	ज्ये
बृ.	७	१	६	०	१३	उ.	वि
शु.	७	२१	३१	०	७५	अ.	ज्ये
श.	६	६	३३	०	७	उ.	चि
रा.	२	११	५३	६	−३	११	आ
के.	८	११	५३	६	−३	११	मू.



ⓐ १६ ता॰ मंगलवार को वृश्चिक लग्नोदय दो बार होगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ पौष कृष्णपक्षः

ति. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं. टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं. टा. घं.	मि.	योग	स्टैं. टा. घं.	मि.	करण	स्टैं. टा. घं.	मि.	भा.प्र.स. नैनीताल सू. उ. घं.	मि.	म. रा. घं. मि.	से.	सू. अ. घं.	मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	दिनांक क्रम गते	सौ	रा.	मु.	अं.
२५	४२	१	बु.	४१	१८	२६	३५	रो.	३१	३५	१९	३०	सि	२१	२१	बा.	१६	१४	६	५२	१२ ०	५५	१७	९	मि	३०	१२	१६	१६	१०	१४	१
२५	४०	२	गु.	४०	५३	२३	१४	मृ.	२५	३	१६	५४	सा	१७	२४	कौ.	१२	५४	६	५३	१	१९	१७	९	मि.			१७	१७	११	१५	२
२५	३८	३	शु.	२२	४०	१९	५८	आ	१८	३५	१४	२०	शु.	१३	२८	व.	[illegible]	[illegible]	६	५४	१	४०	१७	९	क.	३०	३२	१८	१८	१२	१६	३
२५	३६	४	श.	२४	५८	१६	५४	पु.	१२	३५	११	५७	शु.	[illegible]	[illegible]	कौ	२७	२९	६	५५	२	४	१७	९	क.	—	—	१९	१८	१३	१७	४
२५	३५	५	र.	१८	८	१४	१०	पु.	७	२०	९	५१	ब्र.	२६	५२	ग.	२४	५८	६	५५	२	२९	१७	९	क.	—	—	२०	२०	१४	१८	५
२५	३३	६	चं.	१२	२३	११	५२	श्ले	२	७	८	११	वै.	२४	८	वि	२२	५५	६	५६	२	५४	१७	९	सिं	८	११	२१	२१	१५	१९	६
२५	३१	७	मं.	७	५०	१०	५	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	११	३६	बा.	२१	२३	६	५७	३	१९	१७	१०	सिं			२२	२३	१६	२०	७
२५	३०	८	बु.	४	४०	८	५०	उ.	५८	५	३०	१२	प्री	१९	२७	तै.	२०	२५	६	५८	३	४५	१७	१०	कं.	१२	१८	२३	२४	१७	२१	८
२५	२८	९	गु.	२	५५	८	९	ह.	५९	१०	३०	३९	आ	१८	४	व.	२०	१	६	५९	४	१०	१७	१०	कं.			२४	२५	१८	२२	९
२५	२७	१०	शु.	२	३८	८	२	चि	६०	०	—	—	सौ	१६	५९	ब.	२०	११	६	५९	४	३८	१७	१०	तु.	१९	७	२५	२६	१९	२३	१०
२५	२६	११	श.	४	६	८	२८	चि	१	३०	७	३६	शो	१६	१४	कौ	२०	५२	७	०	५	५	१७	१०	तु.			२६	२७	२०	२४	११
२५	२५	१२	र.	५	५८	९	२४	स्वा	५	५	९	३	अ.	१५	५५	ग.	२२	२	७	१	५	३३	१७	११	वृ.	२८	२७	२७	२८	२१	२५	१२
२५	२४	१३	चं.	९	२८	१०	४८	वि	९	५०	१०	५९	सु	१५	५५	वि	२३	३९	७	१	६	१	१७	११	वृ.	—	—	२८	२९	२२	२६	१३
२५	२३	१४	मं.	१३	५८	१२	३९	अ.	१५	३३	१३	१५	धृ.	१६	१४	च.	२५	४०	७	२	६	२९	१७	११	वृ.			२९	३०	२३	२७	१४
२५	२२	३०	बु.	१९	२३	१४	४८	ज्ये	२२	८	१५	५४	शू.	१६	४९	किं	२८	०	७	३	६	५८	१७	११	ध.	१५	५४	३०	पौ १	२४	२८	१५

दक्षिणा. द. गोल. हेमन्तर्तुः (दि० १ से १५ दिसम्बर १९८२ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-३७″, केतकी अहर्गण ३५२७

[B तक. (दुष्टतिथि) दिस. १२ मासारम्भः मकरेभौ. घं. ३०।१० स्वाती १ शनि A

मास प्रयुक्त व्रत-पर्व निर्णयार्थ पौष चान्द्रमासारम्भ ससि यो. घं. १९।३० B ज्येष्ठामेंसूर्य घं. २४।४५ पश्चिम शुक्रोदयः कूर्माचले मृत्युयो. घं. १६।५४ तक भ. घं. ९।३५ से घं. १९।५८ तक, संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत महा(वै.)पात स्प. घं. ११।५० मोक्ष घं २३।३० पौराणि. शुक्रोद. पश्चि. में रवि पुष्यामृत योग घं. ९।५१ तक [n पुण्यकाल अगले दिनघं १०।२g भ. घं. ११।५३ सेघं. २२।५५ तक, मूल-धनुमें बुध घं. २२ ११, चेहल्लुम (मु.) मूल-धनु में शुक्र घं. २३।२९, त्रिपु. योग घं. ६।५९ से घं. १०।५ तक कालाष्टमी ८ व्रत, महामना मालवीय जयन्ती. ससि योग घं. ३०।१२ से भ. घं. २०।१ से, [g तक, सौरपौषारम्भ (खरमास) यमघंट यो. १५।५४ से J भ. घं. ८।२ तक, पार्श्वनाथ जन्मतिथि (जैन) [J खण्डग्रास सूर्यग्रहण सफला ११ व्रत, सर्वार्थसिद्धि योग घ. ७।३६ से [A घं. २९।२९ प्रदोष व्रत, त्रिपुष्कर योग घं. ९।३ से घं. ९।२४ तक, भ. घं. १०।४८ से घं. २३।३९ तक, मास शिवरात्रि व्रत, यमघंट योग D मंगल श्रवण में घ. २६।५६, भौमवती अमावास्या योग घं. १२।३७ से * देव-पितृकार्या. अमा. बुधपूषामेघं. १३।२९ सूर्यमूल-धनुमेंघं. २७।३८ संक्रा. n [D घं १०।५७ तक. उपरान्त ससियो. [* बुधोदय पश्चिम में

पौषकृ. ७ भौमे इ. ५६।२०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	७	२१	५६	३९	६०	५६	ज्ये
मं.	९	४	३८	०	४७	उ.	उ.
बु.	८	२	०	०	९२	उ.	मू.
बृ.	७	२	३७	०	१३	उ.	वि.
शु.	८	०	१९	०	७५	उ.	मू.
श.	६	७	१६	०	६	उ.	स्वा
रा.	२	११	३०	५०	−३	११	आ
के.	८	११	३०	५०	−३	११	मू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टैं टा.)

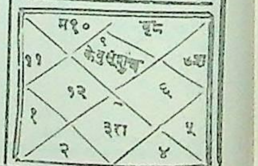
ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१	बु.	१४	३९	४	१६	१३	१८	८	२०	२६	२२	४४	२५	१	२७	१८	२९	३८	८	१	१०	९	११	४८	१३	१५
२	गु.	१४	३५	८	१६	१०	१८	४	२०	२२	२२	४०	२४	५८	२७	१४	२९	३४	७	५७	१०	५	११	४४	१३	११
३	शु.	१४	३१	१२	१६	६	१८	०	२०	१८	२२	३६	२४	५४	२७	१०	२९	३०	७	५३	१०	१	११	४०	१३	७
४	श.	१४	२७	१६	१६	२	१७	५६	२०	१४	२२	३२	२४	५०	२७	७	२९	२७	७	४९	९	५७	११	३६	१३	३
५	र.	१४	२३	२०	१५	५८	१७	५३	२०	१०	२२	२८	२४	४६	२७	३	२९	२३	७	४५	९	५३	११	३२	१२	५९
६	चं.	१४	१९	२४	१५	५४	१७	४९	२०	६	२२	२४	२४	४२	२६	५९	२९	१९	७	४२	९	४९	११	२८	१२	५५
७	मं.	१४	१५	२८	१५	५०	१७	४५	२०	२	२२	२०	२४	३८	२६	५५	२९	१५	७	३८	९	४५	११	२४	१२	५१
८	बु.	१४	११	३२	१५	४६	१७	४१	१९	५८	२२	१६	२४	३४	२६	५१	२९	११	७	३४	९	४१	११	२०	१२	४७
९	गु.	१४	७	३७	१५	४२	१७	३७	१९	५४	२२	१२	२४	३०	२६	४७	२९	७	७	३०	९	३७	११	१६	१२	४३
१०	शु.	१४	३	४१	१५	३८	१७	३३	१९	५०	२२	८	२४	२६	२६	४३	२९	३	७	२६	९	३३	११	१३	१२	३९
११	श.	१३	५९	४५	१५	३४	१७	२९	१९	४६	२२	४	२४	२२	२६	३९	२८	५९	७	२२	९	२९	११	९	१२	३५
१२	र.	१३	५५	४९	१५	३०	१७	२५	१९	४२	२२	०	२४	१८	२६	३५	२८	५५	७	१८	९	२५	११	५	१२	३२
१३	चं.	१३	५१	५३	१५	२६	१७	२१	१९	३९	२१	५६	२४	१४	२६	३१	२८	५१	७	१४	९	२१	११	१	१२	२८
१४	मं.	१३	४७	५७	१५	२२	१७	१७	१९	३५	२१	५३	२४	१०	२६	२७	२८	४७	७	१०	९	१७	१०	५७	१२	२४
१५	बु.	१३	४४	१	१५	१८	१७	१३	१९	३१	२१	४९	२४	६	२६	२३	२८	४३	७	६	९	१४	१०	५३	१२	२०

॥ संक्रान्ति-फल ॥

पौष कृष्णा ३० बुध को सूर्योदयात् घं. ५११२८ पर मूल में सूर्य की धनु संक्रांति है। वार नाम-मन्दा, नक्षत्र नाम राक्षसी प्रबाजिकाऽवस्था (ऊर्ध्वी) मु. ३० भावों में समता। बुधवार का फल तेजी कारक है "बुधवार को जब कभी होवे सुर संक्रान्ति, रस पदार्थ गुड़ खांड तिल तिलहन तेज नितांत" बुध शुक्र का योग वर्षा कारक है। दिसम्बर १, २ ३, ८, ९, १०, १५, १६, १७, १८, २४ २५, २९, ३० को वर्षा हो सकती है। शीत बढ़ेगा। हवा के साथ वर्षा भी [illegible] पड़ेगी।

पौष कृ. ३० बुधे इ. ५६।५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	८	०	४	४३	६१	५	मू.
मं.	९	१०	५२	०	४७	सा.	श्र.
बु.	८	१४	२१	०	९२	उ.	पू.
बृ.	९	४	१९	०	१३	उ.	अ.
शु.	८	१०	२१	०	७६	उ.	मू.
श.	६	८	१	०	५	उ.	स्वा
रा.	२	११	५	२४	−३	११	आ.
के.	८	११	५	२४	−३	११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ पौष शुक्लपक्षः | भा.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र | दिनांक क्रम

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	सू.उ. घं.	सू.उ. मि.	स्पष्ट मि.	स्पष्ट से.	सू.अ. घं.	सू.अ. मि.	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	गते	सौ.	रा.	मु.	अं.
२५	२१	१	गु.	२५	३५	१७	१९	मू.	२९	२२	१८	८	गं.	१७	३६	बा.	३०	३१	७	[illegible]	१२/७	२७	१७	१२	ध.	—	—	१	२	२५	२९	१६
२५	२१	२	शु.	२२	१३	१९	५७	पू.	३७	५	२१	५४	वृ.	१८	३३	कौ.	१९	५६	७	४	७	५६	१७	१२	म.	२८	८	२	३	२६	३०	१७
२५	२०	३	श.	३९	८	२२	४३	उ.	४५	०	२५	४	ध्रु.	१९	३३	तै.	९	२०	७	४	८	२५	१७	१२	म.			३	४	२७	१	१८
२५	२०	४	र.	४५	४८	२५	२४	श्र.	५२	४०	२८	९	व्या.	२०	३१	व.	१३	५	७	५	८	५५	१७	१३	म.			४	५	२८	२	१९
२५	२०	५	सो.	५३	५	२७	५५	ध.	५९	४५	३०	५९	ह.	२१	१९	व.	१४	४०	७	५	९	२४	१७	१३	कुं.	१७	३५	५	६	२९	३	२०
२५	२०	६	मं.	५६	५८	२९	५३	श.	६०	०	—	—	व.	२१	५१	कौ.	१६	५६	७	६	९	५४	१७	१४	कुं.			६	७	३०	४	२१
२५	२०	७	बु.	६०	०	—	—	श.	५	४८	९	२५	सि.	२१	५९	ग.	१८	४१	७	६	१०	२४	१७	१४	मी.	२८	५१	७	८	पौ.१	५	२२
२५	२०	७	गु.	०	३०	७	११	पू.	१०	२०	११	१५	व्य.	२१	३६	वि.	१९	४६	७	७	१०	५४	१७	१५	मी.			८	९	२	६	२३
२५	२०	८	शु.	२	१८	८	२	उ.	१३	१०	१२	२३	व.	२०	३७	बा.	२०	६	७	७	११	२४	१७	१५	मी.			९	१०	३	७	२४
२५	२०	९	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रे.	१४	०	१२	४४	प.	१९	१	तै.	१९	३६	७	८	११	५३	१७	१६	मे.	१२	४४	१०	११	४	८	२५
२५	२१	११	र.	५५	३५	२९	२२	अ.	१२	५३	१२	१७	शि.	१६	४७	व.	१८	१६	७	८	१२	२३	१७	१६	मे.			११	१२	५	९	२६
२५	२१	१२	सो.	४९	३८	२७	०	भ.	९	५३	११	६	सि.	१३	५७	व.	१६	१६	७	९	१२	५३	१७	१७	वृ.	१६	३७	१२	१३	६	१०	२७
२५	२१	१३	मं.	४२	१५	२४	३	कृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सा.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१३	३५	७	९	१३	१३	१७	१८	वृ.			१३	१४	७	११	२८
२५	२२	१४	बु.	३३	५०	२०	४१	रो.	५२	३०	२८	९	शु.	२६	४४	ग.	[illegible]	[illegible]	७	९	१३	५२	१७	१८	मि.	१२	२४	१४	१५	८	१२	२९
२५	२३	१५	गु.	२४	४२	१७	३	आ.	४४	५८	२५	९	ब्र.	२२	२७	व.	२७	९	७	१०	[illegible]	२१	१७	१९	मि.	—	—	१५	१६	९	१३	३०

दक्षिण. द. गोल. हेमन्तशिशिरर्तुः (१६ से ३० दिस. १९८२ तक)

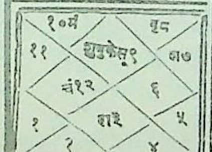
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-५०″, केतकी अहर्गण ३५४२

[Jसखियो घ.९।१५ तक [E जयन्ती, सखियो घं.२८।९ तक

सूर्य की धनु सक्रान्ति का पुण्य काल सूर्योदय से घ १०।२ बजे तक चन्द्रदर्शन, मु० ३०, [Aका मध्याह्न वेवों की मध्यरात्रि, सतिगुरु* शुक्रपूषा में घं.१४।२०, रवि उत्तराभ्याल श्मा.प्रा. (मु.)संवि.घं.२५।४से भ. घं. १२।५-से घ. २५।२४ तक, वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत पंचक घं १७।२५ से [*श्री गुरु गोविन्दसिंह जन्मतिथि, वशमेंशागमन मृत्युयोग घं. ७।६ से [B बुध उषा में घं. १३।१७ भ. घं. ७।१९ से घं. १९।४६ तक [Cअन्वादि (आंग्लमानेन) सायनसूर्य मकर में घं. १०।९ उत्तरा.शिशिरर्तु व रा.पौष प्रा. क्षैत्यों A दुर्गाष्टमी ८, अन्पूर्णाष्टमी८ सखियो अमृतसिद्धियोग घं. १२।२३ से B पञ्चक समाप्त घं. १२।४४, बड़ा दिन ईसामसीह जयन्ती, मालवीय C भ. घं. १८।१६ से घं. २९।२२, पुत्रदाएकादशी ११ व्रतस्मार्तानाम्, D पुत्रदा ११ व्रत वैष्णवों का, अनुराधा २ में गुरु घं. ५१।२९ भौम प्रदोष व्रत, शुक्र उषा में घं.२९।१०, सूर्य पूषा में घं. २९।५३, J भ.घं. २०।४१से ३०।५३तक बारावफात मु. व्रतकी पूर्णिमा, शाकंभरीE स्नानदान की पौषी १५ पूर्णिमा, ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्र ग्रहण, माघ n [nस्नानारम्भ, शाकम्भरी १५ |Dमन्वादि११, मकरे बुध घं.२४।३४

पौषशु. ७ बुधे इ.५५।५८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	८	७	१२	२४	६१	७	मू.
मं.	९	१६	२०	०	४७	उ.	श्र.
बु.	८	२४	४८	०	८५	उ.	पू.
बृ.	७	५	४६	०	१२	उ.	अ.
शु.	८	२९	९	०	७५	उ.	पू.
श.	६	८	३७	०	५	उ.	स्वा.
रा.	२	१०	४३	=	−३	११	आ.
के.	८	१०	४३	=	−३	११	मू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता. दि.	वार	मेष घं.	मेष मि.	मेष से.	वृष घं.	वृष मि.	मिथुन घं.	मिथुन मि.	कर्क घं.	कर्क मि.	सिंह घं.	सिंह मि.	कन्या घं.	कन्या मि.	तुला घं.	तुला मि.	वृश्चि. घं.	वृश्चि. मि.	धनु घं.	धनु मि.	मकर घं.	मकर मि.	कुम्भ घं.	कुम्भ मि.	मीन घं.	मीन मि.
१६	गु.	१३	४०	५	१५	१४	१७	९	१९	२७	२१	४५	२४	२	२६	१९	२८	३९	३०	५८	९	१०	१०	४९	१२	१६
१७	शु.	१३	३६	९	१५	११	१७	५	१९	२३	२१	४१	२३	५८	२६	१५	२८	३५	३०	५४	९	६	१०	४५	१२	१२
१८	श.	१३	३२	१३	१५	७	१७	१	१९	१९	२१	३७	२३	५५	२६	११	२८	३१	३०	५०	९	२	१०	४१	१२	८
१९	र.	१३	२८	१७	१५	३	१६	५७	१९	१५	२१	३३	२३	५१	२६	८	२८	२८	३०	४६	८	५८	१०	३७	१२	४
२०	सो.	१३	२४	२२	१४	५९	१६	५४	१९	११	२१	२९	२३	४७	२६	४	२८	२४	३०	४३	८	५४	१०	३३	१२	०
२१	मं.	१३	२०	२६	१४	५५	१६	५०	१९	७	२१	२५	२३	४३	२६	०	२८	२०	३०	३९	८	५०	१०	२९	११	५६
२२	बु.	१३	१६	३०	१४	५१	१६	४६	१९	३	२१	२१	२३	३९	२५	५६	२८	१६	३०	३५	८	४६	१०	२५	११	५२
२३	गु.	१३	१२	३४	१४	४७	१६	४२	१८	५९	२१	१७	२३	३५	२५	५२	२८	१२	३०	३१	८	४२	१०	२१	११	४८
२४	शु.	१३	८	३९	१४	४३	१६	३८	१८	५५	२१	१३	२३	३१	२५	४८	२८	८	३०	२७	८	३८	१०	१७	११	४४
२५	श.	१३	४	४३	१४	३९	१६	३४	१८	५१	२१	९	२३	२७	२५	४४	२८	४	३०	२३	८	३४	१०	१४	११	४०
२६	र.	१३	०	४७	१४	३५	१६	३०	१८	४७	२१	५	२३	२३	२५	४०	२८	०	३०	१९	८	३०	१०	१०	११	३७
२७	सो.	१२	५६	५१	१४	३१	१६	२६	१८	४४	२१	१	२३	१९	२५	३६	२७	५६	३०	१५	८	२६	१०	६	११	३३
२८	मं.	१२	५२	५५	१४	२७	१६	२२	१८	४०	२०	५८	२३	१५	२५	३२	२७	५२	३०	११	८	२२	१०	२	११	२९
२९	बु.	१२	४८	५९	१४	२३	१६	१८	१८	३६	२०	५४	२३	११	२५	२८	२७	४८	३०	७	८	१८	९	५८	११	२५
३०	गु.	१२	४५	३	१४	१९	१६	१४	१८	३२	२०	५०	२३	७	२५	२४	२७	४४	३०	३	८	१५	९	५४	११	२१

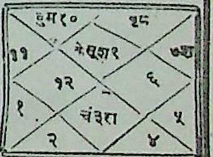
।। संक्रान्ति-फल ।।

पौषी पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक मकर संक्रांति से कुंभ संक्रांति तक १ मास पर्यन्त माघ का स्नान का विधान भी माघपरम्परा है । पंजाब, कुमायूँ आदि में पौषी १५ से ही माघ स्नानारम्भ होता है । "माघ मासे च यः स्नायाम्नैरन्तर्येण भारत । पौण्डरीकफलं तस्य दिवसे-दिवसे भवेत् ।।" आश्विन को अधिमास मानने से माघ स्नान तथा श्री गुरु गोविन्द जयन्ती कालोप हो जायेगा जो कि धर्मशास्त्र सम्भव नहीं है ।

... के सम्मेलनों में हमारे मत की विजय मिली

पौषशु. १५ गुरौ इ.५५।४८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	८	१५	२१	२२	६१	७	पू.
मं.	९	२२	३७	०	४७	उ.	श्र.
बु.	९	४	५६	०	५७	उ.	उ.
बृ.	७	७	२२	०	१२	उ.	अ.
शु.	८	२९	११	०	७६	उ.	उ.
श.	६	९	१३	०	४	उ.	स्वा.
रा.	२	१०	१७	४२	−३	११	आ.
के.	८	१०	१७	४२	−३	११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ माघ कृष्णपक्ष																		आ.प्र.स. नैनीताल						चन्द्र सञ्चार			दिनांक क्रम				
दि मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	सू. उ. घं.	मि.	[illegible] घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	घं.	मि.	गते	सौ	रा.	मु.	चं.
२५	२०	१	शु.	१५	२०	१२	१८	पु.	३७	३५	२२	१२	वै.	१८	१०	कौ.	२३ २६	७	१०	१२	५०	१७	२०	क.	१६	५९	१६	१७	१०	१४	३१
२५	२५	२	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु.	३०	३३	१९	२३	वै.	१३	५८	ब.	१९ ५४	७	१०	१५	१९	१७	२०	क.			१७	१८	११	१५	जन
२५	२६	४	र.	५०	३	२७	१२	श्ले.	२४	१३	१६	५२	वि	[illegible]	[illegible]	ब.	१६ २९	७	११	१५	४८	१७	२१	सिं	१६	५२	१८	१९	१२	१६	२
२५	२७	५	चं.	४२	५०	२४	४२	म.	१९	८	१४	५०	आयु	२७	९	कौ	१३ ५३	७	११	१६	१६	१७	२२	सिं			१९	२०	१३	१७	३
२५	२८	६	भौ.	३९	१५	२२	५३	पू.	१५	२८	१३	२२	सौ	२४	२९	ग.	११ ४३	७	११	१६	४३	१७	२२	कं.	१९	१३	२०	२१	१४	१८	४
२५	३०	७	बु.	३६	२८	२१	४६	उ.	१३	२५	१२	३७	शो	२२	२४	वि	१० १४	७	११	१७	११	१७	२३	कं.			२१	२२	१५	१९	५
२५	३२	८	गु.	३५	३५	२१	२५	ह.	१३	३०	१२	३५	अ.	२०	५५	बा.	९ ३०	७	११	१७	३८	१७	२४	तु.	२४	२४	२२	२३	१६	२०	६
२५	३४	९	शु.	३६	३८	२१	५०	चि	१५	१८	१३	१८	सु.	२०	०१	तै.	९ ३२	७	११	१८	४	१७	२५	तु.			२३	२४	१७	२१	७
२५	३५	१०	श.	३९	२०	२२	५६	स्वा	१८	४५	१४	४२	ध.	१९	३९	व.	१० १८	७	१२	१८	३०	१७	२५	तु.	—	—	२४	२५	१८	२२	८
२५	३७	११	र.	४३	३३	२४	३७	वि	२३	४५	१६	४२	शू.	१९	४७	ब	११ ४४	७	१२	१८	५५	१७	२६	वृ.	१०	११	२५	२६	१९	२३	९
२५	३८	१२	चं.	४८	५५	२६	४६	अ.	२९	५८	१९	११	गं.	२०	१०	कौ	१३ ३८	७	१२	१९	२०	१७	२७	वृ.			२६	२७	२०	२४	१०
२५	४०	१३	भौ.	५५	५	२९	१४	ज्ये	३७	०	२२	७	वृ.	२०	५३	ग.	१५ ५८	७	१२	१९	४४	१७	२८	ध.	२२	०	२७	२८	२१	२५	११
२५	४३	१४	बु.	६०	०	—	—	मू.	४४	३५	२५	२	ध्रु.	२१	४६	वि	१८ ३३	७	१२	२०	८	१७	२९	ध.			२८	२९	२२	२६	१२
२५	४५	१४	गु.	१	४५	७	५४	पू.	५८	२५	२८	१०	व्या	२२	४४	श.	२१ १६	७	१२	२०	३१	१७	२९	ध.			२९	३०	२३	२७	१३
२५	४७	३०	शु.	८	३५	१०	३८	उ.	६०	०	—	—	ह.	२३	४२	कि	२३ ५९	७	१२	२०	५३	१७	३०	म.	१०	५७	मा१	मा	२४	२८	१४

उत्तरायण, द.गोल, शिशिरर्तुः (१३दि. १९८२से १४ जन. १९८३ई०तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-५६′-५३″केतकी अहर्गण ३५५७

[H३०, द्वापरयुगादि ३०, सौरमाघमासारम्भ [Cघं. १४।४२ तक

शास प्रयुक्त व्रतोत्सवादि के लिए माघमासारम्भ (माघेतिलपात्रदानं)A भ.घं.१९।५४ से घं. ३०।१४ तक, इसाई नववर्षारम्भ, जन. १ मासB संकष्टी श्रीगणेश४व्रत, गणेशजय., यमघंटयो.घं.१६।५२से, संकष्टचौथव्रत [Aशुक्र मकर में घं. २०।५७ मंगल धनिष्ठा में घं. २७।२६ इसाई § भ.घं.२२।५३ से, [§वर्षान्त, बैंकों की वार्षिक लेखा बन्दी, बैंक होली से भ.घं.१०।१४तक, स्वामीविवेकानंद जय., जगद्गु. रामानंदाचार्य जय.,b कालाष्टमी८व्रत, बुधवक्री, [Bव सन् १९८३ प्रा. हैप्पी न्यू इयर [Dवं.७।५१, महा (व्य.) पातस्पर्श घं. १०।२६ मोक्ष घं. २२।५४ भ.घं.१०।१८सेघं.२२।५६तक, शुक्ल श्रवणमें घं. २०।३१, सिसियोगC षट्तिला एकादशी११ व्रत, मंगल कुंभ में घं. १५।११, गंगासागर यात्रा बुधास्त पश्चिममें सर्सियो घं. १९।११ तक [bसर्सियो घं.१२।३७ से भ.घं.२९।१४से, भौम प्रदोषव्रत, मेरु त्रयोदशी १३ (जैन) उषा में सूर्यD भ.घं.१८।३३तक, स्वाती २ में शनि घं.२१।२९, मास शिवरात्रि व्रत,F अनुराधा ३में गुरु घं.२९।२९, पितृकार्यार्थं अमावस्यां, मौनी ३०, लोहड़ीp स्नानदानकी अमा., सूर्यकी मकर सङ्क्रांति(खिचड़ी)घं.१४।२१ पुण्यकालK [Kदिनभर, संकल्पार्थ प्रयोज्य उत्तरायण व शिशिर ऋतु प्रा., मौनीH

माघकृष्ण८गुरौ इ. ५५।४५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	८	२२	२९	२१	६१	०	पू.
मं.	९	२८	६	०	४७	मा	ध.
बु.	९	८	५६	०	−४	उ.	उ.
बृ.	७	८	४३	०	११	उ.	अ
शु.	९	७	५८	०	७५	उ.	उ.
श.	६	९	४१	०	४	मा	स्वा
रा.	२	९	५५	२६	−३	११	आ
के.	८	९	५५	२६	−३	११	मू.



देनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
३१	बु.	१२	४१	७	१४	१६	१६	१०	१८	२८	२०	४६	२३	४	२५	२०	२७	४०	२९	५९	८	११	९	५०	११	१७
जन१	श.	१२	३७	११	१४	१२	१६	६	१८	२४	२०	४२	२३	०	२५	१६	२७	३६	२९	५५	८	७	९	४६	११	१३
२	र.	१२	३३	१५	१४	८	१६	२	१८	२०	२०	३८	२२	५६	२५	१३	२७	३२	२९	५१	८	३	९	४२	११	९
३	चं.	१२	२९	१९	१४	४	१५	५९	१८	१६	२०	३४	२२	५२	२५	९	२७	२९	२९	४८	७	५९	९	३८	११	५
४	भौ.	१२	२५	२३	१४	०	१५	५५	१८	१२	२०	३०	२२	४८	२५	५	२७	२५	२९	४४	७	५५	९	३४	११	१
५	बु.	१२	२१	२७	१३	५६	१५	५१	१८	८	२०	२६	२२	४४	२५	१	२७	२१	२९	४०	७	५१	९	३०	१०	५७
६	गु.	१२	१७	३१	१३	५२	१५	४७	१८	४	२०	२२	२२	४०	२४	५७	२७	१७	२९	३६	७	४७	९	२६	१०	५३
७	शु.	१२	१३	३६	१३	४८	१५	४३	१८	०	२०	१८	२२	३६	२४	५३	२७	१३	२९	३२	७	४३	९	२२	१०	४९
८	श.	१२	९	४०	१३	४४	१५	३९	१७	५६	२०	१४	२२	३२	२४	४९	२७	९	२९	२८	७	३९	९	१८	१०	४५
९	र.	१२	५	४४	१३	४०	१५	३५	१७	५२	२०	१०	२२	२८	२४	४५	२७	५	२९	२४	७	३५	९	१५	१०	४१
१०	चं.	१२	१	४८	१३	३६	१५	३१	१७	४८	२०	६	२२	२४	२४	४१	२७	१	२९	२०	७	३१	९	११	१०	३८
११	मं.	११	५७	५२	१३	३२	१५	२७	१७	४५	२०	२	२२	२०	२४	३७	२६	५७	२९	१६	७	२७	९	७	१०	३४
१२	बु.	११	५३	५६	१३	२८	१५	२३	१७	४१	१९	५९	२२	१६	२४	३३	२६	५३	२९	१२	७	२३	९	३	१०	३०
१३	बृ.	११	५०	०	१३	२४	१५	१९	१७	३७	१९	५५	२२	१२	२४	२९	२६	४९	२९	८	७	२०	८	५९	१०	२६
१४	शु.	११	४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ भाव-फल ॥

माघकृ. ३० शुक्र को सूर्योदयात् घ. १७।५३ पर उषा नक्षत्र में सूर्य की मकर संक्रान्ति है। वार नाम-मिश्रा (पशु सु.) नक्षत्रनाम-मन्दा (ब्रा. सु.) प्रव्राजिका (ऊर्ध्वी) अवस्था, मुहूर्त-४५ भावों में सस्ता-पन होना चाहिये "मकर राशि के भानु में तेज बिके घी तेल। धान्यभाव मंदे रहैं कुछ पीड़ा का खेल॥" जनवरी ३,५,६,११,१२, १३,१९,२०,२१, एवं १६,२७, २८,२९ दिनों में विशेष वर्षा हिम-पात से प्रजा कष्ट होगा।

[F[illegible] घ.२५।२ तक यम-तर्पण [pपञ्चक,खरमासपूर्ति.

माघकृष्ण३० शुक्रे इ.५५।४३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	९	०	३८	३४	६१	८	उ.
मं.	१०	४	२३	०	४८	मा	ध.
बु.	९	३	१५	०	−७६	अ.	उ.
बृ.	७	१०	११	०	१०	उ.	अ.
शु.	९	१७	५९	०	७५	उ.	श्र.
श.	६	१०	७	०	३	उ.	स्वा
रा.	२	९	३०	०	−३	११	आ
के.	८	९	३०	०	−३	११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीवि.सं.२०३९शाके १९०४माघ शुक्लपक्ष (अंहस्पति क्षयमास)																																	
दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा घं.	स्टैं.टा मि	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा घं.	स्टैं.टा मि	योग	स्टैं.टा घं.	स्टैं.टा मि	करण	स्टैं.टा घं.	स्टैं.टा मि	सू.उ. घं.	सू.उ. मि	अस्त्वा.घं. मि.	अस्त्वा.घं. से.	सू.अ. घं.	सू.अ. मि	चन्द्र सञ्चार रा.	चन्द्र सञ्चार घं.	चन्द्र सञ्चार मि	गते मा	सौ मा	रा. पौ.	मुं. रवि	अं. ता.
२५	४९	१	श.	१५	२०	१३	१९	उ.	०	१५	७	१७	व.	२४	३७	बा.	२६	३८	७	११	२१	१५	१७	३१	म.			२	२	२५	२२	१५
२५	५२	२	र.	२१	४५	१५	५३	श्र.	७	४८	१०	१८	सि	२५	२३	तै.	२९	५	७	११	२१	३६	१७	३२	कुं.	२३	४३	३	३	२६	र.	१६
२५	५४	३	चं.	२७	३३	१८	१२	ध.	१४	४८	१३	६	व्य	२५	५८	ग.	१८	१२	७	११	२१	५९	१७	३३	कुं.			४	४	२७	२	१७
२५	५७	४	मं.	३२	३३	२०	१२	श.	२१	५	१५	३९	व.	२६	१७	व.	७	१५	७	११	२२	१६	१७	३४	कुं.			५	५	२८	३	१८
२५	५९	५	बु.	३६	३८	२१	४४	पू.	२६	२०	१७	४८	प.	२६	१४	व.	९	२	७	११	२२	३५	१७	३५	मी.	११	१२	६	६	२९	४	१९
२६	२	६	गु.	३८	५८	२२	४५	उ.	३०	२५	१९	२०	शि	२५	४७	कौ	१४	१९	७	१०	२२	५४	१७	३५	मी.			७	७	३०	५	२०
२६	५	७	शु.	३९	५३	२३	९	रे.	३२	५८	२०	२१	सि	२४	५०	गं.	११	१	७	१०	२३	११	१७	३६	मे.	२०	२१	८	८	फ	६	२१
२६	८	८	श.	३९	५	२२	४८	अ.	३३	५०	२०	४८	सा.	२३	२१	वि	११	३	७	१०	२३	२८	१७	३७	मे.			९	९	२	७	२२
२६	११	९	र.	३६	३३	२१	४९	भ.	३३	०	२०	२८	शु.	२१	१८	बा	१०	२३	७	१०	२३	४४	१७	३८	वृ.	२६	७	१०	१०	३	८	२३
२६	१४	१०	चं.	३२	१५	२०	३	कृ.	३०	२८	१९	२०	शु.	१८	४२	तै.	[illegible]	[illegible]	७	९	२४	०	१७	३९	वृ.			११	११	४	९	२४
२६	१७	११	मं.	२६	१८	१७	४०	रो.	२६	१५	१७	३९	ब्र.	१५	३५	व.	२८	१५	७	९	२४	१५	१७	४०	मि	२८	३६	१२	१२	५	१०	२५
२६	२०	१२	बु.	१८	५८	१४	४३	मृ.	२०	४५	१५	२६	ऐं.	१२	९	कौ	२५	५	७	८	२४	२८	१७	४०	मि			१३	१३	६	११	२६
२६	२३	१३	गु.	१०	३५	११	२१	आ.	१४	८	१२	४७	वै.	[illegible]	[illegible]	ग.	२१	३३	७	८	२४	४१	१७	४१	क.	२८	३६	१४	१४	७	१२	२७
२६	२६	१४	शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्री	२३	३३	वि	१७	४९	७	८	२४	५४	१७	४२	क.			१५	१५	८	१३	२८

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरर्तुः, (दिनांक १५से २८ जनवरी १९८३तक)

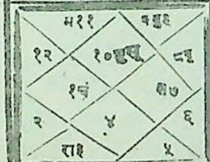
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-५५″, केतकी अहर्गण ३५७२

[H संतरविदासज.काल:श्वावरतरायचन्द्रदिन, जिनेन्द्ररथयात्रा१४(जैन)[J

चन्द्रद.(संभव)मु.३०, [illegible] क्षयमासार.श्रीवल्लभजय.शंखमूलस्नान पंचकघं.२३।४३से, रबिउलसर४ मास प्रा.(मु.) द्विपु.योगघं.१०।१८सेA वक्रीबुधधनुमेंघं.१९।१४, मंगलशतभिषामें घं.२६।५६ [Aघ.१५।५३ तक भद्राघं.७।१५सेघं.२०।१२ तक, वैनायकी (वरद)श्रीगणेश४व्रत, सोपपदाB वसंतपञ्चमी५,श्री५, सरस्वतीमहोत्सव, वागीश्वरी जयन्ती, शु.धनि.D सायनसूर्य कुंभमें घं.२०।४८,वक्रीबुधपूषामेंघं.१३।२१,अभिजित,प्रवृतोC भ.घं.२३।७से,मन्वादि७, अरोग्य७, रथसप्तमी७,अचला७, राष्ट्री.माघE भ.घं ११।३तक,दुर्गाष्टमी८,भीष्माष्टमी८,बुधोदय पूर्वमें,भीष्मकोजलतर्पण नेता सुभाषचन्द्रबोसजन्मदिन,[B४,तिल४,कुन्द४,मृत्युयोगघं.१५।३७तक भ.३०।५६से सूर्यश्रवणमेंघं.१०।१२.शु.कुम्भमेंघं.१९।५३,महा(वै०)पातF भ.घं.१७।४०तक, जया११ एकादशीव्रत, द्विपुष्कर घं १७।४० से प्रदोषव्रत,भारतीयगणतन्त्रदिवस,भीष्म१२द्वादशीसर्वसिद्धियोगघं.१५।२६तक कल्पादि१३, विश्वकर्मा जयन्ती, सर्वसिद्धियोग घं. १२।४७ से भ.घं.७।४२सेघं.१७।४९ तक,व्रत-पर्वकी माघी१५पूर्णिमा,भैरवीजयन्तीH [Jमाघ स्नानसमाप्ति, कविवर माघव जयन्ती

[D से घं.११।५३, कुमाऊँ में बैठी होली उत्सवारम्भः।

माघ. शु.७ शुक्रे.५५।४८							
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	९	७	४६	१५	६१	२	उ.
मं.	१०	९	५३	०	४७	आ	श.
बु.	८	२५	५	०	-४६	अ.	पू.
गु.	७	११	२३	०	१०	उ.	अ.
शु.	९	२६	४५	०	७५	उ.	ध.
श.	६	१०	२५	०	२	आ	स्वा
रा.	२	९	७	४४	-३	११	आ
के.	८	९	७	४४	-३	११	मू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. ट.)

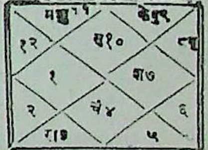
ता.	वार	मेष घं.	मेष मि	मेष से.	वृष घं.	वृष मि	मिथुन घं.	मिथुन मि	कर्क घं.	कर्क मि	सिंह घं.	सिंह मि	कन्या घं.	कन्या मि	तुला घं.	तुला मि	वृश्चि. घं.	वृश्चि. मि	धनु घं.	धनु मि	मकर घं.	मकर मि	कुम्भ घं.	कुम्भ मि	मीन घं.	मीन मि
१५	श.	११	४२	८	१३	१७	१५	११	१७	२९	१९	४७	२२	५	२४	२१	२६	४१	२९	०	७	१२	८	५१	१०	१८
																				⑧	३१	८	⑧			
१६	र.	११	३८	१२	१३	१३	१५	७	१७	२५	१९	४३	२२	१	२४	१७	२६	३९	२८	५६	०	४	८	४७	१०	१४
१७	चं.	११	३४	१६	१३	९	१५	३	१७	२१	१९	३९	२१	५७	२४	१४	२६	३३	२८	५२	३१	०	८	४३	१०	१०
१८	मं.	११	३०	२०	१३	५	१५	०	१७	१७	१९	३५	२१	५३	२४	१०	२६	३०	२८	४८	३०	५६	८	३९	१०	६
१९	बु.	११	२६	२४	१३	१	१४	५६	१७	१३	१९	३१	२१	४९	२४	६	२६	२६	२८	४५	३०	५२	८	३५	१०	२
२०	गु.	११	२२	२८	१२	५७	१४	५२	१७	९	१९	२७	२१	४५	२४	२	२६	२२	२८	४१	३०	४८	८	३१	९	५८
२१	शु.	११	१८	३३	१२	५३	१४	४८	१७	५	१९	२३	२१	४१	२३	५८	२६	१८	२८	३७	३०	४४	८	२७	९	५४
२२	श.	११	१४	३७	१२	४९	१४	४४	१७	१	१९	१९	२१	३७	२३	५४	२६	१४	२८	३३	३०	४०	८	२३	९	५०
२३	र.	११	१०	४१	१२	४५	१४	४०	१६	५७	१९	१५	२१	३३	२३	५०	२६	१०	२८	२९	३०	३६	८	१९	९	४६
२४	चं.	११	६	४५	१२	४१	१४	३६	१६	५३	१९	११	२१	२९	२३	४६	२६	६	२८	२५	३०	३२	८	१६	९	४२
२५	मं.	११	२	४९	१२	३७	१४	३२	१६	४९	१९	७	२१	२५	२३	४२	२६	२	२८	२१	३०	२८	८	१२	९	३९
२६	बु.	१०	५८	५३	१२	३३	१४	२८	१६	४५	१९	३	२१	२१	२३	३८	२५	५८	२८	१७	३०	२४	८	८	९	३५
२७	गु.	१०	५४	५७	१२	२९	१४	२४	१६	४१	१८	५९	२१	१७	२३	३४	२५	५४	२८	१३	३०	२०	८	४	९	३१
२८	शु.	१०	५१	१	१२	२५	१४	२०	१६	३८	१८	५६	२१	१३	२३	३०	२५	५०	२८	९	३०	१७	८	०	९	२७

॥ मासफल ॥

शुक्लादि माघ (माघशु.फा.कृ:) द्विसंक्रान्त होने के कारण 'अंहस्पति संज्ञक' क्षयमास है इसके बाद फाल्गुन अधिक मास होगा, माघ शुक्ल सप्तमी को सूर्योदय के समय स्नान करने से सूर्य ग्रहण तुल्यफल होता है। अष्टमी के दिन भीष्मको जलार्पण से एक वर्ष तक पाप नष्ट हो जाते हैं।

[C रविः घं. २७।२७ सर्वसिद्धियोग घं.१९।२० से [E नर्मदा जयन्ती श्रीमाधवाचार्य जय. पंचकसमा. घं.२०।२१ [F स्पर्श घं.२२।५५ मोक्ष. घं.२९।६, अभिजित निर्ग. रविः घं.३१।३।

माघ शु.१५.शुक्रेइ.५५।५३							
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	९	१४	५३	१०	६०	५५	श्र.
मं.	१०	१५	२३	०	४६	मा	श.
बु.	८	२३	०	०	१४	उ.	पू.
गु.	७	१२	३१	०	८	उ.	अ.
शु.	१०	५	२९	०	७५	अ.	ध.
श.	६	१०	३८	०	२	मा	स्वा
रा.	२	८	४५	२९	-३	११	आ
के.	८	८	४५	२९	-३	११	मू.



⑧ १९ ता- [illegible]

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ शुद्ध फाल्गुन कृष्ण पक्ष																																		
दि. मान घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं. टा. घं.	मि	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं. टा. घं.	मि	योग	स्टैं. टा. घं.	मि	करण	स्टैं. टा. घं.	मि	भा.प्र.स. नैनीताल सू. उ. घं.	मि	अवधा. घं. म	से.	सू. अ. घं.	मि	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि	दिनांक क्रम [illegible]	[illegible]	रा.	मु.	अं.
२६	३०	१	श.	४२	४४	२४	१३	ध.	५१	५८	२७	५४	आ.	१९	१५	बा.	४	४	७	७	[illegible]	५	१७	४३	सिं.	२७	५४	१६	१६	९	१४	२९
२६	३३	२	र.	३४	५	२०	४५	म.	४५	१८	२५	१४	सौ.	१५	६	तै.	१०	२९	७	७	२५	१६	१७	४४	सिं.			१७	१७	१०	१५	३०
२६	३७	३	चं.	२६	३०	१७	४२	पू.	३९	५३	२३	३	शो.	११	१६	व.	[illegible]	[illegible]	७	६	२५	२६	१७	४५	कं.	२८	३२	१८	१८	११	१६	३१
२६	४०	४	मं.	२०	१५	१५	१२	उ.	३५	१८	२१	२५	अ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२६	१५	७	६	२५	३५	१७	४६	कं.			१९	१९	१२	१७	फ.
२६	४४	५	बु.	१५	५५	१३	२७	ह.	३३	४३	२०	३४	धृ.	२६	४६	ग.	२४	५५	७	५	२५	४३	१७	४६	कं.			२०	२०	१३	१८	२
२६	४७	६	बृ.	१३	४०	१२	३२	चि	३३	४३	२०	३३	शू.	२५	१३	वि	२४	२६	७	४	२५	५०	१७	४७	तु.	८	३१	२१	२१	१४	१९	३
२६	५१	७	शु.	१३	३३	१२	२९	स्वा	३५	४८	२१	२३	गं.	२४	२१	बा.	२४	४८	७	४	२५	५७	१७	४८	तु.			२२	२२	१५	२०	४
२६	५५	८	श.	१५	३५	१३	१७	वि	३९	५५	२३	१	वृ.	२४	६	तै.	२६	०	७	३	२६	२	१७	४९	वृ.	१६	३७	२३	२३	१६	२१	५
२६	५८	९	र.	१९	३३	१४	५१	अ.	४५	४३	२५	१९	ध्रु.	२४	२३	व.	२७	५५	७	२	२६	९	१७	५०	वृ.			२४	२४	१७	२२	६
२७	२	१०	चं.	२४	५८	१६	१	ज्ये	५२	४३	२८	७	व्या	२५	४	व.	३०	१८	७	२	२६	११	१७	५१	ध.	२८	७	२५	२५	१८	२३	७
२७	६	११	मं.	३१	२५	१९	३५	मू.	६०	०	—	—	ह.	२५	५९	बा	१९	५५	७	१	२६	१४	१७	५१	ध.			२६	२६	१९	२४	८
२७	१०	१२	बु.	३८	२०	२२	२०	मू.	०	३०	७	१२	व.	२७	४	कौ	८	५७	७	०	२६	१७	१७	५२	ध.	—	—	२७	२७	२०	२५	९
२७	१३	१३	बृ.	४५	१२	२५	५	पू.	८	३०	१०	२४	सि	२८	२	ग.	११	४४	७	०	२६	१८	१७	५३	म.	१७	११	२८	२८	२१	२६	१०
२७	१७	१४	शु.	५१	४५	२७	४१	उ.	१६	२०	१३	३१	व्य	२८	५५	वि	१४	२६	६	५९	२६	१९	१७	५४	म.			२९	२९	२२	२७	११
२७	२१	३०	श.	५७	४०	३०	२	श्र.	२३	४०	१६	२६	व.	२९	३७	च	१६	५५	६	५८	२६	१९	१७	५५	कुं.	२९	४८	३०	फा१	२३	२८	१२

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरर्तु:(२९ जनवरीसे १२ फरवरी१९८३ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३६′-५८″, केतरी अहर्गण ३५८६

[F सर्वोदय दिवस, भूदान जय., सौर फाल्गुनमासारम्भ, पञ्चक घं. ३१ ४८ से

शुक्र शतभिषा में घं. २८।१२ [B जय., समर्थ ९, मृत्युयो. घं.२५।१९तक

गांधी निर्वाण दिवस [D उत्सवारम्भ (महाराष्ट्र)

भ. घं. ७।१३ से घं. १७।४२ तक, संकष्टी श्री गणेश ४ व्रत

फरवरी २ मासारम्भ [E ऋषिबोधोत्सव, आर्यसमाज सप्ताहारम्भ,G

सर्वार्थसिद्धियोग घं.२०।३४तक [M अनुराधा में गुरु घं. २१।२९

भ. घं. १२।३२ से घं. २४।२६ तक, मंगल पूषा में घं. २७।२६,M

बुध उषा में घं. २९।२९ [H घं. १३।४६ से १८।४९ तक

कालाष्टमी ८, सीताष्टमी ८, अष्टका श्राद्ध महा (व्य०) पात H

भ.घं. २७।५५ से, सूर्यधनिष्ठा में घं.१३।२१, समर्थ गुरु श्रीरामदास B

भ घं. १७।१ तक [G महानिशीथ काल घं. २३।३७से घं.२५।१५ तक

विजया ११ एकादशी व्रत, बुध मकर में घं. २१।२९ होली D

शुक्र पूभा में घं. २१।२३, यमघंट योग घं. ७।१२ तक

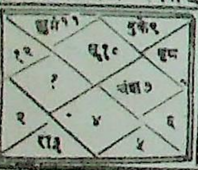
भ.घं. २५।१५ से, प्रदोष व्रत [A समाप्ति सूर्य कुम्भ में घं. १७।२०,F

भ.घं.१४।२६तक, महाशिवरात्रि ससियो घं.१३।३१से, दयानन्द जय.,E

देवपितृ कार्यार्थं अमा. वरियो घं. १६।२६ तक अंहस्पति क्षयमास A

शु.फा. कृ. ७ शुक्रे इ.५६।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	९	२१	५९	१९	६०	४०	श्र.
मं.	१०	२०	५१	०	४७	मा	पू.
बु.	८	२६	४०	०	५०	उ.	पू.
बृ.	७	१३	३१	०	९	उ.	अ
शु.	१०	१४	१२	०	७५	उ.	श.
श.	६	१०	४५	०	९	मा	स्वा
रा.	२	८	२३	१३	-३	११	आ
के.	८	८	२३	१३	-३	११	मू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टैं. टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घं.	मि	सिंह घं.	मि	कन्या घं.	मि	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
२९	श.	१०	४७	५	१२	२१	१४	१६	१६	३४	१८	५२	२१	९	२३	२६	२५	४६	२८	५	३०	१३	७	५६	९	२३
३०	र.	१०	४३	९	१२	१७	१४	१२	१६	३०	१८	४८	२१	५	२३	२२	२५	४२	२८	१	३०	९	७	५२	९	१९
३१	चं.	१०	३९	१३	१२	१४	१४	८	१६	२६	१८	४४	२१	१	२३	१९	२५	३८	२७	५७	३०	५	७	४८	९	१५
फर	मं.	१०	३५	१७	१२	१०	१४	४	१६	२२	१८	४०	२०	५८	२३	१५	२५	३५	२७	५४	३०	१	७	४४	९	११
२	बु.	१०	३१	२१	१२	६	१४	१	१६	१८	१८	३६	२०	५४	२३	११	२५	३१	२७	५०	२९	५७	७	४०	९	०
३	बृ.	१०	२७	२६	१२	२	१३	५७	१६	१४	१८	३२	२०	५०	२३	७	२५	२७	२७	४६	२९	५३	७	३६	९	३
४	शु.	१०	२३	३०	११	५८	१३	५३	१६	१०	१८	२८	२०	४६	२३	३	२५	२३	२७	४२	२९	४९	७	३२	८	५९
५	श.	१०	१९	३४	११	५४	१३	४९	१६	६	१८	२४	२०	४२	२२	५९	२५	१९	२७	३८	२९	४५	७	२८	८	५५
६	र.	१०	१५	३८	११	५०	१३	४५	१६	२	१८	२०	२०	३८	२२	५५	२५	१५	२७	३४	२९	४१	७	२४	८	५१
७	चं.	१०	११	४२	११	४६	१३	४१	१५	५८	१८	१६	२०	३४	२२	५१	२५	११	२७	३०	२९	३७	७	२१	८	४७
८	मं.	१०	७	४६	११	४२	१३	३७	१५	५५	१८	१२	२०	३०	२२	४७	२५	७	२७	२६	२९	३३	७	१७	८	४३
९	बु.	१०	३	५१	११	३८	१३	३३	१५	५१	१८	९	२०	२६	२२	४३	२५	३	२७	२२	२९	२९	७	१३	८	४०
१०	बृ.	९	५९	५५	११	३४	१३	२९	१५	४७	१८	५	२०	२२	२२	३९	२४	५९	२७	१८	२९	२५	७	९	८	३६
११	शु.	९	५५	५९	११	३०	१३	२५	१५	४३	१८	१	२०	१८	२२	३५	२४	५५	२७	१४	२९	२२	७	५	८	३२
१२	श.	९	५२	३	११	२६	१३	२१	१५	३९	१७	५७	२०	१४	२२	३१	२४	५१	२७	१०	२९	१८	७	१	८	२८

॥ सक्रान्ति-फल ॥

शुद्ध फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३० शनिवार को सूर्योदयात् घ.५०।५५ पर धनिष्ठा नक्षत्र में सूर्य की कुंभ संक्रान्ति है, वारनाम-राक्षसी, नक्षत्र नाम-महोदरी सुखार्थिनी (सुप्त) अवस्था, मु. ३० भावों में समतारहे, संक्रांति के बाद सू. शु. मं. चं. का योग कुंभ में अशुभ है। "रवि मंगल भृगु चन्द्रमा एक साथ जब चाल। मकर कुंभ की राशि में निश्चय पड़े अकाल।" फरवरी १,२,३,८,९,१०, १५, १६,१७,२२,२३,२५ को वर्षा के साथ हवा या ओलों का योग है। [illegible]

शुद्ध फा. कृ. १४ शनौ इ.५६।१८

ग्र	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	१०	०	५	२५	६०	४०	ध.
मं.	१०	२७	५	०	४७	उ.	पू.
बु.	९	४	४३	०	७१	उ.	उ.
बृ.	७	१४	३४	०	७	उ.	अ.
शु.	१०	२४	९	०	७४	शु	पू.
श.	६	१०	४९	०	०	स्था	स्वा
रा.	२	७	५०	४३	-३	११	आ
के.	८	७	५०	४६	-३	११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ फाल्गुन अधिक शुक्ल पक्ष

दि.मा घ.	दि.मा प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि	योग	स्टैं.टा. घं.	मि	करण	स्टैं.टा घं.	मि	सू.उ. घं.	मि	मध्या. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि	चन्द्र सञ्चार रा.	घं.	मि.	गते फा.	फा.	मा	मु. र.	अं. फरवरी
२७	२५	१	र.	६०	०	—	—	ध.	३०	२०	१९	५	प.	३०	४	किं	१०	५	६	५७	२६	१८	१७	५५	कुं.	—	—	१	२	२४	२९	१३
२७	२९	१	सो.	२	४८	८	३	श.	३६	१३	२१	२५	शि.	३०	१६	बा	२०	५६	६	५६	२६	१७	१७	५६	कुं.	—	—	२	३	२५	३०	१४
२७	३३	२	मं.	६	५५	९	४२	पू.	४१	८	२३	२३	सि.	३०	१०	तै.	२२	२४	६	५६	२६	१४	१७	५७	मी.	१६	५३	३	४	२६	ब१	१५
२७	३७	३	बु.	१०	१०	१०	५९	उ.	४५	५	२४	५७	सा.	१९	४५	व.	२९	२७	६	५५	२६	११	१७	५८	मी.	—	—	४	५	२७	२	१६
२७	४१	४	बृ.	१२	२०	११	५०	रे.	४८	३	२६	६	शु.	२९	०	ब.	२४	५	६	५४	२६	७	१७	५९	मे.	२६	७	५	६	२८	३	१७
२७	४६	५	शु.	१३	२२	१२	१४	अ.	४९	५२	२६	५०	शु.	२७	५४	कौ.	[illegible]	१५	६	५३	२६	३	१७	५९	मे.	—	—	६	७	२९	४	१८
२७	५०	६	श.	१३	१४	१२	९	भ.	५०	२८	२७	३	ब्र.	२६	२४	ग.	२३	५५	६	५२	२५	५८	१८	०	मे.	—	—	७	८	३०	५	१९
२७	५४	७	र.	११	४३	११	३२	कृ.	४९	४३	२६	४४	ऐं.	२४	२८	वि	२३	२	६	५१	२५	५२	१८	१	वृ.	८	५९	८	९	[illegible]	६	२०
२७	५८	८	सो.	८	५२	१०	२३	रो.	४७	३८	२५	५३	वै.	२२	६	बा	२१	३६	६	५०	२५	४६	१८	१	वृ.	—	—	९	१०	२	७	२१
२८	२	९	मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृ.	४४	३०	२४	३७	वि	१९	१८	कौ.	१९	३७	६	४९	२५	३९	१८	२	मि	१३	११	१०	११	३	८	२२
२८	६	११	बु.	५२	२०	२७	४४	आ.	३९	१५	२२	३०	प्री.	१६	६	ब.	१७	८	६	४८	२५	३२	१८	३	मि.	—	—	११	१२	४	९	२३
२८	११	१२	बृ.	५४	४०	२४	३९	पु.	३३	५५	२०	२१	आ.	१२	३३	ब.	१४	१४	६	४७	२५	२४	१८	४	क.	१४	५५	१२	१३	५	१०	२४
२८	१५	१३	शु.	३६	२०	२१	१८	पु.	२७	३५	१७	४८	सौ.	[illegible]	[illegible]	कौ	१७	०	६	४६	२५	१५	१८	४	क.	—	—	१३	१४	६	११	२५
२८	१९	१४	श.	२७	४५	१७	५१	श्ले.	२०	५५	१५	७	शो.	२४	४२	ग.	[illegible]	[illegible]	६	४५	२५	५	१८	५	सिं	१५	७	१४	१५	७	१२	२६
२८	२४	१५	र.	१९	२०	१४	२८	म.	१४	१८	१२	२६	शु.	२०	४५	बा.	२४	५०	३	४४	२४	५६	१८	६	सिं	—	—	१५	१६	८	१३	२७

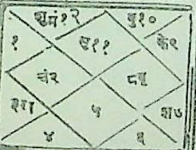
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्तर्तु, (१३से २७ फरवरी १९८३तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३७′- ०″, केतकी अहर्गण ३६०१
[Eपुष्यामृत घं. २०।२१ से जयन्ती महाद्वादशी १२ व्रत, वामनपूजन

कुंभ संक्रांति का सामान्य पुण्यकाल घं.९।४४ तक, पुरुषोत्तमासारम्भ A
चन्द्रदर्शनम् मु.१५ [Aअधिकमास सम्बन्धी कृत्यइसी मास में करनेb
मु. जमादिलउलअव्वल ५ मास प्रा. स. सिद्धियोग घं. २३।२३ से
भ.घं.२७।२७ से, वैनायकी श्रीगणेश४ व्रत, मंगल मीन में घं. २३।२१
भ.घ.११।५तक, श्रवण बुधः१२।१५, शुक्र मीन में घं.२३।०, पंचक घं.B
आर्यसमाज सप्ताह . ।प्ति, सर्वार्थ सिद्धियोग घं. २६।५० तक
सायनसूर्यमीन में घं.११।१ वसन्तर्तु प्रा., सूर्य शतभिषामें घं.१७।४१,C
भ.घं. ११।३२से घं.२३।२तक, राष्ट्रीयफाल्गुनारम्भ, शुक्रउभा में घं.D
ससि. दि.रा. अमृतसिद्धियो. घं.२५।५३से [B२७।७सेससि. घं.५६।७तक
यमघंट योगघं. २४।३० से [Cमहा(वै०) पात घं.८।३०सेघं.१३।३०तक
भ घं. ७।८ से घं. २७।४४ तक, कमला ११ एकादशी (स्मार्त)
कमला ११ व्रत (भागवत वैष्णव) स. सिद्धियोग घं. २०।२१तक, गुरुE
प्रदोषव्रत, मृत्युयोग घं.१७।४८ से [D१५।३२,मंगल उभामेंघं.३०।३२a
भ.घं.१७।५१सेघं २८।९ तक, व्रत की पूर्णिमा, बुधधनिष्ठा में घं.२५।४२
स्नान-दान की पूर्णिमा, यमघंटयो. घं.१२।२७ [aत्रिपुष्करयो. घं.११।३२n
[bधार्मिये संसर्प में नहीं, शनि वक्री। [nतक, विजया ७ सप्तमी

अधि.फा.शु.७रवी इ. ५६।३५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	१०	८	१०	२	६०	२९	श.
मं.	११	३	१८	०	४६	मा	पू.
बु.	९	१४	५७	०	८४	मा	श्र
बृ.	७	१५	२८	०	६	उ.	अ.
शु.	११	४	३	०	७४	उ.	उ.
श.	६	१०	४५	०	-१	मा	स्वा
रा.	२	७	३२	२०	-३	११	आ
के.	८	७	३२	२०	-३	११	मू.



दनिकलग्नसारणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता. फरव.	वार	मेष घं.	मि	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घ.	मि	सिंह घ.	मि	कन्या घ.	मि	तुला घं.	मि	वृश्चि. घ.	मि	धनु घं.	मि	मकर घं.	मि	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
१३	र.	९	४८	७	११	२२	१३	१७	१५	३५	१७	५३	२०	११	२२	२७	२४	४६	२७	६	२९	१४	६	२६	८	५४
																						●	३०	५३	●	
१४	सो.	९	४४	११	११	१९	१३	१३	१५	३१	१७	४९	२०	७	२२	२३	२४	४३	२७	२	२९	१०	३०	४९	८	२०
१५	मं.	९	४०	१५	११	१५	१३	९	१५	२७	१७	४५	२०	३	२२	२०	२४	३९	२६	५९	२९	६	३०	४५	८	१६
१६	बु.	९	३६	१९	११	११	१३	५	१५	२३	१७	४१	१९	५९	२२	१६	२४	३६	२६	५५	२९	२	३०	४१	८	१२
१७	बृ.	९	३२	२४	११	७	१३	२	१५	१९	१७	३७	१९	५५	२२	१२	२४	३२	२६	५१	२८	५८	३०	३७	८	८
१८	शु.	९	२८	२७	११	३	१२	५८	१५	१५	१७	३३	१९	५१	२२	८	२४	२८	२६	४७	२८	५४	३०	३३	८	४
१९	श.	९	२४	३१	१०	५९	१२	५४	१५	११	१७	२९	१९	४७	२२	४	२४	२४	२६	४३	२८	५०	३०	२९	८	०
२०	र.	९	२०	३६	१०	५५	१२	५०	१५	७	१७	२५	१९	४३	२२	०	२४	२०	२६	३९	२८	४६	३०	२६	७	५६
२१	सो.	९	१६	४०	१०	५१	१२	४६	१५	३	१७	२१	१९	३९	२१	५६	२४	१६	२६	३५	२८	४२	३०	२२	७	५२
२२	मं.	९	१२	४४	१०	४७	१२	४२	१४	५९	१७	१७	१९	३५	२१	५२	२४	१२	२६	३१	२८	३८	३०	१८	७	४९
२३	बु.	९	८	४८	१०	४३	१२	३८	१४	५६	१७	१३	१९	३१	२१	४८	२४	८	२६	२७	२८	३४	३०	१४	७	४५
२४	बृ.	९	४	५२	१०	३९	१२	३४	१४	५२	१७	९	१९	२७	२१	४४	२४	४	२६	२३	२८	३०	३०	१०	७	४१
२५	शु.	९	०	५६	१०	३५	१२	३०	१४	४८	१७	५	१९	२३	२१	४०	२४	०	२६	१९	२८	२६	३०	६	७	३७
२६	श.	८	५७	०	१०	३१	१२	२६	१४	[illegible]	१७	१	१९	[illegible]	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	र.	८	५३	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

● १३ता॰ रविवार को कुंभ लग्नोदय दो बार होगा।

॥ सङ्क्रान्ति-फल ॥

अधिमास सम्बन्धी समस्त अपूप-दानादि कृत्य इसी मास में किये जायेंगे। वास्तव में क्षयमासोत्तर-वर्ती अधिमास ही "वास्तविक अधिमास" होता है। क्योंकि इसके बाद ही 'मासाधिशेष' बढ़ने लगता है और २८ से लेकर ३५ मास के बाद (मध्यम मानेन ३२ मास) यह अधिशेष एक चान्द्रमास के तुल्य हो जाता है तो 'अधिक मास' की प्राप्ति होती है। उससे पूर्व नहीं। सम्वत् २०३७ में ज्येष्ठ अधिमास था तदुपरान्त ३३ मास बाद 'फाल्गुन' अधिक होना शास्त्र सम्मत है। आश्विन नहीं॥

अधि.फा.शु.१५रवीइ.५६।५३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि	गति		न.
सू.	१०	१५	१२	२८	६०	१४	श.
मं.	११	८	४२	०	४६	मा	उ.
बु.	९	२५	४	०	९२	मा	ध.
बृ.	७	१६	७	०	५	उ.	अ.
शु.	११	१२	४१	०	७३	उ.	उ.
श.	६	१०	३९	०	-२	व.	स्वा
रा.	२	९	१०	४	-३	११	आ
के.	८	७	१०	४	-३	११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ फाल्गुनाधिक कृष्ण पक्षः | भा.प्र.स. नैनीताल | चन्द्र संचार | दिनांक क्रम

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं.	मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	चन्द्र रा.	घं.	मि.	गते		रा.	मु.	अं.
२८	२८	१	चं.	११	३०	२१	१९	पू.	८	१८	१०	२	सु.	१७	५	तै.	२१	५३	६	४६	१२	२४	४५	१८	६	कं.	१५	३३	१६	१७	९	१४	२८
२८	३२	२	मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध.	१३	४६	व.	१९	२५	६	४२		२४	३४	१८	९	कं.			१७	१८	१०	१५	मा
२८	३७	४	बु.	५५	५०	२९	१	चि	५७	५५	२९	५१	गं.	१०	५८	व.	१७	३७	६	४१		२४	२८	१८	८	तु.	१८	१३	१८	१९	११	१६	२
२८	४१	५	बृ.	५४	२५	२८	२६	स्वा	५८	८	२९	५९	वृ.	८	४६	कौ	१६	३७	६	४०		२४	१०	१८	८	तु.			१९	२०	१२	१७	३
२८	४५	६	शु.	५५	१५	२८	४५	वि	६०	०	—	—	ध्रु.	[illegible]	[illegible]	ग.	१६	२१	६	३९		२३	५८	१८	९	वृ.	२४	४०	२०	२१	१३	१८	४
२८	५०	७	श.	५८	१०	२९	५४	वि	०	४३	६	५५	ह.	३०	१४	वि	१७	१३	६	३८		२३	४५	१८	१०	वृ.			२१	२२	१४	१९	५
२८	५४	८	र.	६०	०	—	—	अ.	५	१०	८	४१	व.	३०	३६	बा	१९	४६	६	३७		२३	३१	१८	१०	वृ.			२२	२३	१५	२०	६
२८	५७	८	चं.	२	५८	७	४९	ज्ये	११	२०	११	८	सि	—	—	तै.	२०	५६	६	३६		२३	१७	१८	११	ध.	११	८	२३	२४	१६	२१	७
२९	३	९	मं.	९	०	१०	११	मू.	१८	४३	१४	४	सि	७	२२	व.	२३	३०	६	३५		२३	३	१८	१२	ध.			२४	२५	१७	२२	८
२९	७	१०	बु.	१५	४८	१२	५२	पू.	२६	४०	१७	१३	व्य	८	२१	व.	२६	१४	६	३३		२२	४८	१८	१२	म.	२४	०	२५	२६	१८	२३	९
२९	१२	११	बृ.	२२	३५	१५	३४	उ.	३४	३३	२०	२१	व.	९	२४	कौ	२८	५१	६	३२		२२	३३	१८	१३	म.			२६	२७	१९	२४	१०
२९	१६	१२	शु.	२८	५५	१८	५	श्र	४१	५२	२३	१६	प.	१०	२०	तै.	१८	५	६	३१		२२	१८	१८	१३	म.			२७	२८	२०	२५	११
२९	२०	१३	श.	३४	२३	२०	१५	ध.	४८	३८	२५	५१	शि	११	२	ग.	७	१३	६	३०		२२	२	१८	१४	कुं.	१२	३५	२८	२९	२१	२६	१२
२९	२५	१४	र.	३८	४३	२१	५८	श.	५३	४८	२८	०	सि	११	२९	वि	९	१०	६	२९		२१	४६	१८	१५	कुं.			२९	३०	२२	२७	१३
२९	२९	३०	चं.	४१	५३	२३	१३	पू.	५८	३	२९	४१	सा	११	२९	च.	१०	३९	६	२८	१२	२१	२९	१८	१५	मी.	२३	१६	चै.१	चै.१	२३	२८	१४

उत्तरायण द. गोल. वसन्ततुः (२८फरवरी से १४ मार्च १९८३ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३७'-२", केतकी : हर्गण ३३१६

[Pवी ३०, पुरुषोत्तममाससमाप्ति. मीन (खर) मास, रम्भ

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद निर्वाण दिवस [Aयोग घं. ८।१ तक

भ.घं. १९।२५ से घ.३०।२६ तक, मार्च २ मास प्रारम्भ त्रिपुष्करA

संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, महा (व्य०) पात स्पर्श घं. २६।२०

बुध कुम्भ में घं.१०।४७, शुक्र रेवती में घं.११।२४, महा (व्य.) पातB

भ.घं. २८।४५ से, पूभा मे सूर्य घं.२४।१९ [Bमोक्ष घं.६।४७

भ.घं. १७।१३ तक, त्रिपुष्कर योग घं. ६।५५ तक,

कालाष्टमी ८ व्रत मृत्यु योग घं. ८।४१ तक

बुध शतभिषा में घं. १३।५८, ज्येष्ठा १ गुरु घं. २१।२९,

भ.घं. २३।३० से।

भ.घं. १२।५२ तक, मृग ४ में राहु मूल २ में केतु घं. १६।२१,

कमला ११ एकादशी व्रत, मंगल रेवती में घं. १५।१५।

बुध अस्त पूर्व में ससियो घं. २३।१६ तक।

भ.घं. २०।१५ से, प्रदोष व्रत (शनि प्रदोष) मास शिवरात्रि, पञ्चकC

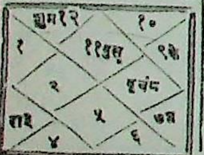
भ.घं. ९।१० तक। [Cप्रारम्भ घ. १२।३५ से

सूर्य मीन में घं. २४।१५, संक्रान्ति पुण्यकाल घं.१७।५९ से सूर्यास्तD

[Dतक संकल्पार्थं वसन्त ऋतु प्रा. अश्विनी मेषेशुक्र घं. ९।६ सोम-P

अधि.फा.कृ.८रवोइ.५७।१०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	१०	२२	१२	३१	६०	२	पू.
मं.	११	१४	४	०	४६	मा	उ.
बु.	१०	९	५	०	९९	मा	ध.
बृ.	७	१६	३८	०	२	व.	अ.
शु.	११	२१	१६	०	७३	शु.	रे.
श.	६	१०	२३	०	--२	व.	स्वा
रा.	२	६	४९	४८	--३	११	आ
के.	८	६	४९	४८	-३	११	मू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल में निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै टा.)

ता.	वार	मेष घं.	मि	से.	वृष घं.	मि	मिथुन घं.	मि	कर्क घं.	मि	सिंह घं.	मि	कन्या घं.	मि	तुला घं.	मि	वृश्चि. घं.	मि	धनु घं.	मि	मकर घं.	मि	कुम्भ घं.	मि	मीन घं.	मि
२८	चं.	८	४९	८	१०	२३	१२	१८	१४	३६	१६	५४	१९	१२	२१	२८	२३	४८	२६	७	२८	१५	२९	५४	७	२५
मा	मं.	८	४५	१२	१०	२०	१२	१४	१४	३२	१६	५०	१९	८	२१	२४	२३	४४	२६	३	२८	११	२९	५०	७	२१
२	बु.	८	४१	१६	१०	१६	१२	१०	१४	२८	१६	४६	१९	४	२१	२१	२३	४१	२५	५९	२८	७	२९	४६	७	१७
३	बृ.	८	३७	२०	१०	१२	१२	६	१४	२४	१६	४२	१९	०	२१	१७	२३	३७	२५	५६	२८	३	२९	४२	७	१३
४	शु.	८	३३	२४	१०	८	१२	३	१४	२०	१६	३८	१८	५६	२१	१३	२३	३३	२५	५२	२७	५९	२९	३८	७	९
५	श.	८	२९	२८	१०	४	११	५९	१४	१६	१६	३४	१८	५२	२१	९	२३	२९	२५	४८	२७	५५	२९	३४	७	५
६	र.	८	२५	३२	१०	०	११	५५	१४	१२	१६	३०	१८	४८	२१	५	२३	२५	२५	४४	२७	५१	२९	३०	७	१
७	चं.	८	२१	३६	९	५६	११	५१	१४	८	१६	२६	१८	४४	२१	१	२३	२१	२५	४०	२७	४७	२९	२७	६	५७
८	मं.	८	१७	४१	९	५२	११	४७	१४	४	१६	२२	१८	४०	२०	५७	२३	१७	२५	३६	२७	४३	२९	२३	६	५३
९	बु.	८	१३	४५	९	४८	११	४३	१४	०	१६	१८	१८	३६	२०	५३	२३	१३	२५	३२	२७	३९	२९	१९	६	४९
१०	बृ.	८	९	४९	९	४४	११	३९	१३	५७	१६	१४	१८	३२	२०	४९	२३	९	२५	२८	२७	३५	२९	१५	६	४५
११	शु.	८	५	५३	९	४०	११	३५	१३	५३	१६	११	१८	२८	२०	४५	२३	५	२५	२४	२७	३१	२९	११	६	४२
१२	श.	८	१	५७	९	३६	११	३१	१३	४९	१६	७	१८	२४	२०	४१	२३	१	२५	२०	२७	२७	२९	७	६	३७
१३	र.	७	५८	१	९	३२	११	२७	१३	४५	१६	३	१८	२०	२०	३७	२२	५७	२५	१६	२७	२४	२९	३	६	३४
१४	चं.	७	५४	५	९	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	⑥ ३०	२६

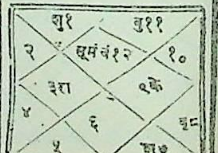
⑥ १४ ता. सोमवार को मीन लग्नोदय दो बार होगा

॥ संक्रान्ति-फल ॥

फाल्गुनाधिक कृष्ण ३० चन्द्रवार को सूर्योदयात् घ. ४४।२८ पर पूभा. नक्षत्र में सूर्य की मीन संक्रान्ति है। वारनाम-ध्वांक्षी (वै. शु.) नक्षत्रनाम-घोरा, मु. ३० प्रवाजिका (ऊभी, अवस्था, धान्यादि में समता रहेगी, मीन-मेष की संक्रांतियों के बीच में दोनों अष्टमियाँ मंगलवारी होने से धान्य संग्रह का योग बन रहा है। मार्च १, २, ७, ८, ९, १४, १५, १६, १७, २१, २२ २३, २८ एवं अप्रैल ३, ४, ५, ११, १२, १३ को हल्की वर्षा [illegible] ओलावृष्टि सम्भव है।

अधि.फा.कृ.३०चंद्रेइ.५७।३३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	११	०	१३	४	५९	४८	पू.
मं.	११	२०	१०	०	४६	मा	पू.
बु.	१०	१९	४८	०	१०८	मा	श.
बृ.	९	१७	३	०	२	उ.	ज्ये
शु.	०	१	२	०	७३	शु.	अ.
श.	६	१०	२	०	-३	व.	स्वा
रा.	२	६	२२	२२	-३	११	मृ.
के.	८	६	२२	२२	-३	११	मू.



CC-0: Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत् २०३९ शाके १९०४ शुद्ध फाल्गुन शुक्ल पक्ष																				भा.प्र.स. नैनीताल						चन्द्र			दिनांक क्रम				
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या घं.	मि.सं.	सू.अ. घं.	मि.	संचार रा.	घं.	मि.	मार्च	सौर	रा.	मु.	अं.
२९	३३	१	मं.	४३	५५	२४	१	उ.	६०	०	—	—	शु.	११	११	किं	११	४१	६	२७	[illegible]	१२	१८	१६	मी.			२	२	२४	२९	१५
२९	३८	२	बु.	४४	५५	२४	२३	उ.	१	२०	६	५७	शु.	१०	३२	बा.	१२	१५	६	२५	२०	५५	१८	१६	मी			३	३	२५	३०	१६
२९	४३	३	बृ.	४४	५५	२४	२२	रे.	३	३०	७	४८	ब्र.	९	३४	तै.	१२	२५	६	२४	२०	३८	१८	१९	मे.	७	४८	४	४	२६	ज१	१७
२९	४७	४	शु.	४४	०	२३	५९	अ.	४	४८	८	१८	ऐं.	८	१९	व.	१२	१३	६	२३	२०	२१	१८	१८	मे.			५	५	२७	२	१८
२९	५१	५	श.	४२	१३	२३	१५	भ	५	१२	८	२७	वै.	[illegible]	[illegible]	व	११	५०	६	२२	२०	३	१८	१८	वृ.	१४	२३	६	६	२८	३	१९
२९	५६	६	र.	३९	३५	२२	११	कृ.	४	४५	८	१५	प्री	२६	५५	कौ	१०	४६	६	२१	१९	४६	१८	१९	वृ.			७	७	२९	४	२०
३०	०	७	चं.	३६	३८	२०	४६	रो	३	३२	७	४७	आ	२४	३४	ग.	९	३१	६	१९	१९	२८	१८	१९	मि.	१९	१८	८	८	३०	५	२१
३०	५	८	मं.	३१	४५	१९	०	मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौ	२१	५७	वि	[illegible]	[illegible]	६	१८	१९	१०	१८	२०	मि.			९	९	चै१	६	२२
३०	९	९	बु.	२६	३०	१६	५३	पु.	१४	३५	२८	७	शो	१९	३	तै.	२७	४२	६	१७	१८	५२	१८	२१	कं.	२२	३०	१०	१०	२	७	२३
३०	१३	१०	बृ.	२०	३३	१४	२९	पु.	१०	८	२६	१९	अ.	१५	५५	ब.	२५	११	६	१६	१८	३४	१८	२१	कं.			११	११	३	८	२४
३०	१८	११	शु.	१३	२४	११	४९	श्ले.	५	१०	२४	१९	सु.	१२	३५	ब.	२२	२६	६	१५	१८	१६	१८	२२	सिं.	२४	१९	१२	१२	४	९	२५
३०	२२	१२	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म.	४०	०	२२	१३	धृ.	[illegible]	[illegible]	कौ	१९	३५	६	१३	१७	५८	१८	२२	सिं.			१३	१३	५	१०	२६
३०	२६	१४	र.	५३	५	२७	२६	पू.	३४	५८	२०	११	गं.	२६	१६	ग.	१६	४६	६	१२	१७	४०	१८	२३	कं.	२५	४३	१४	१४	६	११	२७
३०	३१	१५	चं.	४६	५५	२४	५७	उ.	३०	२५	१८	२१	वृ.	२३	४	वि	१४	९	६	११	१७	२२	१८	२४	कं.			१५	१५	७	१२	२८

उत्तरायण, दक्षिणगोल वसन्तर्तु (१५ से २८ मार्च १९८३ तक)

पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°३७ ३" कैतकी अहर्गण ३६३१

[aतक, दुर्गाष्टमी८, अन्नपूर्णाष्टमी [Gहोली रंगधारण (मता.)

सिद्धियो. दिनरात, बुधपूजा म घ ८।९ बकी वाले स्वाती१ में घ.२१।२९A
चन्द्रदर्शनमु. ३०, फुलरिया २, श्रीरामकृष्ण परमहंस जय., महा(वै.)पातB
मु. जमादिउलआखर ६ मास प्रा. मसियो घं. ७।४८ तक वीर ३तृतीया,C
म.घं.१२।१३सेघं २३।५९ तक, वैनायकी श्रीगणेशव्रत., सूर्य उमा में घं.D
[Aसंक्रांति पुण्य घं.६।३९तक [Bघं.१३।४७से१९।५४तक [Cघं.लेखरामI
बुध मीन में घं.१८।४८ [Iवीर जय., पञ्चक समा. घं ७।४८
भ.घं.२०।४६से, असियो घं.७।४४से, सायन सूर्य मेष में घं.१०।१ वसन्तE
भ.घं.७।५५तक, उत्तरायां बुध घं. ११।५४, होलाष्ट प्रा., राष्ट्रीय चैत्र,शकेF
[D८।४१, लखियो घं.८।१८तक [Eसम्पात सूर्य उत्तर गोलमें, देवों कीह
भ.घं.२५।११से, गुरुपुष्यामृतयो. घं.२६।१९तक,घं.१४।२९ बजे के बादG
भ घं.११।४९तक,आमलकी११एकादशीव्र. (सबका)रंगभरी११एकादशी,N
गोविन्द-द्वादशी १२व्रत, शनि प्रदोष व्र. [हराशि व देवों का दिनोदय,n
भ.घं.२०।२६से,बुध रेवती मेंघं.२८।३०,मंगल अस्त, मंगल मेषमें घं३०।१]
भ.घं.१४।१९तक, व पर्वकी उफाकुता फाल्गुनी १५पूर्णिमा,व्रीषू.मेंहोलिकाH
[Hदहन हुताशनी १५,महाप्रभुचैतन्य जय ,मन्वादि१५ पुष्पकी, महा(व्य.)b
[aमहा विषुव संक्रांति [F१९०५ प्रा. यमघंटयो घं.६।०२से२९।३९a

बुध फा.शु. ७चंद्रेष्ट.५७।५५						
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति	न.
सू.	११	७	१०	५७	५९ ३३	उ.
मं.	११	२५	२८	०	४५ मा	रे.
बु.	११	२	४९	०	११६ आ	पू.
गु.	७	२७	१५	०	१ उ.	ज्ये.
शु.	०	९	३२	०	७२ उ.	अ.
श.	६	९	४०	०	-४ व.	स्वा.
रा.	२	६	०	६	-३ ११	मू.
के.	८	६	०	६	-३ ११	मू.



दैनिक लग्न सारणी (नैनीताल में निरयण लग्नों का आरम्भ काल भा.प्र. समय में)

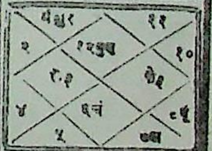
ता.	वार	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चिक घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
१५	मं.	७	५०	९	९	२५	११	१९	१३	३७	१५	५५	१८	१३	२०	२९	२२	४९	२५	८	२७	१६	२८	५५	३०	२३
१६	बु.	७	४६	१४	९	२१	११	१५	१३	३३	१५	५१	१८	९	२०	२६	२२	४५	२५	४	२७	१२	२८	५१	३०	१८
१७	बृ.	७	४२	१८	९	१७	११	११	१३	२९	१५	४७	१८	५	२०	२२	२२	४२	२५	०	२७	८	२८	४७	३०	१४
१८	शु.	७	३८	२२	९	१३	११	८	१३	२५	१५	४३	१८	१	२०	१८	२२	३८	२४	५७	२७	४	२८	४३	३०	१०
१९	श.	७	३४	२६	९	९	११	४	१३	२१	१५	३९	१७	५७	२०	१४	२२	३४	२४	५३	२७	०	२८	३९	३०	६
२०	र.	७	३०	३०	९	५	११	०	१३	१७	१५	३५	१७	५३	२०	१०	२२	३०	२४	४९	२६	५६	२८	३५	३०	२
२१	चं.	७	२६	३४	९	१	१०	५६	१३	१३	१५	३१	१७	४९	२०	६	२२	२६	२४	४	२६	५२	२८	३१	२९	५८
२२	मं.	७	२२	३९	८	५७	१०	५२	१३	९	१५	२७	१७	४५	२०	२	२२	२२	२४	४१	२६	४८	२८	२८	२९	५४
२३	बु.	७	१८	४३	८	५३	१०	४८	१३	५	१५	२३	१७	४१	१९	५८	२२	१८	२४	३९	२६	४४	२८	२४	२९	५१
२४	बृ.	७	१४	४७	८	४९	१०	४४	१३	१	१५	१९	१७	३७	१९	५४	२२	१४	२४	३३	२६	४०	२८	२०	२९	४७
२५	शु.	७	१०	५१	८	४५	१०	४०	१२	५८	१५	१६	१७	३३	१९	५०	२२	१०	२४	२९	२६	३६	२८	१६	२९	४३
२६	श.	७	६	५५	८	४१	१०	३६	१२	५४	१५	१२	१७	२९	१९	४६	२२	६	२४	२५	२६	३२	२८	१२	२९	३९
२७	र.	७	२	५९	८	३८	१०	३२	१२	५०	१५	८	१७	२५	१९	४२	२२	२	२४	२१	२६	२९	२८	८	२९	३५
२८	चं.	६	५९	४	८	३४	१०	२८	१२	४६	१५	४	१७	२२	१९	३८	२१	५८	२४	१७	२६	२५	२८	४	२९	३१

॥ संक्रान्ति-फल ॥

फाल्गुन कृष्ण १४ जब प्रदोषोपरान्त निशीथ में व्याप्त रहती है उस दिन महाशिवरात्रि का व्रत जागरण एवं पूजन होता है। काशी में इस दिन एक दिवसीय पंचक्रोशी यात्रा करते हैं। विश्वनाथ मन्दिर में चारो यामों की शास्त्रोक्त पूजा होती है। आर्यसमाज का बोधोत्सव सप्ताहारम्भ भी आज से ही होता है।

[Nश्रीविश्वेश्वरश्रृंगारण श्रीकाशीविश्वनाथ श्रृंगारदिवस शुक्रभरणी में घं.३।१९, मृत्युयोग घं. २४।१९ तक [bवेपात घं.१७।१५घं.२१।२१ ... से

बुध फा.शु.१५चंद्रेष्ट.८५।१५						
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति	न.
सू.	११	१४	६	५९	५९ १८	उ.
मं.	०	०	४४	०	४५ आ	भ.
बु.	११	१६	४५	०	१२२ मा	रे.
गु.	७	१७	१८	०	० उ.	ज्ये.
शु.	०	१७	५८	०	७२ उ.	अ.
श.	६	९	१४	०	-४ व.	स्वा.
रा.	२	५	३७	५१	-३ ११	मृ.
के.	८	५	३७	५१	-३ ११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीविक्रम संवत २०३९ शाके १९०४ चैत्र कृष्ण पक्ष																			मा.प्र.स. नैनीताल						चन्द्र सञ्चार			दिनांक क्रम				
दि.मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	स्टैं.टा. घं.	मि.	सू.उ. घं.	मि.	मध्या. घं. मि.	से.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	घं.	मि.	गते	सौर	रा.	मु.	अं.
२०	३५	१	मं.	४१	१८	२२	५३	ह.	२६	४८	१६	५३	ध्रु.	२०	१३	बा.	११	५१	६	१०		४	१८	२४	तु.	२८	२१	१६	१६	८	१३	२९
२०	४०	२	बु.	३८	८	२१	२४	चि.	२४	३०	१५	५७	व्या.	१७	४८	तै.	१०	३	६	९	१६	४५	१८	२५	तु.			१७	१७	९	१४	३०
२०	४४	३	गु.	३६	१०	२०	३६	स्वा.	२३	५०	१५	४०	ह.	१५	५६	व.	८	५८	६	८	१६	२७	१८	२५	तु.			१८	१८	१०	१५	३१
२०	४८	४	शु.	३६	५	२०	३३	वि.	२५	०	१६	७	व.	१४	३९	ब.	८	३४	६	७	१६	९	१८	२६	वृ.	९	५९	१९	१९	११	१६	अ'
२०	५३	५	श.	३८	५	२१	१९	अ.	२८	१३	१७	२२	सि.	१४	१	कौ.	८	५०	६	५	१५	५२	१८	२६	वृ.			२०	२०	१२	१७	२
२०	५७	६	र.	४१	५३	२२	४९	ज्ये.	३३	१०	१९	२०	व्य.	१३	५८	ग.	९	०	६	४	१५	३४	१८	२७	ध.	१९	१०	२१	२१	१३	१८	३
२१	२	७	चं.	४७	१३	२४	५६	मू.	३९	३८	२१	५४	व.	१४	२५	वि.	११	४९	६	३	१५	१६	१८	२८	ध.			२२	२२	१४	१९	४
२१	६	८	मं.	५३	२८	२७	२५	पू.	४७	५	२४	५२	प.	१५	१२	बा.	१४	८	६	२	१४	५९	१८	२८	ध.			२३	२३	१५	२०	५
२१	१०	९	बु.	६०	०	—	—	उ.	५४	४८	२७	[illegible]	शि.	१६	१३	तै.	१६	४३	६	१	१४	४१	१८	२९	म.	७	३८	२४	२४	१६	२१	६
२१	१४	९	गु.	०	३	६	१	श्र.	६०	०	—	—	सि.	१७	११	व.	१९	१६	६	०	१४	२४	१८	२९	म.			२५	२५	१७	२२	७
२१	१९	१०	शु.	६	१३	८	२८	श्र.	२	३८	६	५६	सा.	१८	०	ब.	२१	३४	५	५९	१४	७	१८	३०	कु.	२०	१६	२६	२६	१८	२३	८
२१	२३	११	श.	११	३५	१०	३४	ध.	९	३	९	३४	शु.	१८	२९	कौ.	२३	२५	५	५७	१३	५०	१८	३०	कु.			२७	२७	१९	२४	९
२१	२७	१२	र.	१५	३५	१२	९	श.	१४	३०	११	४७	शु.	१८	३४	ग.	२४	४४	५	५६	१३	३४	१८	३१	कु.			२८	२८	२०	२५	१०
२१	३१	१३	चं.	१८	३८	१३	१०	पू.	१८	३५	१३	२१	ब्र.	१८	११	वि.	२५	२७	५	५५	१३	१८	१८	३२	मी.	६	५०	२९	२९	२१	२६	११
२१	३५	१४	मं.	१९	१३	१३	३५	उ.	२१	१३	१४	२२	ऐं.	१७	२२	व.	२५	३६	५	५४	१३	२	१८	३२	मी.			३०	३०	२२	२७	१२
२१	४०	३०	बु.	१८	५८	१३	२८	रे.	२२	३३	१४	५४	वै.	१६	९	कि.	२५	१४	५	५३		४६	१८	३३	मे.	१४	५४	३१	३१	२३	२८	१३

उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्तर्तुः, (२९ मार्च से १३ अप्रैल १९८३ तक)

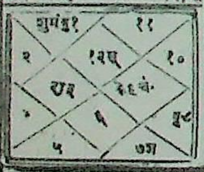
पक्षारम्भ का स्फुट अयनांश २३°-३७′- ४″, फेतकी अहर्गण ३६४५

[gघं. २४।२५ से घं. २९।१९ तक। [Hमें घं. १७।८, रगतेरस

बसन्तोत्सव फाग छरड़ी, धूलिवन्दन (घुरड्डी), साभ्यंगस्नान वसन्तो-A
सन्त तुकाराम जयन्ती, दम्पत्ति टीका [Aत्सव, कामामहोत्सव, द्विपुष्करB
भ.घं. ८।५८ से घं. २०।३६ तक, संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, कल्पादिB
अप्रैल ४ मास प्रा., गुडफ्राईडे, सर्वार्थ सिद्धियोग घं. १६।७ से
श्री रंगपञ्चमी ५, बसन्तोत्सवे देशाचारे [Eयो. घं.२२।५३ से
भ.घं. २२।४९ से, एकनाथषष्ठी ६, सिद्धि यो. ससियो घं. १९।२० से
भ.घं. ११।४९ तक, शीतलासप्तमी, शीतला पूजन, मेषे बुधः घं.१६।५९
कालाष्टमी ८ शीतलाष्टमी ८, पर्युषिताऽन्नभोजन विहित, शुक्रकृत्तिका मेंc
[B३, सूर्यरेवतीमेंघं.१९।१९ नवीनमतेन शिवाजी जयन्ती,[c घं.१२।९
भ. घं. १९।१६ से [Fपञ्चकारम्भ घं. २०।१६से [eविहित है,(ध.सि.)
भ.घं. ८।२८ तक, वृषे शुक्र घं. ७।२९ बुधोदय पश्चिमे, दशामाताव्रत,F
पापमोचनी ११ एकादशी व्रत [aचांद्र सम्वत्सर समाप्त, हरिःॐतत्सत्
प्रदोष व्रत, त्रिपुष्कर घं. ११।४४ से घं. १२।९ तक, महा.(वै०) पातg
भ.घं. १३।१० से घं. २५।२७ तक। मासशिवरात्रिव्रत, बुध भरणीH
सिद्धि योग घं. १४।२३ तक, भौमयुता १४ में शिवसान्निध्य में स्नानe
मन्वादि३०, पर्वान्तगी३०, देवपितृकार्येऽमा पञ्चक समाप्त घं.१४।५९४a

चैत्र कृष्ण८भौमे इ.५८।३८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	११	२२	०	२६	५९	३	रे.
मं.	०	६	४२	०	४५	मा	अ.
बु.	०	३	२	०	१११	मा	अ.
गु.	७	१७	११	०	-२	व.	ज्ये.
शु.	०	२७	३२	०	७१	उ.	कृ.
श.	६	८	४१	०	-४	व.	स्वा.
रा.	२	५	१२	२४	-३	११	[illegible]
के.	८	५	१२	२४	-३	११	मू.



दैनिकलग्नसारिणी (नैनीताल कौं निरयण द्वादश लग्नों का प्रवेशकाल भा. स्टै. टा.)

ता.	वा.	मेष घं.	मि.	से.	वृष घं.	मि.	मिथुन घं.	मि.	कर्क घं.	मि.	सिंह घं.	मि.	कन्या घं.	मि.	तुला घं.	मि.	वृश्चि. घं.	मि.	धनु घं.	मि.	मकर घं.	मि.	कुम्भ घं.	मि.	मीन घं.	मि.
२९	मं.	६	५५	८	८	३०	१०	२४	१२	४२	१५	०	१७	१८	१९	३४	२१	५४	२४	१३	२६	२१	२८	०	२९	२७
३०	बु.	६	५१	१२	८	२६	१०	२०	१२	३८	१४	५६	१७	१४	१९	३०	२१	५०	२४	९	२६	१७	२७	५६	२९	२३
३१	गु.	६	४७	१६	८	२२	१०	१६	१२	३४	१४	५२	१७	१०	१९	२६	२१	४६	२४	५	२६	१३	२७	५२	२९	१९
अ१	शु.	६	४३	२०	८	१८	१०	१२	१२	३०	१४	४८	१७	६	१९	२३	२१	४२	२४	१	२६	९	२७	४८	२९	१५
२	श.	६	३९	२४	८	१४	१०	९	१२	२६	१४	४४	१७	२	१९	१९	२१	३९	२३	५८	२६	५	२७	४४	२९	११
३	र.	६	३५	२८	८	१०	१०	५	१२	२२	१४	४०	१६	५८	१९	१५	२१	३५	२३	५४	२६	१	२७	४०	२९	७
४	चं.	६	३१	३२	८	६	१०	१	१२	१८	१४	३६	१६	५४	१९	११	२१	३१	२३	५०	२५	५७	२७	३६	२९	३
५	मं.	६	२७	३६	८	२	९	५७	१२	१४	१४	३२	१६	५०	१९	७	२१	२६	२३	४६	२५	५३	२७	३२	२८	५९
६	बु.	६	२३	४१	७	५८	९	५३	१२	१०	१४	२८	१६	४६	१९	३	२१	२३	२३	४२	२५	४९	२७	२८	२८	५५
७	गु.	६	१९	४५	७	५४	९	४९	१२	६	१४	२४	१६	४२	१८	५९	२१	१९	२३	३८	२५	४५	२७	२५	२८	५१
८	शु.	६	१५	४९	७	५०	९	४५	१२	२	१४	२०	१६	३८	१८	५५	२१	१५	२३	३४	२५	४१	२७	२१	२८	४७
९	श.	६	११	५३	७	४६	९	४१	११	५८	१४	१६	१६	३४	१८	५१	२१	११	२३	३०	२५	३७	२७	१७	२८	४४
१०	र.	६	७	५७	७	४२	९	३७	११	५५	१४	१२	१६	३०	१८	४९	२१	७	२३	२६	२५	३३	२७	१३	२८	४०
११	चं.	६	४	१	७	३८	९	३३	११	५१	१४	९	१६	२६	१८	४३	२१	३	२३	२२	२५	३०	२७	९	२८	३६
१२	मं.	६	०	५	७	३४	९	२९	११	४७	१४	५	१६	२३	१८	३८	२०	५९	२३	१८	२५	२६	२७	५	२८	३२
१३	बु.	५	५६	९	७	३०	९	२५	११	४३	१४	१	१६	१८	१८	३५	२०	५५	२३	१४	२५	२२	२७	१	२८	२८

॥ संक्रान्ति-फल ॥

प्रदोष व्यापिनी फा.१५ को भद्रा बचाकर होलिका दहन होता है। इसदिन होली के धुयें से पवन परीक्षा की जाती है। पूर्व, उत्तर एवं ईशान की हवा अच्छी होती है। चैत्र कृ. १ को धूलिवन्दन (छरड़ी)का त्योहार होता है। इस दिन का स्नान कपड़ों सहित करना चाहिए। द्वितीया को दम्पत्ति टीका का उत्सव कुमाऊँ में बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं। देव-गुरु-माता-पिता चरण-कमल सिर नाय। सम्वत यह पूरण कियो गणपति-गिरा मनाय ॥ ॐ ॥

चैत्र कृष्ण३०बुधे इ.५९।०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गति		न.
सू.	११	२९	५१	५७	५८	४८	रे.
मं.	०	१२	३७	०	४४	मा	अ.
बु.	०	१७	३१	०	९२	मा	भ.
गु.	७	१६	५१	०	-३	व.	ज्ये.
शु.	१	७	०	०	७१	उ.	कृ.
श.	६	८	६	०	-५	व.	स्वा.
रा.	२	४	४६	५८	-३	११	पू.
के.	८	४	४६	५८	-३	११	मू.



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टै०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१ अप्रैल,८२ को अयनांश २३°।३६'।१५", वैंकटेश ६°।२'।२६") (१६ अप्रैल,८२ को अयनांश२३°।३६'।१७",वैंकटेश६°।१'।५६")

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क	शुक्र रा अं. क.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क	साम्पातिक काल ०बजे घ.मि.से.	चन्द्र क्रान्ति	चन्द्र शर
मार्च १९८२	२६	११ ११ २४ १	+१ ५९	११ १८ ४९ ३६	५ १८ ५०	१० २५ ५२	६ १५ २३	९ २५ ९	५ २६ २३	२ २५ ०८ ११	७ १० ५५	८ ०३ २६	१२ ११ ३६	०+ १९	४ − ५९
	२७	१२ २३ २७	२ २३	० ३ ० ५९	१८ २८	१० २७ ३७	१५ १८	२६ ६	२६ १९	२५ ०५ ००	१० ५४	०३ २७	१२ १५ ३२	५ ३७	५ ०
	२८	१३ २२ ५१	२ ४६	० १७ २१ २९	१८ ५	१० २९ २२	१५ १२	२७ २	२६ १४	२५ ०१ ४९	१० ५३	०३ २७	१२ १९ २९	१० ४१	४ ३९
	२९	१४ २२ १२	३ १०	१ १ ४५ १५	१७ ४२	११ १ ९	१५ ६	२८ ०	२६ १०	२४ ५८ ३८	१० ५२	०३ २७	१२ २३ २६	१५ ११	४ ३
	३०	१५ २१ ३१	३ ३३	१ १६ ७ १०	१७ १९	२ ५८	१५ १	२८ ५७	२६ ०५	२४ ५५ २७	१० ५१	०३ २७	१२ २७ २२	१८ ४६	३ १०
	३१	११ १६ २० ४८	३ ५६	२ ० २३ २६	१६ ५६	४ ४७	१४ ५५	९ २९ ५६	२६ ००	२ २४ ५२ १७	१० ५०	०३ २७	१२ ३१ १९	२१ १२	२ − ६
अप्रैल १९८२	१	१७ २० ३	४ १९	२ १४ ३१ ४९	१६ ३३	६ ३८	६ १४ ४९	१० ०० ५४	५ २५ ५६	२४ ४९ ०६	७ १० ४९	०३ २६	१२ ३५ १५	२२ १६	०+ ५३
	२	१८ १९ १५	४ ४३	२ २८ ३१ १९	१६ ९	८ ३१	१४ ४३	१ ५३	२५ ५१	२४ ४५ ५५	१० ४७	८ ०३ २६	१२ ३९ १२	२१ ५६	० १९
	३	१९ १८ २४	५ ६	३ १२ २१ ४३	५ १५ ४६	१० २५	१४ ३६	२ ५३	२५ ४७	२४ ४२ ४३	१० ४६	०३ २६	१२ ४३ ०८	२० १५	१ ३१
	४	२० १७ ३२	५ २९	३ २६ ३ ३	१५ २३	११ १२ २०	१४ ३०	३ ५२	२५ ४२	२४ ३९ ३२	२० ४५	०३ २६	१२ ४७ ०५	१७ २४	२ ३६
	५	२१ १६ ३७	५ ५२	४ ९ ३५ ९	१५ ००	१४ १७	१४ २४	४ ५२	२५ ३७	२४ ३६ २१	१० ४३	०३ २६	१२ ५१ ०१	१३ ३८	३ ३२
	६	२२ १५ ४०	६ १५	४ २२ ५७ २६	१४ ३७	१६ १४	१४ १७	५ ५३	५ २५ ३३	२ २४ ३३ १०	७ १० ४२	०३ २५	१२ ५४ ५८	९ १४	४ १६
	७	११ २३ १४ ४१	६ ३७	५ ६ ८ ४८	१४ १४	१८ १४	१४ ११	१० ६ ५४	२५ २८	२४ २९ ५९	१० ४१	०३ २५	१२ ५८ ५४	४ २७	४ ४५
	८	२४ १३ ३९	७ ०	५ १९ ७ ५९	१३ ५१	२० १४	१४ ४	७ ५५	२५ २४	२४ २६ ४८	१० ३९	०३ २५	१३ ०२ ५१	० + २६	४ ५९
	९	२५ १२ ३६	७ २२	६ १ ५३ ५१	१३ २९	११ २२ १६	६ १३ ५७	८ ५६	२५ १९	२४ २३ ३७	१० ३८	८ ०३ २५	१३ ०६ ४८	५ − १५	४ ५७
	१०	२६ ११ ३१	७ ४५	६ १४ २५ ४९	५ १३ ७	२४ १८	१३ ५०	९ ५८	२५ १४	२४ २० २७	१० ३६	०३ २४	१३ १० ४४	९ ४५	४ ४१
	११	२७ १० २३	८ ७	६ २६ ४४ ११	१२ ४६	२६ २२	१३ ४३	११ ००	२५ १०	२ २४ १७ १६	७ १० ३५	०३ २४	१३ १४ ४१	१३ ४७	४ १२
	१२	२८ ९ १४	८ २९	७ ८ ५० १८	१२ २४	११ २८ २७	१३ ३६	१२ ०२	२५ ५	२४ १४ ०५	१० ३३	०३ २४	१३ १८ ३७	१७ ११	३ ३२
	१३	११ २९ ८ ३	८ ५१	७ २० ४६ ३६	१२ ३	० ०० ३२	१३ २९	१० १३ ५	२५ १	२४ १० ५४	१० ३२	०३ २३	१३ २२ ३४	१९ ४९	२ ४३
	१४	० ० ६ ५०	९ १२	८ २ ३६ ३४	११ ४३	२ ३९	६ १३ २२	१४ ८	५ २४ ५६	२४ ०७ ४३	१० ३०	०३ २३	१३ २६ ३०	२१ ३६	१ ४८
	१५	१ ५ ३६	९ ३४	८ १४ २४ ३२	११ २३	४ ४५	१३ १४	१५ ११	२४ ५१	२४ ०४ ३२	१० २८	०३ २२	१३ ३० २७	२२ २५	० ४७
	१६	२ ४ २०	९ ५६	८ २६ १५ ३२	११ ४	६ ५२	१३ ७	१६ १४	२४ ४७	२ २४ ०१ २१	१० २६	८ ०३ २२	१३ ३४ २३	२२ १३	०+ १५
	१७	३ ३ २	१० १७	९ ८ १५ २	५ १० ४५	८ ५८	१२ ५९	१७ १८	२४ ४२	२३ ५८ १०	७ १० २५	०३ २१	१३ ३८ २०	२१ ११	१ − १८
	१८	४ १ ४२	१० ३८	९ २० २८ ३०	१० २६	११ ४	१२ ५२	१८ १२	२४ ३८	२३ ५४ ५९	१० २३	०३ २०	१३ ४२ १७	१८ ४९	२ १८
	१९	० ५ ० २१	१० ५९	१० ३ १ ५	१० ९	१३ १०	१२ ४५	१९ २६	२४ ३३	२३ ५१ ४८	१० २१	०३ २०	१३ ४६ १३	१५ ४१	३ १४
	२०	५ ५८ ५८	११ २०	१० १५ ५७ १	९ ५२	१५ १४	१२ ३७	१० २० ३०	२४ २९	२३ ४८ ३८	१० १९	०३ १९	१३ ५० १०	११ ४२	४ १
	२१	६ ५७ ३३	११ ४०	१० २९ १९ १	९ ३५	१७ १७	१२ २९	२१ ३४	५ २४ २४	२ २३ ४५ २७	१० १७	०३ १८	१३ ५४ ०६	७ ३	४ ३७
	२२	७ ५६ ७	१२ १	११ १३ ७ ३६	९ २०	१९ १९	१२ २२	२२ ३९	२४ २०	२३ ४२ १६	७ १० १५	०३ १८	१३ ५८ ०३	१ − ५३	४ ५८
	२३	८ ५४ ३८	१२ २१	११ २७ २० ३६	९ ५	२१ २०	६ १२ १४	२३ ४४	२४ १५	२३ ३९ ०५	१० १३	८ ०३ १७	१४ ०१ ५९	३ + ३१	५ १
	२४	० ९ ५३ ८	१२ ४१	० ११ ५३ ४	८ ५०	२३ १६	१२ ६	२४ ४९	२४ ११	२३ ३५ ५४	१० ११	०३ १६	१४ ०५ ५६	८ ५२	४ ४५
	२५	१० ५१ ३६	१३ १	० २६ ३७ ५२	८ ३७	२५ ११	११ ५९	२५ ५५	२४ ०६	२३ ३२ ४४	१० ०९	०३ १५	१४ ०९ ५२	१३ ४७	४ १०
	२६	११ ५० ३	१३ २०	१ ११ २६ ५०	८ २४	०० २७ ३	११ ५१	२७ ००	२४ ०२	२३ २९ ३३	१० ०७	०३ १४	१४ १३ ४९	१७ ५३	३ १८
	२७	१२ ४८ २७	१३ ३९	१ २६ १२ ४	८ १२	२८ ५२	११ ४३	२८ ०६	२३ ५८	२३ २६ २२	१० ०५	०३ १४	१४ १७ ४६	२० ५०	२ १९
	२८	१३ ४६ ४९	१३ ५९	२ १० ४७ ११	८ १	१ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०३ १३	१४ २१ ४२	२२ २२	१ − ०
	२९	० १४ ४५ ९	१४ १८	२ २५ ७ ५८	५ ७ ५०	२ १९	६ ११ २८	११ ०० १७	५ २३ ४९	२ २३ २० ००	७ १० ०१	८ ०३ १२	१४ २५ ३९	२२ + २४	० + १९

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं० ५।२९ बजे भा० स्टै० टा० (दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१ मई, ८२ को अयनांश २३।३६।१९, वेंकटेश ६।१।३१) (१ जून, ८२ को अयनांश २३।३६।२३, वेंकटेश ६।०।४९)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क. वि.	सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अं. क.	साम्पातिक काल ० बजे घ. मि. से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
अप्रैल	३०	० १५ ४३ २७	+ १४ ३६	३ ९ १२ २०	५ ७ ४१	१ ३ ५८	६ ११ २१	११ १ २३	५ २३ ४५	२ २३ १६ ४९	७ ० ९ ५९	८ ० ३ ११	१४ २९ ३५	+ २० ५९	+ १ ३०
मई १९८२	१	१६ ४१ ४२	१४ ५५	३ २२ ५९ ५९	७ ३२	५ ३२	११ १३	२ ३०	२३ ४१	२३ १३ ३९	० ९ ५७	० ३ १०	१४ ३३ ३२	१८ २१	२ ३७
	२	१७ ३९ ५६	१५ १३	४ ६ ३१ ३८	७ २३	७ ३	११ ५	३ ३६	२३ ३७	२३ १० २८	० ९ ५४	० ३ ९	१४ ३७ २८	१४ ४५	३ ३४
	३	१८ ३८ ८	१५ ३१	४ १९ ४८ ३१	७ १६	१ ८ ३०	१० ५८	४ ४३	२३ ३३	२३ ७ १७	० ९ ५२	० ३ ८	१४ ४१ २५	१० २९	४ १८
	४	१९ ३६ १८	१५ ४८	५ २ ५१ ५५	७ १०	९ ५२	१० ५०	५ ४९	२३ २९	२३ ४ ०६	० ९ ५०	० ३ ७	१४ ४५ २१	५ ४८	४ ४८
	५	०० २० ३४ २६	१६ ६	५ १५ ४२ ५०	७ ४	११ ११	१० ४३	६ ५६	२३ २५	२ २३ ०० ५६	० ९ ४८	० ३ ६	१४ ४९ १८	० + ५६	५ २
	६	२१ ३२ ३२	१६ २३	५ २८ २२ २	६ ५९	१२ २५	६ १० ३५	११ ८ ३	५ २३ २२	२२ ५७ ४५	७ ० ९ ४५	० ३ ५	१४ ५३ १५	३ − ५३	४ ४७
	७	२२ ३० ३४	१६ ४०	६ १० ५० १	६ ५५	१३ ३४	१० २८	९ १०	२३ १८	२२ ५४ ३४	० ९ ४३	८ ० ३ ४	१४ ५७ ११	८ ३०	४ १९
	८	२३ २८ ३६	१६ ५६	६ २३ ७ १९	५ ६ ५२	१४ ३९	१० २१	१० १८	२३ १४	२२ ५१ २३	० ९ ४१	० ३ ३	१५ १ ०८	१२ ४२	३ ४०
	९	२४ २६ ३७	१७ १३	७ ५ १४ ४३	६ ४९	१ १५ ४०	१० १३	११ २५	२३ ११	२२ ४८ १२	० ९ ३८	० ३ १	१५ ५ ०४	१६ २०	२ ५१
	१०	२५ २४ ३८	१७ २९	७ १७ १३ ३०	६ ४८	१६ ३६	१० ६	१२ ३२	२३ ७	२२ ४५ १	० ९ ३६	० ३ ००	१५ ९ ०१	१९ १५	१ ५४
	११	२६ २२ ३६	१७ ४४	७ २९ ५ ३४	६ ४७	१७ २७	९ ५९	१३ ४०	५ २३ ४	२ २२ ४१ ५१	७ ० ९ ३४	० २ ५९	१५ १३ ५७	२१ २०	० ५५
	१२	०० २७ २० २२	१८ ००	८ १० ५३ ३६	६ ४६	१८ १४	९ ५२	११ १४ ४८	२३ ००	२२ ३८ ४०	० ९ ३१	० २ ५७	१५ १६ ५४	२२ २८	० + १०
	१३	२८ १८ २७	१८ १५	८ २२ ४१ १	६ ४७	१८ ५५	९ ४५	१५ ५५	२२ ५७	२२ ३५ २९	० ९ २८	० २ ५६	१५ २० ५०	२२ ३६	१ − १३
	१४	२९ १६ ३१	१८ ३०	९ ४ ३१ ५८	६ ४८	१ १९ ३३	६ ९ ३८	१७ ३	२२ ५४	२२ ३२ १८	० ९ २५	८ ० २ ५५	१५ २४ ४७	२१ ४४	२ १४
	१५	१ ० १४ १३	१८ ४४	९ १६ ३१ ८	५ ६ ५०	२० ५	९ ३१	१८ ११	२२ ५०	२२ २९ ७	० ९ २३	० २ ५४	१५ २८ ४४	१९ ५१	३ १०
	१६	१ १२ ४	१८ ५८	९ २८ ४३ ३६	६ ५३	२० ३२	९ २५	१९ २०	२२ ४७	२ २२ २५ ५७	७ ० ९ २०	० २ ५२	१५ ३२ ४०	१७ ३	३ ५८
	१७	२ ९ ५४	१९ १२	१० ११ १४ २६	६ ५७	१ २० ५४	९ १८	२० २८	२२ ४४	२२ २२ ४६	० ९ १८	० २ ५१	१५ ३६ ३७	१३ २६	४ ३६
	१८	३ ७ ४३	१९ २६	१० २४ ८ १५	७ १	२१ ११	९ ११	११ २१ ३६	२२ ४१	२२ १९ ३५	० ९ १६	० २ ५०	१५ ४० ३३	९ ५	५ १
	१९	१ ४ ५ ३१	१९ ३९	११ ७ २८ ३९	७ ६	२१ २४	६ ९ ५	२२ ४५	५ २२ ३८	२२ १६ २४	० ९ १३	० २ ४८	१५ ४४ ३०	४ − १०	५ ९
	२०	५ ३ १७	१९ ५२	११ २१ १७ २४	७ ११	२१ ३२	८ ५९	२३ ५३	२२ ३५	२२ १३ १३	० ९ ११	० २ ४७	१५ ४८ २६	१ + ७	४ ५९
	२१	६ १ ३	२० ४	० ५ ३३ ४५	७ १८	२१ ३४	८ ५३	२५ २	२२ ३३	२ २२ १० ३	० ९ ८	८ ० ३ ४६	१५ ५२ २३	६ ३१	४ २९
	२२	६ ५८ ४७	२० १६	० २० १३ ५५	५ ७ २५	१ २१ ३२	८ ४६	२६ ११	२२ ३०	२२ ६ ५२	७ ० ९ ६	० २ ४४	१५ ५६ १९	११ ४३	३ ४०
	२३	७ ५६ ३०	२० २८	१ ५ ११ १५	७ ३२	२१ २६	८ ४१	२७ १९	२२ २७	२२ ३ ४१	० ९ ३	० २ ४३	१६ ०० १६	१६ १९	२ ३६
	२४	१ ८ ५४ ११	२० ४०	१ २० १६ ५९	७ ४१	२१ १५	८ ३५	२८ २८	२२ २५	२२ ०० ३०	० ९ १	० २ ४१	१६ ४ १३	१९ ५४	१ − २०
	२५	९ ५१ ५२	२० ५१	२ ५ २१ ३६	७ ४९	२१ ०	८ २९	११ २९ ३७	२२ २३	२१ ५७ १९	० ८ ५८	० २ ४०	१६ ८ ९	२२ ६	०
	२६	१० ४९ ३१	२१ २	२ २० १६ २५	७ ५९	२० ४१	८ २३	०० ०० ४६	५ २२ २०	२ २१ ५४ ९	० ८ ५६	० २ ३८	१६ १२ ०६	२२ ४३	१ + १९
	२७	११ ४७ ८	२१ १२	३ ४ ५४ ४३	८ ९	१ २० १९	८ १८	१ ५५	२२ १८	२१ ५० ५८	७ ० ८ ५३	० २ ३७	१६ १६ ०२	२१ ४५	२ ३१
	२८	२ ४४ ४४	२१ २२	३ १९ १२ १८	८ २०	१९ ५३	६ ८ १३	३ ५	२२ १६	२१ ४७ ४७	० ८ ५१	८ ० २ ३६	१६ १९ ५९	१९ २३	३ ३३
	२९	१ १३ ४२ १९	२१ ३२	४ ३ ७ २७	८ ३२	१९ २५	८ ८	४ १४	२२ १४	२१ ४४ ३६	० ८ ४९	० २ ३४	१६ २३ ५५	१५ ५६	४ २०
	३०	१४ ३९ ५२	२१ ४१	४ १६ ४० २६	८ ४४	१८ ५५	८ ३	०० ५ २३	२२ १२	२१ ४१ २५	० ८ ४६	० २ ३३	१६ २७ ५२	११ ४३	४ ५३
	३१	१५ ३७ २४	२१ ५०	४ २९ ५२ ४६	८ ५६	१८ २३	७ ५८	६ ३३	२२ १०	२१ ३८ १४	० ८ ४४	० २ ३१	१६ ३१ ४८	७ ४	५ ३
जून	१	१६ ३४ ५४	२१ ५९	५ १२ ४६ ४४	९ ९	१७ ५०	७ ५३	७ ४२	२२ ८	२१ ३५ ३	० ८ ४१	० २ २९	१६ ३५ ४५	२ + १२	५ ९
	२	१७ ३२ २४	२२ ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	० २ २८	१६ ३९ ४२	२ − ३९	५ ११
	३	१ १८ २९ ५१	२२ १५	६ ७ ४९ ३४	५ ९ ३८	१ १९ ४२	६ ७ ४४	०० १० १	५ २२ ५	२ २१ २८ ४२	७ ० ८ ३७	८ ० २ २६	१६ ४३ ३८	७ − १९	४ + ५७

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं० ५।२९ बजे भा० स्टै० टा० (दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१६ जून, ८२ को अयनांश २३।३६।२५ वेंकटेश ६।०।३६
(१ जुलाई, ८२ को अयनांश २३।३६।२८, वेंकटेश ६।०।३१)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा अ. क वि.	सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा अं क	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अ. क	नेपच्यून रा. अ. क.	साम्पातिक काल ० बजे घ.मि. से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
जून १९८२	४	०१ १९ २७ १८	+ २२ २२	६ २० ३ १२	५ ९ ५२	१ १६ ९	६ ७ ४०	० ११ ११	५ २२ ४	२ २१ २५ ३१	७ ८ ३४	८ २ २५	१६ ४७ ३५	− ११ ३८	४ + ३१
	५	२० २४ ४४	२२ २९	७ २ ७ ४७	१० ८	१५ ३८	७ ३६	१२ २१	२२ २	२१ २२ २०	८ ३१	२ २३	१६ ५१ ३१	१५ २६	३ ५२
	६	२१ २२ ०८	२२ ३६	७ १४ ५ ९	१० २४	१५ ८	७ ३२	१३ ३०	२२ १	२१ १९ ९	८ २९	२ २२	१६ ५५ २८	१८ ३४	३ ४
	७	२२ १९ ३२	२२ ४२	७ २५ ५७ १०	१० ४०	१ १४ ४०	७ २८	१४ ४०	२२ ०	२१ १५ ५९	८ २७	२ २०	१६ ५९ २४	२० ५५	२ ८
	८	२३ १६ ५५	२२ ४८	८ ७ ४५ ५०	१० ५७	१४ १५	७ २५	१५ ५०	२१ ५९	२१ १२ ४८	८ २४	२ १९	१७ ३ २१	२२ २०	१ ६
	९	०१ २४ १४ १७	२२ ५३	८ १९ ३३ २७	११ १४	१३ ५३	७ २१	१७ ०	२१ ५८	२ २१ ९ ३७	८ २२	२ १७	१७ ७ १७	२२ ४६	० + १
	१०	२५ ११ ३८	२२ ५८	९ १ २२ ३८	११ ३२	१३ ३५	६ ७ १८	० १८ १०	५ २१ ५७	२१ ६ २६	७ ८ २०	२ १५	१७ ११ १४	२२ ११	१ − ३
	११	२६ ०८ ५९	२३ ३	९ १३ १६ ३२	११ ५०	१३ २०	७ १५	१९ २०	२१ ५६	२१ ३ १५	८ १७	८ २ १४	१७ १५ ११	२० ३५	२ ६
	१२	२७ ०६ १९	२३ ७	९ २५ १८ ४४	५ १२ ९	१३ ९	७ १२	२० २१	२१ ५५	२१ ० ५	८ १५	२ १२	१७ १९ ७	१८ ४	३ ३
	१६	२८ ०३ ३९	२३ ११	१० ७ ३३ १०	१२ २८	१ १३ ३	७ ९	२१ ४१	२१ ५५	२० ५६ ५४	८ १३	२ ११	१७ २३ ४	१४ ४२	३ ५४
	१४	२९ ०० ५८	२३ १४	१० २० ४ ५	१२ ४८	१३ १	७ ७	२२ ५१	२१ ५४	२० ५३ ४३	८ १०	२ ९	१७ २७ ०	१० ३८	४ ३४
	१५	०१ २९ ५८ १३	२३ १७	११ २ ५५ ३२	१३ ८	१३ ३	७ ४	२४ १	५ २१ ५४	२ २० ५० ३२	७ ८ ८	२ ७	१७ ३० ५७	६ − ०	५ ३
	१६	०२ ०० ५५ ३५	२३ २०	११ १६ ११ ७	१३ २८	१३ १०	७ २	० २५ १२	२१ ५४	२० ४७ २२	८ ६	२ ६	१७ ३४ ५३	०० + ५८	५ १६
	१७	१ ५२ ५३	२३ २२	११ २९ ५३ १२	१३ ४९	१३ २१	७ ०	२६ २२	२१ ५३	२० ४४ ११	८ ४	२ ४	१७ ३८ ५०	४ १८	५ १२
	१८	२ ५० ११	२३ २४	० १४ २ २२	१४ ११	१ १३ ३८	६ ५८	२७ ३३	२१ ५३	२० ४१ ०	८ २	८ २ ३	१७ ४२ ४६	९ ३०	४ ४९
	१९	०२ ३ ४७ २८	२३ २५	० २८ ३६ ३९	५ १४ ३२	१३ ५८	६ ६ ५७	२८ ४३	२१ ५३	२० ३७ ४९	७ ५९	२ १	१७ ४६ ४३	१४ २१	४ ७
	२०	४ ४४ ४५	२३ २६	१ १४ ३१ २१	१४ ५४	१४ २३	६ ५५	० २९ ५४	२१ ५३	२ २० ३४ ३९	७ ७ ५७	१ ५९	१७ ५० ४०	१८ २५	३ ७
	२१	५ ४२ २	२३ २६	१ २८ ३९ ५	१५ १७	१ १४ ५३	६ ५४	१ १ ५	२१ ५४	२० ३१ २८	७ ५४	१ ५८	१७ ५४ ३६	२१ १९	१ − ५४
	२२	६ ३९ १९	२३ २६	२ १३ ५० ४७	१५ ४०	१५ २७	६ ५३	२ १५	२१ ५४	२० २८ १७	७ ५२	१ ५६	१७ ५८ ३३	२२ ४१	० + ३३
	२३	०२ ७ ३६ ३५	२३ २६	२ २८ ५६ ५४	१६ ३	१६ ६	६ ५२	३ २६	५ २१ ५४	२० २५ ०६	७ ५०	१ ५४	१८ २ २९	२२ २३	० ५१
	२४	८ ३३ ५०	२३ २५	३ १३ ४८ ५१	१६ २७	१६ ४९	६ ६ ५१	४ ३७	२१ ५५	२० २१ ५५	७ ४८	१ ५२	१८ ६ २६	२० ३०	२ १०
	२५	९ ३१ ०५	२३ २४	३ २८ २० ८	१६ ५१	१७ ३७	६ ५०	५ ४८	२१ ५६	२ २० १८ ४४	७ ४६	८ १ ५१	१८ १० २२	१७ १९	३ १८
	२६	१० २८ १९	२३ २३	४ १२ २६ ४९	५ १७ १५	१ १८ २८	६ ५०	१ ६ ५९	२१ ५६	२० १५ ३४	७ ७ ४४	१ ४९	१८ १४ १९	१३ १२	४ ११
	२७	११ २५ ३३	२३ २१	४ २६ ७ ३५	१७ ४०	१९ २४	६ ५०	८ १०	२१ ५७	२० १२ २३	७ ४२	१ ४८	१८ १८ १६	८ ३१	४ ५३
	२८	०२ १२ २२ ४६	२३ १८	५ ९ २३ १४	१८ ५	२० २३	६ ५०	९ २१	२१ ५८	२० ९ १२	७ ४१	१ ४६	१८ २२ १२	३ + ३५	५ १२
	२९	१३ १९ ५९	२३ १६	५ २२ १६ ३	१८ ३०	२१ २७	६ ५०	१० ३२	२१ ५९	२० ६ १	७ ३९	१ ४४	१८ २६ ९	१ − २२	५ १७
	३०	१४ १७ ११	२३ १२	६ ४ ४९ १८	१८ ५६	१ २२ ३५	६ ५०	११ ४३	५ २२ ०	२ २० २ ५०	७ ३७	१ ४३	१८ ३० ५	६ − ८	५ ७
जुलाई	१	१५ १४ ४३	२३ ९	६ १७ ६ ३८	१९ २२	२३ ४७	६ ५१	१२ ५४	२२ १	१९ ५९ ३९	७ ७ ३५	१ ४१	१८ ३४ २	१० ३४	४ ४२
	२	१६ ११ ३४	२३ ५	६ २९ ११ ४६	१९ ४८	२५ २	६ ६ ५१	१ १४ ०५	२२ ३	१९ ५६ २८	७ ३३	८ १ ४०	१८ ३७ ५८	१४ ३१	४ ५
	३	२ १७ ०८ ४५	२३ ०	७ ११ ८ ११	२० १५	२६ २१	६ ५२	१५ १७	२२ ४	१९ ५३ १८	७ ३२	१ ३८	१८ ४१ ५५	१७ ५०	३ १९
	४	१८ ०५ ५७	२२ ५६	७ २२ ५९ ५	२० ४२	२७ ४५	६ ५३	१६ २८	२२ ६	१९ ५० ७	७ ३०	१ ३७	१८ ४५ ५१	२० २३	२ २३
	५	१९ ०३ ०६	२२ ५०	८ ४ ४७ १८	२१ ९	२९ ११	६ ५४	१७ ३९	२२ ७	१९ ४६ ५६	७ २८	१ ३५	१८ ४९ ४८	२२ ४	१ २२
	६	२० ०० १८	२२ ४५	८ १६ ३५ २४	२१ ३६	२ ० ४२	६ ५६	१ १८ ५१	२२ ९	१९ ४३ ४५	७ २७	१ ३४	१८ ५३ ४५	२२ ४५	० + १८
	७	२० ५७ २९	२२ ३९	८ २८ २५ ४५	२२ ४	२ २ १६	६ ५७	२० २	२२ ११	१९ ४० ३४	७ २५	१ ३२	१८ ५७ ४१	२२ २६	० − ४८
	८	२ २१ ५४ ४०	२२ ३२	९ १० २० ३७	५ २२ ३२	२ ३ ५४	६ ६ ५९	२१ १३	५ २२ १२	२ १९ ३७ २४	७ ७ २४	८ १ ३१	१९ १ ३८	२१ − ५	१ − ५२

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२६बजे भा०स्टैं०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१६ जुलाई, ८२ को अयनांश २३।३६।३० वेंकटेश ६।०।३१)
(१ अगस्त, ८२ को अयनांश २३।३६।३३, वेंकटेश ६।०।४१)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क. वि.	सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा अं. क.	शनि रा. अं क	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क	साम्पातिक काल ०बजे घ.मि.से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
	९	२ २२ ५१ ५१	२२ २६	९ २२ २२ १४	५ २३ ०	२ ५ ३५	६ ७ १	१ २२ २५	५ २२ १४	२ १९ ३४ १३	७ ७ २२	८ १ २९	१९ ५ ३४	१८ ४७	२ ५१
	१०	२ २३ ४९ २	२२ १८	१० ४ २२ ५८	५ २३ २९	७ १९	७ ३	२३ ३७	२२ १७	१९ ३१ २	७ २१	१ २८	१९ ९ ३१	१५ ३७	३ ४४
	११	२ २४ ४६ १४	२२ ११	१० १६ ५५ २०	५ २३ ५८	९ ७	७ ५	२४ ४८	२२ १९	१९ २७ ५१	७ १९	१ २६	१९ १३ २७	११ ४४	४ २७
	१२	२ २५ ४३ २६	२२ ३	१० २९ ३२ ३	५ २४ २७	२ १० ५८	७ ८	२६ ०	२२ २१	१९ २४ ४०	७ १८	१ २५	१९ १७ २४	७ १७	४ ५८
	१३	२ २६ ४० ३८	२१ ५५	११ १२ २५ ५४	५ २४ ५६	१२ ५१	७ १०	२७ १२	२२ २३	१९ २१ २९	७ १६	१ २३	१९ २१ २०	२-२५	५ १५
	१४	२ २७ ३७ ५१	२१ ४६	११ २५ ३९ २८	५ २५ २७	१४ ४८	७ १३	२८ २३	२२ २६	२ १९ १८ १९	७ १५	१ २२	१९ २५ १७	२+४०	५ १७
	१५	२ २८ ३५ ५	२१ ३७	० ९ १४ १५	५ २५ ५६	१६ ४६	६ ७ १६	१ २९ ३५	५ २२ २८	१९ १५ ८	७ ७ १४	१ २१	१९ २९ १४	७ ४६	४ ५९
	१६	२ २९ ३२ १९	२१ २७	० २३ १३ २	५ २६ २६	१८ ४७	७ १९	२ ० ४७	२२ ३१	१९ ११ ५७	७ १३	८ १ १९	१९ ३३ १०	१२ ३८	४ २५
	१७	३ ० २९ ३४	२१ १८	१ ७ ३३ ३५	५ २६ ५६	२० ५०	७ २३	१ ५९	२२ ३४	१९ ८ ४६	७ १२	१ १८	१९ ३७ ७	१६ ५५	३ ३६
	१८	३ १ २६ ४९	२१ ७	१ २२ १३ ५८	५ २७ २७	२ २२ ५४	७ २६	३ ११	२२ ३७	१९ ५ ३५	७ १०	१ १७	१९ ४१ ३	२० १५	२ २७
जुलाई	१९	३ २ २४ ६	२० ५७	२ ७ ९ २१	५ २७ ५८	२५ ०	७ ३०	४ २३	२२ ३९	१९ २ २४	७ ९	१ १५	१९ ४५ ०	२२ १७	१ - ९
	२०	३ ३ २१ २२	२० ४६	२ २२ १२ ४८	५ २८ २९	२७ ७	७ ३३	२ ५ ३५	५ २२ ४२	२ १८ ५९ १४	७ ७ ८	१ १४	१९ ४८ ५६	२२ ४४	० + १४
	२१	३ ४ १८ ४०	२० ३५	३ ७ १५ ५४	५ २९ ०	२ २९ १४	७ ३७	६ ४७	२२ ४५	१८ ५६ ३	७ ७	१ १३	१९ ५२ ५३	२१ ३१	१ ३६
	२२	३ ५ १५ ५७	२० २३	३ २२ ९ ५६	५ २९ ३२	३ १ २२	७ ४१	७ ५९	२२ ४९	१८ ५२ ५२	७ ६	१ ११	१९ ५६ ४९	१८ ४९	२ ५०
	२३	३ ६ १३ १६	२० ११	४ ६ ४७ ७	६ ० ४	३ ३०	७ ४६	९ ११	२२ ५२	१८ ४९ ४१	७ ६	८ १ १०	२० ० ४६	१४ ५७	३ ५२
	२४	३ ७ १० ३४	१९ ५९	४ २१ १ ३२	६ ० ३६	५ ३८	६ ७ ५०	२ १० २४	२२ ५५	१८ ४६ ३०	७ ५	१ ९	२० ४ ४३	१० १९	४ ३८
१९८२	२५	३ ८ ०७ ५३	१९ ४६	५ ४ ४९ ५३	६ १ ८	३ ७ ४५	७ ५५	११ ३६	२२ ५९	२ १८ ४३ १९	७ ७ ४	१ ८	२० ८ ३९	५ १८	५ ६
	२६	३ ९ ०५ १३	१९ ३४	५ १८ ११ २३	६ १ ४०	९ ५२	८ ०	१२ ४८	२३ २	१८ ४० ९	७ ३	१ ६	२० १२ ३६	०+११	५ १६
	२७	३ १० २ ३३	१९ २०	६ १ ७ ३०	६ २ १३	११ ५७	८ ४	१४ ०	२३ ६	१८ ३६ ५८	७ २	० ५	२० १६ ३३	४-४६	५ १०
	२८	३ १० ५९ ५३	१९ ७	६ १३ ४१ १८	६ २ ४६	१४ २	८ ९	१५ १३	५ २३ ९	१८ ३३ ४७	७ २	१ ४	२० २० २९	९ २४	४ ४८
	२९	३ ११ ५७ १४	१८ ५३	६ २५ ५६ ५४	६ ३ १९	१६ ५	६ ८ १५	२ १६ २५	२३ १३	१८ ३० ३६	७ १	१ ३	२० २४ २५	१३ ३२	४ १५
	३०	३ १२ ५४ ३५	१८ ३९	७ ७ ५८ ५०	६ ३ ५४	१८ ७	८ २०	१७ ३८	२३ १७	२ १८ २७ २५	७ १	८ १ २	२० २८ २२	१७ ३	३ ३०
	३१	३ १३ ५१ ५६	१८ २४	७ १९ ५१ ४५	६ ४ २६	२० ८	८ २६	१८ ५०	२३ २१	१८ २४ १४	७ ७ ०	१ १	२० ३२ १८	१९ ४९	२ २७
	१	३ १४ ४९ १९	१८ ९	८ १ ४० ३	६ [illegible] ५९	३ २२ ८	८ ३१	२० ३	२३ २५	१८ २१ ४	७ ०	० ५९	२० ३६ १५	२१ ४४	१ ३७
	२	३ १५ ४६ ४२	१७ ५४	८ १३ २७ ४३	६ ५ ३३	२४ ६	८ ३७	२१ १५	२३ २९	१८ १७ ५३	६ ५९	० ५८	२० ४० १२	२२ ४१	० + ३४
	३	३ १६ ४४ ०६	१७ ३९	८ २५ १८ १३	६ ६ ७	२६ २	८ ४३	२२ २८	२३ ३३	१८ १४ ४२	६ ५९	० ५७	२० ४४ ८	२२ ३७	० - ३१
	४	३ १७ ४१ ३०	१७ २३	९ ७ १४ २७	६ ६ ४१	२७ ५७	८ ४९	२ २३ ४१	५ २३ ३८	२ १८ ११ ३१	६ ५९	० ५६	२० ४८ ५	२१ ३१	१ ३५
	५	३ १८ ३८ ५६	१७ ७	९ १९ १८ ४३	६ ७ १६	३ २९ ५०	८ ५५	२४ ५३	२३ ४२	१८ ८ २०	७ ६ ५८	० ५६	२० ५२ १	१९ ३१	२ ३६
	६	३ १९ ३६ २२	१६ ५१	१० १ ३२ ४८	६ ७ ५०	४ १ ४२	६ ९ २	२६ ६	२३ ४६	१८ ५ १०	६ ५८	८ ० ५५	२० ५५ ५८	१६ २५	३ ३०
	७	३ २० ३३ ५०	१६ ३५	१० १३ ५८ १	६ ८ २५	३ ३२	९ ८	२७ १९	२३ ५१	१८ १ ५९	६ ५८	० ५४	२० ५९ ५४	१२ ४०	४ १५
अगस्त	८	३ २१ ३१ १८	१६ १८	१० २६ ३५ ३०	६ ९ ०	५ २१	९ १५	२ २८ ३२	२३ ५५	१७ ५८ ४८	६ ५८	० ५३	२१ ३ ५१	८ १८	४ ४८
	९	३ २२ २८ ४८	१६ १	११ ९ २५ ४९	६ ९ ३५	४ ७ ८	९ २२	२९ ४५	२४ ०	१७ ५५ ३७	६ ५८	० ५२	२१ ७ ४७	३-३०	५ ८
	१०	३ २३ २६ १९	१५ ४४	११ २२ ३० ८	६ १० १०	८ ५३	९ २८	३ ० ५८	२४ ५	१७ ५२ २६	६ ५८	० ५१	२१ ११ ४४	१+३३	५ १२
	११	३ २४ २३ ५२	१५ २६	० ५ ४९ १५	६ १० ४५	१० ३७	९ ३६	३ २ ११	२४ ९	१७ ४९ १५	६ ५८	० ५०	२१ १५ ४१	६ ३६	४ ५९
	१२	३ २५ २१ २६	१५ ८	० १९ २३ ५९	६ ११ २१	४ १२ २०	६ ९ ४३	३ ३ २४	५ २४ १४	२ १७ ४६ ५	७ ६ ५८	८ ० ५०	२१ १९ ३७	११ २७	४ - ३०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टै०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१६ अगस्त, ८२ को अयनांश २३।३६।३५ वेंकटेश ६।१।०१
१६ सित० ८२ को अयनांश२३।३६।३८, वेंकटेश ६।१।५६)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क वि.	सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा अं. क.	शनि रा अं. क.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क.	साम्पातिक काल ०बजे घ.मि.से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
	१३	३ २६ १९ १	१४ ५०	१ ३ १४ ५५	६ ११ ५७	४ १४ १	६ ९ ५०	३ ४ ३७	५ २४ १९	२ १७ ४२ ५४	७ ६ ५८	८ ० ४९	२१ २३ ३४	१५+४९	३ − ४४
	१४	३ २७ १६ ३८	१४ ३२	१ १७ २२ २	६ १२ ३३	१५ ४०	९ ५८	५ ५०	२४ २४	१७ ३९ ४३	६ ५९	० ४८	२१ २७ ३०	१९ २२	२ ४५
	१५	३ २८ १४ १६	१४ १३	२ १ ४४ २०	६ १३ ९	१७ १८	१० ५	७ ३	२४ २९	१७ ३६ ३२	६ ५९	० ४८	२१ ३१ २७	२१ ४८	१ − ३४
	१६	३ २९ ११ ५६	१३ ५५	२ १६ १९ २०	६ १३ ४५	१८ ५५	१० १३	८ १६	२४ ३४	१७ ३३ २१	६ ५९	० ४७	२१ ३५ २३	२२ ४९	०+ १५
	१७	४ ० ९ ३७	१३ ३६	३ १ २ ५३	६ १४ २१	२० ३०	१० २१	९ ३०	२४ ३९	१७ ३० १०	७ ०	० ४६	२१ ३९ २०	२२ १५	१ ४
	१८	४ १ ७ २०	१३ १७	३ १५ ४९ ४	६ १४ ५८	४ २२ ३	१० २९	१० ४३	२४ ४५	२ १७ २७ ०	७ ०	० ४६	२१ ४३ १६	२० ८	२ २०
	१९	४ २ ५ ४	१२ ५७	४ ० ३० ५१	६ १५ ३४	२३ ३५	६ १० ३७	३ ११ ५६	५ २४ ५०	१७ २३ ४९	७ ७ ०	० ४५	२१ ४७ १३	१६ ४२	३ २५
	२०	४ ३ २ ५०	१२ ३८	४ १५ ० ५५	६ १६ ११	२५ ५	१० ४५	१३ १०	२४ ५५	१७ २० ३८	७ १	८ ० ४४	२१ ५१ १०	१२ १८	४ १७
	२१	४ ४ ० ३७	१२ १८	४ २९ १२ ४८	६ १६ ४८	२६ ३४	१० ५३	१४ २३	२५ १	१७ १७ २७	७ १	० ४४	२१ ५५ ६	७ १७	४ ५१
अगस्त	२२	४ ४ ५८ २५	११ ५८	५ १३ १ ४८	६ १७ २५	२८ २	११ २	१५ ३७	२५ ६	१७ १४ १६	७ २	० ४३	२१ ५९ ३	२+ ४	५ ७
	२३	४ ५ ५६ १५	११ ३८	५ २६ २५ ३५	६ १८ ३	४ २९ २७	११ १०	३ १६ ५०	२५ १२	१७ ११ ६	७ ३	० ४३	२२ २ ५९	३ − ६	५ ६
	२४	४ ६ ५४ ५	११ १८	६ ९ २४ १३	६ १८ ४०	५ ० ५२	११ १९	१८ ४	५ २५ १७	२ १७ ७ ५५	७ ७ ३	९ ४३	२२ ६ ५६	७ ५९	४ ४९
	२५	४ ७ ५१ ५७	१० ५७	६ २१ ५९ ५३	६ १९ ३८	२ १४	११ २८	१९ १७	२५ २३	१७ ४ ४४	७ ४	० ४२	२२ १० ५२	१२ २४	४ १८
	२६	४ ८ ४९ ५०	१० ३६	७ ४ १६ १५	६ १९ ५६	३ ३६	११ ३६	२० ३१	२५ २९	१७ १ ३३	७ ५	० ४२	२२ १४ ४९	१६ ११	३ ३६
	२७	४ ९ ४७ ४४	१० १६	७ १६ १८ ०	६ २० ३४	४ ५५	११ ४५	३ २१ ४५	२५ ३४	१६ ५८ २२	७ ६	८ ० ४१	२२ १८ ४५	१९ १३	२ २५
	२८	४ १० ४५ ४०	९ ५४	७ २८ १० १८	६ २१ १२	६ १३	६ ११ ५५	२२ ५८	२५ ४०	१६ ५५ १२	७ ७	० ४१	२२ २२ ४२	२१ २४	१ ४७
१९८२	२९	४ ११ ४३ ३७	९ ३३	८ ९ ५८ २२	६ २१ ५०	५ ७ २९	१२ ४	२४ १२	२५ ४६	२ १६ ५२ १	७ ७ ८	० ४१	२२ २६ ३९	२२ ३८	० ४६
	३०	४ १२ ४१ ३५	९ १२	८ २१ ४७ १५	६ २२ २८	८ ४३	१२ १३	३ २५ २६	२५ ५२	१६ ४८ ५०	७ ९	० ४१	२२ ३० ३५	२२ ५१	०+ १८
	३१	४ १३ ४९ ३४	८ ५१	९ ३ ४१ २४	६ २३ ६	९ ५६	१२ २२	२६ ४०	२५ ५८	१६ ४५ ३९	७ १०	० ४०	२२ ३४ ३२	२२ १	१ − २१
	१	४ १४ ३७ ३५	८ २९	९ १५ ४४ ३६	६ २३ ४५	११ ६	१२ ३२	२७ ५३	५ २६ ४	१६ ४२ २८	७ ११	० ४०	२२ ३८ २८	२० ११	२ २२
	२	४ १५ ३५ ३८	८ ७	९ २७ ५९ ४३	६ २४ [illegible]	१२ १५	६ १२ ४२	३ २९ ७	२६ १०	१६ ३९ १८	७ १२	० ४०	२२ ४२ २५	१७ २३	३ १५
	३	४ १६ ३३ ४२	७ ४५	१० १० २८ ३६	६ २५ ३	५ १३ २१	१२ ५१	४ ० २१	२६ १६	२ १६ ३६ ७	७ १३	८ ० ४०	२२ ४६ २१	१३ ४५	४ १
	४	४ १७ ३१ ४८	७ २३	१० २३ १२ ५	६ २५ ४१	१४ २५	१३ १	१ ३५	२६ २३	१६ ३२ ५६	७ ७ १५	० ४०	२२ ५० १८	९ २७	४ ३६
	५	४ १८ २९ ५५	७ १	११ ६ १० ०	६ २६ २१	१५ २७	१३ ११	२ ४९	२६ २९	१६ २९ ४५	७ १६	० ४०	२२ ५४ १४	४−३८	४ ५८
	६	४ १९ २८ ५	६ ३९	११ १९ २१ २७	६ २७ ०	१६ २६	१३ २१	४ ३	२६ ३५	१६ २६ ३४	७ १७	० ४०	२२ ५८ ११	०+२७	५ ४
	७	४ २० २६ १६	६ १७	० २ ४५ ७	६ २७ ३९	१७ २२	१३ ३१	५ १७	२६ ४१	१६ २३ २४	७ १९	० ४०	२३ २ ७	५ ३७	४ ५३
	८	४ २१ २४ २९	५ ५४	० १६ १९ ३५	६ २८ १९	१८ १६	१३ ४१	४ ६ ३१	५ २६ ४८	२ १६ २० १३	७ २०	० ४०	२३ ६ ४	१० ३५	४ २६
	९	४ २२ २२ ४४	५ ३२	१ ० ३ ४२	६ २८ ५८	५ १९ ७	१३ ५२	७ ४५	२६ ५४	१६ १७ २	७ ७ २२	० ४०	२३ १० १	१५ ४	३ ४४
	१०	४ २३ २१ १	५ ९	१ १३ ५६ ३९	६ २९ ३८	१९ ५५	६ १४ २	९ ०	२७ १	१६ १३ ५१	७ २४	८ ० ४०	२३ १३ ५७	१८ ४९	२ ४८
	११	४ २४ १९ २१	४ ४६	१ २७ ५७ ५२	७ ० १८	२० ३९	१४ १२	१० १४	२७ ७	१६ १० ४०	७ २५	० ४०	२३ १७ ५४	२१ ३९	१ − ४१
सितम्बर	१२	४ २५ १७ ५२	४ २३	२ १२ ६ ४६	७ ० ५८	२१ १९	१४ २३	११ २८	२७ १४	१६ ७ ३०	७ २७	० ४१	२३ २१ ५०	२२ ५१	० − २८
	१३	४ २६ १६ ६	४ १	२ २६ २२ १८	७ १ ३८	५ २१ ५६	१४ ३४	४ १२ ४२	२७ २०	१६ ४ १९	७ २९	० ४१	२३ २५ ४७	२२ ४५	० + ४८
	१४	४ २७ १४ ३१	३ ३८	३ १० ४२ ३०	७ २ १८	२२ २८	१४ ४४	१३ ५७	२७ २७	१६ १ ८	७ ३१	० ४१	२३ २९ ४३	२१ ९	२ १
	१५	४ २८ १२ ५९	३ १५	३ २५ ४ १०	७ २ ५८	२२ ५६	१४ ५५	१५ ११	२७ ३४	१५ ५७ ५७	७ ३२	० ४१	२३ ३३ ४०	१८ ११	३ ६
	१६	४ २९ ११ २९	२ ५१	४ ९ २२ ५३	७ ३ ३९	५ २३ १९	६ १५ ६	४ १६ २६	५ २७ ४०	२ १५ ५४ ४६	७ ७ ३४	८ ० ४२	२३ ३७ ३६	१४+ ८	४ + ०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रात. घं०५।२९बजे भा०स्टै०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१ अक्टूबर, ८२ को अयनांश २३।३६। ४० वैंकटेश ६।२।२९; १६ अक्टूबर, ८२ को अयनांश२३।३६।४१ वैंकटेश ६।३। ४)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क. वि.	सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क	गुरु रा. अं. क	शुक्र रा अं. क.	शनि रा. अं. क	राहु रा. अं क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क	साम्पातिक काल ०बजे घ मि. से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
	१७	५ ० १० १	+२ २८	४ २३ ३३ २४	७ ४ १९	५ २३ ३६	६ १५ १७	४ १७ ४०	५ २७ ४७	२ १५ ५१ ३६	७ ७ ३६	८ ० ४२	२३ ४१ ३३	९+२०	४ + ३७
	१८	५ १ ८ ३५	२ ५	५ ७ ३० २३	५ ००	२३ ४८	१५ २८	१८ ५४	२७ ५४	१५ ४८ २५	७ ३८	० ४२	२३ ४५ ३०	४+ ७	४ ५८
	१९	५ २ ७ १०	१ ४२	५ २१ ९ १७	५ ४१	२३ ५४	१५ ३९	२० ०९	२८ १	१५ ४५ १४	७ ४०	० ४३	२३ ४९ २६	१-१२	५ १
	२०	५ ३ ५ ४८	१ १९	३ ४ २७ ६	६ २१	२३ ५३	१५ ५०	२१ २३	२८ ७	१५ ४२ ३	७ ४२	० ४३	२३ ५३ २३	६ १९	४ ४७
	२१	५ ४ ४ २७	०० ५५	६ १७ २२ ४८	७ २	२३ ४८	१६ ०२	२२ ३८	२८ १४	१५ ३८ ५३	७ ४४	० ४४	२३ ५७ १९	११ १	४ १९
	२२	५ ५ ३ ८	०० ३२	६ २९ ५७ २२	७ ४४	२३ ३४	१६ १३	२३ ५२	२८ २१	१५ ३५ ४२	७ ४६	० ४४	०० १ १६	१५ ८	३ ३८
	२३	५ ६ १ ५१	०+ ९	७ १२ १३ ३०	८ २५	२३ १२	१६ २४	२५ ०७	२८ २८	१५ ३२ ३१	७ ४९	० ४५	०० ५ १२	१८ ३१	२ ४९
सितम्बर	२४	५ ७ ० ३६	०- १५	७ २४ १५ १४	७ ९ ६	५ २२ ४३	६ १६ ३६	४ २६ २२	५ २८ ३५	२ १५ २९ २०	७ ७ ५१	८ ० ४५	०० ९ ९	२१ १	१ ५२
	२५	५ ७ ५९ २२	०० ३८	८ ६ ७ २८	९ ४८	२२ ८	१६ ४७	२७ ३६	२८ ४२	१५ २६ ९	७ ५३	० ४६	०० १३ ५	२२ ३५	०+ ५१
	२६	५ ८ ५८ १०	१ २	८ १७ ५५ ३९	१० २९	२१ २६	१६ ५९	४ २८ ५१	२८ ४९	१५ २२ ५९	७ ५५	० ४७	०० १७ २	२३ ७	०– ११
	२७	५ ९ ५६ ५९	१ २५	८ २९ ४५ १९	११ ११	२० ३७	१७ ११	५ ०० ०६	२८ ५६	१५ १९ ४८	७ ५८	० ४७	०० २० ५९	२२ ३७	१ १३
	२८	५ १० ५५ ५१	१ ४८	९ ११ ४१ ४९	११ ५२	१९ ४१	१७ २२	१ २०	२९ ३	१५ १६ ३७	८ ००	० ४८	०० २४ ५५	२१ ५	२ १२
	२९	५ ११ ५४ ४४	२ १२	९ २३ ४९ ५२	१२ ३४	१८ ४१	१७ ३४	२ ३५	२९ १०	१५ १३ २६	८ २	० ४९	०० २८ ५२	१८ ३४	३ ६
	३०	५ १२ ५३ ३९	२ ३५	१० ६ १३ १९	१३ १६	१७ ३८	१७ ४६	३ ५०	२९ १७	१५ १० १५	८ ५	० ४९	०० ३२ ४८	१५ १०	३ ५३
१९८२	१	५ १३ ५३ ३६	२ ५८	१० १८ ५४ ४६	७ १३ ५८	५ १६ २७	६ १७ ५८	५ ५ ०४	५ २९ २४	२ १५ ७ ५	७ ८ ७	८ ० ५०	०० ३६ ४५	११ ००	४ २९
	२	५ १४ ५१ ३५	३ २२	११ १ ५५ १९	१४ ४०	१५ १९	१८ १०	६ १९	२९ ३१	१५ ३ ५४	८ १०	० ५१	०० ४० ४१	६ १४	४ ५२
	३	५ १५ ५० ३५	३ ४५	११ १५ १४ ३०	१५ २३	१४ १३	१८ २२	७ ३४	२९ ३८	१५ ०० ४३	८ १२	० ५२	०० ४४ ३८	१– ५	५ ००
	४	५ १६ ४९ ३८	४ ८	११ २८ ५० १३	१६ ५	१३ ९	१८ ३४	८ ४९	२९ ४५	१४ ५७ ३२	८ १५	० ५३	०० ४८ ३४	४+१३	४ ५२
	५	५ १७ ४८ ४३	४ ३१	० १२ ३९ १४	१६ ४७	१२ ८	१८ ४६	१० ०४	५ २९ ५२	१४ ५४ २१	८ १८	० ५४	०० ५२ ३१	९ २५	४ २६
	६	५ १८ ४७ ५०	४ ५४	० २६ ३७ ४१	१७ ३०	११ १०	१८ ५८	११ १९	६ ०० ००	१४ ५१ ११	८ २०	० ५५	०० ५६ २८	१४ १२	३ ४४
	७	५ १९ ४६ ५९	५ १७	१ १० ४१ ५६	१८ १२	१० २३	१९ १०	१२ ३३	०० ७	१४ ४८ ००	८ २३	० ५६	१ ०० २४	१८ १५	२ ४८
	८	५ २० ४६ ११	५ ४०	१ २४ ४८ ४७	७ १८ ५५	५ ९ ४४	६ १९ २३	५ १३ ४८	६ ०० १५	२ १४ ४४ ४९	७ ८ २६	८ ० ५७	१ ४ २१	२१ १६	१ ४२
	९	५ २१ ४५ २५	६ ३	२ ८ ५६ ६	१९ ३८	९ १५	१९ ३५	१५ ०३	०० २२	१४ ४१ ३८	८ २९	० ५८	१ ८ १७	२२ ५६	०– २९
अक्टूबर	१०	५ २२ ४४ ४१	६ २६	२ २३ २ १४	२० २१	८ ५६	१९ ४८	१६ १८	०० २९	१४ ३८ २७	८ ३१	० ५९	१ १२ १४	२३ ९	०+ ४५
	११	५ २३ ४४ ०	६ ४९	३ ७ ७ १९	२१ ४	८ ४९	२० ००	१७ ३३	०० ३६	१४ ३५ १७	८ ३४	१ ००	१ १६ १०	२१ ५४	१ ५७
	१२	५ २४ ४३ २१	७ ११	३ २१ ९ ३४	२१ ४७	८ ५२	२० १२	१८ ४८	०० ४४	१४ ३२ ६	८ ३७	१ १	१ २० ७	१९ १८	३ १
	१३	५ २५ ४२ ४४	७ ३४	४ ५ ८ ४	२२ ३०	९ ५	२० २५	२० ०३	०० ५१	१४ २८ ५५	८ ४०	१ २	१ २४ ३	१५ ३४	३ ५५
	१४	५ २६ ४२ १०	७ ५६	४ १९ ० ५५	२३ १३	९ २९	२० ३६	२१ १८	०० ५८	१४ २५ ४४	८ ४३	१ ३	१ २८ ०	११ २	४ ३४
	१५	५ २७ ४१ ३७	८ १९	५ २ ४५ ३१	७ २३ ५६	५ १० १	६ २० ५०	५ २२ ३३	६ १ ५	२ १४ २२ ३३	७ ८ ४६	८ १ ५	१ ३१ ५७	५+५८	४ ५६
	१६	५ २८ ४१ ७	८ ४१	५ १६ १८ ५४	२४ ४०	१० ४७	२१ ०३	२३ ४८	१ १३	१४ १९ २३	८ ४९	१ ६	१ ३५ ५३	०–४१	५ १
	१७	५ २९ ४० ३९	९ ३	५ २९ ३८ ८	२५ २३	११ ३७	२१ १६	२५ ०४	१ २०	१४ १६ १२	८ ५२	१ ७	१ ३९ ५०	४ ३२	४ ५०
	१८	६ ०० ४० १३	९ २५	६ १२ ४० ५७	२६ ७	१२ ३५	२१ २८	२६ १९	१ २७	१४ १३ १	८ ५५	१ ८	१ ४३ ४६	९ २८	४ २४
	१९	६ १ ३९ ४९	९ ४७	६ २५ २६ १४	२६ ५१	१३ ४०	२१ ४१	२७ ३४	१ ३५	१४ ९ ५०	८ ५९	१ १०	१ ४७ ४३	१३ ५३	३ ४५
	२०	६ २ ३९ २७	१० ८	७ ७ ५४ १४	२७ ३४	१४ ५१	२१ ५४	५ २८ ४९	१ ४२	१४ ६ ३९	९ २	१ ११	१ ५१ ३९	१७ ३६	२ ५५
	२१	६ ३ ३९ ७	१० ३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ १ १३	१ ५५ ३६	२०–२९	१+ ५९

CC-0 Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

"दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टै०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१ नवम्बर, ८२ को अयनांश ६।३। ४३ वेंकटेश ६।४।१८ ; १६ नवम्बर, ८२ को अयनांश २३।३६।४३ वेंकटेश २३ ३६।४५)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	(—) सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क	गुरु रा. अं. क	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क	साम्पातिक काल ०बजे घ.मि.से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
	२२	६ ४ ३८ ४९	१० ५१	८ २ ६ २५	७ २९ २	५ १७ २८	६ २२ २०	६ १ १९	६ १ ५७	२ १४ ० १८	७ ९ ८	८ १ १४	१ ५९ ३२	२२-२५	०+५८
	२३	६ ५ ३८ ३२	११ १३	८ १३ ५७ ३७	७ २९ ४६	१८ ५२	२२ ३२	२ ३४	२ ४	१३ ५७ ७	९ ११	१ १६	२ ३ २९	२३ १९	० – ५
	२४	६ ६ ३८ १७	११ ३४	८ २५ ४५ ५	८ ० ३०	२० २०	२२ ४५	३ ४९	२ १०	१३ ५३ ५६	९ १५	१ १७	२ ७ २५	२३ १०	१ ८
	२५	६ ७ ३८ ४	११ ५५	९ ७ ३४ १०	१ १४	२१ ५०	२२ ५८	५ ५	२ १८	१३ ५० ४५	९ १८	१ १९	२ ११ २२	२१ ५८	२ ७
	२६	६ ८ ३७ ५३	१२ १५	९ १९ ३० २१	१ ५९	२३ २२	२३ ११	६ २०	२ २६	१३ ४७ ३४	९ २१	१ २०	२ १५ १९	१९ ४७	३ २
	२७	६ ९ ३७ ४३	१२ ३६	१० १ ३९ ००	२ ४३	२४ ५६	२३ २४	७ ३५	२ ३३	१३ ४४ २४	९ २४	१ २२	२ १९ १५	१६ ४२	३ ५०
अक्टूबर	२८	६ १० ३७ ३५	१२ ५५	१० १४ ४ ५३	३ २७	२६ ३१	२३ ३७	८ ५०	२ ४०	१३ ४१ १३	९ २८	१ २३	२ २३ १२	१२ ४९	४ २८
	२९	६ ११ ३७ २८	१३ १६	१० २६ ५१ ४६	८ ४ १२	२८ ८	६ २३ ५०	६ १० ०५	६ २ ४७	२ १३ ३८ २	७ ९ ३१	८ १ २५	२ २७ ८	८ १६	४ ५३
	३०	६ १२ ३७ २४	१३ ३६	११ १० १ ५४	४ ५६	५ २९ ४५	२४ ३	११ २१	२ ५५	१३ ३४ ५१	९ ३५	१ २७	२ ३१ ५	३-१३	५ ५
	३१	६ १३ ३७ २१	१३ ५६	११ २३ ३५ ३७	५ ४१	६ १ २३	२४ १७	१२ ३६	३ २	१३ ३१ ४०	९ ३८	१ २८	२ ३५ १	२+ ९	४ ५९
	१	६ १४ ३७ २०	१४ १५	० ७ ३० ५९	६ २५	३ २	२४ ३०	१३ ५१	३ ९	१३ २८ ३०	९ ४१	१ ३०	२ ३८ ५८	७ ३३	४ ३६
	२	६ १५ ३७ २०	१४ ३४	० २१ ४४ ३	७ १०	४ ४०	२४ ४३	१५ ०६	३ १६	१३ २५ १९	९ ४५	१ ३२	२ ४२ ५४	१२ ४०	३ ५६
	३	६ १६ ३७ २३	१४ ५३	१ ६ ९ १३	७ ५५	६ १९	२४ ५६	१६ २२	३ २३	१३ २२ ८	९ ४८	१ ३३	२ ४६ ५१	१७ १०	३ ०
	४	६ १७ ३७ २८	१५ १२	१ २० ४० १५	८ ४०	·७ ५८	२५ ९	१७ ३७	३ ३१	१३ १८ ५७	९ ५२	१ ३५	२ ५० ४८	२० ४०	१ ५२
	५	६ १८ ३७ ३४	१५ ३१	२ ५ ११ १३	८ ९ २५	६ ९ ३७	६ २५ २२	६ १८ ५२	६ ३ ३८	२ १३ १५ ४६	७ ९ ५५	८ १ ३७	२ ५४ ४४	२२ ५०	० – ३६
१९८२	६	६ १९ ३७ ४३	१५ ४९	२ १९ ३७ १३	१० १०	११ १५	२५ ३६	२० ०७	३ ४५	१३ १२ ३५	९ ५९	१ ३९	२ ५८ ४१	२३ २८	०+ ४१
	७	६ २० ३७ ५३	१६ ७	३ ३ ५४ ५२	१० ५५	१२ ५४	२५ ४९	२१ २३	३ ५२	१३ ९ २५	१० २	१ ४०	३ २ ३७	२२ ३३	१ ५६
	८	६ २१ ३८ ६	१६ २५	३ १८ २ ११	११ ४०	१४ २३	२६ २	२२ ३८	३ ५९	१३ ६ १४	१० ६	१ ४२	३ ६ ३४	२० १३	३ २
	९	६ २२ ३८ २१	१६ ४२	४ १ ५८ १४	१२ २५	१६ ११	२६ १५	६ २३ ५३	४ ६	१३ ३ ३	१० ९	१ ४४	३ १० ३०	१६ ४३	३ ५७
	१०	६ २३ ३८ ३८	१६ ५९	४ १५ ४२ ४३	१३ १०	१७ ४९	२६ २८	२५ ९	४ १३	१२ ५९ ५२	१० १३	१ ४६	३ १४ २७	१२ २१	४ ३७
	११	६ २४ ३८ ५७	१७ १६	४ २९ १५ २९	१३ ५६	१९ २६	२६ ४२	२६ २४	४ २०	१२ ५६ ४२	१० १६	१ ४८	३ १८ २३	७ २६	५ १
	१२	६ २५ ३९ १८	१७ ३३	५ १२ ३६ २१	८ १४ ४१	६ २१ ४	६ २६ ५५	२७ ३९	६ ४ २७	२ १२ ५३ ३१	७ १० २०	८ १ ५०	३ २२ २०	२+१५	५ ८
	१३	६ २६ ३९ ४१	१७ ४९	५ २५ ४४ ५५	१५ २६	२२ ४१	२७ ८	६ २८ ५५	४ ३४	१२ ५० २०	१० २४	१ ५२	३ २६ १७	२-५८	४ ५९
नवम्बर	१४	६ २७ ४० ५	१८ ५	६ ८ ४० ४२	१६ १२	२४ १८	२७ २१	७ ०० १०	४ ४१	१२ ४७ ९	१० २७	१ ५३	३ ३० १३	७ ५९	४ ३५
	१५	६ २८ ४० ३२	१८ २१	६ २१ २३ १९	१६ ५७	२५ ५४	२७ ३५	७ १ २५	४ ४८	१२ [illegible]	१० ३१	१ ५५	३ ३४ १०	१२ ३४	३ ५७
	१६	६ २९ ४१ ००	१८ ३६	७ ३ ५२ ४०	१७ ४३	२७ ३०	२७ ४८	२ ४१	४ ५५	१२ ४० ४८	१० ३५	१ ५७	३ ३८ ६	१६ ३३	३ ८
	१७	७ ०० ४१ २९	१८ ५१	७ १६ ९ १४	१८ २९	२९ ६	२८ १	३ ५६	५ २	१२ ३७ ३७	१० ३८	१ ५९	३ ४२ ३	१९ ४५	२ १२
	१८	७ १ ४२ ०	१९ ६	७ २८ १४ १८	१९ १४	७ ० ४२	२८ १४	५ ११	५ ९	१२ ३४ २६	१० ४२	२ १	३ ४५ ५९	२२ २	१ १०
	१९	७ २ ४२ ३३	१९ २०	८ १० ९ ५६	८ २० ०	७ २ १७	६ २८ २८	६ २७	६ ५ १५	२ १२ ३१ १५	७ १० ४५	८ २ ३	३ ४९ ५६	२३ १८	० + ५
	२०	७ ३ ४३ ७	१९ ३४	८ २१ ५९ ६	२० ४६	३ ५२	२८ ४१	७ ७ ४२	५ २२	१२ २८ ४	१० ४९	२ ५	३ ५३ ५२	२३ ३१	० – ५९
	२१	७ ४ ४३ ४२	१९ ४८	९ ३ ४५ ३३	२१ ३२	५ २७	२८ ५४	८ ५७	५ २९	१२ २४ ५४	१० ५३	२ ७	३ ५७ ४९	२२ ४०	२ १
	२२	७ ५ ४४ १९	२० १	९ १५ ३३ ४०	२२ १८	७ १	२९ ०७	१० १३	५ ३५	१२ २१ ४३	११ ५७	२ १०	४ १ ४६	२० ४९	२ ५८
	२३	७ ६ ४४ ५६	२० १४	९ २७ २८ १८	२३ ४	८ ३६	२९ २०	११ २८	५ ४२	१२ १८ ३२	११ ०	२ १२	४ ५ ४२	१८ ३	३ ४७
	२४	७ ७ ४५ ३५	२० २६	१० ९ ३४ ३५	२३ ५०	१० १०	२९ ३३	१२ ४४	५ ४९	१२ १५ [illegible]	११ ४	२ १४	४ ९ ३९	१४ २९	४ २८
	२५	७ ८ ४६ १५	२० ३८	१० २१ ५७ ३३	८ २४ ३६	७ ११ ४४	६ २९ ४७	७ १३ ५९	६ ५ ५५	२ १२ १२ ११	७ ११ ८	८ २ १६	४ १३ ३५	१०-१४	४ – ५६

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टैं०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१ दिसम्बर, ८२ का अयनांश २३।३६।४७ वैंकटेश ६।४।५० / १६ दिसम्बर, ८२ को अयनांश२३।३६।५० वैंकटेश ६।५।१६)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा अ. क वि.	(–) सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क.	साम्पातिक काल ०बजे घ.मि.से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
नवम्बर	२६	७ ९ ४६ ५६	२० ५०	११ ४ ४१ ४५	८ २५ २२	७ १३ १८	७ ० ०	७ १५ १४	६ ६ २	२ १२ ९ ०	७ ११ ११	८ २ १८	४ १७ ३२	५–२६	५ – १२
	२७	७ १० ४७ ३८	२१ २	११ १७ ५० ४५	२६ ८	१४ ५२	० १३	१६ ३०	६ ८	१२ ५ ४९	११ १५	२ २०	४ २१ २८	०+१५	५ १०
	२८	७ ११ ४८ २१	२१ १२	० १ २६ २८	२६ ५४	१६ २६	० २७	१७ ४५	६ १४	१२ २ ३८	११ १९	२ २३	४ २५ २५	५ ८	४ ५४
	२९	७ १२ ४९ ६	२१ २३	० १५ २८ २७	२७ ४०	१८ ०	० ४०	१९ ०	६ २१	११ ५९ २७	११ २३	२ २५	४ २९ २१	१० २६	४ १९
	३०	७ १३ ४९ ५१	२१ ३३	० २९ ५४ १९	२८ २७	१९ ३३	० ५३	२० १६	६ २७	११ ५६ १७	११ २७	२ २७	४ ३३ १८	१५ १९	३ २६
	१	७ १४ ५० ३७	२१ ४३	१ १४ ३८ १०	२९ १३	२१ ७	१ ६	२१ ३१	६ ३३	११ ५३ ६	११ ३०	२ २९	४ ३७ १५	१९ २४	२ १९
	२	७ १५ ५१ २५	२१ ५२	१ २९ ३२ ४९	८ २९ ५९	२२ ४०	१ १९	२२ ४६	६ ४०	११ ४९ ५५	११ ३४	२ ३१	४ १ ११	२२ १४	१ – २
	३	७ १६ ५२ १४	२२ १	२ १४ ३० ०	९ ० ४६	२४ १४	७ १ ३२	७ २४ २	६ ६ ४६	२ ११ ४६ ४४	७ ११ ३८	८ २ ३३	४ ४५ ८	२३ ३२	० + २०
	४	७ १७ ५३ ४	२२ १०	२ २९ २१ ४५	१ ३२	२५ ४७	१ ४५	२५ १७	६ ५२	११ ४३ ३३	११ ४१	२ ३६	४ ४९ ४	२३ ८	१ ४१
	५	७ १८ ५३ ५६	२२ १८	३ १४ १ २५	२ १९	२७ २१	१ ५८	२६ ३२	६ ५८	११ ४० २३	११ ४५	२ ३८	४ ५३ १	२१ १०	२ ५३
	६	७ १९ ५४ ४९	२२ २६	३ २८ २४ २२	३ ५	७ २८ ५४	२ ११	२७ ४८	७ ४	११ ३७ १२	११ ४९	२ ४०	४ ५६ ५७	१७ ५१	३ ५४
	७	७ २० ५५ ४३	२२ ३३	४ १२ २८ ५	३ ५२	८ ० २७	२ २४	७ २९ ३	७ १०	११ ३४ १	११ ५२	२ ४२	५ ० ५४	१३ ३६	४ ३९
	८	७ २१ ५६ ३९	२२ ३९	४ २६ ११ ४९	४ ३८	२ ०	२ ३७	८ ०० १९	७ १६	११ ३० ५०	११ ५६	२ ४४	५ ४ ५१	८ ४४	५ ६
	९	७ २२ ५७ ३५	२२ ४६	५ ९ ३६ १०	५ २५	३ ३३	२ ५०	१ ३४	७ २२	१५ २७ ३९	१२ ०	२ ४७	५ ८ ४७	३+३४	५ १६
१९८२	१०	७ २३ ४८ ३३	२२ ५२	५ २२ ४२ ३२	९ ६ ११	८ ५ ६	७ ३ ३	२ ४९	६ ७ २७	२ ११ २४ २९	७ १२ ३	८ २ ४९	५ १२ ४४	१–३९	५ १०
	११	७ २४ ५९ ३३	२२ ५७	६ ५ ३२ ४३	६ ५८	६ ३९	३ १५	४ ५	७ ३३	११ २१ १८	१२ ७	२ ५१	५ १६ ४०	६ ४२	४ ४७
	१२	७ २६ ० ३३	२३ २	६ १८ ८ ३६	७ ४५	८ १२	३ २८	५ २०	७ ३९	११ १८ ७	१२ १०	२ ५३	५ २० ३७	११ २२	४ १२
	१३	७ २७ १ ३४	२३ ७	७ ० ३२ ४	८ ३२	९ ४५	३ ४१	६ ३५	७ ४४	११ १४ ५६	१२ १४	२ ५६	५ २४ ३३	१५ ३०	३ २४
	१४	७ २८ २ ३६	२३ ११	७ १२ ४४ ५०	९ १८	११ १७	३ ५४	७ ५१	७ ५०	११ ११ ४५	१२ १८	२ ५८	४ २८ ३०	१८ ५६	२ २९
	१५	७ २९ ३ ३९	२३ १४	७ २४ ४८ ३३	१० ५	१२ ४९	४ ६	९ ७	७ ५५	११ ८ ३५	१२ २१	३ ०	५ ३२ २६	२१ ३०	१ २७
	१६	८ ०० ४ ४३	२३ १७	८ ६ ४४ ५५	१० ५२	१४ २१	४ १९	१० २१	८ १	११ ५ २४	१२ २५	३ २	५ ३६ २३	२३ ५	० + २२
दिसम्बर	१७	८ १ ५ ४८	२३ २०	८ १८ ३५ ४७	९ ११ ३९	८ १५ ५३	७ ४ ३२	८ ११ ३७	६ ८ ६	२ ११ २ १३	७ १२ २८	८ ३ ५	५ ४० २०	२३ ३७	० – ४४
	१८	८ २ ६ ५३	२३ २२	९ ० २३ २०	१२ २६	१७ २४	४ ४४	१२ ५२	८ ११	१० ५९ २	१२ ३२	३ ७	५ ४४ १६	२३ ५	१ ४८
	१९	८ ३ ७ ५८	२३ २४	९ १२ १० १३	१३ १३	१८ ५५	४ ५७	१४ ८	८ १७	१० ५५ ५१	१२ ३५	३ ९	५ ४८ १३	२१ ३१	२ ४७
	२०	७ ४ ९ ४	२३ २५	९ २३ ५९ ३१	१३ ५९	२० २४	५ ९	१५ २३	८ २२	१० ५२ ४१	१२ ३९	३ ११	५ ५२ ९	१९ २	३ ३९
	२१	८ ५ ११ ११	२३ २६	१० ५ ५४ ४९	१४ ४६	२१ ५४	५ २१	१६ ३८	८ २७	१० ४९ ३०	१२ ४२	३ १४	५ ५६ ६	१५ ४३	४ २२
	२२	८ ६ ११ १७	२३ २६	१० १८ ० ८	१५ ३३	२३ २२	५ ३४	१७ ५४	८ ३२	१० ४६ १९	१२ ४६	३ १६	६ ० २	११ ४४	४ ५४
	२३	८ ७ १२ २४	२३ २६	११ ० १९ ४८	१६ २०	२४ ४८	५ ४६	१९ ९	८ ३७	१० ४३ ८	१२ ४९	३ १८	६ ३ ५९	७ १२	५ १३
	२४	८ ८ १३ ३१	२३ २६	११ १२ ५८ ९	९ १७ ७	२६ १३	७ ५ ५८	८ २० २४	६ ८ ४२	२ १० ३९ ५७	७ १२ ५३	८ ३ २०	६ ७ ५५	२–१६	५ १८
	२५	८ ९ १४ ३८	२३ २५	११ २५ ५९ १४	१७ ५४	२७ ३६	६ १०	२१ ४०	८ ४६	१० ३६ ४७	१२ ५६	३ २३	६ ११ ५२	२+५६	५ ७
	२६	८ १० १५ ४५	२३ २३	० ९ २६ १३	१८ ४१	८ २८ ५८	६ २३	२२ ५५	८ ५१	१० ३३ ३६	१२ ५९	३ २५	६ १५ ४९	८ ९	४ ३९
	२७	८ ११ १६ ५२	२३ २१	० २३ २० ४४	१९ २८	९ ० १६	६ ३५	२४ १०	८ ५६	१० ३० २५	१३ ३	३ २७	६ १९ ४५	१३ ९	३ ५४
	२८	८ १२ २७ ५९	२३ २९	१ ७ ४२ १८	२० १५	१ ३२	६ ४७	२५ २५	९ ०	१० २७ १४	१३ ६	३ २९	६ २३ ४२	१७ ३६	२ ५३
	२९	८ १३ १९ ७	२३ १६	१ २२ २७ ४०	२१ ३	२ ४४	६ ५८	२६ ४१	९ ५	१० २४ ३	१३ ९	३ ३२	६ २७ ३८	२१ ४	१ ३९
	३०	८ १४ २० १४	२३ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७ ५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ ३ ३४	६ ३१ ३५	२३+ ९	० – १७

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टैं०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१ जनवरी ८३ का अयनांश २३।३६।५३ वैंकटेश ६।५।३८ / १ फरवरी ८३ को अयनांश २३।३६।५८ वैंकटेश ६।५।५५)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	(—) सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	साम्पातिक काल ०बजे घ. मि. सै.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र बल
दिसं.	३१	८ १५ २१ २२	२३-८	२ २२ ४३ २०	९ २२ ३७	९ ४ ५६	७ ७ २२	८ २९ ११	६ ९ १३	२ १० १७ ४२	७ १३ १६	८ ३ ३६	६ ३५ ३१	२३+३३	१ + ७
जनवरी	१	८ १६ २२ २९	२३ ४	३ ७ ५५ २८	२३ २४	५ ५३	७ ३४	९ ०० २७	९ १७	१० १४ ३१	१३ १९	३ ३८	६ ३९ २८	२२ ११	२ २६
	२	८ १७ २३ ३७	२२ ५९	३ २२ ५७ ४१	२४ ११	६ ४५	७ ४६	१ ४२	९ २२	१० ११ २०	१३ २३	३ ४१	६ ४३ २४	१९ १६	३ ३४
	३	८ १८ २४ ४६	२२ ५४	४ ७ ४१ ५६	२४ ५८	७ २९	७ ५७	२ ५७	९ २६	१० ८ ९	१३ २६	३ ४३	६ ४७ २१	१५ १०	४ २७
	४	८ १९ २५ ५४	२२ ४८	४ २२ २ ४२	२५ ४५	८ ८	८ ९	४ १२	९ ३०	१० ४ ५९	१३ २९	३ ४५	६ ५१ १८	१० १७	५ १
	५	८ २० २७ ३	२२ ४२	५ ५ ५७ २०	२६ ३२	८ ३४	८ २१	५ २७	९ ३३	१० १ ४८	१३ ३२	३ ४७	६ ५५ १४	५ १	५ १७
	६	८ २१ २८ १२	२२ ३५	५ १९ २५ ४१	२७ १९	८ ५०	८ ३२	६ ४३	९ ३७	९ ५८ ३७	१३ ३५	३ ४९	६ ५९ ११	+० २०	५ १२
	७	८ २२ २९ २१	२२ २८	६ २ २९ ३५	९ २८ ६	९ ८ ५६	७ ८ ४३	९ ७ ५८	६ ९ ४१	२ ९ ५५ २६	७ १३ ३९	८ ३ ५२	७ ३ ७	-५ ३०	४ ५५
	८	८ २३ ३० ३०	२२ २१	६ १५ १२ ६	२८ ५३	८ ५२	८ ५४	९ १३	९ ४५	९ ५२ १५	१३ ४२	३ ५४	७ ७ ४	१० १८	४ २२
	९	८ २४ ३१ ४०	२२ १३	६ २७ ३६ ५३	९ २९ ४१	८ ३८	९ ६	१० २८	९ ४८	९ ४९ ५	१३ ४५	३ ५६	७ ११ ०	१४ ३५	३ ३७
	१०	८ २५ ३२ ४९	२२ ४	७ ९ ४७ ४६	१० ० २८	८ ९	९ १७	११ ४३	९ ५१	९ ४५ ५४	१३ ४८	३ ५८	७ १४ ५७	१८ १०	२ ४३
	११	८ २६ ३३ ५८	२१ ५६	७ २१ ४८ २१	१ १५	७ २९	९ २८	१२ ५९	९ ५५	९ ४२ ४३	१३ ५१	४ ०	७ १८ ५३	२० ५६	१ ४२
	१२	८ २७ ३५ ८	२१ ४६	८ ३ ४१ ५४	२ २	६ ४०	९ ३९	१४ १४	९ ५८	९ ३९ ३२	१३ ५४	४ ३	७ २२ ५०	२२ ४६	० ३२
	१३	८ २८ ३६ १७	२१ ३७	८ १५ ३१ १६	२ ४९	५ ४१	९ ४९	१५ २९	१० १	९ ३६ २१	१३ ५७	४ ५	७ २६ ४७	२३ ३४	० + २७
१९८३	१४	८ २९ ३७ २६	२१ २६	८ २७ १८ ५३	१० ३ ३६	९ ४ २७	७ ९ ०	९ १६ ४४	६ १० ४	२ ९ ३३ ११	७ १४ ०	८ ४ ७	७ ३० ४३	२३ १८	१ - ३१
	१५	९ ०० ३८ ३४	२१ १६	९ ९ ६ ५२	४ २३	३ १५	१० ११	१७ ५९	१० ७	९ ३० ०	१४ २	४ ९	७ ३४ ४०	२२ ०	२ ३१
	१६	९ १ ३९ ४२	२१ ५	९ २० ५७ १३	५ ११	१ ५९	१० २१	१९ १४	१० १०	९ २६ ४९	१४ ५	४ ११	७ ३८ ३६	१९ ४३	३ २४
	१७	९ २ ४० ४९	२० ५४	१० २ ५१ ५५	५ ५८	९ ० ४३	१० ३२	२० २९	१० १३	९ २३ ३८	१४ ८	४ १३	७ ४२ ३३	१६ ३६	४ ९
	१८	९ ३ ४१ ५६	२० ४२	१० १४ ५३ ७	६ ४५	८ २९ २७	१० ४२	२१ ४४	१० १५	९ २० २७	१४ ११	४ १५	७ ४६ २९	१२ ४६	४ ४४
	१९	९ ४ ४३ २	२० ३०	१० २७ ३ १८	७ ३७	२८ ८	१० ५३	२३ ०	१० १८	९ १७ १७	१४ १३	४ १७	७ ५० २६	८ २३	५ १०
	२०	९ ५ ४४ ७	२० १७	११ ९ २५ १८	८ १९	२७ ०	११ ३	२४ १५	१० २१	९ १४ ६	१४ १६	४ १९	७ ५४ २२	-३ ३६	५ १४
	२१	९ ६ ४५ ११	२० ४	११ २२ २ १७	१० ९ ६	८ २६ ५९	७ ११ १३	९ २५ ३०	६ १० २३	२ ९ १० ५५	७ १४ १८	८ ४ २१	७ ५८ १९	+१ २५	५ ९
	२२	९ ७ ४६ १५	१९ ५१	० ४ ५७ ३३	९ ५३	२५ ५	११ २३	२६ ४५	१० २५	९ ७ ४४	१४ २१	४ २३	८ २ १६	६ ३१	४ ४६
	२३	९ ८ ४७ १७	२० ३८	० १८ १४ १७	१० ४०	२४ १९	११ ३३	२८ ०	१० २७	९ ४ ३३	१४ २३	४ २५	८ ६ १२	११ २७	४ ८
	२४	९ ९ ४८ १८	२० २४	१ १ ५५ ४	११ २७	२३ ४७	११ ४३	९ २९ १५	१० २९	९ १ २३	१४ २६	४ २७	८ १० ९	१५ ५९	३ १५
	२५	९ १० ४९ १९	१९ ९	१ १६ १ १८	१२ १५	२३ २०	११ ५२	१० ० ३०	१० ३१	८ ५८ १२	१४ २८	४ २९	८ १४ ५	१९ ४६	२ - १०
	२६	९ ११ ५० १८	१९ ५५	२ ० ३२ २३	१३ २	२३ २	१२ २	१ ४४	१० ३३	८ ५५ १	१४ ३१	४ ३१	८ १८ २	२२ २५	० + ५४
	२७	९ १२ ५१ १६	१८ ३९	२ १५ २५ ८	१३ ४९	२२ ५२	१२ ११	२ ५९	१० ३५	८ ५१ ५०	१४ ३३	४ ३२	८ २१ ५८	२३ ३६	० २१
	२८	९ १३ १२ १३	१८ २४	३ ० ३३ २२	१० १४ ३६	८ २२ ५१	७ १२ २१	१० ४ १४	६ १० ३७	२ ८ ४८ ३९	७ १४ ३५	८ ४ ३४	८ २५ ५५	२३ ३	१ ४८
	२९	९ १४ ५३ १०	१८ ८	३ १५ ४८ १९	१५ २३	२३ ०	१२ ३१	५ २९	१० ३८	८ ४५ २९	१४ ३८	४ ३६	८ २९ ५२	२० ४९	३ २
	३०	९ १५ ५४ ५	१७ ५२	४ ० ५९ ४४	१६ १०	२३ १४	१२ ३९	६ ४४	१० ४०	८ ४२ १८	१४ ४०	४ ३८	८ ३३ ४८	१७ ७	४ २
	३१	९ १६ ५४ ५९	१७ ३६	४ १५ ५७ २९	१६ ५६	२३ ३५	१२ ४८	७ ५९	१० ४१	८ ३९ ७	१४ ४२	४ ४०	८ ३७ ४५	१२ २२	४ ४४
फरवरी	१	९ १७ ५५ ५३	१७ १९	५ ० ३३ १७	१७ ४३	२४ २	१२ ५७	९ १३	१० ४२	८ ३५ ५६	१४ ४४	४ ४१	८ ४१ ४२	७ १	५ ७
	२	९ १८ ५६ ४६	१७ २	५ १४ ४१ ४३	१८ ३०	२४ ३४	१३ ६	१० २८	१० ४३	८ ३२ ४५	१४ ४६	४ ४३	८ ४५ ३८	+१ २७	५ १०
	३	९ १९ ५७ ३७	१६ ४४	५ २८ २० ४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४ ४८	८ ४ ४५	८ ४९ ३४	-३ ५९	४ + ५५

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टै०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१६ फरवरी ८३ को अयनांश २३।३७।० वैंकटेश ६।५।५१ ; १ मार्च ८३ को अयनांश २३।३७।२ वैंकटेश ६।५।४२)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क. वि.	(—) सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा.अं.क.	बुध रा. अं. क	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क	नेपच्यून रा. अ. क.	साम्पातिक काल ०बजे घ मि. से.	चन्द्र क्रांति	चन्द्र शर
	४	९ २० ५८ २९	१६ २७	६ ११ ३० ५५	१० २० ४	८ २४ ५४	७ १३ २३	१० १२ ५८	६ १० ४५	२ ८ २६ २४	७ १४ ५०	८ ४ ४७	८ ५३ ३१	९ − ४	४ + २५
	५	९ २१ ५९ १९	१६ १०	६ २४ १५ २८	२० ५१	२६ ४०	१३ ३१	१४ १२	१० ४६	८ २३ १३	१४ ५२	४ ४८	८ ५७ २७	१३ ३६	३ ४३
	६	९ २३ ० ८	१५ ५१	७ ६ ३८ ३९	२१ ३८	२७ ३०	१३ ४०	१५ २७	१० ४७	८ २० २	१४ ५४	४ ५०	९ १ २४	१७ २५	२ ५१
	७	९ २४ ० ५७	१५ ३३	७ १८ ४५ २५	२२ २५	२८ २४	१३ ४८	१६ ४१	१० ४८	८ १६ ५१	१४ ५६	४ ५२	९ ५ २१	२० २६	१ ५२
	८	९ २५ १ ४४	१५ १४	८ ० ४० ४५	२३ ११	८ २९ २०	१३ ५६	१७ ५६	१० ४८	८ १३ ४०	१४ ५८	४ ५३	९ ९ १७	२२ २९	० ५०
	९	९ २६ २ ३१	१४ ५५	८ १२ २९ २४	२३ ५८	९ ० २०	१४ ४	१९ ११	१० ४९	८ १० ३०	१५ ०	४ ५५	९ [illegible] १४	२३ ३२	० १४
	१०	९ २७ ३ १६	१४ ३६	८ २४ १५ ३२	२४ ४५	१ २२	१४ १२	२० २५	१० ४९	८ ७ १९	१५ १	४ ५६	९ [illegible]७ १०	२३ ३१	१ १७
फरवरी	११	९ २८ ४ ०	१४ १७	९ ६ २ ४१	१० २५ ३२	९ २ २७	७ १४ १९	१० २१ ४०	६ १० ४९	२ ८ ४ ८	७ १५ ३	८ ४ ५८	९ २१ ७	२२ २७	२ १६
	१२	९ २९ ४ ४३	१३ ५७	९ १७ ५३ ३७	२६ १८	३ ३४	१४ २७	२२ ५४	१० ४९	८ ० ५७	१५ ५	५ ०	९ २५ ३	२० २३	३ १०
	१३	१० ०० ५ २५	१३ ३७	९ २९ ५० २७	२७ ५	४ ४३	१४ ३४	२४ ९	१० ४९	७ ५७ ४६	१५ ६	५ १	९ २९ ०	१७ २५	३ ५६
	१४	१० १ ६ ५	१३ १७	१० ११ ५४ ४२	२७ ५२	५ ५४	१४ ४१	२५ २३	१० ४९	७ ५४ ३६	१५ ८	५ २	९ ३२ ५६	१३ ४१	४ ३२
	१५	१० २ ६ ४४	१२ ५७	१० २४ ७ ३२	२८ ३८	७ ७	१४ ४८	२६ ३७	१० ४९	७ ५१ २५	१५ ९	५ ४	९ ३६ ५३	९ २२	४ ५५
	१६	१० ३ ७ २१	१२ ३६	११ ६ २९ ५५	१० २९ २५	८ २२	१४ ५५	२७ ५२	१० ४९	७ ४८ १४	१५ ११	५ ६	९ ४० ४९	−४ ३७	५ ५
	१७	१० ४ ७ ५७	१२ १५	११ १९ २ ५९	११ ० १२	९ ३८	१५ २	१० २९ ६	१० ४८	७ ४५ ३	१५ १३	५ ७	९ ४४ ४६	+० २३	५ १
	१८	१० ५ ८ ३१	११ ५४	० १ ४८ ६	० ५८	९ १० ५६	७ १५ ९	११ ० २०	६ १० ४८	२ ७ ४१ ५२	७ १५ १४	८ ५ ८	९ ४८ ४३	५ २७	४ ४२
	१९	१० ६ ९ ३	११ ३३	० १४ ४६ ५८	१ ४५	१२ १५	१५ १५	१ ३५	१० ४७	७ ३८ ४१	१५ १५	५ १०	९ ५२ ३९	१० २४	४ ८
	२०	१० ७ ९ ३४	११ १२	० २८ १ ३७	२ ३१	१३ ३५	१५ २२	२ ४९	१० ४६	७ ३५ ३१	१५ १६	५ ११	९ ५६ ३६	१४ ५८	३ २०
१९८३	२१	१० ८ १० २	१० ५१	१ ११ ३४ ९	३ १८	१४ ५७	१५ २८	४ ३	१० ४५	७ ३२ २०	१५ १८	५ १२	१० ० ३२	१८ ५२	२ २०
	२२	१० ९ १० २९	१० २९	१ २५ २६ १९	४ ४	१६ २१	१५ ३४	५ १७	१० ४४	७ २९ ९	१५ १९	५ १३	१० ४ २९	२१ ४९	१ − १०
	२३	१० १० १० ५३	१० ७	२ ९ ३८ ५८	४ ५०	१७ ४५	१५ ४०	६ ३१	१० ४३	७ २५ ५८	१५ २०	५ १५	१० ८ २५	२३ २९	० + ५
	२४	१० ११ ११ १६	९ ४५	२ २४ ११ १२	५ ३७	१९ ११	१५ ३५	७ ४५	१० ४२	७ २२ ४७	१५ २१	५ १६	१० १२ २२	२३ ३७	१ २२
	२५	१० १२ ११ ३७	९ २३	३ ८ ५९ ४२	११ ६ २३	९ २० ३७	७ १५ ५१	११ ८ ५९	६ १० ४१	२ ७ १९ ३६	७ १५ २२	८ ५ १०	११ १६ १८	२२ ५	२ ३४
	२६	१० १३ ११ ५६	९ १	३ २३ ५८ २७	७ ९	२२ ५	१५ ५६	१० १३	१० ४०	७ १६ २६	१५ २२	५ १८	१० २० १५	१९ ०	३ ३७
	२७	१० १४ १२ १३	८ ३८	४ ८ ५९ ९	७ ५५	२३ ४४	१६ २	११ २७	१० ३८	७ १३ १५	१५ २३	५ १९	१० २४ १२	१४ ३९	४ २४
	२८	१० १५ १२ २८	८ १६	४ २३ ५२ २०	८ ४२	२५ ४	१६ ७	१२ ४१	१० ३७	७ १० ४	१५ २४	५ २०	१० २८ ८	९ २७	४ ५४
मार्च	१	१० १६ १२ ४२	७ ५३	५ ८ २९ २	९ २८	२६ ३६	१६ १२	१३ ५४	१० ३५	७ ६ ५३	१५ २५	५ २१	१० ३२ ५	+३ ४८	५ ३
	२	१० १७ १२ ५४	७ ३०	५ २२ ४२ १२	१० १४	२८ ८	१६ १६	१५ ८	१० ३३	७ ३ ४२	१५ २६	५ २२	१० ३६ १	−१ ५५	४ ५३
	३	१० १८ १३ ४	७ ७	६ ६ २७ ४६	११ ०	९ २९ ४१	१६ २१	१६ २२	१० ३१	७ ० ३१	१५ २६	५ २३	१० ३९ ५८	७ २१	४ २६
	४	१० १९ १३ १३	६ ४५	६ १९ ४४ ४३	११ ११ ४६	१० १ १६	७ १६ २५	११ १७ ३५	६ १० २९	२ ६ ५७ २१	७ १५ २७	८ ५ २४	१० ४३ ५४	१२ १६	३ ४५
	५	१० २० १३ २१	६ २१	७ २ ३४ ४८	१२ ३२	२ ५१	१६ ३०	१८ ४९	१० २७	६ ५४ १०	१५ २७	५ २५	१० ४७ ५१	१६ २८	२ ५४
	६	१० २१ १३ २६	५ ५८	७ १५ १ ४३	१३ १८	४ २९	१६ ३४	२० ३	१० २५	६ ५० ५९	१५ २८	५ २६	१० ५१ ४७	१९ ५०	१ ५७
	७	१० २२ १३ ३१	५ ३५	७ २७ १० २२	१४ ४	६ ५	१६ ३८	२१ १६	१० २३	६ ४७ ४८	१५ २८	५ २७	१० ५५ ४४	२२ १३	० ५५
	८	१० २३ १३ ३३	५ १२	८ ९ ६ १२	१४ ५०	७ ४४	१६ ४१	२२ २९	१० २१	६ ४४ ३७	१५ २८	५ २७	१० ५९ ४१	२३ ३३	० + ८
	९	१० २४ १३ ३४	४ ४८	८ २० ५४ ५२	१५ ३६	९ २४	१६ ४५	२३ ४३	१० १८	६ ४१ २६	१५ २९	५ २८	११ ३ ३७	२३ ४९	१ − ११
	१०	१० २५ १३ ३४	−४ २५	९ २ ४१ २६	११ १६ २२	१० ११ ५	७ १६ ४८	११ २४ ५६	६ १० १६	२ ६ ३८ १६	७ १५ २९	८ ५ २९	११ ७ ३४	२२ − ०	२ − ९

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दैनिक निरयण ग्रहस्पष्ट प्रातः घं०५।२९बजे भा०स्टैं०टा०(दिनद्वय स्पष्टान्तर=पूर्वदिवसीय ग्रह-गति) (१६ मार्च ८३ को अयनांश ६।५।२५ वेंकटेश २३।३६।३ ; १६ अप्रैल ८३ को अयनांश ६।५।३९ वेंकटेश २३।३६।६)

मास	दिनांक	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	(—) सूर्य क्रान्ति	स्पष्ट चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	साम्पातिक काल ०बजे घ मि. से.	(—) चन्द्र क्रांति	(—) चन्द्र शर
	११	१० २६ १३ ३१	४ १	९ ४ ३० ३२	११ १७ ७	१० १२ ४७	७ १६ ५२	११ २६ ९	६ १० १३	२ ६ ३५ ५	७ १५ २९	८ ५ ३०	११ ११ ३०	२१ १०	३ — ३
	१२	१० २७ १३ २७	३ ३८	९ १६ २५ ५७	१७ ५३	१४ ३१	१६ ५५	२७ २३	१० ११	६ ३१ ५५	१५ २९	५ ३०	११ १५ २७	१८ २४	३ ४८
	१३	१० २८ १३ २१	३ १४	१० ८ ३० ३१	१८ ३९	१६ १५	१६ ५७	२८ २६	१० ८	६ २८ ४४	१५ २९	५ ३१	११ १९ २३	१४ ५०	४ २४
	१४	१० २९ १३ १३	२ ५१	१० २० ४६ ७	१९ २४	१८ १	१७ ०	११ २९ ४९	१० ५	६ २५ ३३	१५ ३०	५ ३२	११ २३ २०	१० ३५	४ ४८
	१५	११ ०० १३ ४	२ २७	११ ३ १३ ४०	२० १०	१९ ४८	१७ ३	० १ २	१० २	६ २२ २२	१५ ३०	५ ३२	११ २७ १६	−५ ५०	४ ५९
	१६	११ १ १२ ५२	२ ३	११ १५ ५३ २०	२० ५६	२१ ३६	१७ ५	२ १५	९ ५९	६ १९ ११	१५ २९	५ ३३	११ ३१ १३	+ ४६	४ ५६
	१७	११ २ १२ ३८	१ ४०	११ २८ ४४ ४८	२१ ४१	२३ २५	१७ ७	३ २८	९ ५६	६ १६ १	१५ २९	५ ३३	११ ३५ १०	४ २५	४ ३१
	१८	११ ३ १२ २३	१ १६	० ११ ४७ ३५	११ २२ २७	१० २५ १५	७ १७ ९	० ४ ४१	६ ९ ५३	२ ६ १२ ५०	७ १५ २९	८ ५ ३४	११ ३९ ६	९ २९	४ ३
मार्च	१९	११ ४ १२ ५	० ५२	० २५ १ २५	२३ १२	२७ ७	१७ ११	५ ५४	९ ५०	६ ९ ३९	१५ २९	५ ३४	११ ४३ ३	१४ १२	३ १७
	२०	११ ५ ११ ४४	० २८	१ ८ २६ २३	२३ ५७	१० २८ ५९	१७ १२	७ ६	९ ४६	६ ६ २८	१५ २९	५ ३५	११ ४६ ५९	१८ १८	२ १९
	२१	११ ६ ११ २२	(—) ५	१ २२ ३ १	२४ ४३	११ ० ५३	१७ १४	८ १९	९ ४३	६ ३ १७	१५ २९	५ ३५	११ ५० ५६	२१ २८	१ −१२
	२२	११ ७ १० ५७	+ १९	२ ५ ५२ ४	२५ २८	२ ४९	१७ १५	९ ३२	९ ४०	६ ० ६	१५ २८	५ ३५	११ ५४ ५२	२३ २७	० +००
	२३	११ ८ १० ३०	० ४३	२ १९ ५४ ७	२६ १३	४ ४५	१७ १६	१० ४४	९ ३६	५ ५६ ५६	१५ २८	५ ३६	११ ५८ ४९	२३ ५९	१ १४
	२४	११ ९ १० ०	१ ६	३ ४ ८ ५८	२६ ५९	६ ४३	१७ १७	११ ५७	९ ३३	५ ५३ ४५	१५ २७	५ ३६	१२ २ ४५	२२ ५७	२ २४
	२५	११ १० ९ २९	१ ३०	३ १८ ३५ २	११ २७ ४४	११ ८ ४१	७ १७ १८	० १३ ९	६ ९ २९	२ ५ ५० ३४	७ १५ २७	८ ५ ३६	१२ ६ ४२	२० २५	२ २५
	२६	११ ११ ८ ५५	१ ५४	४ ३ ८ ५३	२८ २९	१० ४१	१७ १८	१४ २१	९ २५	५ ४७ २३	१५ २६	५ ३७	१२ १० ३९	१६ ३४	४ १४
	२७	११ १२ ८ १८	२ १७	४ १७ ४५ ८	२९ १४	१२ ४१	१७ १८	१५ ३४	९ २१	५ ४४ १२	१५ २६	५ ३७	१२ १४ ३५	११ ४३	४ ४६
१९८३	२८	११ १३ ७ ४०	२ ४१	५ २ १७ ७	११ २९ ५९	१४ ४३	१७ १८	१६ ४६	९ १८	५ ४१ २	१५ २५	५ ३७	१२ १८ ३१	६ १३	५ ०
	२९	११ १४ ६ ५९	३ ४	५ १६ ३७ २१	० ० ४४	१६ ४५	१७ १८	१७ ५८	९ १४	५ ३७ ५१	१५ २४	५ ३७	१२ २२ २८	+ २८	४ ५५
	३०	११ १५ ६ १७	२ २८	६ ० ३९ ४६	१ २९	१८ ४७	१७ १८	१९ १०	९ १०	५ ३४ ४०	१५ २३	५ ३७	१२ २६ २५	−५ १३	४ ३१
	३१	११ १६ ५ ३२	३ ५१	६ १४ १९ ४६	२ १४	२० ५०	१७ १७	२० २२	९ ६	५ ३१ २९	१५ २२	५ ३७	१२ ३० २१	१० २९	३ ५२
	१	११ १७ ४ ४६	४ १४	६ २७ ३५ १५	० २ ५९	११ २२ ५३	७ १७ १७	० २१ ३४	६ ९ २	२ ५ २८ १८	७ १५ २१	८ ५ ३७	१२ ३४ १८	१५ ८	३ २
	२	११ १८ ३ ५७	४ ३७	७ १० २६ ३०	३ ४३	२४ ५७	१७ १६	२२ ४५	८ ५८	५ २५ ७	१५ २१	५ ३७	१२ ३८ १४	१८ ५६	२ ४
	३	११ १९ ३ ७	५ ०	७ २२ ५५ ५४	४ २८	२६ ५९	१७ १५	२३ ५७	८ ५४	५ २१ ५७	१५ २०	५ ३७	१२ ४२ ११	२१ ४५	१ १
	४	११ २० २ १५	५ २३	८ ५ ७ २२	५ १३	११ २९ २	१७ १४	२५ ९	८ ४९	५ १८ ४६	१५ १९	५ ३७	१२ ४६ ७	२३ ३०	० + ३
	५	११ २१ १ २२	५ ४५	८ १७ ५ ४८	५ ५७	० १ ३	१७ १२	२६ २०	८ ४५	४ १५ ३५	१५ १७	५ ३७	१२ ५० ४	२४ ७	१ − ७
	६	११ २२ ० २६	६ ९	८ २८ ५६ ३६	६ ४२	३ २	१७ ११	२७ ३२	८ ४१	५ १२ २४	१५ १६	५ ३६	१२ ५४ १	२३ ३८	२ ६
अप्रैल	७	११ २२ ५९ २९	६ ३२	९ १० ४५ १६	७ २७	५ १	१७ ९	२८ ४३	८ ३७	५ ९ १३	१५ १५	५ ३७	१२ ५७ ५७	२२ ५	३ ०
	८	११ २३ ५८ ३०	६ ५४	९ २२ ३७ १	० ८ ११	० ६ ५७	७ १७ ७	० २९ ५४	६ ८ ३२	२ ५ ६ ३	७ १५ १४	८ ५ ३६	१३ १ ५४	१९ ३४	३ ४६
	९	११ २४ ५७ २९	७ १७	१० ४ ३६ २९	८ ५५	८ ५१	१७ ५	१ १ ६	८ २८	५ २ ५२	१५ १३	५ ३६	१३ ५ ५०	१६ १२	४ २३
	१०	११ २५ ५६ २६	७ ३९	१० १६ ४७ २६	९ ४०	१० ४२	१७ ३	२ १७	८ २४	५ ५९ ४१	१५ ११	५ ३६	१३ ९ ४७	१२ ७	४ ४८
	११	११ २६ ५५ २२	८ १	१० २९ १२ २८	१० २४	१२ २९	१७ ०	३ २८	८ १९	५ ५६ ३०	१५ १०	५ ३५	१३ १३ ४३	७ २८	५ २
	१२	११ २७ ५४ १६	८ २४	११ ११ ५३ ४८	११ ९	१४ १४	१६ ५७	४ ३९	८ १५	५ ५३ १९	१५ ९	५ ३५	१३ १७ ४०	२ + २४	४ ५९
	१३	११ २८ ५३ ७	८ ४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५ ३५	१३ २१ ३६	२+५३	४ ४२
	१४	११ २९ ५१ ५७	९+७	० ८ २ ५५	० १२ ३७	० १७ ३१	७ १६ ५१	१ ७ ०	६ ८ ६	२ ४ ४६ ५८	७ १५ ६	८ ५ ३४	१३ २५ ३३	८+ ९	४ −१०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: चन्द्रस्पष्ट युक्त अवकहड़ा (होड़ा) चक्र :—

चन्द्रस्पष्ट रा.	अं.	क.	नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	राशीश	गण	नाड़ी	युंजा	हंसक
०	१३	२० तक	अश्विनी	चु.चे.चो.ला.	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	मं·	देव	आदि	पूर्व	अग्नि
०	२६	४० तक	भरणी	ली.लू.ले.लो.	मेष	क्षत्रिय	च.	गज	मं·	मानव	मध्य	पूर्व	अ.
१	१०	० तक	कृत्तिका	अ.इ.उ.ए.	मे·१ वृ·३	क्ष.१ वै.३	च.	छाग	मं·१ शु·३	राक्षस	अन्त्य	पूर्व	अ.१ पृ.३
१	२३	२० तक	रोहिणी	ओ.वा.वी.वु.	वृष	वैश्य	च.	सर्प	शु·	मानव	अन्त्य	पूर्व	पृ.
२	६	४० तक	मृगशिरा	वे.वो.का.की.	वृ·२ मि·२	वै.२ शू.२	च.२ न.२	सर्प	शु·२ बु·२	देव	मध्य	पूर्व	पृ.२ वा.२
२	२०	० तक	आर्द्रा	कु.घ.ङ.छ.	मिथुन	शूद्र	नर	श्वान	बु·	मानव	आदि	मध्य	वा.
३	३	२० तक	पुनर्वसु	के.को.हा.ही.	मि·३ क·१	शू.३ ब्रा.१	न.३ ज.१	मार्जार	बु·३ चं·१	देव	आदि	मध्य	वा.३ ज.१
३	१६	४० तक	पुष्य	हु.हे.हो.डा.	कर्क	ब्रा.	जलचर	छाग	चं·	देव	मध्य	मध्य	ज.
४	०	० तक	आश्लेषा	डी.डू.डे.डो.	कर्क	ब्रा.	ज.	मार्जार	चं·	राक्षस	अन्त्य	मध्य	ज.
४	१३	२० तक	मघा	म.मी.मू.मे.	सिंह	क्ष.	वन्य	मूषक	सू·	राक्षस	अन्त्य	मध्य	अ.
४	२६	४० तक	पू. फा.	मो.टा.टी.टू.	सिंह	क्ष.	व·	मूषक	सू·	मानव	मध्य	मध्य	अ.
५	१०	० तक	उ. फा.	टे.टो.पा.पी.	सिं·१ कं·३	क्ष.१ वै.३	व.१ न.३	गौ	सू·१ बु·३	मानव	आदि	मध्य	अ.१ पृ.३
५	२३	२० तक	हस्त	पू.ष.ण.ठ	कन्या	वै·	न·	महिष	बु·	देव	आदि	मध्य	पृ.
६	६	४० तक	चित्रा	पे.पो.रा.री.	कं·२ तु·२	वै·२ शू·२	न·	व्याघ्र	बु·२ शु·२	राक्षस	मध्य	मध्य	पृ.२ वा.२
६	२०	० तक	स्वाती	रू.रे.रो.ता.	तुला	शू·	न·	महिष	शु·	देव	अन्त्य	मध्य	वा.
७	३	२० तक	विशाखा	ती.तू.ते.तो.	तु·३ वृ·१	शू.३ ब्रा.१	न.३ की.१	व्याघ्र	शु·३ मं·१	राक्षस	अन्त्य	मध्य	वा.३ ज.१
७	१६	४० तक	अनुराधा	ना.नी.नू.ने.	वृश्चिक	ब्रा.	कीट	मृग	मं·	देव	मध्य	अन्त्य	ज.
८	०	० तक	ज्येष्ठा	नो.या.यी.यू.	वृश्चिक	ब्रा.	कीट	मृग	मं·	राक्षस	आदि	अन्त्य	ज.
८	१३	२० तक	मूल	ये.यो.भा.भी.	धनु	क्ष.	न·	श्वान	बृ·	राक्षस	आदि	अन्त्य	अ.
८	२६	४० तक	पूर्वाषाढ़ा	भू.ध.फ.ढ.	धनु	क्ष.	न॥, च२॥	मर्कट	बृ·	मानव	मध्य	अन्त्य	अ.
९	१०	० तक	उत्तराषाढ़ा	भे.भो.ज.जी.	ध·१ म·३	क्ष.१ वै.३	च.	नकुल	बृ·१ श·३	मानव	अन्त्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३
९	२३	२० तक	श्रवण	खी.खू.खे.खो.	मकर	वै.	च१॥ज२॥	मर्कट	श·	देव	अन्त्य	अन्त्य	पृ.
१०	६	४० तक	धनिष्ठा	ग.गी.गू.गे.	म·२ कुं·२	वै·२ शू·२	ज.२ न·२	सिंह	श·	राक्षस	मध्य	अन्त्य	पृ.२ [illegible]
१०	२०	० तक	शतभिषा	गो.स.सी.सू.	कुम्भ	शू·	न·	अश्व	श·	राक्षस	आदि	अन्त्य	वा.
११	३	२० तक	पू. भा.	से.सो.द.दी.	कुं·३ मी·१	शू.३ ब्रा.१	न.३ ज.१	सिंह	श·३ बृ·१	मानव	आदि	अन्त्य	वा.३ ज.१
११	१६	४० तक	उ. भा.	दू.थ.झ.ञ.	मीन	ब्रा.	ज.	गौ	बृ·	मानव	मध्य	अन्त्य	ज.
१२	०	० तक	रेवती	दे.दो.च.ची.	मीन	ब्रा.	ज.	गज	बृ·	देव	अन्त्य	पूर्व	जल

नैनीताल भूकेन्द्रीयाक्षांश २९°।१२′ के निरयण लग्नोदयमान ।

(अयनांश २३°।३६′) परमक्रान्ति २३°।२६′·३

राशि व लग्न	स्वोदय सावन घं.	मि.	से.	क्रमिक योग घं.	मि.	से.	स्वोदय साम्पातिक घं.	मि.	से.	क्रमिक योग लग्नारम्भ हेतु घं.	मि.	से.	निकटतम सेकेन्ड तक घं.	मि.	से.
मेष	१	३४	३८·४२	१	३४	३८·४२	१	३४	२२·९८	२३	५६	४·०९	१	३४	२३
वृष	१	५५	६·८९	१	३४	३८·४२	१	५४	४८·०३	१	३४	२२ ९२	१	५४	४८
मिथुन	२	१७	५२·५३	३	२९	४५ ३१	२	१७	३०·१४	३	२९	१०·९५	२	१७	३०
कर्क	२	१८	१८·६५	५	४७	३८·०४	२	१७	५५·९९	५	४६	४१·०९	२	१७	५६
सिंह	२	१८	१०·३५	८	५	५६·६९	२	१७	४७·७१	८	४	३७·०८	२	४७	४८
कन्या	२	१७	१४·१६	१०	२४	७·०४	२	१६	४१·६८	१०	२२	२४·७९	२	१६	[illegible]
तुला	२	२०	२०·५०	१२	४१	२१·२०	२	१९	१७·५१	१२	३९	१६·४७	२	१९	५७
वृश्चिक	२	१९	२४·०१	१५	१	४१·७०	२	१९	१·१७	१४	५९	१३·९८	२	१९	१
धनु	२	७	३८·२५	१७	२१	५·७१	२	७	१७·३४	१७	१८	१५·१५	२	७	१७
मकर	१	३९	३८·०१	१९	२८	४३·९६	१	३९	२१ ७७	१९	२५	३२·४९	१	३९	२२
कुम्भ	१	२७	०७·३१	२१	०८	२२·०५	१	२६	५३·०४	२१	४	५४·२६	१	२६	५३
मीन	१	२४	३०·६४	२२	३५	२९·३६	१	२४	१६·७९	२२	३१	४७·३०	१	२४	१७
योगफल	२४	०	०	२४	०	०·०	२३	५६	४·०९	२३	५६	४·०९	२३	५६	४

अभीष्ट स्थान में प्रमाणिक समयानुसार किसी भी निरयण लग्नारम्भ काल के बाद ठीक २३ घं. ५६ मि. ४·१ से. बीतने पर पुनः उसी लग्न (राशि) का उदय हुआ करता है। यह सब प्रत्येक पृष्ठ में दी गयी दैनिक निरयण लग्न सारणी से भी सुस्पष्ट हो रहा है। यदि पाठकों को नैनीताल (या लगभग समस्त कूर्मांचल) में किसी भी लग्न का शुद्ध लग्नोदय काल भा० प्रमाणिक समय में प्राप्त करना हो तो वे केवल 'जीवन विजय पञ्चाङ्ग' में दी गयी दैनिक लग्न सारणी का ही प्रयोग करें। काशी या किसी अन्य अक्षांश पर बनी लग्न सारणी के संस्कार रहित प्रयोग से भयंकर अशुद्धि हो जायेगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गुण मेलापक व विवाह

विवाह—प्रत्येक मनुष्य के दाम्पत्य जीवन का शुभारम्भ है। आगे चलकर पति-पत्नी का जीवन दुःखमय न हो जाय इसलिये दोनों की (वर-कन्या) जन्म कुण्डलियाँ मिलाने में अत्यन्त सावधानी रखनी चाहिये। सबसे पहले दोनों कुण्डलियों को देखकर यह पता लगा लेना चाहिये कि ये शुद्धाशुद्ध कैसी है? कभी-कभी परिश्रम पूर्वक बनायी गयी जन्म पत्रिका भी अशुद्ध पंचांग के कारण ठीक नहीं हो पाती है अतः पञ्चाङ्ग का ध्यान सर्व प्रथम रखना आवश्यक है। "यात्रा विवाहोत्सव……" भास्कराचार्य का कथन कथमपि असत्य नहीं है। अस्तु॥

यहाँ इस प्रकरण में 'वर-कन्या गुणमेलापक' के चक्र व उनके विवरण के साथ ही 'गुणों का एकीकृत चक्र' भी दिया गया है। सर्वप्रथम होड़ा चक्र (अवकहड़ा चक्र) का नया रूप पृष्ठ में देखिये :—

वर-कन्या गुण मेलापक चक्र का मूल आधार जन्म कालिक निरयण स्पष्ट चन्द्र ही है जो कि मुख्य रूप से २७ नक्षत्रों पर आधारित है। फलित कार्यों के लिये प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग (चरण) करके ९ चरणों अर्थात २¼ (सवादों) नक्षत्रों कीएक राशि को प्रमुखता दी गयी है। इस प्रकार सम्पूर्ण राशि चक्र या २७ नक्षत्रोंको २७×४ (या १२×९)=१०८ भागों में बाँट करके उसी के अनुसारगुणमेलापक सारणी बनती हैं जिसके द्वारा विज्ञपाठकगण अपने विश्वास एवं मान्यता के अनुसार फल ज्ञात कर सकते हैं। मुख्य बात ध्यान में रखने की यह है कि सारे फल जन्मचक्र की स्पष्ट स्थिति पर निर्भर करते हैं और उसी से नक्षत्रोंके १०८ चरणों के अनुसार फल भी भिन्न-भिन्न होता है।

गुणमेलापक सारणी में निम्नलिखित बातों का ही आधार लिया गया है, जो जन्म नक्षत्र के चरण पर निर्भर करती है। वर्ण का १ गुण, वश्य का २, तारा का ३, योनि का ४, ग्रहमैत्री का ५, गणमैत्री का ६, भकूट का ७ और नाड़ी का ८ गुण, कुल ३६ गुण मान कर सारणी बनायी गयी है। इन आठ बातों के आधार पर वर-कन्या के गुण मिलाये जाते हैं जिसमें भकूट वर-कन्या के राशि से, ग्रह-मैत्री राशीश से मिलायी जाती है। वर से कन्या तक की और कन्या से वर तक की नक्षत्र संख्या कोअलग-अलग जोड़ कर उसमें ९ का भाग देकर जो शेष बचे उसके आधार पर तारा का गुण देखा जाता है। इन सब की ८ सारणियाँ अलग-अलग दी गयी हैं तथा इन सब गुणों का योग सम्मिलित कर के वर-कन्या के कितने गुण मिलते हैं, इसकी तालिका दी गयी है। संभव है इसमें कुछ भूलें रह गयी हों। कृपया पाठक उनकी तरफ हमारा ध्यान आकृष्ट करें ताकि वे सुधारी जा सकें। विवाहमेलापक में उक्त ३६ गुणों से अलग कुछ अन्य बातों का भी विचार किया जाता है। जैसे—अश्विनी, भार्जार आदि नक्षत्र चरणों के आधार पर दिये रहते हैं। परन्तु इनमें भी गरुड़ [illegible]

में महावैरहोता है। सभी योनियाँ उपर्युक्त एक न एक वर्ग में पड़ेंगी। इसमें यही देखना पड़ता है कि वर-कन्या की योनि ऐसे वर्ग की न हो जिसमें महावैर हो।

युंजा—इसी प्रकार रेवती से लेकर मृगशिरा नक्षत्र तक पूर्व युंजा, आर्द्रा से अनुराधा नक्षत्र तक मध्य युंजा एवं ज्येष्ठा से उत्तराभाद्रपदा तक अन्त्य युंजा माना जाता है। पूर्व युंजा में यदि नक्षत्र पड़ते हों तो स्त्री का पति में अधिक प्रेम होता है, मध्य युंजा में दोनों में परस्पर समान प्रेम होता और अन्त्य युंजा में पति का स्त्री में अधिक प्रेम होताहै

हंसक—अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल इन चार तत्वों में से जिस राशि का जो तत्व होता है उसे ही हंसक कहा जाता है। प्रत्येक तत्व एक दूसरे के शत्रु-मित्र और उत्कृष्ट मित्र होते हैं। इसी के आधार पर वर-कन्या के हंसक (तत्व) मिलते हैं या नहीं,इसपर विचार किया जाता है इसका चक्र भी दिया गया है। अन्य बातों का जन्मपत्रीके प्रश्नों केअनुसार सूक्ष्म विचार भी किया जाता है।

विशेष—कन्या के वयस्क (ऋतुमती) हो जाने पर (स्तनों के बढ़ने से ऋतुमती होने काअनुमान करके) ज्योतिषोक्त मेलापक आदि का कोई विचार न करके यथा शीघ्र उसे योग्य वर को सौंप देना ही धर्मशास्त्र के अनुसार पिता या अभिभावक का कर्तव्य बताया गया है। ऐसी अवस्था में सामान्य मुहूर्त देखा जा सके वही बहुत है। क्योंकि मंगली व षडाष्टक आदि का भी विशेष प्रभाव तब नहीं रहता है।

—: मेलापक सारिणी देखने की रीति :—

पृष्ठ में वर-कन्या गुण मेलापक सारणी मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार एकत्र की गई है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरण मात्र जानने की आवश्यकता है। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिले उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या या चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—नाड़ी दोष की जगह (३), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडाष्टक में (६), नवपंच में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहाँ कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहाँ (०) रखा है: जहाँ थोड़ा दोष समझा गया वहाँ ऋण का (−) और जहाँ अधिक समझा गया धन का चिह्न (+) दिया गया है। जहाँ गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक या चिह्न नहीं है वहाँ निर्दोष समझना चाहिए। यदि भकूट दोष न हो तो १८ गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है। एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता। उक्तं च "एक-[illegible] विद्यते।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आवश्यक दोषदानम्—द्रुक तत्र सुवर्णमष्टारधुकं गोयुग्ममर्थाङ्के । रौप्यं कांस्यमर्थैक नाड़ि-युजि गोस्वर्णादि दत्त्वोद्वहेत् ।

विशेष—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा । तारा विरुद्धो नव पंचमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः । गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ॥

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष कम हो जाता है । इतिशम् ॥

❀ जन्म-कुण्डली-मेलापक ❀

प्रायः वर कन्या के कुण्डली मेलापक में मंगल-दोष का विशेषरूप से विचार किया जाता है । जन्म कुण्डली में प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में मंगल हो तो कुण्डली मंगल-दोषयुक्त मानी जाती है । इसी भाँति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है । मंगल-दोषयुक्त कुण्डली के लिये, मंगल-दोषयुक्त अथवा शनि-दोषयुक्त कुण्डली ही विवाह सम्बन्धनार्थ उपयुक्त मानी जाती है ।

यदि वह मंगल अपनी उच्च राशि मकर में, स्वराशि मेष या वृश्चिक में, मित्र सूर्य की राशि सिंह में, गुरु की राशि धनु या मीन में से किसी भी राशि में स्थित हो तो वह अधिक दोषकारक नहीं होता है । अन्य कोई तो यहाँ तक मानते हैं कि यदि मंगल को गुरु पूर्ण दृष्टि (५, ७ या ९ वीं दृष्टि) से देखता हो तो भी मंगल का दोष नष्ट हो जाता है । मेरी मान्यतानुसार वर्षों पहले जब बाल विवाह की प्रथा प्रचलित थी और वर-वधू की उम्र में अधिक नहीं रहता था, तब वहाँ मंगल दोष के विचार की अधिक आवश्यकता रहती थी । जन्म-कुण्डली के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और द्वादश भाव में स्थित मंगल के सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टि, स्थिति के कारण वह अधिक दुष्प्रभाव करता है; लेकिन वस्तुतः मंगल-दोष का अर्थ क्या है ? सप्तम स्थान प्रजनन अवयव और दाम्पत्य कामोपभोग का निर्देशक है । अष्टम स्थान जीवन-साथी यानी पति या पत्नी कुटुम्बस्थान है । उस पर प्रथम या द्वितीय भाव के मंगल की दृष्टि का पड़ना कुटुम्ब सुख में बाधक बनता है : किन्तु उस पर गुरु की दृष्टि या युति से वह दोष नष्ट हो जाता है । अनुभव से ज्ञात हुआ है कि वृष और तुला लग्न की कुण्डली में केन्द्र त्रिकोण का अधिपति होने से शनि शुभ बनता है; लेकिन द्वितीय, अष्टम या दशम स्थान स्थित शनि वैवाहिक जीवन में विच्छेदकारक बनता है और सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि भी अशुभ फल देती है । इसके अतिरिक्त यदि सप्तम स्थानाधिपति नीच राशि में स्थित हो या अन्योन्य सम्बन्ध से नीच बनता हो या पाप सम्बन्धित हो तो वह मंगल-दोष से भी अधिक अशुभ है । मंगल-दोष अशुभ होता है, किन्तु शनि के बारे में ऐसा नहीं है । जन्म-कुण्डली के अष्टम और द्वादश स्थान का शनि मंगल से भी अधिक अशुभ और दोषकर्ता है । ज्योतिषी के लिये कुण्डली गत ग्रहों के बलाबल विचार करना आवश्यक है । कर्क (नीच) का मंगल अशुभ नहीं होता ।

वर-वधू का कुण्डली मेलापन दस प्रकार से किया जाता है और हर प्रकार का अपना अलग महत्त्व है; जिसमें नाड़ी, वर्ग और योनि मुख्य हैं । योनि के लिये तो अधिक स्पष्टता की आवश्यकता नहीं है । शारीरिक गठन की भिन्नता से ही हाथी और कुत्ते या बकरा और सर्प का मेल नहीं मिलता, किन्तु मेरे अभिप्रायानुसार वर-कन्या की कुण्डलियों के मिलान में सतत अभ्यासी ज्योतिषी को आजकल बहुत विचारपूर्वक यह देखने की जरूरत है कि दोनों में कितना लेनदेन है, कितना तालमेल है और हर दृष्टि से उनका वैवाहिक जीवन किस प्रकार बन सकेगा । उदाहरणार्थ—मंगल अग्नि तत्त्व का ग्रह है और बुध पृथ्वी तत्त्व का । इन दोनों का मेल नहीं हो सकता, किन्तु मंगल सूर्य में और मंगल-गुरु में अच्छा मेल रहता है मंगल और शनि का मेल नहीं बैठता । यदि एक कुण्डली में महादरिद्र योग है तो उसके साथ सम्बन्ध होने से लाभ के बजाय हानि ही जाती है । कुण्डली-मेलापकका विचार करते समय वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों के लग्नका स्वामी और चन्द्र राशि का स्वामी परस्पर मित्र होने पर भी षडाष्टक या द्विर्द्वादश योग में नहीं होने चाहिये । एक कुण्डली में सन्तान-योग और दूसरी कुण्डली में वन्ध्यत्वयोग हो तो उनका परस्पर विवाह नहीं करना चाहिये एव एक में उत्साह, चैतन्य और दूसरे में जड़ता दारिद्र्य होने से वह सम्बन्ध भी वर्जित करना चाहिये ।

सिंह और कुम्भ राशि में कभी मेल नहीं हो सकता, भले ही इन राशिवाली कुण्डलियों के ग्रह असामान्यरूप से अच्छे ही क्यों न हों । अतः उनकी कुण्डलियों के द्वादश भावों का सम्पूर्ण विचार किये बिना ज्योतिषी को उन्हें परस्पर विवाह- सम्बन्ध करने की राय नहीं देनी चाहिये ।

विवाह होने के बाद पश्चाताप की अग्निमें जलकर दुःखी होनेकी अपेक्षा अविवाहित रहकर हीवृद्ध होना अधिक अच्छा है । आजकल की समाज-व्यवस्था में अनेक वैवाहिक दम्पत्तियों के सम्बन्ध मानसिक त्रास के कारण भंग होते देखे जाते हैं और विवाह-विच्छेद के मुकदमों की संख्या बढ़ती जा रही है । ऐसी दुःखद घटनाओं को रोकने के लिये ज्योतिषी को विवाह-मेलापक में सिर्फ नाड़ी दोष या मंगल दोष का विचार कर लेने में ही इतिकर्तव्यता न मानकर वर कन्या दोनों की कुण्डलियों की ग्रह-स्थिति का सम्यक्-रूपेण विचार करके ही अपनी सुनिश्चित राय देनी चाहिये ।

—स्व० श्री सी० जे०
कृष्णस्वामी ज्योतिषाचार्य
('ज्योतिष-रहस्य' से साभार)

नोट :—आगामी वर्ष कुछ नवीन सामग्री दी जायेगी ।
—सम्पादक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नैसर्गिक ग्रहमैत्रीचक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
चं· मं· गु·	सूर्य बुध	सू· चं· गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चं· मं·	बुध शनि	बुध शुक्र	मित्र
बुध	मं· गु· शु· श·	शुक्र शनि	मं· बु· शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	सम
शुक्र शनि		बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चं· मं·	शत्रु

भकूट के गुण ७ (वर)

कन्या	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	कं·	तु·	वृ.	ध·	म·	कुं·	मी·
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	०	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	०	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	०	७	०	७

गणगुण ६ वर

कन्या	दे.	म·	रा·
देव	६	५	०
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाड़ी के गुण ८

कन्या / वर	आ.	म·	अं·
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

१ वर्ण के गुण वर

कन्या	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्य के गुण वर

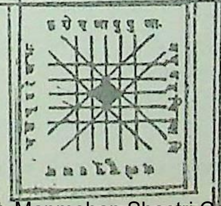
कन्या	च.	मा·	ज.	व.	की
चतुष्पाद	२	१	१	॥	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

योनिके गुण ४(वर)

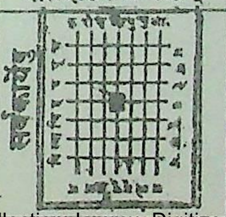
कन्या	अ·	ग·	मे.	स·	श्वा.	मा·	मू·	गौ.	म·	व्या·	मृ·	वा·	न·	सिं·
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	२
मार्जा	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	[illegible]	३	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	१
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	१	२	२	०	१	४	१	२	२	१
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	१	१	२	२	४

सूचना—वरके वर्ण, वश्य, तारा आदि खड़े तथा कन्या के पड़े स्तम्भोंमें दिये गये हैं।

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्



सप्तशलाकाचक्रम्।



तारा के गुण ३ वर

कन्या

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

ग्रहमैत्री के गुण ५ वर

कन्या	सू·	चं·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मङ्गल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

हंसक (तत्व) ९

तत्व	शत्रु	मित्र	अधि मित्र
अग्नि	जल	पृथिवी	वायु
पृथिवी	वायु	अग्नि	जल
वायु	पृथिवी	जल	अग्नि
जल	अग्नि	वायु	पृथिवी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गणानागुणैक्यबोधकचक्रम् (कन्याधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्)

वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन			वधू
नक्षत्र	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पुन. ३	पुन. १	पु.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. १ फा.	उ. ३ फा.	ह.	चि. २	चि. २	स्वा.	वि. ३	वि. १	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.॥ षा.	पू. षा. ३॥	उ. ष. १	उ. षा. ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श.	पू. ३ भा.	पू. १ भा.	उ. भा.	रे.	
अ.	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२२॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३६	१३ ३५	२५ +५	२६ +५	२४॥ +५	२६	२७	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६ +४	अ.
भ.	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०४१	२२॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० -१५	१८ ३५	३६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ -१	१७॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	२० १५	१८ ३५	१९ ३५	२७ +५	२८॥	२७	२६	१० १३२	१० १३२	२० -१	२४ -१	२२॥ +२४	१७॥ ३४	२६॥ +४	भ.
कृ. १	२७॥	२९ १	२८ २	१८ ३४	१० ११४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	२६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १२५	१९ १२५	१३ ३१५	१४॥ १३	१२॥ २३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ. १
कृ. ३	१८॥ ४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२	२२	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	१४॥ १२६	८॥ १३६	१३ १३५	११ ३५२	१० ३५२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ. ३
रो.	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२७ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० -१५	१९ -१६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९ ६	२० ६	१२॥ ३६२	१७ ३५२	१८ ३५	१७ ३५	२० -१५	२६ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो.
मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ ३	२१	१९॥	२४॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	११ ३६	१८ २६	२२॥ +२५	२६ +५	२५ +५	१३ ५३	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ. २
मृ. २	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९॥ -४	१२॥ ३४	१४॥ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१५ ६	१२ ३६	१५ ६	२३	१८ ३	१८ ३	२४ +२	२०॥ -२६	२४ -६	२४ -६	१२ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२६	१८ ३	२७	मृ. २
आ.	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ +१४	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१३॥ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२८ १	२१ -१५	२७ +५	२१ -१५	१४॥ १६	१८ २६	४ १३१२	२६ १३	२८	२७	२७	२३॥ -६	२३॥ -६	२३॥ -६	१९ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	२०॥ ३	२७	२७	आ.
पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१६ -३४	२३ ४०	१७॥ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२६	२६	२२॥ -६	२३॥ -६	२३॥ -६	१८॥ -६	१९॥ +५	१३ ३५	१७ ३५	१९॥ ३	२८॥	२८	पु. ३
पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८॥ ४	११ ३४	१५ ३४	२८ ३	३५ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८॥ ३	१९॥ ३	२०॥	२१	२८॥	२२॥	१९ +५	२५ +५	१०॥ ३५	८॥ ३६	२१ -६	२१॥ -६	२१॥ -६	२५	२६	२७	२२	१४ ६	८॥ ३६	११॥ ३६	१६ ३५	२६ +५	२४॥ +५	पु. १
पु.	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	२१॥ ३४	१८॥ ४	२२ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६॥	२७॥	१२॥ ३	१२	२७	२१॥	१३ +५	१८ ३५	२१ -५	१७॥ ६	२१॥ २३६	२१॥ २३६	२१॥ ६	२५	२४ -२	२५ -२	१३ ३	५ ३६	१५ ६	१८॥ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	पु.
श्ले.	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२॥ ४	१२॥ १४	१५॥ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ [illegible]	१५॥ १४	१८॥ १४	२१॥ १	२१॥	२६॥	२६	१२॥ ३	१८ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२३ ६	१६॥ १६	१६॥ १६	८॥ ३१६	१२ १३	१२ ३	१३ ३	२७	१९ ६	२० ६	१३ १६	१८॥ १५	२१	१३ ३५	श्ला.
म.	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२३॥ १	२०॥ -२	१६॥ +२४	१९॥ +४	१६ ३५२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	१९ १५	९॥ १३५	३॥ ३१६	३॥ ६३	४॥ ६३	१७॥ ६	२४॥	२५॥	१७॥ १	१७॥ -१६	१९॥ १६	१३ ३६	म.
पू. फा	२६ +५	१८ ३५	२० -१५	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ +२४	१७॥ ३४	१६॥ -२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२॥ +४	७॥ १३४	२०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ +१५	१७ ३५	१७ ३५	२४ +५	१८ ६	१७॥ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	२०॥ १३	१९॥	२३॥	२३॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६	पू.
उ. फा १	१६॥ ३५	२६ +६	२० -१५	२१ १	३६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ -२४	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ २२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ ३५	२५ +५	२५ +५	१९ ६	१९ ६	२० ६	११॥ २६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६	उ. १
उ. फा ३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ +१५	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२०॥ ३	२८॥	२२॥ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ +१२	१६॥ १२४	२५॥ +४	१६॥ १२४	१९ १२	२८	१४ १३	१४ १३	२९॥	२८॥	२९॥	२५ +५	२५ +५	२५ +५	१६॥ +१५	१६॥ -२६	२०॥ ३१६	१४॥ २६	१८ ३	२९	२८	उ. ३
ह.	१० २१६	३० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२०॥ ३	२८॥	२३॥	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ १४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२१	२८	१५ ३	१५ ३	२७	२६	२७॥	२४ +५	२५ +५	२५ +५	२१ +५	२१ -६	८॥ ३६२	१५॥ ३६	१९ ३	२७	२८	ह.
चि. २	१३ ६	५ १३५	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२७ १	२५॥	२१॥	१२॥ ३	२७॥	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२९	१२ ३	२६	२८	१४ १३	१३ १३	२१ १	१७॥ १५	१९ +५	१९ +५	१८ ३५	१८ ३६	२४ -६	१८॥ १६	२२ १	११ १३२	२०	चि. २

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कन्या ↓ / वर →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अ.	भ.	कृ.१	कृ.३	रो.	मृ.२	मृ.२	आ.	पु.३	पु.१	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.१	उ.३	ह.	चि.२
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२१	१२ ३	२७	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४
	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९॥	२८	१५ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२१ १५	२१ +५	२२॥	२२॥	१९ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१३ ६	१४॥ १६	१४॥ ६	१९ -५	१९ -५	१५॥ -३५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१८ १२	१९	२८
	अनु.	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	११ ३६	१६ २६	२२॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥ ३	२९॥	२६	२७	१२ ३
	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१३ ६	३ ३१६२	६ ६३	२०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १२	१३ १३	१३ ३	२५
धनु	मू.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ १६	२२	१५ १३	१२ ३	८॥ ३६	१७॥ ६	२४ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ १३	१३ ३	२७
	पू.॥ षा.	२६ ३५	१८ १५	१८ +५	१२॥ ६	१८ १६	१० ६	१८	२७ १३	२७ ३	२४॥ ३६	१३॥ ६	१७॥ ६	१९ +५	१७ १५	२५ १५३	२८॥ १३	२७ ३	१३
	पू.३॥ षा.	२७ +५	१९ ३५	१९ १२५	१३॥ १६२	१९ ६	११ ३६	१७ ३	२६	२६	२३॥ ६	२३॥ २३६	१७॥ १६	२० -१५	१७ ३५	२५ +५	२७॥	२६	१२ १३
	उ.१ षा.	२५॥ +५	२७ +५	१३ १३५	७॥ १३६	११॥ ३३६	१८ २६	२४ +२	२६	२६	२३॥ ६	२३॥ ६	९॥ १६३	८॥ १५२	२४ +५	२६ +५	२७॥	२७॥	२० १
मकर	उ.३ षा.	२८	२९॥	१५॥ १३	१३ १३५	१७ २३५	२३॥ +२५	२०॥ +२६	२२॥ -६	२२॥ -६	२७	२५	१३ १३	३॥ १३६	१९ ६	२१ ६	२५ +५	२५ ५	१७॥ १५
	श्र.१॥	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ +५	२३ -६	२१॥ -६	२२॥ -६	२७	२५ +२	१४ ३	५॥ ३६	१७॥ ६	१९ ६	२४ +५	२५ +५	२० ५
	श्र.२॥	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२३ -६	२१॥ -६	२२॥ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२४ +५	२५ +५	१९ ५
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१० ३६	१८ १६	१६॥ -६	२२	१३ ३	२८	१८॥ ६	४॥ १३६	१२॥ १६	१६॥ १५	२० +५	१६ ३५
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	२० १५	१८॥ +५	१४ ६	५ ३६	२० ६	२४॥	२०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	२१ +६	१८ ३६
	श.	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	७॥ ३६	१५ ६	२१ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६
	पू.३ भा.	१८ ३	२५ +२	२० -२	२४॥ -२	३१॥	३१॥	२४॥ +५	१८ ३५	१८ ३५	१३॥ ३६	२०॥ ६	१४ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१७॥ +३६	१७॥ १६
मीन	पू.१ भा.	२४॥ ३४	२१॥ +४२	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२६	१९॥ ३	१९॥ ३	१८ ३५	२५ ५	१८॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ +६	१४॥ ३६	१७ ३	१९ ३	१९ +१
	उ.भा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१८ ३	२६	२८॥	२७ ५	१९ ३५	२१ ३५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२८	२७	१० १३३
	रे.	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ६	१७ ६	२६	२६	२५	२७	२५॥ ५	२७ ५	२४ ६५	२२ ३६	२२॥ +६	२२॥ ६	२६	२७	२०

कन्या ↓ / वर →		तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन			शुद्ध वधू
		चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अ.	ज्ये.	मू.	पू.॥	पू.३॥	उ.१	उ.३	श्र.१॥	श्र.२॥	ध.२	ध.२	श.	पू.३	पू.१	उ.	रे.	
तुला	चि.२	२८ ३	२७ ०	३४॥	२४॥ ४	७॥ ३४	२१॥ ४	२८	१४ १३	१३ १३	२१ १	२५॥ १	२७	२७	२६ ३	२० ३५	२६ +५	२०॥ १५	१५ १६	४ [illegible]	१३ ६	चि.२
	स्वा.	२८	२८ ३	२० ०३	१० ३४०	२३॥ ४	१८॥ ४	२३	२७	२६	१८ ३	२३॥ ३	२३॥ ३	२३॥ ३	२९	२३ +५	२० +५२	२७ +५	२१॥ ६	२० ६	१३ ३६	स्वा.
	वि.३	३४॥	१९ ३	२८ ३	१८ ३४	१७ ०४	२२॥ ४	२८	२२ १	२१ १	१३ १३	१७॥ १३	१७॥ ३	१७॥ ३	३२॥	२६॥ +५	२६ +५	२२ १५	१६॥ १६	१३॥ १६२	५ ३६	वि.३
वृश्चिक	वि.१	२३॥ ४	८ ३४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२३॥ ४	१७॥ १४	१७॥ ४१	९॥ १३४	१२ १३	१२ ३	१२ ३	२७	२७	२६॥	२२॥	२१ १५	१८ १६२	९॥ ३५	वि.१
	अनु.	७॥ ३४	२२॥ ४	१७ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१६॥ +२४	१४॥ ३४	१४॥ ३४	२२॥ +४	२५	२६	२६	१२ ३	१२ ३	२२	२५॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	अ.
	ज्ये.	२०॥ ४	१६॥ ४	२०॥ ४	३२॥	३०	२८ ३	१५ [illegible]	१७॥ १४	१७॥ १४	१७॥ १४	२० १	२०	२०	२५	२५	१३ ३	११ १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	ज्ये.
धनु	मू.	२७	२१	२७	२४॥ +४	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२७ ०१	२५॥ १	१५॥ १४	१५॥ ४	१५॥ ४	२१॥ ४	२९॥	२१॥ ३	१५॥ १३	१७॥ १३	२५॥ १	२७	मू.
	पू.॥ षा.	१२	२७	२१ +४	१८॥ +२४	१६॥ ३४२	१८॥ ३	२८ ०१	२८ ३	२७ ३	३३ ४	२३ ४	२३॥	२३॥ ३	७॥ १३	१५॥ १३	२३॥ १३	२९॥ १३	३१॥	२३॥ ३	३१॥	पू.॥
	पू.३॥ षा.	१२ १३	२६	२० १	१८॥ -१४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२७ +१	२७ ३	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२४॥ ४	२३॥ ४	७॥ १३४	१४॥ १३	२२॥ १	२८॥	३१॥	२३॥ ३	३१॥	पू.३॥
	उ.१ षा.	२० १	१८ ३	१२ १३	१०॥ १३४	२४॥ +४	१८॥ -१४	२५॥ -२	३३	३४	२८ ३	१८ ३४	१६ ३४१	१५ ३४१	१५॥ १४	२२॥ १	२२॥ १	२८॥	३१॥	३१॥	२३॥ ३	उ.१
मकर	उ.३ षा.	२४॥ -१	२२॥ ३	१६॥ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६॥ १४	२४ ४	२५ ४	१९ ३४	२८ ३	२६ ३०	२५ ३०	२५॥ +१	१७॥ +१४	१७॥ +१४	२३॥ +४	२९॥	२९॥	२१॥ ३	उ.३
	श्र.१॥	२७	२२॥ ३	१७॥ ३	१४ ३	२७ ३	२२	१७॥ ४	२३॥ ४	२४॥ ४	१६ ३	२५ ३	२८ ३	२७ ३	२८ -०	२० ०४	१८॥ +४	२२॥ +४	२८॥	२८॥	२१॥	श्र.१॥
	श्र.२॥	२६	२२॥ ३	१६॥ ३	१३ ३	२७	२२	१७॥ ४	२३॥ ४	२३॥ ४	१५ ३४	२४ ३	२७ ३	२८ ३	२९ -०	२० ०४	१८॥ +४	२२॥ +४	२९॥	२९॥	२२॥ ३	श्र.२॥
	ध.२	२३ ३	२७	३२॥	२८	१२ ३	२६	२२॥ ४	८॥ ३४१	८॥ ३४१	१६॥ ४१	२५॥ १	२७ १	२८ १	२८ ३	१९ ३४	२४ ४०	१९॥ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.२
कुम्भ	ध.२	१८ ३५	२२ -५	२६॥ -५	२८	१२ ३	२६	३०॥	१६॥ १३	१५॥ १३	२३॥ १	१८॥ १४	२० १४	२० १४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८॥ १४	७॥ १३४	१४॥ ४२	ध.२
	श.	२६ +५	१९ +२५	२६ +५	२७॥	२२	२० ३	२२॥ ३	२४॥ १	२३॥ १	२३॥ १	१८॥ २४	१८॥ +४	१८॥ +४	२५ +४	३३	२८ ३	१९ १३०	९ [illegible]	१७॥ १४	१६॥ ४	श.
	पू.३ भा.	१८॥ -१५	२८ +५	२२ -१५	२२॥ १	२७॥	१२ १३	१६॥ १३	३०॥	२९॥	२९॥	२४॥ +४	२४॥ +४	२४॥ +४	२०॥ -१४	२८॥ -२	१९ १३	२८ ३	१८ ३४	२३ ०४	२०॥ ४२	पू.३
मीन	पू.१ भा.	१२ १६	२१॥ ६	१५॥ १६	२१ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१६॥ १३	३०॥	३०॥	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	२५॥ १	१७॥ १४	८ १३४	१७ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२	पू.१
	उ.भा.	३ [illegible]	३० ६	१२॥ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४॥ -२	२२॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	१४॥ १३	६॥ २३४	१६॥ १४	२२ ४	३३	२८ ३	३५ ०	उ.
	रे.	२२ ६	२२ ३६	५ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२७	२९॥	२९॥	२१॥ ३	१९॥ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४॥ ४२	१६॥ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	रे.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: सुगम प्रश्न चौंतीसा :—

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

लीजिये सुविज्ञ पाठक ! आपके दैनिक जीवन में आने वाले ३४ प्रमुख प्रश्नों के उत्तर सरल-सुबोध विधि से दे रहे है। यह सिद्ध चौतीसा यन्त्र है। इसकी विशेषता यह है कि किन्ही भी चार सम्बन्धित अंकों का योग सदैव ३४ ही होता है। इस प्रश्नावली में भी ३४ प्रश्न ही है। प्रश्नों को क्रमवार सामने लिखा गया है। आपको जिस प्रश्न का उत्तर चाहिये उसका क्रमांक याद कर लें। उसके बाद अपने इष्ट देव का स्मरण (श्रीष्ट देवाय नमः) करते हुये इस 'सिद्ध चौंतीसा यन्त्र' के किसी चक्र में आँख बन्द करके कोई शंकु या अंगुली रखें। बस यही आपका उत्तरांक है। अब अपने प्रश्नांक के नीचे अभीष्ट चौतीसांक (उत्तरांक) के सामने देखें; आपको सही उत्तर मिल जायेगा। ध्यान-रहे कि इस प्रश्नावली का मनोविनोद के लिए प्रयोग करने पर उत्तर ठीक नहीं मिलेंगे। साथ ही सिद्ध चौंतीसा यन्त्राभिमानी देवता के रुष्ट हो जाने का भी भय है। एक दिनमें केवल २ प्रश्नों का ही उत्तर देखें।

उदाहरण :—माना किसी व्यक्ति ने ज्योतिषी के पास आकर पूछा "इस गर्भ से पुत्र होगा या कन्या होगी ?" इस प्रश्न का क्रमांक २२ है। 'चौंतीसा यंत्र' में हाथ की अंगुली रखने पर ९ अंक आया। प्रश्नांक २२ के नीचे उत्तरांक ९ के सामने "पुत्री होगी, पर जीवित बचे रहने में सन्देह है" यह उत्तर मिला एवं सर्वत्र।

प्रश्न क्रमांक

१. क्या मेरी मनोकामना पूर्ण होगी ?
२. इस वर्ष मेरी उन्नति (प्रमोशन) होगी या नहीं ?
३. क्या मेरा तबादला (ट्रांसफर) निकट भविष्य में होगा ?
४. मेरी खोई हुई वस्तु (नष्ट वस्तु) मिलेगी या नहीं ?
५. मेरी यह यात्रा सफल रहेगी या नहीं ?
६. यह विवाह मेरे लिये हितकारक होगा या नहीं ?
७. वर्तमान कष्ट से कब तक मुक्ति मिलेगी ?
८. मुझे ऋण मिलेगा या नहीं ?
९. अमुक कार्य में लाभ होगा या हानि ?
१०. घर से भागा हुआ प्राणी किस दशा में है ?
११. परीक्षा (प्रतियोगिता) में सफल या असफल ?
१२. मेरे लिये नौकरी ठीक है या व्यापार ?
१३. मेरा खोया पशु किस ओर गया है ?
१४. जो स्वप्न देखा है, उसका फल क्या होगा ?
१५. परदेश गया व्यक्ति कब तक आयेगा ?
१६. अमुक व्यक्ति (या बात) विश्वसनीय है या नहीं ?
१७. अमुक रोगी शीघ्र स्वस्थ होगा या नहीं ?
१८. मेरा सोचा हुआ काम बनेगा या नहीं ?
१९. मुझे (यह) नौकरी मिलेगी या नहीं ?
२०. मुझे साझे के रोजगार में लाभ होगा या नहीं ?
२१. यह खबर झूठी है या सच्ची ?
२२. इस गर्भ से पुत्र होगा या पुत्री ?
२३. मैं इस मुकदमे में जीतूँगा या नहीं ?
२४. जिस मकान में रहता हूँ उसमें क्या दोष है ?
२५. अमुक बंदी छूटेगा या नहीं ?
२६. अमुक व्यक्ति से मेरा काम बनेगा या नहीं ?
२७. मेरे ऋण की पूर्ति कब तक होगी ?
२८. अमुक व्यक्ति को रोग है या कोई अन्य बाधा ?
२९. यह जायजाद मेरे लिए कैसी रहेगी ?
३०. मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा ?
३१. अमुक को सन्तान होगी या नहीं ?
३२. [illegible] कब तक [illegible] ?
३३. क्या बिगड़ा काम किसी प्रकार बनेगा ?
३४. मेरे पूरे परिवार के लिए यह वर्ष कैसा है ?

॥ प्रश्नांक १ के उत्तर ॥

१. कुछ तो पूर्ण हो जायेगी, अधिकांश अधूरी रहेगी।
२. कामना की पूर्ति में विलम्ब है। पर होगी।
३. मनोकामना की सिद्धि में कोई स्त्री बाधक है।
४. चिन्ता मत करो, मनोकामना अवश्य पूरी होगी।
५. मनोकामना पूरी होने में सन्देह है।
६. किसी की मदद लो, कामना पूरी होगी।
७. इच्छा पूर्ति होना बहुत कठिन है।
८. कामना पूरी नहीं होगी। शत्रु बाधक हैं।
९. मनोकामना पूरी हो जायेगी। धैर्य रक्खें।
१०. मनोकामना विलम्ब से पूरी होगी।
११. आपकी मनोकामना अवश्य पूरी होगी।
१२. कामना की पूर्ति कुछ देर से ही होगी।
१३. मनोकामना पूरी नहीं होगी।
१४. ग्रह-दोष के कारण कामना पूर्ति नहीं हो रही है।
१५. कामना के सिद्ध होने में कुछ रुकावटें हैं।
१६. कामना की पूर्ति में घर के ही लोग बाधक हैं।

॥ प्रश्नांक २ के उत्तर ॥

१. उन्नति (प्रमोशन) की कोई आशा नहीं है।
२. तरक्की (उन्नति) की आशा छोड़दो, सन्देह है।
३. इस वर्ष उन्नति की आशा मत करो।
४. आपकी उन्नति (प्रमोशन) इसी वर्ष होनी है, होगी।
५. राहु के अनिष्टकारी होने से रुकावट है, शान्ति कराओ।
६. उन्नति की पूरी सम्भावना है, प्रयत्न करो होगी।
७. आपकी उन्नति में दुश्मन बाधक हो रहे हैं।
८. उन्नति की कोई आशा नहीं है, फिर भी धैर्य रखो।
९. साधारण सी उन्नति के योग पाये जा रहे हैं।
१०. उन्नति में ग्रह-बाधा पड़ रही है। ग्रह-शांति कराओ।
११. इस वर्ष उन्नति की कोई आशा मत करो। नहीं है।
१२. रोजी-रोजगार में उन्नति होगी, नौकरी (पद) में नहीं।
१३. उन्नति में अनेक प्रकार की बाधायें आयेंगी।
१४. [illegible] उन्नति होगी, प्रयत्न जारी रखो।
१५. कुछ कार्यों में उन्नति, कुछ में अवनति होगी।
१६. साधारण सी उन्नति की आशा रख सकते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ प्रश्नांक ३ के उत्तर ॥

१. पूर्व दिशा की ओर स्थानान्तरण का योग है।
२. तबादला नहीं हो पायेगा।
३. इस वर्ष आपका स्थानान्तरण नहीं हो सकेगा।
४. पश्चिमोत्तर दिशा की ओर स्थानान्तरण का योग है।
५. पूर्वोत्तर दिशा में तबादला हो सकता है।
६. तबादले की कोई आशा नहीं है।
७. तबादले की कोई आशा नहीं है।
८. तबादला होते-होते रुक जायेगा।
९. पश्चिम दिशा की ओर तबादला होगा।
१०. तबादले का आदेश होकर भी रुक जायेगा।
११. तबादले का पूर्ण योग है। प्रयत्न करना होगा।
१२. वर्ष के अन्त तक एक अवसर आयेगा।
१३. तबादले की आशा छोड़ दो। कभी अचानक होगा।
१४. दक्षिण दिशा में स्थानान्तर के योग हैं।
१५. तबादला भी होगा और पदोन्नति भी। प्रयत्न करें।
१६. उत्तर दिशा में आशा रख सकते हैं, पर सन्देह है।

॥ प्रश्नांक ५ के उत्तर ॥

१. सफलता में सन्देह है। विचार कर लें।
२. इस यात्रा में कुछ नुकसान हो सकता है।
३. यात्रा में आंशिक सफलता का योग है।
४. यात्रा में झगड़ा-झंझट एवं आर्थिक हानि सम्भव है।
५. यात्रा की सफलता में सन्देह है।
६. यात्रा में सफलता मिलना असम्भव सा है।
७. किसी सहायक के सहयोग से सिद्धि का योग है।
८. यात्रा में सफलता मिलना सन्देहास्पद है।
९. यात्रा की सफलता में शत्रु बाधक होंगे।
१०. इस यात्रा को त्याग दो। संकट व हानि का भय है।
११. यात्रा में सफलता मिलना सन्देहास्पद है।
१२. यात्रा सम्बन्धी कार्य अवश्य सफल होगा।
१३. यात्रा में पूर्ण सफलता मिलेगी।
१४. इस यात्रा से कार्य सिद्धि की आशा त्याग देवें।
१५. सामान्य सफलता एवं कुछ संकट, दोनों होंगे।
१६. यात्रा में सफलता तो मिलेगी। विलम्ब अधिक होगा।

॥ प्रश्नांक ७ के उत्तर ॥

१. कुल-देवता का पूजन करने से कष्ट दूर हो जायेगा।
२. चार मास अभी कष्ट बना रहेगा। शनि दान दो।
३. पितरों के प्रकोप से कष्ट मिल रहा है। उपाय करें।
४. किसी मित्र की सहायता से कष्ट दूर होगा।
५. कष्ट से शीघ्र मुक्ति मिलना बहुत कठिन है।
६. १॥ वर्ष तक अभी और कष्ट बना रहेगा। पर कम।
७. कठिन कष्ट पड़ा है। देर से ही मुक्ति हो सकेगी।
८. तीन माह बाद कष्ट से मुक्ति होने लगेगी।
९. हनुमत्पूजा या बन्दरों को चना खिलानेसे शान्ति होगी।
१०. यह विषम परिस्थिति है। कठिनाई ही होगी।
११. एक वर्ष अभी और कष्ट है। तब दूर होगा।
१२. शीघ्र ही मुक्ति मिलने वाली है। विष्णु पूजा करो।
१३. प्रेत-बाधा सी मालूम पड़ती है। शान्ति कराओ।
१४. पाँच माह बाद शनैः शनैः दूर हो जायेगा।
१५. सात माह बाद धीरे-धीरे दूर होगा।
१६. शीघ्र ही कष्ट दूर होगा। दुर्गा पाठ करायें।

॥ प्रश्नांक ४ के उत्तर ॥

१. एक सप्ताह तक नहीं मिली तो आशा छोड़ दें।
२. मिलने की आशा छोड़ दें। × मिलने में सन्देह है।
३. आपकी वस्तु अनेकों चोरों के हाथ में है। नहीं मिलेगी।
४. कुछ दिन बाद मिलने की आशा है। धैर्य रक्खें।
५. नष्ट वस्तु सुरक्षित है। आशा है कि मिलेगी।
६. नष्ट वस्तु का पता कुछ दिन बाद ही चलेगा। ×
७. गहरे चोर ने हाथ मारा है। नहीं मिल सकेगी।
८. नष्ट वस्तु मिलने की कोई आशा नहीं है।
९. १५ दिन बाद मिलने की सम्भावना है।
१०. नष्ट वस्तु निश्चित मिलेगी। धैर्य रक्खें।
११. नष्ट वस्तु शीघ्र ही मिल जायेगी।
१२. नष्ट वस्तु चोरी गयी है। मिलना कठिन है।
१३. नष्ट वस्तु मिलने की आशा छोड़ दें।
१४. मिल जायेगी। परन्तु कठिन प्रयत्न करना होगा।
१५. ६ दिन तक पता चल जाने की आशा है।
१६. इस वस्तु का मिलना कठिन सा ही है।

॥ प्रश्नांक ६ के उत्तर ॥

१. इस विवाह का परिणाम भयकारी है।
२. विवाह होने का योग ही नहीं मिलता।
३. यह विवाह कल्याणकारी है। कर डालो।
४. विवाह दुःख दायक है। स्त्री (पुरुष) रोगी होवे।
५. विवाह कल्याण कारी होगा।
६. विवाह शुभ है। पति-पत्नी में परस्पर प्रीति होगी।
७. इस विवाह से सन्तान-सुख कम मिलेगा।
८. वैवाहिक-सुख-सौहार्द्र की कमी रहेगी।
९. इस विवाह से अधिक सौख्य नहीं होगा।
१०. विवाह होगा तो बाद में सम्बन्ध विच्छेद का भय है।
११. यह विवाह हितकारक नहीं है। मत करो।
१२. विवाह सुखदायक है। कर लेना चाहिये।
१३. इस विवाह में रिस्तेदार ही बाधक होंगे।
१४. यह वैवाहिक सम्बन्ध अति उत्तम है।
१५. पति-पत्नी में सदैव ही खटपट रहा करेगी।
१६. यह पत्नी स्त्री—सन्यासी के समान है।

॥ प्रश्नांक ८ के उत्तर ॥

१. जहाँ से आशा है—वहाँ से कम ही मिलेगा।
२. समय खोटा चल रहा है—कर्ज लो ही मत।
३. दौड़ धूप ज्यादा करो तो कर्ज मिल सकता है।
४. चिड़ियों को दाना खिलाओ। कहीं से कुछ मिलेगा।
५. कर्ज मिलना कठिन लग रहा है।
६. कर्ज दाता टाल-मटोल अधिक करेगा।
७. कर्ज मिल सकता है। कुत्ते को दूध पिलाओ।
८. धरोहर रखने पर ही कर्ज मिल सकेगा।
९. किसी मित्र की मदद से कर्ज मिलेगा।
१०. परेशान हो जाओगे। कर्ज फिर भी न मिलेगा।
११. कर्ज मिलने की पूरी आशा है।
१२. विलम्ब से कर्ज प्राप्ति हो पायेगी।
१३. किसी स्त्री से कर्ज मिल सकता है।
१४. ऋण मिलने की पूरी आशा है।
१५. आशा ही मत करो। न लो। दिन खोटे हैं।
१६. कर्ज तो मिल जायेगा पर चुकता होना कठिन है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ प्रश्नांक ९ के उत्तर ॥

१. इस कार्य में हानि और पछतावा होगा ।
२. इस कार्य मे लाभ की तनिक भी आशा मत करो
३. इस कार्य में गहरी हानि की सम्भावना है ।
४. हाँ, इस कार्य में सन्तोषप्रद लाभ होगा ।
५. इस कार्य में अच्छे लाभ की आशा है ।
६. इस कार्य में मध्यम हानि-लाभ दोनों होंगे ।
७. पहले सामान्य लाभ, बाद में कुछ हानि होगी ।
८. लाभ की आशा रखकर ही कार्यारम्भ करो ।
९. इस कार्य का अन्तिम परिणाम लाभकारी है ।
१०. यह काम होना ही कठिन है । लाभ हानि कैसी ?
११. इस कार्य में लाभ की आशा कम ही है ।
१२. कुछ हानि की ही सम्भावना है । लाभ नहीं ।
१३. लाभ की आशा छोड़ दो । हानि होगी ।
१४. आर्थिक परेशानी एवं कठिनाई होगी ।
१५. इस कार्य में साधारण लाभ होगा ।
१६. साधारण लाभ की आशा कर सकते हैं ।

॥ प्रश्नांक १० के उत्तर ॥

१. बुरी हालत में है—कुछ देर से आ जायेगा ।
२. पश्चिम देश को चला गया है । तंगी में है ।
३. दक्षिण में भूखा-प्यासा सा पड़ा है । और आगे =
४. नजदीक में ही है । जल्दी ही आ जायेगा ।
५. आगे ही बढ़ता जा रहा है । वापिसी की आशा कम है ।
६. उसके वापस आने की प्रतीक्षा करो । आयेगा ।
७. पूरब की ओर आगे बढ़ रहा है । आने में देर होगी ।
८. यह प्राणी शीघ्र वापिस नही आ सकता [= जायेगा ।
९. वह घर के लिए चल चुका है, आ जायेगा ।
१०. वापसी में विलम्ब होगा—पूरब को गया है ।
११. भागा हुआ प्राणी पूरब दिशा में जीवित है ।
१२. उत्तर दिशा में बीमार हो गया है । देर से आयेगा ।
१३. भागा हुआ प्राणी कुसंगति एवं बुरे कार्यों में फंस गया है ।
१४. उसके तो जीवित रहने में ही सन्देह है ।
१५. पश्चिम में किसी स्त्री (पुरुष) के संग में है । देर से a
१६. वह दूर तक बढ़ेगा । आने में देर है । [illegible]

॥ प्रश्नांक ११ के उत्तर ॥

१. कोई शुभ यंत्रादि धारण करो, सफल हो जाओगे ।
२. सफलता में सन्देह लग रहा है ।
३. केवल ईश्वर कृपा से ही सफल हो सकते हो ।
४. विशेष कृपा होने पर सफल हो जाओगे ।
५. हाँ सफल हो जाओगे ।
६. सफल हो जाओगे । गरीबों को कुछ दान दो ।
७. अच्छे अंकों से सफल होने की सम्भावना है ।
८. सफल होना बहुत ही कठिन लग रहा है ।
९. कठिन परिश्रम से ही सफल हो पाओगे ।
१०. सफल होना बहुत ही कठिन है ।
११. हाँ सफल हो जाओगे ।
१२. सफलता संदिग्ध लगती है । यंत्रादि धारण करो ।
१३. असफल हो जाने का पूर्ण भय है । परिश्रम करो ।
१४. इस परीक्षा (प्रतियोगिता) में असफलता है ।
१५. अच्छे ढंग से उत्तीर्ण होने का योग है ।
१६. सफल होने की आशा तो है, पर बहुत कम ।

॥ प्रश्नांक १२ के उत्तर ॥

१. नौकरी में एक जगह स्थिर रहना कठिन है ।
२. नौकरी से अच्छा रोजगार ही रहेगा । सोच लें ।
३. ईमानदारी से अपना रोजगार चलाओ, यही ठीक है ।
४. रोजगार में घाटा रहेगा ।
५. नौकरी से ही जीवन-यापन करना होगा ।
६. नौकरी में सफल नहीं रहेंगे ।
७. व्यापार ही करो, नौकरी में आर्थिक हानि है ।
८. क्या नौकरी, क्या व्यापार; स्थिरता कहीं नहीं है ।
९. रोजगार करो, एक इसी से सितारा चमकेगा ।
१०. साधारण जीवन बीतेगा, वह भी नौकरी से ।
११. स्वतन्त्र रोजगार करें—नौकरी बिलकुल नहीं ।
१२. रोजगार करना ही अच्छा है । नौकरी सामान्य रहेगी ।
१३. दोनों ही काम मनपसन्द नही होंगे ।
१४. नौकरी तथा व्यापार दोनों ही करने है, करेंगे ।
१५. परिश्रम पूर्वक रोजगार करो । अच्छा लाभ होगा ।
१६. नौकरी [illegible]

॥ प्रश्नांक १३ के उत्तर ॥

१. खोया पशु पूर्व में गया है, मिल जायेगा ।
२. पशु दक्षिण की ओर गया है । मिलेगा ।
३. खोया पशु पूर्व में गया है । मिलने की आशा अल्प है ।
४. दक्षिण को गया है, मिलना बहुत कठिन है ।
५. पशु पश्चिम में गया है, प्रयत्न से मिलेगा ।
६. पशु गया तो दक्षिण है पर मिलना कठिन है ।
७. दक्षिण को गया है कदाचित् ही मिले ।
८. उत्तर पश्चिम के कोण में गया है । मिले न मिले ।
९. उत्तर गया लगता है । ढूंढो तो मिल सकता है ।
१०. पूरब की ओर गया है । जल्दी करने से मिलेगा ।
११. उत्तर को गया है । खोजो तो मिल जायगा ।
१२. पूर्वोत्तर में गया है । मिलना अति कठिन है ।
१३. उत्तर की ओर गया लगता है । नहीं मिल सकेगा ।
१४. पश्चिम को गया है । ढूंढो तो मिल जायगा ।
१५. पश्चिम गया है, जल्दी करने पर ही मिलेगा ।
१६. कहीं फँस गया लगता है । प्रयत्न करो तो ठीक है ।

॥ प्रश्नांक १४ के उत्तर ॥

१. स्वप्न का फल दुर्घटना सूचक है ।
२. अग्निभय का संकेतक है । सचेत रहें ।
३. अनायास खर्च बढ़ जाने का सूचक है ।
४. उत्तम समाचार मिलेगा, प्रसन्नता होगी ।
५. किसी शुभ समाचार की प्रतीक्षा करें ।
६. घर में खुशी एवं धन लाभ होगा ।
७. दुश्मनों से पीड़ा मिले, सावधान रहें ।
८. किसी अनिष्ट की सम्भावना है ।
९. इस स्वप्न का प्रभाव शून्य है ।
१०. सामान्य फल है । न शुभ न अशुभ ।
११. धन-लाभ होने वाला है ।
१२. किसी मुख्य अतिथि का आगमन है ।
१३. स्त्री-परिवार और रोग से चिन्ता रहे ।
१४. शान्ति कराओ, स्वप्न फल अशुभ है ।
१५. स्वप्नफल अत्यन्त सुखदायक है ।
१६. [illegible] जायेगा, स्वप्नफल शुभ है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ प्रश्नांक १५ के उत्तर ॥

१. विपत्ति में पड़ गया लगता है, आने में देर लगेगी।
२. कुछ दिन प्रतीक्षा करो, वापस आ रहा है।
३. कुछ रोग से पीड़ित हो गया है, आने में विलम्ब है।
४. शीघ्र ही लौटने की आशा है। प्रतीक्षा करो।
५. और आगे बढ़ रहा है, जल्दी आने की कोई आशा नहीं।
६. परदेशी के वापस आने में विलम्ब लगेगा।
७. शीघ्र ही लौटने की सम्भावना लग रही है।
८. शीघ्र ही लौट आयेगा।
९. बस! आज-कल में ही आने वाला है।
१०. दो सप्ताह में आने की सम्भावना है।
११. परदेश गया व्यक्ति एक सप्ताह में वापस आयेगा।
१२. आर्थिक संकट में है। देर से ही लौट सकेगा।
१३. आने के लक्षण लगते हैं। प्रतीक्षा करो।
१४. वापस आने में अब कोई देर नहीं है।
१५. वह अभी वापस आने वाला नहीं है।
१६. दो सप्ताह प्रतीक्षा करो, तबतक लौट आयेगा।

॥ प्रश्नांक १६ के उत्तर ॥

१. संदिग्ध है। उस पर विश्वास मत करना।
२. विश्वासी तो है पर भरोसा करना ठीक नहीं है।
३. इसका तनिक भी विश्वास मत करो।
४. हाँ यह विश्वास भाजन है।
५. हाँ इस पर विश्वास कर सकते हैं।
६. शत-प्रतिशत विश्वसनीय है।
७. विश्वास पात्र है, निश्चिन्त रहें।
८. यह पूरी तरह विश्वास पात्र है।
९. यह अवश्यमेव ही विश्वास के योग्य है।
१०. इसके ईमान (विश्वास) का कोई ठिकाना नहीं है।
११. यह विश्वास के योग्य नहीं है।
१२. विश्वास मत करना, ठीक समय पर धोखा देगा।
१३. इसका विश्वास करना ठीक नहीं लगता है।
१४. सोच समझकर होशियारी से ही विश्वास करना।
१५. यह ईमानदार और विश्वसनीय है।
१६. ईमानदार सत्यवादी एवं पूर्ण विश्वास योग्य है।

॥ प्रश्नांक १७ के उत्तर ॥

१. रोगी को नजर (दीठ) लगी है, उपाय करो।
२. रोगी देर से अच्छा होगा।
३. मृत्यु तुल्य कष्ट है, थोड़ा बहुत रोगी सदैव रहेगा।
४. हाँ यह शीघ्र ही रोग मुक्त हो जायगा।
५. बच जायेगा, परन्तु कष्ट अधिक उठाना है।
६. हाँ, यह रोगी शीघ्र अच्छा हो जायेगा।
७. यह रोग बदपरहेजी के कारण से बढ़ रहा है।
८. हाँ, रोग से मुक्ति मिलेगी, आजकल ग्रह खराब है।
९. शीघ्र ही स्वस्थ होने के योग हैं।
१०. रोगी असाध्य है, ग्रह शान्ति कराने की व्यवस्था करें।
११. रोगी काफी देर से अच्छा होगा।
१२. परहेज न किया तो फिर बीमार हो जायेगा।
१३. दवा जारी रक्खी जाय, कुछ समय बाद आराम होगा।
१४. रोगी को टोना-टोटका किया गया लगता है।
१५. रोगी को ब्रह्मदोष है, शान्ति करावें।
१६. यंत्र धारण करने से रोग मुक्त हो जायेगा।

॥ प्रश्नांक १८ के उत्तर ॥

१. काम कुछ-कुछ बनकर फिर बिगड़ जायेगा।
२. काम सफल होना कठिन है, शनिदेव बाधक हैं।
३. कार्य सफल होने में अनेक बाधायें हैं।
४. ईश्वर पर भरोसा रक्खें, काम बन जायेगा।
५. हाँ, इस काम में आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।
६. आपका काम पूर्ण सफल होगा। धैर्य रक्खें।
७. कुछ बनेगा, कुछ बनते-बनते बिगड़ जायेगा।
८. सफलता में अनेक बाधाओं का सामना होगा।
९. अवश्य ही आपका काम सफल होगा।
१०. आपके जाने-अनजाने शत्रु बाधा डालेंगे।
११. आपका काम सफल होना कठिन है।
१२. असफलता के लक्षण अधिक हैं।
१३. काम सफल होना कठिन लग रहा है।
१४. अनेकानेक विपत्तियों का सामना होगा।
१५. सफलता की आशा लगती है।
१६. काम में सफलता मिलेगी, पर थोड़ी देर से।

॥ प्रश्नांक १९ के उत्तर ॥

१. दौड़-धूप ज्यादा करने से नौकरी मिल सकती है।
२. नौकरी-योग ठीक है, अवश्य मिलेगी।
३. सन्तोष जनक नौकरी नहीं मिलेगी।
४. नौकरी अवश्य मिलेगी। परन्तु ढूंढने पर।
५. शीघ्र ही नौकरी मिल जायेगी।
६. नौकरी मिलने में अभी कुछ विलम्ब है।
७. नौकरी मिलने के योग अभी हैं ही नहीं।
८. दिन खोटे चल रहे हैं। आशा कम ही है।
९. पहुँच अधिक होने पर ही मिल पायेगी, अन्यथा नहीं।
१०. नौकरी में स्थिर नहीं रह पाओगे।
११. नौकरी मिलने की आशा बहुत कम है।
१२. चिन्ता मत करो। अच्छी नौकरी मिलेगी।
१३. किसी मित्र की सहायता से ही नौकरी मिलेगी।
१४. किसी स्त्री की मदद से नौकरी मिलेगी।
१५. देर से नौकरी मिलेगी।
१६. दिन खोटे हैं। आजकल में नहीं मिलेगी।

॥ प्रश्नांक २० के उत्तर ॥

१. दूसरा साझेदार हमेशा धोखा दिया करेगा।
२. आपसे साझेदारी निभाना बहुत कठिन है।
३. साझेदारी महान् हानिकारक रहेगी।
४. साझेदारी चला पाना मुश्किल है।
५. साझे में सदैव बचे रहना, यही चेतावनी है।
६. साझे वाला मार्ग त्याग दो, घाटा रहेगा।
७. साझे की परछाईं से भी दूर रहना चाहिये।
८. आपके लिए साझेदारी विपत्तिदायक रहेगी।
९. साझेदारी आपके लिये परम लाभदायक है।
१०. निजी व्यापार करो, साझेदारी मत करना।
११. साझेदारी का रोजगार कष्टदायक रहेगा।
१२. ठीक तो है, पर आप चला नहीं पायेंगे।
१३. आपके लिए साझेदारी लाभदायक रहेगी।
१४. साझेदारी की चाल खतरनाक हो सकती है।
१५. साझे में अच्छी सफलता है। प्रारम्भ करो।
१६. पहले कुछ लाभ तथा बाद में कुछ घाटा रहेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

॥ प्रश्नांक २१ के उत्तर ॥

१. किसी ने झूठा समाचार भेजा है ।
२. कुछ अंश तक सत्य है । कुछ मिलावट है ।
३. इस समाचार पर विश्वास कर सकते हैं ।
४. शत प्रतिशत सत्य समाचार है ।
५. यह समाचार विश्वास योग्य नहीं है ।
६. इस समाचार पर विश्वास करना ठीक है ।
७. समाचार ठीक मिला है । विश्वास कर लो ।
८. यह समाचार एकदम गप्प है ।
९. यह विश्वास योग्य समाचार है ।
१०. उड़ती खबर है । इस पर विश्वास न करना ।
११. सच्ची खबर है, विश्वास कर लो ।
१२. कुछ गप्प के साथ सच्ची खबर मिली है ।
१३. एकदम गप्पबाजी वाली बात है ।
१४. यह समाचार ठीक है ।
१५. अविश्वसनीय समाचार मिला है ।
१६. खबर में पूरी सच्चाई है ।

॥ प्रश्नांक २२ के उत्तर ॥

१. अल्पायु कन्या पैदा होगी ।
२. यशस्वी पुत्र का योग है । प्रसन्न रहो ।
३. पुत्र के जन्म की सम्भावना है ।
४. पुत्र जन्म की आशा की जाती है ।
५. सौभाग्यवती कन्या होगी ।
६. भाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होना है ।
७. पुत्रोत्पन्न होगा, पर जीवित रहने में सन्देह है ।
८. गर्भ-नष्ट होने के आसार लगते हैं । रक्षा करें ।
९. पुत्री होगी, जीवित रहने में सन्देह है ।
१०. गर्भपात के लक्षण हैं । रक्षा पर ध्यान दें ।
११. इस गर्भ से पुत्र होने की सम्भावना है ।
१२. अल्पायु पुत्र होगा, शान्ति कराओ ।
१३. लक्ष्मी रूप में पुत्री का जन्म होगा ।
१४. जिद्दी व शरारती पुत्र होना है ।
१५. कन्या होने की आशा है ।
१६. बलवान पुत्र का जन्म होगा ।

॥ प्रश्नांक २३ के उत्तर ॥

१. मुकदमे में पराजय का योग है । मत लड़ो ।
२. प्रयत्न करो तभी विजय है, अन्यथा नहीं ।
३. यंत्र धारण करके जीत के आसार लगते हैं ।
४. मुकदमा जीतने के कोई लक्षण नहीं है ।
५. नये हाकिम के आने पर विजय होगी ।
६. प्रतिद्वन्द्वी शक्तिशाली है । अतः पराजय होगी ।
७. जय-पराजय दैवाधीन ही समझो ।
८. मुकदमा आगे चलेगा और विजय होगी ।
९. आपका पक्ष ठीक नहीं हो रहा है । अतः हार होगी ।
१०. प्रयत्न करो तो विजय मिल सकती है ।
११ इस समय तो जीत की कोई आशा नहीं है ।
१२. मुकदमा जीतने के कोई लक्षण नहीं लग रहे हैं ।
१३. मुकदमा समाप्त (खारिज) हो जायेगा या सन्धि होगी ।
१४. मुकदमे को जीतने के लिए धन व्यय मत करो ।
१५. सुलह कर लेने पर ही भलाई है अन्यथा हार होगी ।
१६. ग्रहस्थिति ठीक नहीं है । व्यर्थ धन व्यय मत करो ।

"प्रश्नांक २४ के उत्तर"

१. इस मकान में अकाल मृत्यु का दोष है ।
२. इस मकान पर टोना टोटका का विशेष दोष है ।
३. मकान में ब्रह्म-दोष की सम्भावना है ।
४. इस मकान में दृष्टि (दीठ) का प्रबल दोष है ।
५. मकान दोषरहित है । शंका मत करो ।
६. मकान निर्दोष है । आपका ही समय ठीक नहीं है ।
७. मकान परम कल्याणकारी एवं निर्दोष है ।
८. मकान में कोई दोष नहीं है ।
९. मकान में बाधा नहीं लगती है ।
१०. मकान वेधित है ग्रहशान्ति करानी होगी ।
११. मकान में अल्प दोष है, शान्ति कराओ ।
१२. इस मकान मे प्रेत बाधा लगती है । उपाय करें ।
१३. इसमें कोई दोष नही, ग्रह ही खराब है ।
१४. सन्तान सुख के लिए यह मकान बाधक है ।
१५. इस मकान में गड़ी-हड्डी का दोष है ।
१६. मकान पूर्णतया शुभ है. शंका न करें ।

॥ प्रश्नांक २५ के उत्तर ॥

१. दण्ड प्राप्त होकर ही रहेगा ।
२. सजा मिलना ही सम्भव है ।
३. सजा से बच जायेगा ।
४. जमानत पर ही छूट सकता है ।
५. शीघ्र छूटने में सन्देह है ।
६. दैवकृपा से ही छूटना सम्भव है, अन्यथा नहीं ।
७. छूटने में सन्देह लग रहा है ।
८. मामला आगे बढ़ेगा तो परेशानी होगी ।
९. सजा पाने का ही योग है ।
१०. सामान्य सा दण्ड पाकर छूट जायेगा ।
११. कुछ समय बाद स्वयं छूट जायेगा ।
१२. निश्चित ही छूट जायेगा, धैर्य रक्खें ।
१३. सजा मिलने का लक्षण है ।
१४. छूटने की आशा कम है ।
१५. छूटेगा तो अवश्य—कुछ व्यय करना होगा ।
१६. शीघ्र छूटना बहुत कठिन है ।

॥ प्रश्नांक २६ के उत्तर ॥

१. काम पूरा नहीं होगा—उल्टे हानि सम्भव है ।
२. आशा और विश्वास बनाये रक्खो, ठीक है ।
३. काम बनने की आशा छोड़ ही दो तो अच्छा है ।
४. तगड़ी सिफारिश से काम बन सकता है ।
५. विश्वास करो, काम बन जायेगा ।
६. वह व्यक्ति तो पूरी मदद करेगा, बने न बने ईश्वरेच्छा ।
७. काम नहीं बन पायेगा, उल्टे व्यय अधिक होगा ।
८. वह व्यक्ति दुष्ट है । आपका काम करही नहीं रहा है ।
९. वह व्यक्ति अवश्य ही सहायक है । काम बनेगा ।
१०. वह व्यक्ति तनिक मदद नहीं करेगा, कुछ और सोचें ।
११. उस व्यक्ति से काम बनना असम्भव है ।
१२. काम बन जायेगा—पर व्यय अधिक होगा ।
१३. सावधान ! वह व्यक्ति धोखेबाज है ।
१४. उस व्यक्ति से बचकर रहो, तो ही ठीक है ।
१५. हाँ वह व्यक्ति सहायता करेगा ।
१६. अपनी नीयत तो ठीक करलो, तब आशा करना ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ प्रश्नांक २७ के उत्तर ॥

१. कर्ज चुकता करना कठिन लग रहा है ।
२. कुछ विलम्ब से कर्ज चुकता हो जायेगा ।
३. जीवन भर ही कर्ज लगा रहेगा ।
४. जल्दी चुकता होने की कोई आशा नहीं है ।
५. किसी मित्र की सहायता से ही कर्ज चुकता होगा ।
६. उद्योग करने पर शीघ्र मुक्ति मिल सकेगी ।
७. कर्ज दाता या लेने वाले में से एक व्यक्ति नहीं बचेगा ।
८. स्वयं कभी भी चुकता न कर सकोगे, मदद लो ।
९. कर्ज चुकाने भर के लिए बचत होना कठिन है ।
१०. एक वर्ष बाद ऋण मुक्ति हो सकती है ।
११. कर्ज की पूर्ति २ वर्ष में हो जायेगी ।
१२. सत्रह मास बाद कर्ज की पूर्ति होने की आशा है ।
१३. स्वयं की आय से चुकता करना कठिन है ।
१४. किसी सम्बन्धी की मदद से चुकता होगा ।
१५. पाँच मास बाद कर्ज-मुक्ति हो सकेगी ।
१६. तुम्हारे लिये कर्ज चुकाना सरल है, जब चाहो चुकादो ।

॥ प्रश्नांक २८ के उत्तर ॥

१. प्रेत जन्य दोष है—तन्त्र से अच्छा होगा ।
२. भूतबाधा है, कठिनाई से ही ठीक होगा ।
३. किसी द्वेषी ने टोना-टोटका करा दिया है ।
४. ब्रह्म दोष है—तंत्र से अच्छा हो जायेगा ।
५. प्रेत बाधा है—शान्ति कराओ ।
६. प्रेत बाधा है, तंत्र व इलाज से अच्छा होगा ।
७. शारीरिक रोग है, डाक्टर-वैद्य से इलाज कराओ ।
८. शारीरिक व्याधि है, विधिवत् उपचार करो ।
९. ग्रह दोष है, स्वयं ठीक होगा या यंत्र धारण करें ।
१०. भयंकर रोग है, शीघ्र उपचार कराओ ।
११. इस रोगी के ग्रह खराब हैं । शान्ति कराओ ।
१२. गुप्त रोग है, कम हो सकता है । अच्छा नहीं होगा ।
१३. ग्रह बाधा है, शनि का जाप करायें ।
१४. शारीरिक रोग है । केवल इलाज से अच्छा होगा ।
१५. जादू-टोना-टोटका या दीठ लगी है, यत्न करो ।
१६. अति कष्ट साध्य रोग है । इलाज ही [illegible]

॥ प्रश्नांक २९ के उत्तर ॥

१. इस जायजाद में शल्य दोष है । शान्ति करानी होगी ।
२. यह जायजाद आपको हानि कारक है ।
३. हाँ, यह आपके लिए लाभदायक रहेगी ।
४. कष्टकर है, इससे दूर ही रहो तो ठीक है ।
५. प्रेत-बाधा-दोष है, शान्ति कराके ही खरीदना ।
६. जायजाद शुभ फलदायक नहीं है ।
७. दोषयुक्त है ! आर्थिक कष्ट बना रहेगा ।
८. यह जायजाद आपके लिए बहुत ठीक है ।
९. जायजाद निर्दोष है । खरीदो, लाभ रहेगा ।
१०. भूतबाधा की शान्ति कराके ही क्रय करें ।
११. यह जायजाद आपके लिए लाभकारक रहेगी ।
१२. इसमे कोई दोष नहीं लग रहा है ।
१३. ब्रह्म बाधा है । शान्ति करायें तो ठीक है ।
१४. आपके लिए फलीभूत होना कठिन है ।
१५. शुभ है । इसी से आपका भाग्योदय होगा ।
१६. ब्रह्म दोष है । शान्ति कराके ही लाभ होगा ।

॥ प्रश्नांक ३० के उत्तर ॥

१. चिन्तनीय है, व्यर्थ ही दुःखी रहेंगे ।
२. पारिवारिक उलझनों में व्यस्त रहेंगे ।
३. चिन्ता-व्यथा से ही दिन बीतेगा ।
४. शान्ति पूर्वक बीतेगा । काम बनते रहेंगे ।
५. अच्छे व्यक्तियों से मुलाकात होगी । प्रसन्न रहेंगे ।
६. मनोबल गिरा रहेगा । धन हानि भी होगी ।
७. दौड़ धूप ज्यादा परन्तु सफलता कम रहेगी ।
८. चिन्ता, परेशानी एव थकावट रहेगी ।
९. आय-व्यय, सुख-दुःख आदि सब बराबर समझिये ।
१०. रुपये पैसे का व्यय अधिक होगा ।
११. आज का दिन बहुत सुखदायक है । मौज करें ।
१२. पैसे की कमी तथा खर्च बहुत अधिक रहे ।
१३. शरीर-कष्ट तथा अर्थ संकोच रहेगा ।
१४. धन-लाभ होगा, शुभ समाचार मिले ।
१५. आज का दिन शुभ है । प्रसन्न चित्त रहेंगे ।
१६. [illegible] दिन विशेष लाभदायक रहेगा ।

॥ प्रश्नांक ३१ के उत्तर ॥

१. कुल देवता की पूजा से सन्तान-सुख होगा ।
२. जिद्दी एवं शरारती सतन्ति होगी ।
३. प्रेत बाधा है—उपाय कराओ । पुत्र सुख होगा ।
४. ग्रह-बाधा से सन्तति सुख दबा है । उपाय करो ।
५. कन्याओं के सुख की आशा है । इलाज करायें ।
६. शीघ्र ही सन्तान सुख होने वाला है ।
७. सन्तान प्रतिबन्धक योग है । अनुष्ठान करायें ।
८. सन्तान होने में बिलम्ब है । परन्तु होगी ।
९. सन्तान सुख भाग्य में बहुत कम है ।
१०. गर्भपात का दोष है । उपाय करें ।
११. भाग्य में सन्तान-सुख कम है, अनुष्ठान करें ।
१२. रोग के कारण सन्तान नहीं हो पा रही है ।
१३. स्त्री को रक्त दोष है—इलाज करायें ।
१४. मंगलवार का व्रत रखें । सन्तति होगी ।
१५. पुरुष में वीर्य-दोष है, इलाज कराना होगा ।
१६. दत्तक पुत्र का योग है । विचार कर लें ।

॥ प्रश्नांक ३२ के उत्तर ॥

१. भाग्योदय का समय चला गया है । ऐसे ही चलेगा ।
२. दो वर्ष तक संकट और है । बाद में भाग्य चमकेगा ।
३. दुर्गा पाठ से भाग्योदय में सहायता मिलेगी ।
४. आठ मास बाद भाग्योदय होने लगेगा ।
५. १॥ वर्ष बाद भाग्योदय होने की आशा है ।
६. भाग्योदय में तीन वर्ष शेष हैं । शनि पूज्य हैं ।
७. ३॥ वर्ष बाद भाग्योदय की आशा करें ।
८. भाग्योदय के योग इसी वर्ष के हैं ।
९. भाग्योदय की आशा छोड़कर यत्न में लगे रहें ।
१०. पुरुषार्थ से खाना कमाना भर ही हो पायेगा ।
११. केवल ३ मास बाद समय सुधरने लगेगा ।
१२. आगामी मास मे ही भाग्योदय का योग है ।
१३. निकट भविष्य में भाग्योदय की आशा कम है ।
१४. चौदह मास बाद ही भाग्योदय की सोचें ।
१५. भाग्योदय में [illegible]॥ वर्ष का विलम्ब है ।
१६. पाँच माह बाद भाग्य चमकने लगेगा ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ प्रश्नांक ३३ के उत्तर ॥

१. बिगड़ा कार्य और भी बिगड़ता जा रहा है ।
२. रामायण का अखण्ड पाठ करो । काम बनेगा ।
३. बिगड़ा काम बन पाना कठिन लग रहा है ।
४. काम बनने की आशा मत रखो ।
५. काम अवश्य बनेगा । कुछ विलम्ब है ।
६. सन्तोषजनक ढंग से काम बन जायेगा ।
७. काम बन जानेकी आशा तो पूरी है । इच्छा ईश्वरकी ।
८. काम बनेगा, काले कुत्ते को दूध पिलाओ ।
९. देव कृपा से ही काम बन सकेगा, अन्यथा नहीं ।
१०. शीघ्र ही तुम्हारा काम बन जायेगा ।
११. बिगड़ा काम अवश्य ही बनेगा ।
१२. काम बनना बहुत ही कठिन लगता है ।
१३. बन्दरों को चने खिलाओ—बन जायेगा ।
१४. दिन खोटे चल रहे हैं । काम नहीं बनेगा ।
१५. कार्य बहुत बिगड़ गया है । अब बनाना कठिन है ।
१६. बिगड़ा काम बनने की आशा बहुत कम है ।

॥ प्रश्नांक ३४ के उत्तर ॥

१. मानसिक चिन्ताओं से पीड़ित रहेंगे ।
२. लाभ कम, व्यय अधिक होगा, चिन्ता बढ़ेगी ।
३. वर्ष फल ठीक नहीं है । राहु पूज्य है ।
४. मन को शान्ति नहीं मिल पायेगी । रोग भी होगा ।
५. पूरे वर्ष भर सुखी व प्रसन्न रहेंगे ।
६. विद्या-बुद्धि द्रव्यलाभ एवं विकास होगा ।
७. बृहस्पति खराब है । धन की कमी रहेगी ।
८. कुछ समय तक खराब रहेगा बाद में ठीक ही है ।
९. शनि के कुप्रभाव से वर्ष खराब ही बीतेगा ।
१०. अनेकानेक बाधाओं का सामना होगा ।
११. यह वर्ष आपके लिए ठीक नहीं है ।
१२. रोजगार में सन्तोषजनक लाभ होगा ।
१३. अनायास ही शत्रु बढ़ जायेंगे ।
१४. पारिवारिक उलझनें रहेंगी, दुःखी रहें ।
१५. लाभ, हर्ष, उन्नति एवं धन लाभ होगा ।
१६. मंगल राहु बने काम भी बिगाड़ देंगे । शान्ति करायें ।

❀ विशिष्टियोगावली ❀

दीर्घायु के योग

१—तृतीयैकादशे चैव नवमे पंचमे भृगुः ।
सप्तमस्थे यदाजीवो जीवेद्वर्षशतं नरः ॥

जन्म कुण्डली में यदि शुक्र लग्न से ३, ११, ९, ५, स्थानों में से किसी एक में हो और सातवें गुरु हो तो मनुष्य सौ वर्ष जीता है ।

२—कण्टकस्थो यदा जीवःसप्तमस्थोऽपि भार्गवः ।
बुधे च लग्नसंप्राप्ते शतं जीवति जातकः ॥

यदि बृहस्पति कुण्डली में कंटकस्थ १।४।७।१० हो और शुक्र सप्तम में पड़ा हो, बुध लग्न में हो तो जातक की आयु सौ वर्ष कहिये ।

३—लग्ने जीवस्तथा शुक्रः सौम्यश्चाष्टमगो भवेत् ।
पापाः सर्वे न पश्यन्ति जीवेद्वर्षशतं नरः ॥

लग्न में यदि गुरु और शुक्र पड़े हों, अष्टमस्थ बुध पर पाप ग्रहोंकी दृष्ट न हो तो बालक की आयु सौ वर्ष जानिये ।

४—पूर्णे चन्द्रे शुभे वर्गे मित्रे वा मित्र वीक्षिते ।
उच्चस्त्रिलाभ संस्थे वा पूर्णायुर्जातको भवेत् ॥

यदि पूर्ण चन्द्रमा मित्र के घर में हो, मित्र से देखा जाता हो या उच्च का होकर तीसरे अथवा ग्यारहवें स्थान में बैठा हो तो जातक की आयु पूर्ण होती है ।

बालारिष्ट के योग

१—षष्ठरिष्फाष्टगश्चन्द्रः क्रूरैश्च सह वीक्षितः ।
जातस्य मृत्युदः सद्यस्त्वष्टवर्षैः शुभेक्षितः ॥

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्रूरग्रहों के साथ या क्रूर दृष्टि से युक्त ६, ८, १२ घर में बैठा हो तो बालक शीघ्र संसार छोड़ देता है, शुभ ग्रह की दृष्टि होने से उसकी आयु आठ वर्ष होती है ।

२—व्यय-शत्रु-गतैः क्रूरैः मृत्युद्रव्यगतैरपि ।
पापमध्यगते लग्ने सत्यमेव मृतिर्वदेत् ॥

यदि पापग्रह लग्न से ६, १२, ८, २ में हों और लग्न पापग्रहों के बीच में हो तो बालक को अल्पायु समझिये ।

३—शनैश्चरार्कभौमेषु रिष्फधर्माष्टमेषु च ।
शुभैश्चावीक्षमाणेषु यो जातो निधनं गतः ॥

लग्न से बारहवें शनि, नवें सूर्य और आठवें मंगल होंवें और उनको शुभ ग्रह न देखें तो अल्पायु योग होता है ।

४—शनिक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रगतः शशी ।
विंशद्वर्षे वदेन्नाशो रक्षितो यदि शंकरः ॥

कुण्डली में सूर्य, मकर या कुम्भ का हो और चन्द्रमा सिंह राशि का हो तो बीसवें वर्ष के अन्त में निधन हो जाता है ।

५—लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमा ।
बालकस्य तदारिष्टं रक्षको यदि शंकरः ॥

जिसकी कुण्डली में लग्न में अशुभ राहु तथा केन्द्र में निर्बल चन्द्रमा हो तो वह जातक किसी भी जप, दान से नहीं बच सकता ।

६—चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्ठाष्टगः शशी ।
दशमेऽब्दे भवेन्मृत्युः सद्योजातो न संशयः ॥

जिसकी कुण्डली में चौथे राहु रहे तथा केन्द्र, छठवें या आठवें निर्बल चन्द्रमा हो तो उस जातक की मृत्यु दसवें वर्ष में हो जाती है ।

७—सप्तमस्थो धरापुत्रो लग्ने भवति चन्द्रमा ।
आत्मानं पितरं हन्ति मातरं च न संशयः ॥

जिस जातक की कुण्डली में सप्तम में मङ्गल और लग्न में निर्बल चन्द्रमा रहता है वह माता पिता सहित अपना ही नाश कर देता है ।

नोट—लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह के होने से बालक को अरिष्ट योग होता है । (१) लग्न-लग्नेश पापग्रहों के बीच में हों या पाप-युक्त हों, (२) सप्तम भाव दो पापग्रहों के बीच में हो (३) लग्नेश अष्टम में (४) अष्टमेश लग्न में (५) लग्नेश-अष्टमेश का योग हो (६) चन्द्रमा लग्न, पञ्चम, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश में पाप युक्त हो (७) सन्ध्या या इन योगों में मध्यान्ह का जन्म हो तो अरिष्ट समझिये ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: अक्षांश-रेखांश व देशान्तर सारणी :—

स्थान का नाम		अक्षांश	रेखांश	स्टै. अंतर	देशान्तर	सा.काल संस्कार
		अ. क.	अं. क.	मि. से.	मि. से.	सेकेण्ड
अकोला (महाराष्ट्र)	...	२०।४२	७७। ०	+२२। ०	−१०। ०	+१·६४
अजमेर	...	२६।२७	७४।४२	+३१।१२	−१९।१२	+३·१५
अगरतला	...	२३।४९	९१।१८	−३५।१२	+४७।४२	−७·८३
अटक	...	३३।५३	७२·१८	+४०।४८	−२८।४८	+४ ७३
अमृतसर	...	३१।३७	७४।४८	+३०।४८	−१८।४८	+३·०९
अमेठी	...	२६। ८	८१।५१	+ २।३६	+ ९।२४	−१·५४
अम्बाला	...	३०।२१	७६।५१	+२२।३६	−१०।३६	+१·७४
अमरोहा	...	२८।५४	७८।३३	+१५।४८	− ३।४८	+० ६२
अयोध्या	...	२६।४८	८२।१५	+ १। ०	+११। ०	−१·८१
अल्मोड़ा	...	२९।४०	७९।३९	+११।२४	+ ०।३६	− ·१०
अलवर (राजस्थान)	...	२७।३४	७६।३९	+२३।२४	−११।२४	+१·८७
अहमदनगर	...	१९। ५	७४।४८	+३०।४८	−१८।४८	+३·०९
अहमदाबाद	...	२३। २	७२।३९	+३९।२४	−२७।२४	+४ ५०
अलीगढ़	...	२७।५४	७८। ६	+१७।३६	− ५।३६	+ ·९२
आगरा	...	२७।११	७८। ३	+१७।५२	− ५।५२	+ ·९६
आजमगढ़	...	२६। ५	८३।१२	− २।४८	+१४।४८	−२·४३
आबू	...	२४।४०	७२।४५	+३३। ०	−२१। ०	+४·४३
आरा	...	२५।३४	८४।३९	− ८।३६	+२०।३६	−३·२८
इटावा	...	२६।४७	७९। ३	+१३।४८	− १।४८	+०·३०
इन्दौर	...	२२।४४	७५।५१	+२६।३६	−१४।३६	+२ ४०
इलाहाबाद	...	२५।२८	८१।५१	+ २।३६	+ ९।२४	−१·५४
उज्जैन	...	२३।११	७५।४५	+२७। ०	−१५। ०	+२·४६
उत्तर काशी	...	३०।५४	७८।२४	+१६।२४	− ४।२४	+०·७२
उदयपुर	...	२४।३५	७३।४२	+३५।१२	−२३।१२	+३·८१
उन्नाव	...	२६।४८	८०।५४	+ ७। ०	+ ५।००	−०·८२
ऊँझा	...	२३।४७	७२।२४	+४०।२४	−२८।२४	+४·६६
ऋषिकेश	...	३०।१२	७८।१८	+१६।४८	− ४।४८	+० ७९
एलिचपुर	...	२१।१८	७७।३३	+१९।४८	− ७।४८	+१·२८
एटा	...	२७।३५	७८।३९	+१५।२४	− ३।२४	+०·५६
ओरछा	...	२५।२१	७८।३९	+१५।२४	− ३।२४	+०·५६
औरंगाबाद (है०)	...	१९।५३	७५।२४	+२८।२४	−१६।२४	+२·६९
" (बि०)	...	२४।४५	८४।२४	− ७।३६	+१९।३६	−३·२२
कटक	...	२०।२८	८५।५४	−१३।३६	+२५।३६	−४·२०
कठुआ (कश्मीर)	...	३२।१७	७५।३६	+२७।३६	−१५।३६	+२·५६
कन्नौज	...	२७। १	७९।५७	+१०।१२	+ १।४८	−०·३०
कपूरथला	...	३१।२३	७५।२४	+२८।२४	−१६।२४	+२·६९
करनाल	...	२९।३९	७७। ३	+२१।४८	− ९।४८	+१ ६१
कलकत्ता	...	२२।३५	८८।२४	−२३।३६	+३५।३६	−५·८५
कर्ण प्रयाग	...	३०।१५	७९।३०	+१२। ०	∓ ०। ०	±०·०
कानपुर	...	२६।२७	८०।२१	+ ८।३६	+ ३।२४	−०·५६
काठगोदाम	...	२९।१५	७९·३३	+११।४८	+ ०।१२	−०·०३
काठमांडू (नैपाल)	...	२७।४२	८५।१२	−१०।४८	+२२।४८	−३·७५
काशीपुर	...	२९।१३	७९। ०	+१४। ०	− २। ०	+०·३३
काँचीपुरम्	...	१२।५०	७९।४५	+११। ०	+ १।००	−०·१६
काशी (वाराणसी)	...	२५।१९	८३। ०	− २। ०	+१४। ०	−२·३०
किशनगढ़ (राजस्थान)	...	२७।१२	७०।३३	+४७।२४	−३५।२४	+५·८१
किच्छा	...	२८।५४	७९।३३	+११।४८	+ ०।१२	−०·०३
कुरुक्षेत्र	....	२९।५८	७६।४८	+२२।४८	−१०।४८	+१·७७
केदारनाथ	...	३०।५४	७९।१२	+१३।१२	− १।१२	+०·२०
कोटद्वार	...	२९।४६	७८।३०	+१६। ०	− ४। ०	+०·६६
कोटा (राजस्थान)	...	२५।१०	७५।५१	+२६।३६	−१४।३६	+२·४०
खुर्जा	...	२८।१४	७७।५१	+१८।३६	− ६।३६	+१·०८
गढ़वाल	...	३०।१५	७९।३०	+१२। ०	∓ ०। ०	∓० ·०
गया	...	२४।४८	८५। ०	−१०। ०	+२२। ०	−३·६०
गुड़गाव (हरि.)	...	२८।३९	७७।३९	+१९।२४	− ७।२४	+१·२२
ग्वालियर	...	२६।१४	७८।०९	+१७।१४	− ५।१४	+ ·८९
गाजियाबाद	...	२८।४०	७७।२७	+२०।१२	− ८।१२	+१·३५
गाजीपुर	...	२५।३६	८३।३६	− ४।२४	+१६।२४	−२·६९
गोरखपुर	...	२६।४७	८३।२४	− ३।३६	+१५।३६	−२·५६
गोंडा	...	२७।१०	८१।५७	+ २।१२	+ ९।४८	−१·६१
गौहाटी	...	२६।११	९१।४५	−३७। ०	+४९। ०	−८·०५
गुरदासपुर	...	३२। २	७५।२७	+१८।१२	− ६।१२	+१·०२
गंगटोक	...	२७।२०	८८।३९	−२४।३६	+३६।३६	−६·०१
गोवा	...	१५।२५	७३।४८	+३४.४८	−२२।४८	+३·७५
चकरौता	...	३०।४२	७७।५७	+१८।१२	− ६।१२	+१·०२
चंडीगढ़	...	३०।४४	७६।५१	+२२।३६	−१०।३६	+१·७४
चमोली	...	३०।१८	७९।३६	+११।३६	+ ०।२४	−०·०७
चन्दौसी	...	२८।२७	७८।४८	+१४·४८	− २।४८	+०·४६

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्थान का नाम		आक्षांश	रेखांश	स्टॅ. अन्तर	देशान्तर	सा. काल सस्कार
		अ. क.	अ. क.	मि. से.	मि. से.	सेकेण्ड
चम्पावत	...	२९।२२	८०।०९	+ ९।२४	+ २।३६	−०'४३
चित्तौड़गढ़	...	२४।५४	७४।४२	+३१।१२	−१९।१२	+३'१५
चित्रकूट	...	२५।१२	८०।४५	+ ७। ०	+ ५। ०	−०'८२
जगन्नाथपुरी	...	१९।४६	८६। ०	−१४। ०	+२६। ०	−४'२७
जनकपुर	...	२३।४३	८१।५१	+ २।३६	+ ९।२४	−१'५४
जबलपुर	...	२३। ९	७९ ५७	+१०।१२	+ १।४८	−०'३०
जयपुर	...	२६।५६	७५।४८	+२६।४८	−१४।४८	+२'४३
जम्बू	...	३२।४४	७४।५४	+३०.२४	−१८।२४	+३'०२
जालौन	...	२६। ८	७९।२४	+१२।२४	− ०।२४	+०'०७
जालन्धर	...	३१।२१	७५।३३	+२७।४८	−१५।४८	+२'६०
जोधपुर (राज०)	...	२६।२०	७३। ३	+३७।४८	−२५।४८	+४ २४
जौनपुर	...	२५।४६	८२।४५	− १.००	+१३।००	−२'१४
जोशीमठ	...	३०।५१	७९।३६	+११।३६	+ ०।२४	−०'०७
झाबुआ	...	२२।४५	७४।३९	+३१।२४	−१९।२४	+३'१९
झाँसी	...	२५।२७	७८।३३	+१५।४८	− ३।४८	+०'६२
टनक पुर	...	२९।१०	८०।१८	+ ८।४८	+ ३।१२	−०'५३
टेहरी स्टेट (गढ़वाल)	...	३०।४२	७८।३०	+१६। ०	− ४। ०	+०'६६
टोंक (राजस्थान)	...	२६।११	७५।४८	+२६।४८	−१४।४८	+२'४३
डमडम (कलकत्ता)	...	२२।३७	८८।२७	−२३।४८	+३५।४८	−५'८८
तिलहर	...	२७।५०	८०। ९	+ ९।२४	+ २।३६	− '४३
तेजम	...	३०। ०	८०।१२	+ ९।१२	+ २।४८	− '४६
दतिया	...	२५।४०	७८।३०	+१६। ०	− ४। ०	+ '६६
दरभंगा	...	२६। ८	८६।५४	−१३।३६	+२५।३६	−४ २०
दिल्ली	...	२८।४०	७७ १२	+२१।१२	− ९।१२	+१'५१
दीनापुर	...	२५।३८	८५। ६	−१०।२४	+२२।२४	−३'६८
देवप्रयाग	...	३०। ९	७८।३६	−१५।३६	− ३।३६	+०'२९
देवबन्द	...	२९।४२	७७।४२	+१९।१२	− ७।१२	+१'१८
देहरादून	...	३०।१९	७८। ३	+१७।४८	− ५।४८	+०'९५
दौलताबाद	...	१९।५७	७५।१५	+२९। ०	−१७ ०	+२'७९
धौलपुर (राजस्थान)	...	२६।४०	७७।५४	+१८।२४	− ६।२४	+१'०५
नगीना	...	२९।२७	७८।२०	+१६। ०	− ४। ०	+०'६६
नवलगढ़	...	२७।५१	७५।१८	+२८।४८	−१६।४८	+२'७६
नरसिंह पुर	...	२२।५७	७९।१५	+१३। ०	− १। ०	+०'१६
नागपुर	..	२१। ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

स्थान का नाम		आक्षांश	रेखांश	स्टॅ. अन्तर	देशान्तर	पा. काल सस्कार
नजीबाबाद	...	२९ ३७	७८।२७	+१४।१२	− ४।१२	+ '६९
नासिक	...	२०। ०	७३।४८	+३४।४८	−२२ ४८	+३'७४
नीमच	...	२४।२७	७५। ०	+३०। ०	−१८। ०	+२ ९६
नैनीताल	...	२९।२२	७९।३०	+१२। ०	∓ ०। ०	∓ ' ०
नैपालगंज	...	२८। ०	८१।३९	+ ३।२४	+ ८।३६	−१'४१
पटना	...	२५।३३	८५। ९	−१०।३६	+२२।३६	−३'७१
पटियाला	...	३०।२२	७६।२४	+२४।२४	−१२।२४	+२'०४
पठानकोट	...	३२।१७	७५।४२	+२७।१२	- १५।१२	+२'५०
पन्तनगर	...	२८।५८	७९।३३	+११ ४८	- ०।१२	−०'०२
पानीपत	...	२९।२२	७६।५७	+२२।१२	−१०।१२	+१'६८
पीलीभीत	...	२८।३८	७९।५१	+१० ३६	+ १।२४	−०'२३
पिथौरागढ़	...	२९।३८	८०। ९	+ ९।२४	+ २।३६	− '४३
पूना	...	१८।३०	७३।५४	+३४।२४	−२२।२४	+३'६८
प्रतापगढ़ (उ०प्र०)	...	२५।४०	८२। ०	+ २। ०	+१०। ०	−१'६४
पौड़ी गढ़वाल	...	३०।११	७८।५१	+१४।३६	− २।३६	+०'४३
फतेहगढ़	...	२७।२३	७९।३६	+११।३६	+ ०।२४	−०'०७
फतेहपुर	...	२५।५५	८०।५१	+ ६।३६	+ ५।२४	−०'८९
फतेहपुर (राजस्थान)	...	२८। ०	७५। ३	+२९।४८	−१७।४८	+२'९२
फर्रुखाबाद	...	२७। ३	७९।३६	+११।३६	+ ०।२४	−०'०७
फिरोजपुर (पंजाब)	...	३०।५५	७४।३९	+३१।२४	−१९।२४	+३'१९
फैजाबाद	...	२६।४७	८२। ९	+ १।२४	+१०।३६	−१'७४
बदरीनाथ	...	३०।४४	७९।३०	+१२। ०	∓ ०। ०	∓ ' ०
बदायूँ	...	२८। २	७९।१५	+१३। ०	− १। ०	+०'१६
बरेली	...	२८।२२	७९।२४	+१२।२२	− ०।२४	+०'०७
बम्बई	...	१८।५८	७२।५१	+३८।३६	−२६।३६	+४'४१
बिजनौर	...	२९।२२	७८।१२	+१७।१२	− ५।१२	+० ८९
बैजनाथ	...	२९।५४	७६।४८	+१०।४८	+ १।१२	−०'२०
बलरामपुर	...	२७।२५	८२। ९	+ १।२४	+१०।३६	−१'७४
बलिया	...	२५।४४	८४।१२	− ६।४८	+१८।४८	−३'०९
बस्ती	...	२६।४८	८२।५५	− १। ०	+१३। ०	−२'१४
बंगलौर	...	१२।५८	७७।३९	+१९।२४	− ७।२४	+१'२२
बहराइच	...	२७।३४	८१।३९	+ ३।२४	+ ८।३६	−१'४१
बागलकोट	...	१६।११	७५।४२	+२७।१२	−१५।१२	+२ ५०
बाँदा	...	२५।२८	८०।१८	+ ८।४८	+ ३।१२	−०'५३
[illegible]	...	[illegible]	[illegible]	+३२। ०	−२०। ०	+३'२३

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्थान का नाम	अक्षांश + अं. क.	रेखांश + अं. क.	स्टैं. अन्तर मि. से.	देशान्तर मि. से.	सा. काल संस्कार सेकेण्ड
बाँसी ...	२७।१०	८२।५७	− १।४८	+ १३।४८	− २·२७
बिलासपुर (राजस्थान) ...	२२। ५	८२।१२	+ १।१२	+ १०।४८	− १·७७
" (पंजाब) ...	३१।१९	७६।५१	+ २२।३६	− १०।३६	+ १·७४
बीकानेर (राजस्थान) ...	२८। १	७३।१८	+ ३६।४८	− २४।४८	+ ४·०४
बीजापुर (महाराष्ट्र) ...	१६।५०	७५।४५	+ २७ ०	− १५। ०	+ २·४६
बुलन्दशहर ...	२८।२४	७७।५४	+ १८।२४	− ६।२४	+ १·०५
भोपाल ...	२३।१८	७७।२७	+ २०।१२	− ८।१२	+ १·३५
भरतपुर ...	२७ १५	७७।३०	+ २०। ०	− ८। ०	+ १·३१
भागलपुर ...	२५।१४	८७। ०	− १८। ०	+ ३०। ०	− ४·९३
भुवनेश्वर ...	२०।२८	८५।५४	− १३।३६	+ २५।३६	− ४·२०
मझौली ...	२६।३८	८३।४८	− ५।१२	+ १७।१२	− २·८३
मथुरा ...	२७।२८	७७।४२	+ १९।१२	− ७।१२	− १·१८
मद्रास ...	१३। ६	८०।१८	+ ८।४८	+ ३।१२	− ०·५३
महुवा ...	२५।१८	७९।५४	+ १०।२४	+ १।३६	− ०·२६
मसूरी ...	३०।२७	७८। ६	+ १७ ३६	− ५।३६	+ ०·९२
मुरादाबाद ...	२८।५१	७८।५१	+ १४।३६	− २।३६	+ ०·४३
मिर्जापुर ...	२५।१०	८२ ३६	− ०।२४	+ १२।२४	− २·०४
मुगलसराय ...	२५।१७	८३।१२	− २।४८	+ १४।४८	− २·४३
मेरठ ...	२९। ०	७७।४२	+ १९।१२	− ७।१२	+ १·१८
मैनपुरी ...	२७।१४	७९। ३	+ १३।४८	− १।४८	+ ०·३०
मणिपुर स्टेट ...	२४।४४	९४। ०	− ४६। ०	+ ५८। ०	− ९·५३
मैसूर स्टेट ...	१२ १८	७६।३९	+ २३।२४	− ११।२४	+ १·८७
रतलाम ...	२३।२१	७५। ३	+ २९।४८	− १७ ४८	+ २·९२
राँची ...	२३।२३	८५।२१	− ११।२४	+ २३।२४	− ३·८४
रानीखेत ...	२९।४०	७९।३३	+ ११।४८	+ ०।१२	− ०·०३
रामपुर स्टेट (उ०प्र०) ...	२८।५०	७९। ३	+ १३।४८	− १।४८	+ ०·३०
रामनगर (उ०प्र०) ...	२९।२२	७९। ९	+ १३।२४	− १।२४	+ ०·२३
रायपुर (म०प्र०) ...	२१।१५	८१।४२	+ ३।१२	+ ८।४८	− १·४५
रायबरेली ...	२६।१४	८१।१८	+ ४।४८	+ ७।१२	− १ १८
रोहतक (पंजाब) ...	२८।५६	७६।३९	+ २३।२४	− ११।२४	+ १ ८७
रोपड़ (पंजाब) ...	३०।५७	७६।३०	+ २४। ०	− १२। ०	+ १·९७
रुड़की ...	२९।५२	[illegible]	+ १८।२४	− ६।२४	+ १·०३
रुद्रपुर (नैनी.) ...	२८।५७	७९।२३	+ ११।४८	+ ०।१२	− ०·०५
लखनऊ ...	२६।५१	८०।५७	+ ६।१२	+ ५।४८	− ०·९५

स्थान का नाम	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैं. अन्तर मि. से.	देशान्तर मि. से.	सा. काल संस्कार
लखीमपुर (खीरी) ...	२७।५७	८०।४८	+ ६।४८	+ ५।१२	− ०·८५
ललितपुर ...	२४।२२	७८।२१	+ १६।१२	− ४।१२	+ ०·६९
लुधियाना ...	३०।५५	७५।५४	+ २६।२४	− १४।२४	+ २·३७
वृन्दावन ...	२७।३३	७७।४५	+ १९। ०	− ७। ०	+ १·४५
शाहाबाद (उ०प्र०) ...	२७।३०	८०। ६	+ ९ ३६	+ २।२४	− ०·३९
शाहजहाँ पुर ...	२७।५४	७९।५७	+ १०।१२	+ १।४८	− ०·३०
शिलाँग ...	२५।३४	९१।५४	− ३७।३६	+ ४९।३६	− ८·१५
शिमला ...	३१। ६	७७। ९	+ २१।२४	− ९।२४	+ १·५४
श्रीनगर ...	३४। ६	७४ ४८	+ ३०।४८	− १८।४८	+ ३·०९
श्रृंगेरीमठ ...	१३।२७	७५।१८	+ २८।४८	− १६।४८	+ २·७६
सम्भल ...	२८।३५	७८।३६	+ १५।३६	− ३।३६	+ ०·५९
सहारनपुर ...	२९।५८	७७ ३३	+ १९।४८	− ७ ४८	+ १·२८
सागर (म०प्र०) ...	२३।५०	७८।४५	+ १५। ०	− ३। ०	+ ०·४९
सिकन्दराबाद ...	२७।१३	७८। ०	+ १८। ०	− ६। ०	+ ०·९९
सीतापुर ...	२७।३२	८०।४२	+ ७।१२	+ ४।४८	− ०·७९
सोमनाथ ...	२१। ०	७०।२७	+ ४८।१२	− ३६।१२	+ ५·९५
सुल्तानपुर ...	२६।१६	८२। ६	+ १।३६	+ १०।२४	− १·७१
सोलन (हि०प्र०) ...	३०।५५	७७। ९	+ २१।२४	− ९।२४	+ १·५४
सोलापुर (महा०) ...	१७।३९	७५।५४	२६।२४	९४।२४	+ २·३७
हमीरपुर ...	२६। ०	८०। ९	+ ९।२४	+ २।३६	− ०·४३
हरदोई ...	२७।२३	८०। ९	+ ९।२४	+ २।३६	− ०·४३
हिसार ...	२९।१४	७५ ४५	+ २७। ०	− १५। ०	+ २·४६
हरिद्वार ...	२९।५८	७८। ९	+ १७।२४	− ५।२४	+ ०·८९
होशियारपुर ...	३१ ३२	७५।५७	+ २६।१२	− १४।१२	+ २·३३
हल्द्वानी (उ०प्र०) ...	२९।१२	७९।३६	+ ११।३६	+ ०।२४	− ०·०७
हापुड़ ...	२८।४३	७७।५१	+ १८।३६	− ६।३६	+ १·०८
हाथरस ...	२७।३६	७८। ६	+ १७।३६	− ५।३६	+ ०·९२
हैदराबाद ...	१७ २०	७८।२७	+ १६।१२	− ४।१२	+ ०·६९

इस सारणी के पहले कालम में शहर का नाम दूसरे में इष्ट स्थान का उत्तर अक्षांश, तीसरे में ग्रीनिच से पूर्व रेखांश, चौथे में भारत केन्द्र स्थल (८२½ रेखांश) से इष्ट स्थान का स्टैण्डर्ड समयान्तर, पाँचवें में नैनीताल के रेखांश से इष्ट स्थल की दूरी मिनट-सेकेण्ड में, छठे कालम में नैनीताल के स्थानीय शून्य बजे के साम्पातिक काल को इष्ट स्थल के ० बजे के साम्पातिककाल में बदलने के लिए +, − चिह्न युक्त संस्कार सेकेण्ड के २ दशमलव भाग तक दिया है। स्टैण्डर्ड समयान्तर के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: कुछ विदेशी नगरों के अक्षांशादि :—

स्थान	देश	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टै. अन्तर मि. से.	I.S.T. सेन्टै. अं.	देशान्तर घं. मि. से.	सा. काल संस्कारसे
अदन	(अरब)	१२ उ. ४५	४५ पू. ३	— ०।१२	— २।३० पं. मि.	— २।१७।४८	+ २२·६४
कटूवा	(नाईं०)	१० उ. ५	७ पू. ४५	+ २९। ०	— ४।३०	— ४ ४७। ०	+ ४७·३१
काबुल	(अफ०)	३४ उ. ३३	६९ पू. १२	— ६।४८	— १। ०	— ०।४१।१२	+ ६·७७
काहिरा	(मिस्र)	३० उ. २	३१ पू. १५	— ५। ०	— ३।३०	— ३।१३। ०	+ ३१·७०
कुवैत		२९ उ. ३०	४७ पू. ४५	— ११। ०	— २।३०	— २। ७। ०	+ २०·८६
ग्रीन्विच	(यूरोप)	५१ उ. २९	० · ०	— ०। ०	— ५।३०	— ५।१८। ०	+ ५२·२४
जेनेवा	(स्विट०)	४६ उ. १३	६ पू. ९	— ३५।२४	+ ४।३०	— ४ ५३।२४	+ ४८·२०
जेरुसलम	(इज०)	३१ उ. ४६	३५ पू. १५	— २१। ०	— ३।३०	— २।५७। ०	+ २९·०८
टोकियो	(जापान)	३५ उ. ४०	१३९पू३३	— १८।१२	+ ३।३०	+ ४। ०।१२	— ३९.४६
तेहरान	(ईरान)	३५ उ. ४१	५१ पू. २४	+ ४।२४	— २। ०	— १।५३।२४	+ १८·४८
ढाका	(बंगलादेश)	२३ उ. ४२	९० पू. २४	— १।३६	+ ०।३०	+ ।४३।३६	— ७·१७
न्यूयार्क	(अमेरिका)	४० उ. ४३	७४ प. ०	+ ४। ०	— १०।३०	— १०।१४। ०	+ १००·८६
नाइरोबी	(पू. अफ्रीका)	१ द. १८	३६ पू. ५१	+ ३२।३६	— २।३०	— २।५०।३६	+ २८·०३
पेरिस	(फ्रांस)	४८ उ. ५०	२ पू. २१	+ ५०।३६	— ४।३०	— ५। ८।३६	+ ५०·६९
पेकिंग	(चीन)	३९ उ. ५५	११६पू२४	+ १४।२४	+ २।३०	+ २।२७।३६	— २४·२५
बर्लिन	(जर्मनी)	५२ उ. ३२	१३ पू. २४	+ ६।२४	— ४।३०	— ४।२४.२४	+ ४३·४३
बगदाद	(ईराक)	३३ उ. २०	४४ पू. २७	+ २।१२	— २।३०	— २।२०।१२	+ २३·०३
मक्का	(अरब)	२१ उ. २५	३९ पू. ५४	+ २०।२४	— २।३०	— २।३८।२४	+ २३·४८
मास्को	(रूस)	५५ उ. ४५	३७ पू. ३६	+ २९।३६	— २।३०	— २।४७।३६	+ २७·५३
मान्डले	(ब्रह्मा)	२२ उ. ०	९६ पू. ६	+ ५।३६	+ १। ०	+ १। ६।२४	— १०·९१
रोम	(इटली)	४१ उ. ५५	१२ पू. २७	+ १०।१२	— ४।३०	— ४।२८।१२	+ ४४·०६
लन्दन	(इंगलण्ड)	५१ उ. ३०	० प. ६	+ ०।२४	— ५।३०	— ५।१७।३६	+ ५२·३१
ल्हासा	(तिब्बत)	२९ उ. ४०	९१ पू. ६	— ४।२४	+ ०।३०	+ ०।४६।२४	— ७·६२
लिस्बन	(पुर्तगाल)	३८ उ. ४४	९ पू. ९	+ ३६।३६	— ५।३०	— ४।४१।२४	+ ४६·२३
लाहौर	(पाकिस्तान)	३१ पू. ३५	७३ पू. १८	+ २।४८	— ०।३०	— ०।२०।४८	+ ३·४२
सिंगापुर		१ पू. २१	१०३पू५४	+ ६।।२४	+ २।३०	+ १।३७।३६	— १६·०३
वाशिंगटन	(अमेरिका)	३८ उ. ५५	७७ प. ३	+ ८।१२	— १०।३०	— १०।२६।१२	+ १०२·८७
हांगकांग	(चीन)	२२ उ. १८	११४प ९	+ २३।२४	+ २।३०	+ २।१८।३६	— २२·७७

ऋण-धन चिह्न स्थानीय समय को प्रमाणिक (स्टैण्डर्ड टाइम) बनाने के लिये हैं। स्टैण्डर्ड समय को स्थानीय समय में बदलने के लिये उक्त चिह्नों को व्यस्त रूप में (अर्थात्-ऋण धन' चिह्न को ऋण तथा ऋण चिह्न को धन के रूप में) उपयोग करें। नैनीताल से पूर्व स्थल को + देशान्तर तथा पश्चिम को ऋण देशान्तर से व्यक्त किया गया है। सामाजिक काल के बारे में अन्यत्र देखें।

: सूक्ष्म लग्न साधन :

फलित ज्योतिष का मूल आधार स्पष्ट ग्रह तथा स्पष्ट लग्न हैं। लग्न शुद्धि की महिमा से, विज्ञ पाठक पूर्णतया परिचित ही होंगे, ऐसा हमें विश्वास है। "सहस्रगुणभूल्लग्नं चन्द्रःशत गुणो बली।" अथवा "लग्नं हि मूलमाधारम्" आदि उक्तियाँ प्रमाण हैं। सबसे पहले तो हमें जानना चाहिये कि लग्न कहते किसे हैं ? लग्न :—इष्ट दिन के इष्ट समय में क्रान्तिवृत्त का जो बिन्दु स्वपूर्व-क्षितिज में लगा रहता है, उसे ही तात्कालिक इष्ट लग्न कहते हैं। वह 'बिन्दु' सायन मेषादि बिन्दु से जितनी राशि, अंश, कला व विकला दूर होता है; उस दूरी को इष्ट कालिक सायनलग्नस्पष्ट कहते हैं। इसमें से इष्ट दिन का स्फुट अयनांश घटाने से फलितोपयोगी स्पष्ट निरयण लग्न होता है। इसे ही प्रथम भाव स्पष्ट कहा जाता है। क्रान्ति वृत का जो बिन्दु ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर लगा रहता है उसे स्पष्ट दशम लग्न या दशम कहते हैं। निरक्ष देश में सायन लग्नों के उदय होने में जो समय लगता है उसे 'लंकोदयमान' या 'निरक्षोदयमान' कहा गया है। वर्तमान समय में इनका वेध सिद्ध अति सूक्ष्ममान निम्नवत् है। (१·१-८१ की परम क्रान्ति २३°।२६'।२५" के अनुसार।) इन मानों को चर-संस्कृत करके साक्षदेशों के लिए 'सायन स्वोदयमान' बनाये जाते हैं। नैनीताल के अक्षांश २९°।२२' (भू के. २९°।१२') के लिये इनको स्पष्ट करके यहाँ देने का सफल प्रयास किया गया है। क्योंकि परखण्डों से बने लग्नोदय मानों के स्थूल से होने से और लग्न स्पष्ट अशुद्ध हो जाता है।

—: सायन लंकोदय तथा स्वोदयमान-सारणी :—

क्रान्तियाँ	लग्न क्रम		लंकोदय सायन			लंकोदय सायन			नैनीताल के सायन स्वोदय			नैनीताल के सायन स्वोदय			पलादि लंको.	पलादि स्वोदय
			घं.	मि	से.	घ.	प.	वि	घं.	मि	से.	घ.	प.	वि	पल	पल
११°२८'२१"	मे.	मी.	१	५१	३८·४९	४	३९	६·२	१	२५	३५·४०	३	३३	५८·५	२७९·१	२१४·०
२०° ९' ४"	वृ.	कुं.	१	५९	३७·९६	४	५९	४·९	१	३८	२०·७४	४	५	५१·८	२९९·१	२४५·९
२३°२६'२५"	मि.	म.	२	८	४३·५५	५	२१	४८·९	१	५९	५८·२८	४	५९	५५·७	३२१·८	२९९·९
२३ २६ २५	क.	ध.	२	८	४३·५५	५	२१	४८·९	२	१७	२८·८२	५	४३	४२·१	३२१·८	३४३·७
२० ९ ४	सिं.	वृ.	१	५९	३७·९६	४	५९	४·९	२	२०	५५·१८	५	५२	१८·०	२९९·१	३५२·३
११ २८ २१	कं.	तु.	१	५१	३८·४९	४	३९	६·२	२	१७	४१·५८	५	४४	१३·९	२७९·१	३४४·२

— ग्रहलाघवकार श्री गणेश दैवज्ञ ने शके १४४२ में मेषादि लंकोदयमान क्रमशः २७८, २९९, ३२३ पल, शके १०७२ में श्रीयुत भास्कराचार्य ने १६७०, १७९३, १९३७ असु तथा सूर्यसिद्धान्त में लंकोदय मान क्रमशः १६७०, १७९५, १९३५ असु कहे गये हैं। (६ असु = १ पल) यहाँ तीनों ग्रन्थों में परमक्रान्ति २४ अंश स्वीकृत है फिर भी उन्हें जो अन्तर परिलक्षित हुआ उसे दिया है। आज जब कि परमक्रान्ति में—३३'·६ कला का स्पष्ट अन्तर हो चुका है तब भी हमें पुरातन मानों को मानते चले जाना कुछ रुचता नहीं। अतः हमने शुद्ध सायन लंकोदय मान त्रिकोणमिति से बनाकर साम्पातिक घटयादि व पलादि में दिये हैं। नैनीताल के लिये निरयण राश्युदयमान सायन होरादि में भी बनाकर दिये हैं। देखें पृष्ठ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

❀ जीवन विजय से अन्यत्र का पंचांग बनाना ❀

चरान्तर—दो अभीष्ट अक्षांशों के अभीष्ट चरकाल (मि. से. या घ. प) में जो अन्तर होता है उसे ही 'चरान्तर' कहते हैं। हमारा पंचांग-केन्द्र नैनीताल है। अतः नैनीतालाक्ष के अभीष्ट दिन के चर का अन्य किसी स्थान (अक्षांश) के चर से अन्तर करना होगा, उत्तराक्रान्ति में उत्तर (+) चर एवं दक्षिण क्रान्ति में दक्षिण (−) चर होता है। इसके नियम सम्वत् २०३८ के पंचांग के पृष्ठ ४९, ५०, ५१ एवं ५४ में सोदाहरण दिये हैं। कृपया वहाँ देखें; यहाँ सामान्य नियम पुनः दे रहे हैं—

१—सूर्य की उत्तराक्रान्ति में (२१ मार्च से २३ सितम्बर तक) नैनीताल के अक्षांश २९°-२२' से अपने स्थान का अक्षांश अधिक हो तो चरान्तर धन होगा, कम अक्षांश में चरान्तर ऋण होगा। चर सारणी अन्यत्र देखें।

२—सूर्य की दक्षिण क्रान्ति में (२३ सितम्बर से २१ मार्च तक) नैनीताल से अधिक अक्षांश में चरान्तर ऋण; कम में धन होता है। यह नियम जीवन विजय के घटी पलात्मक तिथ्यादि मानों को अन्य स्थान हेतु बदलने के लिए है। अभीष्ट सूर्योदयास्त बनाने हेतु व्यस्त क्रिया करें। सूर्योदयास्त का गणित देखें—

गणित क्रिया	काशी २५°-१९'	दिल्ली २८°-४०'	अल्मोड़ा २९°-४०'	गढ़वाल ३०°-३०'
चरसारणी से अभिष्ट चर काल =	घ. मि. से. (−) ० ४६ ४	घं. मि. से. (−) ० ५३ १९	घं. मि. से. (−) ० ५५ ३६	घं. मि. से. (−) ० ५१ ३१
नै.स्टे.मध्याह्न काल ∓ देशान्तर व्यस्त	१२ ५ ३३ (−) १४ ००	१२ ५ ३३ (+) ९ १२	१२ ५ ३३ (−) ० ३६	१२ ५ ३३ ∓ ० ० ०
= इष्ट मध्या.काल −२३°-२' क्रान्ति से इष्ट चरोत्पदिनार्ध	११ ५१ ३३ ∓ ५ ११ ५६	१२ १४ ४५ ∓ ५ ६ ४१	१२ ४ ५७ ∓ ५ ४ २४	१२ ५ ३३ ∓ ५ २ २९
धनदिनार्ध = सू.अ. ऋण दिनार्ध = सू.उ.	१७ ०५ २९ ६ ४० ३७	१७ २१ २६ ७ ८ ४	१७ ९ २१ ७ ० ३३	१७ ८ २ ७ ३ ४
दिनमान = घं.मि.	१० २७ ५२ ↓ ×२½	१० १३ २२ ×२½	१० ८ ४८ ×२½	१० ४ ५८ ×२½
दिनमान घ.प. या दिनार्ध ×५ =	घ. प. वि. २६ ९ ४०	घ. प. वि. २५ ३३ ३५	घ. प. वि. २५ २२ ०	घ. प. वि. २५ १२ २५
तुलना करें → सूर्योदय दिनमान की	श्रीआनन्दभास्कर पंचांग, लखनऊ	श्रीविश्व विजय पंचांग दिल्ली	श्रीरामदत्तजी का पंचांग या जीवन विजय	श्रीकीर्तिपंचांग या वाणीभूषण ,गढ़वाल
सूर्य उ. में किरण-वक्री-भवन संस्कार	− ३ मि. ६ घं. ३६ मि.	× ७ घं. ८ मि.	× ७ घं. १ मि.	× ७ घं. ३ मि.

सूर्योदयास्त गणित—चर सारणी से अपने स्थान का स्टै. सूर्योदय निकालकर घट्यादि पंचांग बनाने से चरान्तर के झंझट से बच सकते हैं। किरण वक्री भवन संस्कार वाला सूर्योदयास्त अंग्रेजी नकल है। उदाहरण— आगे और देखें।

माना कि १२ दिसम्बर ८२ को काशी, दिल्ली गढ़वाल एवं अल्मोड़ा का पंचांग बनाना है। चर सारणी में इन स्थानों के चर अलग से बने हैं। ध्यान रहे कि 'ब' चिन्हांकित अक्षांश भूकेन्द्रीय है। १२ दिसम्बर को पञ्चांग में सूर्य क्रान्ति २३°द. २' तथा नैनीताल का स्टै. मध्याह्न काल १२ घं. ५ मि. ३३ से. छपा है।

चरान्तर गणित की तुलना

श्री जीवन विजय पंचांग में १२ दिसम्बर को द्वादशी तिथि घं.९मि.२४ तथा स्वाती नक्षत्र घं. ९ मि.३ बजे तक लिखी है। पूर्वोक्त सूर्योदय से निम्नवत् घटयादि आयेगा।

काशी		दिल्ली		अल्मोड़ा, नैनीताल		
तिथि	नक्षत्र	तिथि	नक्षत्र	तिथि	नक्षत्र	तिथि नक्षत्र के घं. मि.(I.S.T.)में से स्वस्थानका निकटतम सू उ. घटाकर शेष को ढाई गुना किया।
९ २४ (−) ६ ३८	९ ३ ६ ३८	९ २४ ७ ८	९ ३ ७ ८	९ २४ ७ ०१	९ ३ ७ १	
घं. २ ४६ ×२½	२ २५ ×२½	२ १६ ×२½	१ ५५ ×२½	२ २३ ×२½	२ २ ×२½	
घ. ५५प	६घ. २प.	५घ.४०प.	४घ.४८प	५घ. ५८प	५घ. ५प.	सूर्योदयात तिथि
श्री चिन्ताहरण जन्त्री		श्रीविश्वविजय पंचांग		श्री जीवन विजय पंचांग		← तुलना करें।

श्री रामदत्त जी के पंचांग में तथा श्री आनन्द भास्कर पचांग में यहाँ आये तिथ्यादि मान नहीं मिलेंगे। श्री आनन्द भास्कर पंचांग तो पूर्णतया काशी का पंचांग है। पहले उदाहरण में सूर्योदयास्त एवं दिनमान की तुलना करने से यह बात भली प्रकार स्पष्ट हो जायेगी। अतः ऐसी दशा में श्री जीवन विजय के गणित के प्रति शंका होने पर उ. प्र. सरकार के श्री बापूदेव पंचांग, भारत सरकार के 'राष्ट्रीय पंचांग' अथवा किसी भी वेधशाला के पञ्चांग से ही इसकी तुलना करें। प्रतिदिन छपने वाले 'हिन्दुस्तान' तथा 'नव भारत टाइम्स' में दिये जाने वाले 'पचांग' से भी तुलना करियेगा। असंगति दिखाई दे तो हमसे स्पष्टीकरण अवश्य माँगें। समाधान करना हमारा धर्म है।

चरान्तर का प्रयोग—पूर्वोक्त २३° द.२' क्रान्ति से नैनीताल का चर ५४ मि. ५४ से. है। काशी के लिए चरान्तर + ८ मि. ५० से., दिल्ली के लिए + १ मि. ३५ से. है। काशी देशान्तर + १४ मि. व दिल्ली का − ९'२ मि. में चरान्तर का संयोग करने काशी का फल + २२ मि. ५० से. (या +५७ पल) दिल्ली का फल— ७ मि. ३३ से. (या − १९ पल) आता है। इसका संस्कार तथा विधि नीचे देते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

काशी		दिल्ली		
तिथि	नक्षत्र	तिथि	नक्षत्र	जीवन विजय में फल घटी सं०
५ घ. ५८ प. + ५७ प	५ घ. ५ प. + ५७ प	५घ. ५८ प. − १९ प.	५ घ. ५ प. − १९ प.	
६ घ. ५५ प.	६ घ. २ प.	५ घ. ३९ प.	४ घ. ४६प.	

इस प्रकार प्राप्त गणित के पूर्वोक्त विधि से मिल जाने से यह स्पष्ट है कि हमारी चरान्तर की परिभाषा तथा, + − के चिह्न ठीक हैं। लखनऊ से छपने वाली आग्रहायण पत्रिका के सं.२०१८ के आषाढ़ के अंक में इस चरान्तर को हास्यास्पद बताने वाला पत्र शायद भांग खाकर लिखा व छापा गया था। पाठकों से न्याय मांगने के लिए अगले अंक में उस पत्र को प्रकाशित करेंगे।

—: जीवन विजय से विदेश का पंचांग बनाना :—

कुछ ज्योतिषी लोगों के पास विदेश में जन्मे जातकों की कुण्डलियाँ बनाने के लिये किसी भी पंचांग में विदेश हेतु विधि न होने से जो कठिनाई सामने आती आती हैं। उसका निराकरण पहली बार कर रहे हैं।

विधि :—जीवन विजय पंचाग के घं. मि. तिथि-नक्षत्रादि में विदेशी अक्षांश-रेखांश सारणी के छठे कालम में 'भा० स्टै० टाइम से स्टै. टाइम संस्कार' को धन-ऋण करने से अभीष्ट देश के स्टै० टा० में तिथि-नक्षत्रादि का समाप्तिकाल होगा। चरसारणी से उस स्थान का सूर्योदय पूर्वोक्त विधि से बनाकर इष्ट काल ला सकेंगे। इस वर्ष की चर-सारणी केवल ३५ अक्षांश तक ही है। अधिक या कम अक्षांश हेतु सूत्रानुसार चर ला सकते हैं। (स्प ф स्प. ६ = ज्याचर→चरांश × ४ = मिनटादि चर)

उदाहरण :—१२ दिस. को 'कुवैत' में (अक्षांश २९° − ३०' रेखांश ४२°−.४५') वहाँ के स्टै. टाइम से किसी बच्चे का जन्म घं. १० मि.१० बजे हो तो इष्ट काल, तिथ्यादि व लग्न स्पष्ट करो। न्यास :—

		घ०	मि०	से०
नैनीताल का स्टै० मध्याह्न काल— (२४)		१२	५	३३
भा० स्टै० टा० संस्कार नैनीताल	= (−)	०	१२	०
स्थानीय मध्यम काल प्रत्येक स्थान हेतु	=	घं० ११	मि.५३	से. ३३
कुवैत का स्टै० संस्कार (L.M.T. से)	= (−)	०	− ११	− ०
स्टै० टा० से कुवैत का मध्याह्न काल	=	११	। ४२	। ३३
२३° द २' क्रान्ति से चर संस्कृत (−५५।२६) दिनार्ध उत्तर अक्षांश २९° − ३०' हेतु	= ±	५	। ४	। २४
कुवैत में सूर्योदय स्टै० टा०	= घं.	६	। ३८	। ९ बजे
कुवैत में सूर्यास्त स्टै० टा०	= घं.	१६	। ४६	। ५७ बजे
,, दिनमान होरादि	=	१० घं.	८ मि.	४८ से.
,, दिनमान घट्यादि	=	२५ घ.	२२ प.	

	तिथि—द्वादशी	नक्षत्र—स्वाती	योग—अतिगंड
भा० स्टै० टा० से घं०/मि०	९।२४	९।३	१५।५५
कुवैत का संस्कार	(−) २।३०	(−) २।३०	(−) २।३०
कुवैत में स्टै० टा० से	घं. ६।५४	घं. ६।३३	घं. १३।२५

कुवैत स्टै. टा. से तिथ्यादि का समाप्ति काल घं. मि. में प्राप्त हुआ। शेष क्रिया पूर्ववत् करें। यहाँ यह द्रष्टव्य है कि जातक का जन्म स्वाती में न होकर विशाखा में हुआ है। इष्टकाल ८ घ० ५० प० होगा। (जन्मकाल—सू. उ. × २½ = इष्टकाल घ. प.)

कुवैत का इष्ट साम्पातिक काल R.A.M.C. बनाना —

१२ दिसम्बर को नैनीताल में शून्य बजे का साम्पातिक काल घं. ५ मि. २० से. ३७ दिया है। इसमें कुवैत के लिये सा. काल संस्कार २०.८६ सेकिन्ड (या२१से.) चिन्हानुसार जोड़ने से कुवैत का शून्य बजेका साम्पातिकाल घं. ५।२०।५८ होगा। जन्म काल १० घं. १० मि. में कुवैत का स्टै० अन्तर ११ मि० को ऋण के स्थान पर धन करने से १० घं. २१ मि. कुवैत का स्थानीय मध्यम काल बना।

शून्य बजे का सा० काल कुवैत में	=	५ घ०	२० मि०	५८ से०
स्थानीय मध्यम काल जोड़ा	= +	१०	२१	०
सारणी से १०घं. २१मि. का संस्कार दिया	= +	०	१	४२
कुवैत में इष्ट साम्पातिक काल R.A.M.C.	=	घं. १५	मि. ४३	से. ४० स्पष्ट हुआ।

कुवैत का अक्षांश नैनीताल या अल्मोड़ा के तुल्यतर है। अतः पृष्ठ पर दी गयी 'लग्न सारणी' से १५ घं० ४३ मि० ४० से० (१५ घं० ४४ मि०) सा० काल की सायन लग्न राश्यादि १०।१३°।५४'।३७" (निकटतम) स्पष्ट हो गयी। इसमें इष्ट दिन का अयनांश २३°।३६'।४९" कम करने से निरयण लग्न स्पष्ट ९।२०°।१७'।२७" राश्यादि है। सूक्ष्म रूप में १५।४३।४० सा० काल के अनुसार २० से० का फल ६'।४" कम करने से अभीष्ट निरयण लग्न ९।२०°।११'।२३" होगा। आशा है पाठकों को सब कुछ भली प्रकार बुद्धि गम्य हो गया होगा। आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी। यदि शंका हो तो हमें अवश्य लिखें। आपकी शंका का निवारण ही हमारा धर्म है।

नोट :—विदेश के लिए जन्म पत्र निर्माण का यह उदाहरण हमने श्री बिड़ला मन्दिर, दिल्ली के प्रधान पुरोहित परम श्रद्धेय पं० श्री शिवानन्द उनियाल जी के सुझावानुसार दिया है। अन्य विद्वान भी अपने सुझाव भेज कर कृतार्थ करें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: शुद्ध जन्म कुण्डली निर्माण :—

लीजिये पाठक ! अब जन्म कुण्डली बनाने की शुद्ध एवं प्रमाणिक विधि को सोदाहरण दे रहे हैं । इससे नये लोगों को बिना गुरु की सहायता से ही जन्म कुण्डली (टेवा या चिह्न) बनाने में निपुणता तथा व्यवसायी लोगों को तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त होगा । माना दिनांक ६ दिसम्बर १९८२ तदनुसार २१ गते मंगसिरको नैनीतालमें किसी बच्चे का जन्म घं० ११ मि० १४ बजे स्टै० टा० से हुआ । इसकी संक्षिप्त जन्म कुण्डली निम्नवत् बनेगी ।

इष्टकाल :—जन्म समय (स्टै० टा०) के घं० मि० में से पंचाग में लिखे सूर्योदय के स्टै० घं० मि० को घटाकर शेष को ढाई गुना करने से शुद्ध इष्टकाल बनता है । जैसे—

अभीष्ट जन्म काल के घं० मि०	=	११ घं० १४ मि०
पंचांग में लिखा स्टै० सूर्योदय	=	६ घं० ५६ मि०
घटाने से शेष	=	४ घ० १८ मि० × २½ = १० घं०

शुद्ध इष्टकाल हेतु शुद्ध सूर्योदय ही प्रयोग करना चाहिये ।

४५ पल । यह नैनीताल में शुद्ध इष्टकाल बना । इस दिन अल्मोड़ा-रानीखेत में भी यही इष्टकाल होगा । परन्तु काशी का शुद्ध सूर्योदय घं० ६ मि० ३३ है (दिनमान २६ घ० १५ प०) अतः काशी में इष्टकाल ४ घं० ४१ मि० × २½ = ११ घ० ४२ प० ३० वि० होगा । (घं० मि० के घ० प० सारणी से बनायें तो सुविधा रहेगी) ।

इष्ट साम्पातिक काल (R.A.M.C.) = ६ ता० को नैनीताल में शून्य बजे का सा० काल ४ घं० ५६ मि० ५७ से० छपा है । जन्मकाल ११ घं० १४ मि० (I.S.T.) को स्थानीय मध्यम समय (L.M.T.) में बदलने के लिए इसमें १२ मि० घटाने होंगे । (अक्षांश-रेखांश सारणी देखें), इस प्रकार हमारा अभीष्ट स्थानीय मध्यम काल (लोकल मीन टाइम) ११ घं० २ मि० हुआ । पंचांग में —

शून्य बजे का साम्पातिक काल	=	४ घं०	५६ मि०	५७ से०
हमारा स्थानीय मध्यम काल	= +	११	२	०
योगफल	=	घं० १५	मि० ५८	से० ५७

यह संस्कार रहित इष्ट साम्पातिक काल हुआ । सा० काल की संस्कार सारणी से ११ घं० का फल = १ मि० ४८'४२ से तथा २ मि० का फल '३३ से० है । इसे पूर्वोक्त असंस्कृत फल में जोड़ने से—

घं० मि० से०
१५ । ५८ । ५७
\+ १ । ४८'४२ — (११ घं० का संस्कार)
\+ '३३ — (२ मि० का ,,)
१६ । ०० । ४५'७५ = १६ घं० ...

हमारा इष्ट साम्पातिक काल बना । जिसे नव्य ज्योतिषी खमध्य विषुवांश या R.A.M.C. कहते हैं ।

भयात-भभोग साधन :—पंचांग में आश्लेषा नक्षत्र नैनीताल में ३ घ० ७ प० तक है । अतः जन्म नक्षत्र मघा (व सिंह राशि) का प्रथम चरण हुआ । अपने इष्टकाल में से गतर्क्ष श्लेषा का मान कम करने से (१०।४५ – ३।७ = ७।३८) ७ घ० ३८ प० या ४५८ पल मघा का भयात हुआ । भभोग बनाने के लिए श्लेषा के घ० प० ३।७ को ६० घ० में कम करके मघा के शेष मान ० घ० ६ प० (अगले दिन) को जोड़ना होगा । अतः ६०।० – ३।७ = ५६।५३ + ०।६ = ५६ घ० ५९ प० या ३४१९ पल मघा नक्षत्र का भभोग हुआ । भभोग के ३४१९ पलों में ४ का भाग देने में ८५५ पल (निकटतम) एक चरण का मान होगा । हमारा भयात ४५८ पल एक चरण के इस मान से कम है । इस लिए बालक का जन्म मघा नक्षत्र के प्रथम चरण 'मा' अक्षर के अन्तर्गत हुआ । नाम का पहला अक्षर 'मा' होगा । मघा नक्षत्र का अधिपति ग्रह केतु है अतः जन्म केतु की महादशा में हुआ है । भयात भभोग घं० मि० से बनाना उत्तम है ।

चन्द्र स्पष्ट :—पृष्ठ से तक दैनिक ग्रह स्पष्ट प्रातः घं० ५।२९ बजे के दिये गये हैं । उन्हीं से इष्ट कालिक चन्द्रस्पष्ट व अन्य ग्रह स्पष्ट भी बनायेंगे । जन्म काल घं० ११।१४ में से घं० ५।२९ को कम करने से चालन फल ५ घं० ४५ मि० या ३४५ मि० हुआ । ६ ता० का चन्द्र स्पष्ट रा० ३।२८°।२४'।२२" तथा ७ ता० का चन्द्रस्पष्ट रा० ४।१२°।२८'।५" है । दोनों का अन्तर १४°।३'।४३" (= ५०६५३ विकला) यह दैनिक चन्द्र गति है । अब इष्टकाल के लिए चालन :— $\frac{\text{३४५ मि० × १४°।३'।४३"}}{\text{१४४० मि०}}$

= ३°२२'८" को पूर्वोक्त ६ ता० के चन्द्रस्पष्ट ३।२८°।२४'।२२" में यथा विधि जोड़ने से रा० ४।१°।४६'।३०" यह स्पष्ट चन्द्रमा हुआ, भयात-भभोग द्वारा लगभग रा० ४।१°।४७'।८" आयेगा । अन्तर नगण्य है । इसका एक कारण 'अन्तर्यास संस्कार' (Interpolation) भी है । अन्य ग्रह भी इसी प्रकार स्पष्ट होंगे । सूर्य का उदाहरण पुनः देते हैं । ६ ता० प्रातः स्पष्ट सूर्य रा० ७।१९°।५४'।४९" दै० गति ६०' कला ५४" विकला है । अतः न्यास = $\frac{\text{३४५ मि० × ६०।५४}}{\text{१४४० मि०}}$ या $\frac{\text{५'७५ × ६०'९}}{\text{२४ घं०}}$ = १४क०३५ वि०

चालन फल आया । इसे पूर्वोक्त स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से इष्टकालिक सूक्ष्म निरयण सूर्य स्पष्ट रा० ७।२०°।९'।२६" हुआ । इसमें इष्टदिन का शुद्ध अयनांश २३°।३६'।४८" ... सूर्य ...'।१२" हो गया ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लग्न साधन :—हमारा इष्ट साम्पातिक काल घं० १६ मि० ० से० ४६ है, जिसे हम पहले स्पष्ट कर चुके हैं। साम्पातिक काल की लग्न सारणी (पृष्ठ) में १६ घं० ० मि० का स्पष्ट सायन लग्न रा० १०।१८°।५१'।१८" तथा १६ घं० ४ मि० की लग्न १०।२०°।६'।५५" है। ४ मि० का अन्तर या लग्न गति ७५'।३७" है।

∴ न्यास :—∵ ४ मि० या २४० से० में लग्न गति है = ७५'।३७"

∴ ०मि० ४६ से० ,, गति होगी = $\frac{७५'।३७'' \times ४६}{२४०}$ = १४' क० ३०" विकला। इस फल को १६ घं० ० मि. की लग्न १०।१८°।५१'।१८" में जोड़ने पर रा० १०।१९°।५'।४८" सायन लग्न स्फुट हुई। इसमें अयनांश २३°।२६'।४८" कम करने पर स्पष्ट निरयण लग्न रा० ९।२५°।२९'।१०" हुआ। दैनिक लग्न सारणी से भी मकर लग्नही आयेगी। क्योंकि ६ ता० सोमवार को मकर लग्न ९ घं० ४९ मि० से ११ घं० २८ मि० बजे तक है। जन्म काल घं० ११ मि० १४ व० घं० ९।४९ का अन्तर घं० १।२५ तथा मकर का कुल मान १ घं० ३९ मि० है।

न्यास :—∵ १ घं० ३९ मि० में लग्न गति = ३० अंश या १८०० कला।

∴ १ घं० २५ ,, ,, ,, = $\frac{३० \times १।२५}{१।३९}$ = २५°।४५'।२७" = ९।२५°। ४५'।२७" यह स्थूल रूपेण निरयण लग्न हुआ। सूक्ष्म लग्न से १६'।२७" का केवल अन्तर उपेक्ष है।

प्राचीन पद्धति से बनी निरयण लग्न सारणी से तुलना :—निरयण सूर्य स्पष्ट ७।२०°।९'।२४" है। लग्नसारणी में ७ राशि २० अंश के समसूत्र लाने में ४४ घ० १९ प० लिखा है। इसके अग्रिम अंक ४४।३०।३० से इसका अन्तर ११ प० ३० विप० है। सूर्य की शेष कला ९' २४" से इस अन्तर को गुणा करके ६० से भाग देने पर भाग फल १ प० ४८ विपल को पूर्वानीत ४४।१९ में जोड़कर इष्टकाल १०।४': को भी इसमें जोड़ने से गमग फल ५५।५।४८ को लग्नसारणी में देखा। इसके निकटतम परन्तु कम फल ५५।५९।४८ मकर राशि के २५ अंश में है, दोनों का अंतर ६ पल है, मकर राशि के २५ अंश व २६ अंश का अंतर ८।१२ पल है। अतः पूर्वानीत अन्तर ६ पल को ६० से गुणा करके ८।१२ का भाग देने पर ४३ कला ५४ विकला फल को पूर्वागत लग्न ९'२५° में युक्त करने से ९।२५°।४३'।५४" यह लग्न स्पष्ट हुआ। सूक्ष्म लग्न से केवल १४ कला ५४ विकला का मात्र अन्तर है। जो उपेक्ष है॥ लग्न सारणी अगले अंक में-

॥ अभिनव सायन लग्न सारणी ॥

उपकरण—(R.A.M.C.) इष्ट साम्पातिक काल (सारणी ८४ पृष्ठ में)

लीजिए सहृदय पाठक! नैनीतालाक्षवृत (भूकेन्द्रीय अक्षांश २९°।१२'।६"·४) पर निर्मित की गयी यह "अभिनव लग्न सारिणी" आपकी सेवा में प्रस्तुत है। ज्योतिष का व्यवसाय करने वाले विद्वान् ज्योतिषी लोगों ने जिस उत्साह व निष्ठा से हमारे 'श्री जीवन विजय पंचांग' को अपनाया है उसके प्रतीकार स्वरूप हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम प्रतिवर्ष नये से नये विषयों को आपके सामने प्रस्तुत करें। लग्न साधन की प्रस्तुत विधि अतिसूक्ष्म व शुद्धतम परिणामदायिनी है। इस विधि के बारे में कुमाऊँ क्या भारतवर्ष के भी अधिकांश नामधारी ज्योतिषी लोग नहीं जानते हैं।

इस अभिनव सारणी से लग्नसाधन का उपकरण इष्ट साम्पातिक काल है जिसे सिद्धान्तज्ञ ज्योतिषी Right Ascension of Meridion Cusp (R.A.M.C.) अर्थात् खमध्य विषुवांश कहते हैं। इस सारणी के प्रयोग के लिये न तो इष्ट काल की आवश्यकता है न जन्मकालीन स्पष्ट सूर्य की। केवल जन्मकालीन घं. मि. तथा सामान्य जोड़-घटाने मात्र से इष्टकालीन सायन लग्न स्फुट होता है। जिसमें तात्कालिक अयनांश घटाने से स्पष्ट निरयण लग्न बन जाती है। इस सारणी में प्रति ४ मिनट (साम्पातिक-काल) की विकलान्त शुद्ध लग्न स्पष्ट की गई है।

विधि :—सर्वप्रथम इष्ट समय के भारतीय प्रमाणिक समय (I.S.T.) को स्थानीय मध्यम काल (L.M.T.) में बदलें नैनीताल में इसका संस्कार १२ मि० (ऋण) है। वैसे अक्षांश—रेखांश सारणी (पृष्ठ) के पांचवें कालममें लिखे स्टै० अन्तर के चिह्न को बदलकर अर्थात् धन को ऋण, ऋण को धन करके प्रमाणिक समय स्थानीय मध्यम काल में परिणत हो जाता है। श्री जीवन विजय पंचांग में स्थानीय शून्य बजे (अर्थात् भा० प्र० समय से रात्रि १२ घं. १२ मि.) का साम्पातिक काल निकटतम सेकिण्ड तक दिया हुआ है। इसमें इष्ट समय का मध्यम काल जोड़े। अब साम्पातिक काल संस्कार सारणी में अभीष्ट घं० मि० से० के लिए मि० से० संस्कार लेकर उसे इसी योग फल में जोड़ दें। योगफल २४ घं० से अधिक हो तो २४ घं० कम कर दें अन्यथा कम न करें। यही योगफल आपकी सारणी का उपकरण अर्थात इष्ट साम्पातिक काल (R.A.M.C.) है। अब इष्ट सा० काल के अभीष्ट घण्टा के नीचे निकटतम मिनट (परन्तु कम) की लग्न स्पष्ट लेकर अलग लिख लें। आसन्नतम दो स्पष्ट लग्नों का अन्तर ४ मि० (या २४० सेकेण्ड) की गति है। इष्ट सा० काल व सारणीस्थ सा० काल का भी अन्तर करें। शेष से चालन लेने का सूत्र यह है :—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चालन सूत्र = $\frac{\text{कालान्तर (से०)} \times \text{लग्न गति}}{२४०}$ = चालनफल होगा

इस प्रकार चालन फल को अलग लिखे लग्न स्पष्ट में जोड़ने से अभीष्ट कालिक सूक्ष्म सायन लग्न स्पष्ट होगा। इसमें इष्ट दिन का सूक्ष्म अयनांश घटाने से निरयण लग्न स्फुट होता है। एक उदाहरण से इसका तुलनात्मक ज्ञान हो जायेगा। निरयण लग्न स्पष्ट ही जन्म कुण्डली का प्रथम भाव स्पष्ट है और इसमें ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव स्पष्ट होता है।

—: उदाहरण वैशाख शुक्ल १५ शनिवार दिनांक ८ मई १९८२ ई० :—

अभीष्ट काल भा० प्र० समय घं० १८ मि० ४८ (I.S.T.) है। इस समय नैनीताल में निरयण लग्न तथा दशमलग्न क्या होगी ?

अभीष्ट काल घं० १८ मि० ४८ में १२ मि० घटाने से नैनीताल का स्थानीय मध्यम काल (L.M.T.) घं० १८ मि० ३६ हुआ। ८ मई १९८२ को शून्य बजे का सा० काल घं० १५ मि० १ से० ८ है। अतः —

घं०	मि०	से०	
१५	१	८	(अभीष्ट ता० के शून्य बजे का सा० काल में
+ १८	३६	०	स्थानीय मध्यम काल को जोड़ा)
३३	३६	८	(यह २४घं० से अधिक है अतः इसमें २४घं० कम किया)
− २४	०	०	
९	३७	८	(यह असंस्कृत इष्ट सा०काल है। उसमें संस्कार किया जायेगा)
+ ०	३	३'३३	(सारणी सख्या से १८ घं० ३६ मि० का फल)
९	४०	११'३३	(यह इष्ट साम्पातिक काल R.A.M.C, अर्थात् लग्न

सारणी का उपकरण बना) इसके द्वारा लग्न सारणी से निम्नवत् लग्न स्पष्ट करेंगे।

अभिनव लग्न सारणी में :—

	रा०	अं०	क०	वि०	
९घं०४०मि० की लग्नस्पष्ट = (क)	७	१७	३४	४१	क को ख में से घटाने से
९घं०४४मि० ,, ,, = (ख)	७	१८	२५	३६	४ मि० की लग्न गति मिलेगी।

४ मिनट की गति = कलादि ५०'।५५" (= ३०५५" विकला)

हमारा इष्ट सा० काल ९ घं० ४० मि० से केवल ११'३३ से अधिक है। पूर्वोक्त सूत्रानुसार :—

$\frac{११'३३ \times ३०५५ \text{ वि०}}{२४०}$ } ∵ २४० से० (४मि०) में गतिचालन = ३०५५ विकला
∴ ११'३३ से० ,, ,, ,, = $\frac{३०५५ \times ११'३३}{२४०}$ वि०

न्यास :—

= २४०) ३४६१३'१५ (१४४"'२२ विकला चालन फल हुआ। विकला में ६० का भाग देने से २ कला २४ विकला (निकटम) यह चालन फल मिला। इसको पूर्वोक्त ९ घं० ४० मि० की लग्न में जोड़ने से :—

```
२४०
१०६१
९६०
१०१३
९६०
५३१
४८०
५१५
४८०
×
```

	रा०	अं०	क०	वि०	
	७	१७	३४	४१	
		+	२	२४	
	७	१७	३७	५	सायन लग्न स्पष्ट हो गया।
इसमें −		२३	३६	१९	अयनांश ऋण किया तो
रा०	६	२४	०	४६	अभीष्ट निरयण लग्न बना।

तुलना :—'दिनभान समे रिवष्टे लग्नं षड्भान्वितो रविः' वचनसे हम तुलना करेंगे कि उक्त लग्न स्पष्ट ६।२४।०।४६ कितनी शुद्धाशुद्ध है। चूँकि ८ मई को सूर्यास्त काल भी भा० प्र० समय से १८ घं० ४८ मि० ही पचांग में लिखा है। इस दिन का स्टै० सू० उ० घं० ५।२९ अपने अभीष्ट का घं० १८।४८ में घटाने से होरादि इष्टकाल घं० १३।१९ को ढाई (२·५) से गुणा करने पर इष्टकाल घ० ३३ प० १७ वि० ३० हुआ। इस दिन का दिनमान भी घ० ३३ प० १७ है। केवल ३० विकला का अन्तर है। अतः एतत्कालिक स्पष्ट सूर्य में ६ राशि जोड़ने से लग्नस्पष्ट तुल्य फल आना चाहिए। यहा अभीष्ट सूर्य स्पष्ट ही हमारा सप्तम भाव स्पष्ट होगा। आइये देखें—

प्रातः ५ घं० २९ मि० पर स्पष्ट निरयण सूर्य स्पष्ट रा. ०।२३।२८।३६ लिखा है। अभीष्टकाल घं० १८।४८ एवं घं० ५।२९ का अन्तर घं० १३ मि० १९ हुआ, वक्ष्माण प्रकार से सूर्यगति ५८'।१" है। चूँकि २४ घन्टे की गति है=५८ कला १ विकला।

∴ १३ घं० १९ मि० ,, ,, ,, = $\frac{५८ \times १३।१९}{२४}$ = ३२' ११" (३२ क. ११वि.)

इसे प्रातःकालीन स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।२३।२८।३६ में जोड़ने से ०।२४।०।४७

न्यास :— ०।२३।२८।३६
+ ३२।११
= ०।२४।००।४७ यह सूर्यास्त कालीन स्पष्ट निरयण सूर्य सप्तम भाव स्पष्ट हुआ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इसमें ६ राशि जोड़ने से तात्कालिक स्पष्ट निरयण लग्न रा. ६।२४°।०'।४६" होगी जिसे हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं। केवल १ विकला का अन्तर नगण्य तथा उपेक्ष्य है। क्योंकि इष्ट काल में भी १० विपल का अन्तर है।

पूर्वोक्त दोनों उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है। श्री जीवन विजय पंचांग का स्पष्ट निरयण सूर्य ही सूक्ष्म शुद्ध नहीं है अपितु 'अभिनव लग्न सारणी' सहित समस्त पदार्थ अत्यन्त उपयोगी व स्पष्ट हैं। अस्तु ॥

श्री जीवन विजय पंचांग की तरह ही कुछेक अन्य स्थूल व अशुद्ध पंचांगों में भी 'दैनिक लग्न सारणी' छपी रहती है। गत वर्ष के पंचांग में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि श्री जीवन विजय की यह दैनिक लग्न सारणी नैनीताल में निरयण मेषादि लग्नों का प्रवेश काल भा० प्र० समय में बतलाती है। आइये इसकी भी तुलना करें। ता० १० अप्रेल १९८२ को नैनीताल में निरयण मेष लग्न का आरम्भ काल घं० ६ मि० ७ से० दिया है। अर्थात् इस समय स्पष्ट निरयण लग्न ०।०।०।० होगी तथा सायन लग्न ०।२३।३६।१९ होगी। क्योंकि १० अप्रेल का शुद्ध अयनांश २३।३६।१९" है।

पहले उदाहरण की भाँति घं० ६।७ में १२ मि० कम करने पर स्था० मध्यम काल घं० ५।५५ हुआ। पंचांग में १० अप्रेल को शून्य बजे का सा० काल घं० १३।१०।४४ है। इसमें ५ घं० ५५ मि० जोड़ने से घं० १९।५।४४ को होरादि संस्काररहित सा० काल हुआ। सारणी संख्या (संस्कार सारणी) से ५ घं० ५५ मि० का संस्कार ० मि० ५८ से० (निकटतम) आता है। इसे पूर्वोक्त घं० १९।५।४४ में जोड़ने से इष्ट सा०काल (R.A.M.C.) घं० १९।६।४२ हुआ। यह योग २४ घं० से कम है .अतः २४ घटाने की आवश्यकता ही नहीं है। इसके द्वारा पहले उदाहरण वाली विधि से स्पष्ट सायन लग्न निकालना है। जैसे—

सा० काल १९ घं० ४ मि० पर लग्न स्पष्ट = रा. ०।२२°।४०'।४१" }
" " १९ घं० ८ मि० " " " = रा. ०।२४। ३। ५ }

४ मि० या २४० से की गति १°२२'२४"
(८२'४ कला) या ४९४४" विकला है।

१९ घं० ४ मि० से हमारा उपकरण केवल २ मि० ४२ से०=(२'७ मि०) अधिक है। अतः सूत्रानुसार अनुपात किया :— $\frac{२'७ \text{ मि०} \times ८२'४' \text{ क.}}{४ \text{ मि०}}$ = ५५'६२ कला या

५५ कला ३७ विकला फल आया। इसे —
१९ घं० ४मि० की लग्न रा० ०।२२।४०।४१ में जोड़ा तो—

रा. ०।२२°।४०'।४१"
\+ ०। ०।५५।३७
= ०।२३।३६।१८ यह सायन लग्न स्फुट हुयी।

इसमें इस दिन का अयनांश घटाने पर निरयण लग्न रा० ०।०°।०'।२" होती है जो कि वास्तविक निरयण मेष लग्न से केवल २ विकला अधिक है। इससे यह स्पष्ट हुआ कि हमारी दैनिक लग्न सारणी व अभिनव लग्न सारणी दोनों ही सूक्ष्मतम परिणाम दायिनी हैं। दैनिक लग्नसारणी की सूक्ष्मता के बारे में हम पहले भी बता चुके हैं। आशा है कि विद्वान पाठकों की समझ में 'लग्न स्पष्ट' की विशेषता आ गई होगी। हमें विश्वास है कि जिस व्यक्ति ने भी २-४ बार इस सारणी का प्रयोग कर लिया वह व्यक्ति किसी भी अशुद्ध पंचांग के चक्कर में कभी भी नहीं पड़ेगा। यही हमारा उद्देश्य है कि हम समस्त कुमाऊँ में सूक्ष्म-शुद्ध फलदायक ज्योतिषोपकरणों का प्रचार प्रसार करें। जो लोग इतने स्पष्ट उदाहरणों के बाद भी पुराने व अशुद्ध पंचांगों का प्रयोग करके लोगों को भ्रम में डालने से विरत नहीं होते उनसे हम क्या कहें। नयी पीढ़ी के जागरूक नवयुवक ही उनसे न्याय मांगेंगे।

आपका आजका दिन कैसा बीतेगा ? खुद देखिये ?

आइये! आज हम आपको एक अमूल्य भावी बिना दक्षिणा भेंट कर रहे हैं। आपका आजका दिन कैसा बीतेगा? आप प्रतिदिन खुद देखिये, चमत्कारिक सच्चाई आपको मिलेगी। विधि यह है कि आप प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान-ध्यान करने के पश्चात् खाली मुँह किसी कागज पर १०८ के अन्दर कोई गिनती (संख्या) लिख लीजिये, उसमें १५ और जोड़ दीजिए, तथा प्रश्न करने वाले दिन की संख्या उसमें से घटा दीजिये, फिर २१ से भाग दीजिये—जो शेष बचे उसका फल यहां पर देख लीजिये। दिन की संख्या इस प्रकार है—रविवार ५, सोमवार १, मंगलवार ३, बुधवार ४, गुरुवार ११, शुक्रवार ७ और शनिवार १३। उदाहरण—जैसे किसी व्यक्ति ने शनिवार के दिन प्रश्न देखने का विचार करके कागज पर ५४ की संख्या लिख दिया, अब उसमें १५ जोड़ा तो ८९ हुआ, फिर इसमें से शनिवारकी संख्या १३ घटाकर २१से भाग दिया तो (५४+१५−१३÷२१=११) शेष १३ बचा, अब आगे १३ नं० का फल देखा तो यह मिला 'लफड़ा-झंझट और चिन्ता युक्त दिन गुजरेगा।" इसी प्रकार आप प्रतिदिनका देखिये; किन्तु एक दिनमें एक व्यक्ति एक ही बार देखें और यह पुस्तक हमेशा अपने पास रक्खें। फल सही निकलने की पूर्ण गारन्टी है।

संख्या का फल—१—किसी अच्छे आदमी का दर्शन पाकर लाभ होगा। २—अनेक प्रकार के विचार उठेंगे, कार्य पूर्ण होगा। ३—दिन अच्छा बितेगा। ४—आज का दिन चिन्ता व्यथा से गुजरेगा। ५—दौड़-धूप ज्यादा करनी पड़ेगी, लाभ होगा। ६—सुख और प्रसन्नताके साथ दिनबितेगा। ७—कोई गुप्त चिन्ता सतायेगी, नुकसान होगा। ८—आज दिन भर आप चिन्तित रहेंगे, रात को नींद नहीं आयेगी। ९—आज खर्च ज्यादा करेंगे, लाभ कम होगा। १०—चिन्ता, व्यथा और परिवार के लोग परेशान करेंगे। ११—जो काम सोचेंगे, पूरा होगा। १२—काम सफल होगा, लाभ की आशा है। १३—लफड़ा-झंझट और चिन्तायुक्त दिन गुजरेगा। १४—इच्छा और धन का लाभ होगा। १५—परेशानी और खर्च ज्यादा होगा। १६—अच्छा बितेगा। १७—बेहद खराब गुजरेगा। १८—सुख-शान्ति से गुजरेगा। १९—चिन्तित रहेंगे। २०—आज का दिन शुभ और लाभयुक्त बितेगा। २१—अपना पूज्य बनने पर पैसे की चिन्ता सतायेगी।

नोट :—अगले वर्ष भावस्पष्ट की विशेष विधियाँ दी जायेगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

" उत्तर अक्षांश २९।२२ (नैनीताल) की सायन लग्न सारणी "

(उपकरण– इष्ट साम्पातिक काल (R. A. M. C.)

मि.	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं	६ घं.	७ घं.	मि.
०	३ १२ ३२ ३	३ २५ २७ १७	४ ८ १० ५७	४ २० ५५ ५५	५ ३ ४९ १	५ १६ ५१ ३०	६ ० ० ०	६ १३ ८ ३०	०
४	३ १३ २४ २६	३ २६ १८ २२	४ ९ १ ४८	४ २१ ४७ ९	५ ४ ४० ५४	५ १७ ४३ ५६	६ ० ५२ ३८	६ १४ ० ५५	४
८	३ १४ १६ ४२	३ २६ ९ २५	४ ९ ५२ ४०	४ २२ ३८ २६	५ ५ ३२ ५०	५ १८ ३६ २४	६ १ ४५ १६	६ १४ ५३ १७	८
१२	३ १५ ८ ५१	३ २८ ० २६	४ १० ४३ ४४	४ २३ २९ ४६	५ ६ २४ ४९	५ १९ २८ ५३	६ २ ३७ ५४	६ १५ ४५ ३८	१२
१६	३ १६ ० ५२	३ २८ ५१ २५	४ ११ ३४ २५	४ २४ २१ ८	५ ७ १६ ५०	५ २० २१ २४	६ ३ ३० ३१	६ १६ ३७ ५७	१६
२०	३ १६ ५२ ४८	३ २९ ४२ २२	४ १२ २५ २०	४ २५ १२ ३२	५ ८ ८ ५३	५ २१ १३ ५६	६ ४ २३ ९	६ १७ ३० १४	२०
२४	३ १७ ४४ ३६	४ ० ३३ १६	४ १३ १६ १६	४ २६ ३ ५९	५ ९ ० ५९	५ २२ ६ २९	६ ५ १५ ४६	६ १८ २२ २९	२४
२८	३ १८ ३६ २०	४ १ २४ १०	४ १४ ७ १३	४ २६ ५५ २९	५ ९ ५३ ७	५ २२ ५९ ३	६ ६ ८ २२	६ १९ १४ ४२	२८
३२	३ १९ २७ ५७	४ २ १५ ३	४ १४ ५८ १२	४ २७ ४७ १	५ १० ४५ १८	५ २३ ५१ ३८	६ ७ ० ५७	६ २० ६ ५३	३२
३६	३ २० १९ ३०	४ ३ ५ ५४	४ १५ ४९ १२	४ २८ ३८ ३६	५ ११ ३७ ३१	५ २४ ४४ १४	६ ७ ५३ ३१	६ २० ५९ १	३६
४०	३ २१ १० ५८	४ ३ ५६ ४५	४ १६ ४० १४	४ २९ ३० १४	५ १२ २९ ४६	५ २५ ३६ ५१	६ ८ ४६ ४	६ २१ ५१ ७	४०
४४	३ २२ २ २१	४ ४ ४७ ३६	४ १७ ३१ १८	४ ० २१ ५४	५ १३ २२ ३	५ २६ २९ २९	६ ९ ३८ ३६	६ २२ ४३ १०	४४
४८	३ २२ ५३ ४१	४ ५ ३८ २६	४ १८ २२ २४	४ १ १३ ३७	५ १४ १४ २२	५ २७ २२ ६	६ १० ३१ ७	६ २३ ३५ ११	४८
५२	३ २३ ४४ ५६	४ ६ २९ १६	४ १९ १३ ३२	४ २ ५ २२	५ १५ ६ ४३	५ २८ १४ ४४	६ ११ २३ ३६	६ २४ २७ १०	५२
५६	३ २४ ३६ ८	४ ७ २० ६	४ २० ४ ४२	४ २ ५७ १०	५ १५ ५९ ५	५ २९ ७ २२	६ १२ १६ ४	६ २५ १९ ९	५६

मि.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं	१३ घं	१४ घं.	१५ घं.	मि.
०	६ २६ १० ५९	७ ९ ४ ५	७ २१ ४९ ३	८ ४ ३२ ४३	८ १७ २७ ५७	९ ० ५३ ५४	९ १५ १६ १२	१० १ ५ ३७	०
४	६ २७ २ ५०	७ ९ ५५ १८	७ २२ ३९ ५४	८ ५ २३ ५२	८ १८ २० २९	९ १ ४९ १९	९ १६ १६ २५	१० २ १२ ४७	४
८	६ २७ ५४ ३८	७ १० ४६ २८	७ २३ ३० ४४	८ ६ १५ ४	८ १९ १३ ८	९ २ ४५ १४	९ १७ १७ ३	१० ३ २० २९	८
१२	६ २८ ४६ २३	७ ११ ३७ ३६	७ २४ २१ ३४	८ ७ ६ १९	८ २० ५ ५७	९ ३ ४० ५६	९ १८ १८ ५	१० ४ २८ ४३	१२
१६	६ २९ ३८ ६	७ १२ २८ ४२	७ २५ १२ २४	८ ७ ५७ ३९	८ २० ५८ ५५	९ ४ ३७ ८	९ १९ १९ ३१	१० ५ ३७ २९	१६
२०	७ ० २९ ४६	७ १३ १९ ४६	७ २६ ३ १५	८ ८ ४९ २	८ २१ ५२ ३	९ ५ ३३ ३८	९ २० २१ २४	१० ६ ४६ ४९	२०
२४	७ १ २१ २४	७ १४ १० ४८	७ २६ ५४ ६	८ ९ ४० ३०	८ २२ ४५ २१	९ ६ ३० २५	९ २१ २३ ४२	१० ७ ५६ ४७	२४
२८	७ २ १२ ५९	७ १५ १ ४८	७ २७ ४४ ५७	८ १० ३२ ३	८ २३ ३८ ४९	९ ७ २७ ३०	९ २२ २६ २८	१० ९ ७ ९	२८
३२	७ ३ ४ ३१	७ १५ ५२ ४७	७ २८ ३५ ५०	८ ११ २३ ४०	८ २४ ३२ ३०	९ ८ २४ ५४	९ २३ २९ ४०	१० १० १८ ९	३२
३६	७ ३ ५६ १	७ १६ ४३ ४४	७ २९ २६ ४४	८ १२ १५ २४	८ २५ २६ २०	९ ९ २२ ३७	९ २४ ३३ २१	१० ११ २९ ४४	३६
४०	७ ४ ४७ २८	७ १६ ३४ ४१	८ ० १७ ३८	८ १३ १५ २४	८ २६ २० २३	९ १० २० ४०	९ २५ ३७ २९	१० १२ ४१ ५३	४०
४४	७ ५ ३८ ५२	७ १८ २५ ३६	८ १ ८ ३५	८ १३ ५९ ८	८ २७ १४ ३८	९ ११ १९ ४	९ २६ ४२ ७	१० १३ ५४ ३७	४४
४८	७ ६ ३० १४	७ १९ १६ १६	८ १ ५९ ३४	८ १४ ५१ ९	८ २८ ९ ६	९ १२ १७ ४८	९ २७ ४७ १४	१० १५ ७ ५५	४८
५२	७ ७ २१ ३४	७ २० ७ २०	८ २ ५० ३५	८ १५ ४३ १८	८ २९ ३ ४८	९ १३ १६ ५३	९ २८ ५२ ५१	१० १६ २१ ५८	५२
५६	७ ८ १२ ५१	७ २० ५८ १२	८ ३ ४१ ३८	८ १६ ३५ ३४	८ २९ ५८ ४४	९ १४ १६ २१	९ २९ ५८ ५९	१० १७ ३६ १६	५६

मि.	१६ घं	१७ घं	१८ घं	१९ घं	२० घं	२१ घं	२२ घं.	२३ घं.	मि.
०	१० १८ ५१ १८	११ ८ ४२ ८	०० ०० ०० ००	० २१ १७ ५२	१ ११ ८ ४२	१ २८ ५४ २३	२ १४ ४३ ४८	२ २९ ६ ६	०
४	१० २० ६ ५५	११ १० ५ २३	०० १ २६ १७	० २२ ४० ४१	१ १२ २३ ४४	२ ०० १ १	२ १५ ४३ ३९	३ ० १ १६	४
८	१० २१ २३ ६	११ ११ २९ ०	०० २ ५२ ३३	० २४ ३ ५	१ १३ ३८ १२	२ १ ७ ९	२ १६ ४३ ७	३ ० ५६ १२	८
१२	१० २२ ३९ ५१	११ १२ ५३ ०	०० ४ १८ ४७	० २५ २५ ४	१ १४ ५२ ५	२ २ १२ ४६	२ १७ ४२ १२	३ १ ५० ५४	१२
१६	१० २३ ५७ ९	११ १४ १७ २०	०० ५ ४४ ५४	० २६ ४६ ३३	१ १६ ५ २३	२ ३ १७ ५३	२ १८ ४० ५६	३ २ ४५ २२	१६
२०	१० २५ १५ २	११ १५ ४१ ५९	०० ७ १० ५४	० २८ ७ ३४	१ १७ १८ ७	२ ४ २२ ३१	२ १९ ३९ २०	३ ३ ३९ ३७	२०
२४	१० २६ ३३ २७	११ १७ ६ ५६	०० ८ ३६ ४४	० २९ २८ ५	१ १८ ३० १६	२ ५ २६ ३९	२ २० ३७ २३	३ ४ ३३ ४०	२४
२८	१० २७ ५२ २४	११ १८ ३२ ९	०० १० २ २४	१ ०० ४८ ६	१ १९ ४१ ५१	२ ६ ३० २०	२ २१ ३५ ६	३ ५ २७ ३०	२८
३२	१० २९ ११ ५४	११ १९ ५७ ३६	०० ११ २७ ५१	१ २ ७ ३६	१ २० ५२ ५१	२ ७ ३३ ३२	२ २२ ३२ ३०	३ ६ २१ ११	३२
३६	११ ० ३१ ५५	११ २१ २३ १६	०० १२ ५३ ४	१ ३ २६ ३३	१ २२ ३ १३	२ ८ ३६ १८	२ २३ २९ ३५	३ ७ १४ ३९	३६
४०	११ १ ५२ २६	११ २२ ४९ ६	०० १४ १८ १	१ ४ ४४ ५८	१ २३ १३ ११	२ ९ ३८ ३६	२ २४ २६ २२	३ ८ ७ ५७	४०
४४	११ ३ १३ २७	११ २४ १५ ६	०० १५ ४२ ४०	१ ६ २ ५१	१ २४ २२ ३१	२ १० ४० २९	२ २५ २२ ५२	३ ९ १ ५	४४
४८	११ ४ ३४ ५६	११ २५ ४१ १३	०० १७ ७ ००	१ ७ २० ९	१ २५ ३१ १७	२ ११ ४१ ५५	२ २६ १९ ४	३ ९ ५४ ३	४८
५२	११ ५ ५६ ५४	११ २७ ७ २७	०० १८ ३१ ००	१ ८ ३६ ५४	१ २६ ३९ ३१	२ १२ ४२ ५७	२ २७ १४ ४६	३ १० ४६ ५२	५२
५६	११ ७ १९ १८	११ २८ ३३ ४३	०० १९ ५४ ३७	१ ९ ५३ ५	१ २७ ४७ १३	२ १३ ४३ ३५	२ २८ १० ४१	३ ११ ३९ ३१	५६

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गृहारम्भ में वृषभ चक्र (सूर्यर्क्षात्)

स्थान	शीर्ष	अ. पा.	पृ. पा.	पृष्ठ	द. कुक्षि	पूँछ	वा. कु	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	दाह	शून्य	स्थिर	श्रीप्राप्ति	लाभ	नाश	निर्धनता	कष्ट

सूर्य-नक्षत्र से साभिजित गणना

गृहप्रवेश में कुम्भ चक्र (सूर्यर्क्षात्)

स्थान	मुख	पूर्व	याम्य	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	तल	कंठ
नक्षत्र	१	४	४	४	४	४	३	३
फल	दाह	उद्वस	लाभ	श्रीप्राप्ति	कलहप्राप्ति	विनाश	स्थिरता	स्थिरता

सूर्य-नक्षत्र से विनाभिजित् गणना

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

(गताब्द वार घ. प. वि. + ध्रुवक = वर्षेष्ट वार घ. प. वि.)

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	४	२	१	६	५	३	२	१	६	५
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	७	४१	१५	४९	२२	५६	३०	४	३८	११
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	३८	२७	१६	५	५४	४३	३२	२१	१०	५९
विपल	५४	४९	४३	३७	३२	२६	२१	१५	९	४	७	११	१५	१८	२२	२६	२९	३३	३६	४०

निरयण सूर्य भ्रमण के द्वारा बनायी गयी प्रस्तुत 'वर्ष प्रवेश सारणी' का प्रयोग करने से पूर्व हमारे प्रिय पाठकों को जान लेना चाहिए कि वर्ष का सूर्य अपनी दैनिक स्पष्ट गति से जिस क्षण व्यक्ति के जन्म कालिन सूर्य की राशि अंश कला विकला तुल्य होता है। ठीक उस क्षण को उस व्यक्ति का वर्ष प्रवेश-काल कहा जाता है। यहाँ पर यह आवश्यक है कि जन्म और वर्ष का सूर्य स्पष्ट एक सिद्धान्तीय होना चाहिए। सारणी से वर्षेष्ट साधन में स्वल्पान्तर रहे तो उसे उपेक्ष समझना उचित होगा।

विधि :—वर्ष प्रवेश सारणी में प्रत्येक वर्ष (गताब्द) के लिए ध्रुवक वार, घटी, पल, विपल में दिये हैं। नाक्षत्रिक सौर गणना से यह मान ३६५.२५६३६२८ दिन माना गया है। वर्तमान शक या सम्वत में से जन्म कालीन शक या सम्वत घटाने पर शेष 'गताब्द' आते हैं। जन्म कालिक वार, घटी, पल, विपलों को क्रमशः लिखकर उसके नीचे 'गताब्द' द्वारा प्राप्त ध्रुवक के वार घटी पल विपल लिख कर इन्हें सामान्य रीति से जोड़ लेना चाहिए। जोड़ने पर यदि वार की संख्या ७ से अधिक आये तो उसमें ७ का भाग देकर शेषको रविवारादि क्रमसे वार मानना चाहिए। क्योंकि वारों के १ से ७ तक के अंक क्रमशः रवि से लेकर शनिवार के लिए हैं। इस प्रकार प्राप्त वर्ष प्रवेश काल मध्यम होता है। ठीक वर्ष प्रवेश काल तो जन्मकालीन स्पष्ट सूर्य के तुल्य होने पर ही होता है। इस वर्ष के पंचांग में इसी विधि का उदाहरण दे रहे हैं।

उदाहरण :—एक व्यक्ति का जन्म नैनीताल के निकट दिनांक २ जुलाई १९४७ बुधवार को घं. ५ मि. ३२ बजे भा० प्र० समय से हुआ। इस दिन नैनीताल का सूक्ष्म सूर्योदय ५ घं. २० मि. है। इस प्रकार जन्मकाल में सू. उ. घटाने से शेषफल ० घं. १२ मि. को ढाई गुना करने से शुद्ध इष्टकाल ० घ. ३० प. ० विपल हुआ। अब यदि इस व्यक्ति का सम्वत २०३९ के लिए वर्ष प्रवेश काल बनाना होतो वर्तमान सम्वत २०३९ (या सन् १९८२) में जन्म सम्वत् २००४ (या सन् १९४७) घटाने से गताब्द ३५ आये। अर्थात् जातक की आयु के ३५ वर्ष बीत चुके हैं और ३६ वां वर्ष दैनिक सूर्य के जन्म कालिक स्पष्ट सूर्य २।१६°।९′।५३″ तुल्य हो जाने पर प्रवेश होगा। सम्वत् २०३९ (सन् १९८२) में जन्म दिनांक के निकट १ जुलाय गुरुवार को प्रातः ५।२९ बजे दैनिक सूर्य स्पष्ट २।१५°।१४ २३″ तथा २ जुलाई को २°।१६°।११′।३४″ है। अर्थात् इसी बीच १ ता० को किसी समय ३६ वां वर्ष प्रवेश हुआ है। सूर्य की दैनिक गति ५७′।११″ है। जन्म कालीन सूर्य से १ ता० का सूर्य घटाने पर (२।१६°।९′।५३″—२।१५°।१४′ २३″) ५५′३०″ शेष बचा। $\left(\frac{२४ \times शेषांश}{सू० गति}\right) = \frac{२४ \times ५५'।३०''}{५७'।११''}$— सूत्रानुसार २३ घं० १७ मि. ३७ से०(या २३ घं० १८ मि०)फल आया। इसमें ५ घं० २९ मि० जोड़ने से गुरुवार २८ घं० ४७ मि० भा० स्टैं० टाइम पर उस व्यक्ति का नूतन वर्ष प्रवेश होगा। अंग्रेजी विधि से इसे शुक्रवार २ जुलाय की प्रातः घं० ४/४७ A.M. कहेंगे। सारिणी के आनुपातिक फल २८ घं० ५३ मि. से यह समय ६ मि. या १५ पल अन्तरित होगा। इस समय के इष्ट साम्पातिक काल घं० २३।१३।४३ द्वारा साधित नि० लग्न २।८°।२७′।४९″ ही जातक की शुद्ध वर्ष लग्न होगी। शेष विधियाँ अगले अंक में—सम्पादक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: श्रीसंवत् २०३९ शके १९०४ के आवश्यक मुहूर्त :—

अथ देवप्रतिष्ठा मुहूर्त सम्वत २०३९ शके १९०४

मास तिथि वार	दिनांक १९८२	नक्षत्र	विवरण
वैशाखकृष्ण ८ शु.	१६ अप्रै.	उ.षा.	अभिजिति । अन्य ल. चिन्त्य ।
,, ,, ९ र.	१८ ,,	धनिष्ठा	,, ,, ।
वैशाखशुक्ल १ चं.	२६ ,,	रोहिणी	,, ,, ।
,, ,, ७ शु.	३० ,,	पुष्य	,, ,, ।
ज्येष्ठ कृष्ण ६ शु.	१४ मई	उफ.	,, ,, ।
,, ,, ८ र.	१६ ,,	धनिष्ठा	,, ,, ।
,, शुक्ल १ चं.	२४ ,,	मृग.	,, ,, । क्षयति. दोष ।
,, ,, ५ गु.	२७ ,,	पुष्य	,, ,, ।
,, ,, १२ गु.	३ जून	स्वाती	ल. चि. घं. १२।९ तक ।
,, ,, १५ र.	६ ,,	अनु.	घं. ८।१८ से घं. १०।४२ तक ।
आषाढ़कृष्ण ४ शु.	११ ,,	श्रवण	अभिजिति । अन्य ल. चि. ।
,, ,, ६ र.	१३ ,,	शत.	घं. १०।४५ तक ल. चि.
,, ,, ९ बु.	१६ ,,	रेवती	अभिजिति ।
,, शुक्ल ३ शु.	३० ,,	स्वाती	ल. ५ चिन्त्य ।

॥ गृहारम्भ, गृहप्रवेश मुहूर्त सं० २०३९ शके १९०४ ॥

मास तिथि वार	दिनांक १९८२	नक्षत्र	विवरण
वैशाखशुक्ल १३ बु.	५ मई	हस्त	ल.५घं. १३।३५ से शुक्र वेधाभाव । गृहासु. ।
ज्येष्ठ शुक्ल ११ बु.	२ जून	चित्रा	ल.चि.घं.१४।५से । गृहा. सु. । नू.गृ. प्र.सु. ।
,, ,, १२ गु.	३ ,,	स्वाती	घं.१२।९ तक, ल.चि. । गृहा., पु.गृ. प्र.सु. ।
आषाढ़कृष्ण ९ बु.	१६ ,,	रेवती	घं. १०।४३ से । ल.चि. । नू. गृ. प्र. सु. ।
श्रवण शुक्ल ६ चं.	२६ जु.	चित्रा	घं. १४।५६ से । ल.चि. । पुः गृ. प्र. सु. ।
,, ,, ८ बु.	२८ ,,	स्वाती	घं. १२।२४ तक । ,, ,,
,, ,, १० शु.	३० ,,	अनुराधा	अभिजिति ल.चि. गृहा०, जीर्ण गृ. प्र. सु. ।
भाद्र कृष्ण २ शु.	६ अग	धनिष्ठा	अभिजिति । गृहा० सु. ।
,, शुक्ल ११ चं.	३० ,,	उषा.	[illegible]

—: श्रीसम्वत् २०३९ शाके १९०४ के उपनयन मुहूर्त :—

मास तिथि वार	गते	दिनांक १९८२	नक्षत्र	विवरण
चैत्र शुक्ल ६ मं.	१७ चैत्र	३० मार्च	रोहणी	अभिजिति, अन्य ल. (सामवेदिनः)
,, ,, ११ र.	२२ ,,	४ अप्रै.	आश्लेषा	,, वा ३,४ चिन्त्य ।
,, ,, १२ चं.	२३ ,,	५ ,,	पूफा.	,, ,, ।
वैशाखशुक्ल ३ चं.	१३ वै.	२६ ,,	रोहणी	,, ,, ।
,, ,, ५ बु.	१५ ,,	२८ ,,	आर्द्रा	,, ,, (केतुवेध) ।
,, ,, ११ चं.	२० ,,	३ मई	पूफा.	,, ,,अन्य ३,४चि.
,, ,, १२ बु.	२२ ,,	५ ,,	हस्त	,, ,, (श्राव०) ।
ज्येष्ठ कृष्ण १ र.	२५ ,,	८ ,,	अनुराधा	,, ,,अन्य ३,४चि.
,, ,, ५ गु.	३० ,,	१२ ,,	पूषा	,, ,, ,,
,, ,, ६ शु.	३१ ,,	१४ ,,	उषा.	,, ,, ,,
ज्येष्ठशुक्ल २ चं.	१० ज्येष्ठ	२४ ,,	रोहणी	ल. चि. घं. १०।२० तक ।
,, ,, ३ म.	११ ,,	२५ ,,	मृग.	ल. चि. घं. ७।३४ तक ।
,, ,, ५ बृ.	१३ ,,	२७ ,,	पुष्य	,, ,, ३,४ ।
,, ,, १० मं.	१८ ,,	१ जून	हस्त	घं. १२।२७ तक (सामगानां)
,, ,, १२ बृ.	२० ,,	३ ,,	स्वाती	घं. १२।९ तक ल.चि. ।
आषाढ़कृष्ण ३ बु.	२६ ,,	९ ,,	पूषा.	अभिजिति । अन्य ल. चि. ।
,, ,, ४ शु.	२७ ,,	११ ,,	श्रवण	घं. ७।२३ बाद । ल. चि. ।
,, शुक्ल ५ शु.	१ आषा	२५ ,,	आश्लेषा	घं. ८।१७ तक । ल. चि. ।
		(१९८३)		
फाल्गुनशुक्ल ३ गु.	४ फाल्गुन	१७ मार्च	अश्विनी	घं. ७।९ बजे से । ,, ,, ।
,, ,, १० गु.	११ ,,	२४ ,,	पुष्य	अभिजति या ३ चिन्त्य ।
,, ,, ११ शु.	१२ ,,	२५ ,,	आश्लेषा	घं. ११।५२ तक भद्रा दोष ।
चैत्र कृष्ण २ बु.	१७ ,,	३० ,,	चित्रा	ल. ३ ।
,, ,, ३ बृ.	१८ ,,	३१ ,,	स्वाती	शनिश्रुति । ल.चि. घं.८।५८ तक ।

विवाहादि प्रत्येक शुभ कार्य तन्त्रोक्त शुभ मुहूर्त में सम्पन्न करने से ही अभीष्ट की सिद्धि मिलती है । मुहूर्त सम्पादन पञ्चाङ्ग-गणित की अपेक्षा अधिक कठिन है । अतः इसमें अनेकानेक मत मतान्तरों, लोकाचारों एवं आपद्धर्मीय समस्याओं का समावेश होता चला आ रहा है पञ्चाङ्ग की इस प्रकरण में जो भूल हो गई हो उससे हमें अवश्य अवगत कराने की कृपा करें ताकि भविष्य में आपके बहुमूल्य सुझावों का परिपालन [illegible] प्रकरण आपको पसन्द आयेगा ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीसम्वत् २०३९ शाके १९०४ के विवाह मुहूर्त

* चिह्नांकित मु० नक्षत्र चतुष्टयी के हैं ।

मास तिथि वार	गते वैशाख	सन् १९८२	विवाह नक्षत्र	विवरण
वैशाखकृष्ण ६ बु·	१ ,,	१४ अप्रै.	मूल	राहुवेध ।
,, ,, ८ शु·	३ ,,	१६ ,,	उषा	ऽ।। ऽ।ऽऽ।। ल. ८, गोधूलि
*,, ,, ९ श·	४ ,,	१७ ,,	श्रवण	गोधूलि, अन्य चिन्त्य ।
*,, ,, ९ र·	५ ,,	१८ ,,	श्रवण	दि.ल.घं.११।१४जेतक ।
,, ,, ९ र·	५ ,,	१८ ,,	धनिष्ठा	।।।।ऽ।ऽ।। ल. ८ (२१।१४ से पूर्व)
*,, ,, १० सो·	६ ,,	१९ ,,	धनिष्ठा	लग्न चिन्त्य । दि.ल. १२।२० तक ।
,, ,, १२ बु·	८ ,,	२१ ,,	उभा.	क्षीण चन्द्र दोष । आवश्यके ।
वैशाखशुक्ल २ र·	१२ ,,	२५ ,,	रोहणी	लग्नाभाव ।
,, ,, ३ सो·	१३ ,,	२६ ,,	रोहणी	।।।।।।।।।ल.८ चन्द्र दान । अन्य चि. ।
,, ,, ३ सो·	१३ ,,	२६ ,,	मृग.	।।।।।ऽऽ।। लग्न १० अन्य चिन्त्य ।
,, ,, ४ मं·	१४ ,,	२७ ,,	मृग	।।।।नृ।।।। गोधूलि ।
,, ,, ९ श·	१८ ,,	१ मई	मघा	।।।।रोऽ।ऽ। गो. । क्रांतिसाम्याभाव ।
,, ,, १० र·	१९ ,,	२ ,,	,,	,, दिवा ल. २,४ ,,
,, ,, ११ चं·	२० ,,	३ ,,	उफा.	भौम युति, मृत्युपञ्चक, लग्नाभाव ।
,, ,, १२ मं·	२१ ,,	४ ,,	उफा.	,, ,, ,,
,, ,, १३ बु·	२२ ,,	५ ,,	हस्त	ऽऽ।ऽऽऽ।।।। लग्न चिन्त्य रेखा ५
,, ,, १३ बु·	२२ ,,	५ ,,	चित्रा	ऽ ऽ।।।ऽ।।। ल. १० शनि. यु. परि.
,, ,, १४ गु·	२३ ,,	६ ,,	स्वाती	ऽ।ऽ।।नृ।ऽ।। ल. १० (आव.)
,, ,, १५ शु·	२४ ,,	७ ,,	स्वाती	व्यतीपात दोष
ज्येष्ठ कृष्ण १ श·	२५ ,,	८ ,,	अनु.	सूर्य वेध ।
,, ,, २ र·	२६ ,,	९ ,,	अनु.	,,
,, ,, ३ मं·	२८ ,,	११ ,,	मूल	राहुवेध । घं. ७।२० से ।
,, ,, ५ गु·	३० ,,	१३ ,,	उषा.	।।।।ऽऽमृऽऽ।ऽ दग्धा दोष, मृत्युपं.
,, ,, ६ शु·	३१ ,,	१४ ,,	उषा	।।।।ऽ।अ. ऽ।ऽ रेखा ५ आव.
*,, ,, ७ श·	१ ज्येष्ठ	१५ ,,	श्रवण	लग्न चिन्त्य ।
*,, ,, ७ श·	१ ,,	१५ ,,	धनिष्ठा	,, ,,
*,, ,, ८ र·	२ ,,	१६ ,,	धनिष्ठा	लग्न चिन्त्य । घं. २०।४० तक ।
,, ,, १० मं·	४ ,,	१८ ,,	उभा.	शनि वेध ।
,, ,, ११ बु·	५ ,,	१९ ,,	उभा.	,,
,, ,, १२ गु·	६ ,,	२० ,,	रेवती	भौम वेध ।
ज्येष्ठ शुक्ल १/२ चं·	१० ,,	२४ ,,	मृग	।।।।।ऽ।।। ल. गोधूलि, अन्य चि. ।
,, ,, ३ मं·	११ ,,	२५ ,,	मृग	नक्षत्रान्त दोष, लग्नाभाव ।
,, ,, ६ शु·	१४ ,,	२८ ,,	मघा	लग्नाभाव आव. चिन्त्य ।

मास तिथि वार	गते ज्येष्ठ	सन् १९८२	विवाह नक्षत्र	विवरण
ज्येष्ठ शुक्ल ७ श·	१५ ,,	२९ ,,	मघा	।।।।नृऽऽ।। दि.ल. ४ ।
,, ,, ८ र·	१६ ,,	३० ,,	उफा.	भौमयुतिदोष । लग्नाभाव ।
,, ,, ९ चं·	१७ ,,	३१ ,,	,,	।।ऽ।।ऽऽ।।। दि.ल. ४,५ चोरबाण ।
,, ,, ९ चं·	[illegible] ,,	३१ ,,	हस्त	शनियुति दोष ।
,, ,, १० मं·	१८ ,,	१ जून	हस्त	।।ऽ ।।।ऽ।।दि.ल.४,५घं.१२।२७ तक ।
,, ,, ११ बु·	१९ ,,	२ ,,	स्वाती	लग्नाभाव ।
,, ,, १२ बृ·	२० ,,	३ ,,	,,	।ऽऽ।।।।।।दि.ल.४, घं.१२।९ या. ।
,, ,, १४ श·	२२ ,,	५ ,,	अनु.	।।।ऽ।ऽ।।दि.ल. ४,५ अन्य चिन्त्य ।
,, ,, १५ र·	२३ ,,	६ ,,	,,	।।।।।ऽ।दि.ल.४ घं.१०।४२ तक ।
आषाढकृष्ण १ सो·	२४ ,,	७ ,,	मूल	राहु वेध ।
,, ,, २ मं·	२५ ,,	८ ,,	,,	,, ,,
,, ,, ३ बु·	२६ ,,	९ ,,	उषा.	सूर्य वेध ।
,, ,, ४ बृ·	२७ ,,	१० ,,	,,	,, ,,
*,, ,, ४ शु·	२८ ,,	११ ,,	श्रवण	लग्न चिन्त्य । घं. १८।४५ तक ।
*,, ,, ५ श·	२९ ,,	१२ ,,	धनिष्ठा	लग्न चिन्त्य ।
,, ,, ८ मं·	१ आषाढ़	१५ ,,	उभा.	भौम वेध ।
,, ,, ९ बु·	२ ,,	१६ ,,	रेवती	मृत्यु पञ्चक व भद्रा दोष ।
*,, ,, १० बृ·	३ ,,	१७ ,,	अश्विनी	लग्न चिन्त्य ।
,, ,, १३ श·	५ ,,	१९ ,,	रोहणी	क्षीण चन्द्र दोष ।
आषाढशुक्ल ५ शु·	११ ,,	२५ ,,	मघा	।।।।।ऽऽ।।दि.ल.४ अन्य चि. ।
,, ,, ७ र·	१३ ,,	२७ ,,	उफा.	।ऽ।।।।ऽऽ।।ल.१० घं. २०।४८ से. ।
,, ,, ८ चं·	१४ ,,	२८ ,,	हस्त	।।ऽऽ।।।।ऽ।ऽ धूलिमुख,घं.१९।४२तक
*,, ,, ९ मं·	१५ ,,	२९ ,,	चित्रा	लग्नचिन्त्य घं.१९।१० से ।
,, ,, १० बु·	१६ ,,	३० ,,	चि·/स्वा·	ऽ।ऽ।।।।ऽ। दि.ल.५घं.९।४से। गोधू. रा· घं. २०।१४ से २१।५३ तक ।
मार्गशीर्षकृष्ण६ चं·	२१ मार्ग	६ दि.	मघा	ऽऽ।।।ऽऽ।।। ल. ६ अन्य चिन्त्य ।
,, ,, ७ मं·	२२ ,,	७ ,,	,,	दिवालग्न चिन्त्य ।
,, ,, ८ बु·	२३ ,,	८ ,,	उफा.	।।।।नृऽऽ।।ल.१२,५ भीने चंद्रदान ।
,, ,, ९ बृ·	२४ ,,	९ ,,	हस्त	ऽ।।।।।ऽ ऽ ल.१२ (चं.दा.) गोधू. ।
*,, ,, १० शु·	२५ ,,	१० ,,	चित्रा	ऽ।।।ऽऽऽ।। ल. चि. ५,६।
,, ,, ११ श·	२६ ,,	११ ,,	स्वात्यां	शनि युति ।
,, ,, १२ र·	२७ ,,	१२ ,,	स्वात्यां	लग्नाभाव ।

आगे क्षयाधिमास दोष है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देशाचार से केवल पंजाब एवं त्रिगर्तप्रदेश के लिए विवाह मुहूर्त

मास तिथि वार	गते ⊛	सन् १९८२	विवाह नक्षत्र	विवरण
आषा.शु. ११ बु.	आषा१७	१जुला.	स्वाती	दि.ल. ९,५ (१०।१ तक)
,, ,, १२ शु.	१८	२ ,,	अनु.	ल.गोधू १०,२ (चं. दा.)
,, ,, १२ श.	१९	३ ,,	अनु.	दि.ल. ४,५
श्राव. कृ. १ बु.	२३	७ ,,	उषा.	ल. २ (२६।३९ से २७।३७ तक)
,, ,, २ गु.	२४	८ ,,	श्रवण	दि.ल. ४ (च.दा.) गोधू., २
,, ,, ३ शु.	२५	९ ,,	धनि.	ल. गोधू. (१९।२५ बाद), १० ×
,, ,, ७ मं.	२९	१३ ,,	रेवती	ल. गोधू., १०,२[× (२०।३०बाद)
,, ,, ८ बु.	३०	१४ ,,	रेवती	दि.ल. ४
,, ,, ११ श.	श्राव. २	१७ ,,	रोहिणी	दि.ल. ५ (९।३२ बाद)
श्राव.शु. ४ श.	९	२४ ,,	उफा.	ल. २
,, ,, ५ र.	१०	२५ ,,	उफा.	दि.ल. ५
,, ,, ८ बु.	१३	२८ ,,	स्वाती	दि.ल. ५
,, ,, ९ गु.	१४	२९ ,,	अनु.	ल. २ (च.दा.) अत्यावश्यके)
,, ,, १० शु.	१५	३० ,,	अनु.	दि.ल. ५, (गोधू. में का.सा. है)
,, ,, १४ मं.	१९	३ अग.	उषा.	दि.ल.५(८।१७बाद),२भद्रा से पहले
,, ,, १५ बु.	२०	४ ,,	श्रवण	ल.२
भाद्र. कृ. ३ र.	२४	८ ,,	उभा.	ल. गोधू., २
भाद्र. कृ. ४ चं.	२५	९ अग	उभा.रेव	दि.ल. ८, गोधू., २
,, ,, ५ मं.	२६	१० ,,	रेवती	दि.ल. ८
,, ,, ९ शु.	२९	१३ ,,	रोहिणी	ल. गोधूलि,
,, ,, १० श.	३०	१४ ,,	रोहिणी	दि.ल.५
भाद्र. शु. २ शु.	भाद्र. ५	२० ,,	उफा.	ल.४
,, ,, ३ श.	६	२१ ,,	उफा.ह.	दि.ल. ८, २ (२४।१० बाद), ४
,, ,, ४ र.	७	२२ ,,	हस्त	दि.ल. ८ (१३।१६ तक)
,, ,, ९ श.	१२	२८ ,,	मूल	दि.ल. ८ गोधू,
,, ,, ११ चं.	१५	३० ,,	उषा.	ल.गोधू.,२,४ (च.दा.)
,, ,, १२ मं.	१६	३१ ,,	उषा.श्र.	दि.ल. ८, गोधूलि, २,४ (च.दा.)
,, ,, १३ बु.	१७	१सितं	श्रावण	दि.ल. ८
,, ,, १३ बु.	१७	१ ,,	धनि.	ल. ४ (चन्द्र दान)
,, ,, १४ गु.	१८	२ ,,	धनि.	दि.ल.८

⊛ पंजाब में चलने वाले प्रविष्टे हैं। समय भा० स्टै० टाइम है।

—: यात्रा मुहुर्त विचार :—

यात्रा विचार में अनेक विषय आते हैं। स्थान की कमी एवं समयाभाव के कारण हम सभी बातें यहाँ नहीं दे पा रहे हैं। सबसे मुख्य वस्तु 'दिशा शूल' का चक्र बना कर दे रहे हैं। हमारा प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि वे यदि इस विषय में 'कुछ विशेष सुझाव' रखते हों तो कृपया अवगत करायें।

यात्रा शूल चक्र में जिस दिशा के सामने जो वारादि लिखे हैं वे 'शूल' हैं। उनमें उस दिशा की यात्रा करना अति अशुभ है। विपरीत (पृष्ठस्थ) या वाम दिशा के तिथिवारादि शुभ होते हैं। सम्मुख चन्द्रमा, पृष्ठस्थ सूर्य तथा योगिनी आदि का विचार १ दिन से अधिक समय की यात्रा में किया जाता है। जिस स्थान में एक ही दिन (अहोरात्र या वार) में पहुँच जाने की सम्भावना हो वहाँ पर दिशाशूलादि का विचार त्याज्य है। केवल सम्मुख चन्द्रमा का विचार ही पर्याप्त है। जैसे—

भतिथि युतिज दोषं वारजं दूषणं वा परिघकुलिक पाशःकाल राह्वादि दोषम्।
कुसमयभव दोषं लग्न संक्रांति दोषं हरतिसकल दोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

यात्रा शूल चक्र में दी गई 'काल राहु' तथा 'काल पाश' की दिशायें केवल दिन के लिए हैं। रात्रि हेतु काल पाश को काल राहु और काल राहु को काल पाश समझना चाहिए। जैसे—शनिवार के दिन पूर्व में काल राहु है तो रात्रि में 'काल पाश' रहेगा। अस्तु। अग्रिम पृष्ठ देखें।

❀ सर्वकार्य सिद्धि में होरा मुहूर्त ❀

प्रत्येक वार को २४ होरायें होंगी

होरा	रवि-वार	सोम-वार	मंगल-वार	बुध-वार	गुरु-वार	शुक्र-वार	शनि-वार
१	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
२	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
३	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
४	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
५	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
६	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
७	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
८	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
९	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
१०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
११	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
१२	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
१३	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
१४	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
१५	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१६	शुक्र	शनि	बुध	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
१७	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
१८	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
१९	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
२०	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
२१	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
२२	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
२३	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
२४	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल

⊛ इस विषय की आवश्यक गणितीय विधि अगले वर्ष देंगे॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

: यात्रा-शूल-चक्र :

शूल → दिशा ↓	वार शूल	नक्षत्र शूल	दिने काल राहु	दिने काल पाश	दक्षिण व सम्मुख योगिनी तिथि	पृष्ठ व वाम चन्द्र की राशि	समय शूल	सूर्य का त्याज्य भाव
पूर्व	श· सो·	ज्ये.पूषा.उषा.	श·	मं·	१,९|५,१३	मि· तु· कु· क· वृ· मी·	उषा· काल	लग्न १ भाव
अग्नि	सो· गु·	,,	शु·	चं·	३,११|४,१२	,,	,,	११,१२ ,,
दक्षिण	गु·	चि· श्र· ध· रे· श.पूभा.उभा.	वृ·	सू·	५,१३|६,१४	क· वृ· मी· मे· सिं· ध·	मध्या.	१० ,,
नैऋत्य	सू· शु·	,,	बु·	सू·	४,१२|७,१५	,,	,,	९,८ ,,
पश्चिम	सू· शु·	रो. पुष्य मूल	मं·	श·	६,१४|२,१०	मे· सिं· ध· वृ· कं· म·	सायं	७ ,,
वायव्य	मं·	,,	सो·	शु·	७,१५|८,३०	,,	,,	६,५ ,,
उत्तर	मं· बु·	पूफा. उफा. ह· चि·	सू·	वृ·	२,१०|१,९	वृ· कं· म· मि· तु· कु·	निशीथ	४ ,,
ईशान	बु· शु·	,,	,,	बु·	८,३०|३,११	,,	,,	३.२ ,,

सम्मुख चन्द्र विचार :—मेषादि राशिगत चन्द्रमा क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर में वास करते हैं। यथा—

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुला कुम्भ दिशि प्रतीच्यां कर्कालिमीने च तथोत्तरस्याम् ॥

सम्मुख चन्द्र फल:—

"सम्मुखेचार्थ लाभः स्याद् दक्षिणे सुख सम्पदा।
पृष्ठतः प्राणनाशायं वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥"

विशेष यात्राओं में भद्रादि परिहार एवं 'घातचक्र' का भी विचार करना आवश्यक है अश्विनी पुष्य अनुराधा तथा हस्त ये चारों 'सर्व दिग्गमन नक्षत्र' हैं। अतः 'हस्त' में उत्तर दिशा की यात्रा की जा सकती है।

यात्रा भंग कारक योग :—किसी भी शुभ लग्न में यात्रा करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि लग्न में चन्द्र (१), अष्टम चन्द्र (२), सप्तम शुक्र (३), एवं दशम में शनि (४) न हों। यदि इन चारों में से एक भी योग रहा तो समस्त शुभ योग नष्ट हो जायेंगे।

परन्तु यदि (१) लग्न में गुरु तथा षष्ठस्थ सूर्य हो तो अष्टम चन्द्र का दोष मिट जाता है। इसी प्रकार (२) यदि गुरु लग्न में, शुक्र ४ थे, बुध ५ वें, सूर्य ६ ठे हो तो दशमस्थ शनि का दोष समाप्त होकर शनि शुभ हो जाता है।

—: सर्वघात चक्र :—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मा. स.	कार्तिक	मार्ग	आषाढ	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	आश्वि.	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१-६ ११	५-१० १५	२-७ १२	२-७ १२	३८३ १	५-१० १५	४-९ १४	१-६ ११	३-८ १[illegible]	४-९ १४	३-८ १३	५-१० १५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	श्ले.
योग	विष्कु.	सुकर्मा	परिघ	व्याघा	धृति	शूल	सुकर्मा	व्यती.	वज्र	धृति	गण्ड	वज्र
करण	बव	शकुनि	चतु.	नाग	बव	कौल.	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु.	चतु.
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	मेष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१ ला	४ था	३ रा	१ ला	१ ला	१ ला	४ था	१ ला	१ ला	४ था	३ रा	४ था
चं.पुरु.	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चं.स्त्री	मेष	धनु	धनु	मीन	मकर	वृश्चि.	मकर	धनु	कन्या	वृश्चि.	मिथुन	कुम्भ

'रोगान्ते गमने रणे नो मंगले' अर्थात् घात चक्र का विचार विवाहादि शुभ कार्यों में नहीं किया जाता। केवल यात्रा, रोग मुकदमे आदि में ही इसका विचार करें।

❊ महाकवि घाघ का यात्रा मुहूर्त ❊

दिशा	तिथि	वार	चन्द्र राशि
पूर्व	६, १४	मं· बु·	मेष, सिंह, धनु
दक्षिण	२, १०	चं· श·	वृष, कन्या, मकर
पश्चिम	१, ९	वृ· श·	मिथुन, तुला कुम्भ
उत्तर	५, १३	वृ· शु·	कर्क, वृश्चिक, मीन

विवरण :—

यदि पूर्व में यात्रा करनी हो तो ६, १४ तिथि मंगल या बुध के दिन तथा मेष, सिंह धनु के चन्द्रमा में करें।

दिशाशूल ले जाओ बायें,
राहु जोगनी पूठ।
सम्मुख लेवें चन्द्रमा,
लावे लच्छमी लूट ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

❀ शुभाशुभ मुहूर्त ज्ञान ❀

महत्वपूर्ण व्यापारिक लिखा पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कण्ट्रेक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन पत्र या टेण्डर देना, नवीन परिचय, मैत्री द्वारा कार्य सिद्धि, किसी कलाकृति का आरम्भ आदि अनेक महत्वपूर्ण कार्य प्रायः हमारे दैनिक जीवन में आते रहते हैं। जिनके लिये हम अभीष्ट फलदाता मुहूर्त चाहते हैं; पर यथा शीघ्र। क्योंकि इन कार्मों के लिये सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका नहीं जा सकता। अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लाभार्थ प्रायः नित्य के ही शुभाशुभ काल को सरलता पूर्वक जान लेने की नवीन प्रणाली निम्न चक्र द्वारा समझा देते हैं। नीचे के चक्र में सोलह योग दिये हैं। जिनमें क्रमांक १ से ५ तक के 'शुभ' शेष 'अशुभ' हैं। ये योग प्रत्येक वार के साथ चक्रोक्त नक्षत्र अथवा तिथि के संयोग से बनते हैं। 'वार' सूर्योदय से शुरू होकर अगले दिन के सूर्योदय पर समाप्त होता है तथा उसी समय से अग्रिम वार आरम्भ होता है। अतः इस बीच अभीष्ट वार को कौन सा नक्षत्र, तिथि कब तक रहती है—यह (किसी शुद्ध) जंत्री या पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें; फिर उन्हें उसी वार के नीचे के खानों में देखिये। बस, आपको उस वार को दिन-रात के शुभाशुभ मुहूर्त काल का पता स्वयं लग जायेगा (कि आज कोई शुभाशुभमुहूर्त है या नहीं) । अमृत सिद्धि, स.सिद्धि व सिद्धि योग पंचांग में दिये हैं।—साभार 'ज्योतिष-रहस्य' से।

क्रम	योग (सु०)	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	अमृत सिद्धि योग (विष योग तिथि)	हस्त ५	मृगशीर्ष ६ (हुता.)	अश्विनी ७ (हुता.)	अनुराधा ८ (हुता.)	पुष्य ९ (हुता.)	रेवती १० (हुता.)	रोहणी ११ (हुता.)
२	सर्वार्थ सिद्धि योग (दुष्ट तिथि)	अश्वि.पुष्य.उ.३ हस्त मू. १.३,७ (स.)	रो. मृ. पुष्य अनु. श्र. २, ११	अश्वि. कृ. आश्ले. उभा. ३, ९, १२	कृ. रो. मृ. हस्त अनु. १, ९ ११	अश्वि.पुन.पु. अनु. रे. — —	अश्वि.पुन.अ. श्र. रे. — —	रो. स्वा. श्र ११, १३
३	सिद्धि योग नक्ष.	मूल	श्रवण	उभा.	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वा.
४	,, तिथि	०	०	३, ८, १३	७,१२	१.१०,१५३०	१, ६. ११	४, १४
५	रवांकुर योग	८. ३	३	४, १४	५. १०, १५	२, ७, १२	५, १५	३, ८
६	मृत्यु योग	अनु०	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्ले.	हस्त
७	मृत्युदा तिथि (अधम योग)	१,४(विषाख्य) ६, ११	२,७,१२	१, ६, ११	३, ८, १३	४, ९, १४	२, ७, १२	५,१०,१५३०
८	क्रचक्र योग	१२ (हुता.)	११	१०	९	८	७	६
९	दग्ध योग	१२	११	५	१(समवर्त) २(विषाख्य) ३,४(कुलिक)	६	८ ९(विषाख्य)	९ ७ (विषाख्य)
१०	उत्पात योग	विशा.	पूषा.	धनि.	रेवती	रोहणी	पुष्य	उफा.
११	काल योग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.
१२	यमघंट	मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहणी	हस्त
१३	यमदंष्ट्रा	मघा. धनि.	मू. विशा.	म. कृ.	पुन., पूषा.	अश्वि. उषा.	रो. अनु.	श्रव. शत.
१४	मुसल, वज्र वार दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उषा.	धनि.	उफा.	ज्येष्ठा	रेवती
१५	राक्षस योग	शत.	अश्वि.	मृग.	श्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.
१६	काण योग	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा

—: विवाह में रवि चन्द्र गुरु शुद्धि चक्र :—

ग्रह	रवि	चन्द्र	गुरु
शुभ स्थान	३, ६, १०, ११	३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
पूज्य स्थान	१, २, ५, ७, ९	१, २, ५, ९	१, ३, १० ६
निन्दित स्थान	४, ८, १२	८, ४, १२	४, ८, १२

कन्या के विवाह में गुरु-चन्द्र का बल तथा बालक के उपनयन में सूर्य-चन्द्र का बल देखें।

कुण्डलीगत भौम दोष परिहार :—

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौम दोष विनाश कृत्॥
शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत्॥

— स्पष्टार्थ है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कतिपय नित्योपयोगी मुहूर्त

नाम मुहूर्त	तिथि	वार	लग्न	नक्षत्र व विवरण
जातक कर्म	१,२,३,५,६, १०,११,१२, १३, शुभ	चं. बु. बृ. शु.	२,३,६,७ ९ १२ शुभ	जन्म के समय या ११।१२वें दिन—अश्वि. रो. मृ. पुन., पुष्य, उत्तरा तीनों, ह., चि. स्वा. अनु. श्र. ध. तथा रेवती नक्षत्रों में शुभ है।
सूतिका स्नान	१,२,३,५,७, १०,११,१२, १३.१५ में (भद्रावचाकर)	सू. मं. बृ.	बुध. शुक्र गुरु की राशियों के लग्न शुभ हैं।	ह.मृ अनु.रो. उत्तरा ३, अश्वि.स्वा. रेवती शुभ हैं। २,३. ६,७,९,१२ लग्नों में पंचम भाव-भावेश की शुद्धि आवश्यक है। (पुन.पु.चि.वि. म.पूफा मू.श्र नक्षत्र और चं.बु.श. वार बचाकर)।
अन्नप्राशन	२,३,५,७,१० १३.१५, (भद्रावचाकर)	बु बृ. च. शु.	२,३,४,५, ६,७,९ जन्म लग्न व राशि से अ ठवाँ लग्न व चन्द्रमा बचाकर	बालकों का षष्ठादि सम महिनों में, कन्याओंका पञ्चमादि विषम मासों में—अश्वि.रो.मृ. पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा अनु.श्र.ध शत.रे. नक्षत्रों में शुभग्रह लग्न से १,३,५,७,९ वें पापग्रह ३,६ ११ वें, दशम स्थान शुद्ध हो तथा चन्द्रमा ४,६,८,१२वें न हों। जन्मलग्न, आठवाँ लग्नछोड़ कर शुद्ध चक्र शुद्धि देखी जाय॥
कर्णवेध	४,९.१४,३० को छोड़कर शेष शुभ। कृष्ण पक्ष में १० तक शुभ (भद्रावचाकर)	चं बु बृ शु.	२,३,४.५ ७,९.१२ शुभ हैं।	६.७,८ मासों में विषम वर्षों में—अश्वि.मृ.पुन पु ह.चि.अनु.अभि.श्र. ध.रे. में जब पापग्रह ३,६,११ शुभ ग्रह अन्यत्र परन्तु अष्टम स्थान शुद्ध हो। सूर्य वर्जा तथा गुरु लग्न में अति शुभ है। जन्म राशि व लग्न का निषेध है।
चौल कर्म (मुण्डन या केशान्त, चूड़ाकरण)	२,३,५,७, १०,११,१२	चं. बु बृ. शु.	२,३,४. ६,९,७, १२ शुभ हैं।	कुलाचारानुसार तृतीयादि विषम वर्षों में, चैत्ररहित उत्तरायण के मासों में अश्वि मृ.पुन.पु चि.स्वा.ज्ये.अभि. श्र,ध.श रे.नक्षत्रोंमें, लग्नादष्टम भाव शुद्धि देखकर भद्रादि दोष बचाकर चौल कर्म शुभ है। प्रथम पुत्र के लिये ज्येष्ठ मास निषिद्ध है।
यज्ञोपवीत (व्रतबन्ध)	शुक्ल २,३ ५,१०,११ १२ कृ. २ ३,५ भद्रा रहित	सू. च. बु बृ.शु. रोग बाण रहित, मध्याह्न से पूर्व	शुभ लग्न	अ.ह.पु.उ. तीनों रो श्र स्वा पुन. ध.मृ चि.मू अनु.पू. तीनों आ. रे. नक्षत्रों विषम वर्षावस्था. बृ.शु.को ब लत्वृद्धत्व व अस्त दोष न होने पर, शुभ लग्न में जब कि पापी ग्रह ३.६।११वें चन्द्र २।३।७।१०वें व शेष ग्रहों की शुभ भाव स्थिति पर माघादि ५ मासों में। लग्नस्थ २।४ का चन्द्र शुभ लग्नस्थ सूर्य सदैव शुभ।
दोलारोहण (पालने में बैठाना)	४,९,१४,३० के अतिरिक्त	चं. बु. बृ. शु.	चर लग्न १,४,७.१०	जन्म दिन से (कुलाचारेण)१०,१२, १६,१८,३२वें,नोंमें, मृ रे च अनु ह.श्र श्व.पुन.,अभि.उत्तरा३, रोहणी में जब पापीग्रह३ ६,११वें तथा शुभ ग्रह १,४,५,७,९,१०,११ वें हों।
दुकान करना	४.९,१४,३० के अतिरिक्त (भद्रावचाकर)	मं को छोड़कर	कुम्भ मेष वृश्चिक को छोड़कर	अश्वि अनु. रो. मृ उ ३, पुष्य रेव. अभि ह चि लग्न में शुक्र चन्द्र हों तो अति शुभ पापी ग्रह ८.१०वें न हों।
वर वरण	४,९.१४,३० को छोड़कर	मं.रवि. को छोड़.	शुभ	कृ. रो. पूर्वा ३, उत्तरा ३, में कुल क्रमानुसार
कन्या वरण	,,	च.बु.शु. बृ.सू.	शुभ लग्न	पूर्वा ३, उत्तरा० ३, श्र.अनु.स्वा.ध. कृ.रो.रे.मू.मृ.म.ह.नक्षत्रों में शुभ ग्रह ४,५,७,९,१०,१ में पाप ग्रह ३,६, ११ में शुभ हैं।
रोग मुक्ति स्नान	४,९,१४,३० शुभ हैं।	र बु बृ. मं.शु.	चर लग्न	अश्वि.म.कृ.मृ.आ.पु.पूर्वा ३, ह.चि. वि अनु.ज्ये.मू श्र.ध.श. नक्षत्रों में अशुभ चन्द्र हो तो रो. मु. स्नान शुभ है।
हल प्रवहण (हल जोतना)	४,९,१४,३० त्याज्य	च.बु. बृ शु.	शुभ लग्न	अश्वि.रो.मृ.पुन. पुष्य उत्तरा ३ ह. चि.स्वा वि.अनु.म मू.अभि.श्र.ध.श रे नक्षत्रों में सूर्य के नक्षत्र से ३ अशुभ शु.९ अशु ८ शुभ हैं।
चूल्हा स्थापना	,,	बु बृ.शु.	,,	पूर्वा ३, उत्तरा ३, रो पुष्य अश्वि. आर्द्रा में —सूर्य के नक्षत्र से ६ अशु. ४ श्रेष्ठ ८ श्रे. ५ ने. २ श्रे. ४ ने। चन्द्र वर्जा हो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नाम	तिथि	वार	लग्न	
नव वधू को पाकशाला प्रवेश	१,२,३,५, ७,१३ शुभ	सू म बृ.	२,३,६,७ ९,१२ शुभ	मृगोत्तरान्त्य कृशानुशाकश्रुतित्रये महाद्रिदैव पौष्णे । शुभेतिथौ स्वारखीनकृर्यान्नवावधूनतन पाक कर्म ॥ स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धे सप्तमे च बलान्विते, रन्ध्र व्येविहीने च ॥ मृ. उ ३ पुष्य कृ ज्ये मू पूषा.रो.अश्वि रे
वधू प्रवेश	१,२,३,५ ८,७,१० १२ १३,१५ में भद्रादि को बचा कर	च.बृ. शु.श (बु.) दुष्ट दोष भी देखना चाहिए	२,३,५, ६,८ ९, ११,१२. (विशेष रूप में स्थिर लग्न शुभ हैं)	विवाह के दिन से २ ४।५।६ ७।८ ९। १०।१२।१ दिनों में तदुपरान्त विषम मासों में वर्ष के भीतर वधू प्रवेश कराना शुभ है। एतदर्थ–तीनों उत्तरा, रो.,अश्वि ,ह ,पुष्य मृ.,रे ,चि.,स्वा , अनु ,मू श्र.,ध., नक्षत्र अति प्रशस्त हैं । तात्कालिक लग्न से १,२ ५,७, १०,११आवों में शुभ ग्रह ३,६,११ वें पाप ग्रह एवं ४।८।१२ भाव शुद्ध हों तो उत्तम है ।
द्विरागमन	,,	च बृ. बु.शु.	२,३,४ ६,७,१२	पिता के घर से दूसरी बार पतिगृह जाना ही द्विरागमन है। इसे १ वर्षाभ्यन्तर (अथवा ३-५ वर्षों में) वृश्चिक कुम्भ व मेष के सूर्य में गुरुशुद्धि विचार के ह.चि.स्वा.रो.मृ.अश्वि. पुष्य उत्तरा ३, श्र.ध श.पुन.रे चि. अनु.नक्षत्रों में 'वधू प्रवेश' की तरह लग्न शुद्धि में दाहिने और सम्मुख शुक्र को बचाकर करना शुभ है। अत्र विशेष :— द्विरागम: षोडषवासराग्ते एकादशाहे मम वासरेषु । न चात्र नक्षं न तिथिन योगो न वार शुद्धयादि विचारणीयम् ॥
नौकरी करना (पदग्रहण)	४ ९,१४,३० को छोड़कर	र.चं.बु. गु.शु.	शुभ ग्रह युक्त कोई भी लग्न ।	अश्वि. मृ. ह. चि. पुष्य अनु. रे रो. उत्तरा ३, नक्षत्रों में चन्द्र शुद्धि देख कर नौकरी आरम्भ करनी चाहिये । स्वामीसेवक का गुणमेलापक करके भाग्य देखकर भी शुभाशुभ जाना जा सकता है ।

नाम	तिथि	वार	लग्न	
नवग्रह निर्माण (ग्रहारम्भ)	३ ५,७ १०,११ १३ १५ शुभ हैं	चं बु.बृ शु श	२,३ ५ ६ ८,९,११ १२ स्वस्वाम या शुभ ग्रह से दृष्ट हों ।	नवग्रह निर्माण (गृहारम्भ) के लिये वै. श्रा. मार्ग. पौ. फाल्गुन (अथवा मे. कर्क सिं.वृ. म. कुं. स्थिते सूर्ये) श्रेष्ठ हैं । रो.,मृ. पुष्य, उत्तरा३, ह. चि. स्वा. अनु. ध. शत. रे. में अग्नि पंचक को बचाकर लग्न से केन्द्र-कोण में शुभ तथा त्रिषडाय में पाप ग्रह हों और ८।१२ स्थान शुद्ध हों । शुक्ल पक्ष में विशेष शुभ है । गुरु-शुक्र के बलाबल बाल-वार्धक्य व नीचादि स्थिति का विचार अति आवश्यक है । वृषभ चक्र-शुद्धि भी देखें ।
गृह प्रवेश	२,३,५, ६,७,८, १०,११ १२,१३ १५ तथा कृष्णा १ भी शुभ हैं ।	,,	२, ५, ८ ११ उत्तम तथा ३, ६ ९,१२ मध्यम हैं ।	नवग्रह-प्रवेश के लिए वै. ज्ये. माघ फा. (जीर्ण गृह में पुनःप्रवेश के लिए या आवश्यकता पर श्राव. मार्ग. कार्तिक भी) मासों को अति प्रशस्त कहा है । रो. मृ. उत्तरा ३, चि. अनु. रे. शुभ हैं । (जीर्ण के लिए पुष्य, स्वा. ध. शत. भी हैं) परन्तु 'कुम्भ चक्र शुद्धि' आवश्यक है । प्रवेशकर्ता (स्वामी) की जन्म राशि व लग्न से उपचय राशियाँ लग्न अथवा नवांश में हों तथा लग्न से १,२,३,५,७,९,१०, ११ वें शुभ ग्रह ३,६,११ वें पापी ग्रह हों, ४,८ स्थानों को ग्रह रहित होना चाहिए । गुरु-शुक्र उदय व बामार्क होना अत्यावश्यक है ।
बीज बोना	१,२,३,५ ७,८,१० ११,१२,१३ १५ शुभ हैं ।	चं. बु. बृ. (शु.)	विशेषकर सभी लग्न शुभ हैं । स्वामी से दृष्ट हो तो शुभ हैं ।	बीज बोने के लिए ४,६,८,९,१४, ३० तिथियों को छोड़कर अश्वि. रो.मृ. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा.अनु.मू.ध.श.रे. नक्षत्रों में राहु के नक्षत्र से ९,१०,११,१३,१४, १५, १७, १८ वें नक्षत्रों में बीज बोना शुभ है । "बुध बोवनी शुक्र लवनी"—घाघ ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

—: होमाहुति चक्र :—

(सूर्य नक्षत्र से)

२ १–३	५ ४–६	८ ७–९	१०,११ १२	१३,१४ १५	१६,१७ १८	१९,२० २१	२२,२३ २४	२५,२६ २७	[illegible]
सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	बृ.	रा.	के.	ग्रह.
सुख नाश	बुद्धि-वृद्धि	सम्पत्ति प्राप्ति	धनक्षय, मानभंग	कृषिहानि, (शुभ)	अग्निभय	मनोरथ सिद्धि	हानि	मरण, दुर्भिक्ष	हवन फल

शास्त्रोक्ति— सूर्यभात् त्रिभिर्भे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्र पंगवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥

—: अग्निवास ज्ञान चक्र :—

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे, शशियुग्म शेषे प्राणार्थनाशौ दिविभूतले च ॥

अर्थात्—शुक्ल प्रतिपदादि तिथि संख्या में, रविवारादि संख्या तथा एक और जोड़ कर ४ का भाग देने से ०,३ शेष रहे तो अग्नि का वास पृथ्वी में, होमाहुति के लिये शुभ होता है । १ शेष में अग्निवास स्वर्ग में प्राणनाशक तथा २ शेष में पातालवास मृत्युकर होता है ।"संस्कारेषु विचारोऽस्य न कार्यो नापि वैष्णवे । नित्ये नैमित्तिके नैव' के अनुसार विवाहोपनयनादि संस्कारों व नित्य नैमित्तिक कार्यों में इस अग्निवास चक्र का विचार नहीं किया जाना चाहिये । (मुहूर्त चिन्तामणि)

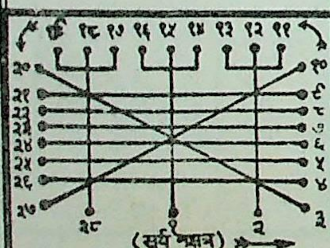
१. ❁ कोट चक्र ❁

(अभीष्ट नक्षत्र से)



२. ❁ शूल चक्र ❁

(सूर्य नक्षत्र से)



१. इस कोट चक्र का विचार—युद्ध, मुकदमे एवं रोगादि में किया जाता है ।

कोट स्वामी :—शुक्रः सौम्यो गुरुर्मन्दो राहुश्च भानुजः सितः ।
बुधेन्दू भास्करः सौरिः सौम्येति भाधिपा मताः ॥

अर्थात् शुक्र, बुध, गुरु, शनि, राहु, शनि, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, शनि तथा बुध ये मेषादि क्रम से राशियों के स्वामी हैं । इन्हें कोट-स्वामी भी कहा जाता है ।

कोटपाल :—सूर्यारशुक्रसौम्येज्या मन्दचन्द्रागुपत्क्रमात् ।
वर्गेशा अकवर्गादौ कोटपालाः प्रकीर्तिताः ॥

अर्थात् सू० मं० शु० बु० बृ० श० चं० रा० ये आठ ग्रह क्रमशः अ, क, च, ट, त, प, य, श, वर्गों के स्वामी हैं, जिन्हें कोट पाल कहते हैं ।

फल :— कोटेशः कोटमध्ये तु कोटपालो बहिः स्थितः ।
तदा कोटभयं नास्ति विपरीते तु विघ्नदः ॥

कोट का स्वामी कोट के भीतर तथा कोटपाल बाहर हो फल शुभ होता है । इसका उल्टा होने पर विशेष विघ्न एवं कष्ट होता है । पापी ग्रहों का कोट के मध्य में या बीच की पंक्ति में होना भी महान् कष्ट कारक है । शुभ ग्रहों की कोट के भीतर व पापग्रहों की बहिःस्थिति भी शुभ फलदायक है । यदि 'कोटपाल' या अन्य पापी ग्रह भीतर से बाहर को तथा 'कोटस्वामी' या शुभ ग्रह बाहर से भीतर को जा रहे हों या शीघ्र आने-जाने वाले हों तो शुभ है । विपरीत में कोट भंग (मृत्यु) होना सम्भव है । उदाहरण—

माना लाल सिंह नाम के किसी व्यक्ति का 'कोटचक्र' २६ मार्च १९८२ को देखना है । चूँकि इनका जन्म नक्षत्र अश्विनी होने से 'कोटचक्र' इसी प्रकार का होगा । अन्यथा नामनक्षत्र को १ संख्या पर रखकर कोटचक्र बनाना चाहिये । हाँ तो श्री लाल सिंह की राशिमेष होने से इनका कोटस्वामी 'शुक्र' तथा नामादि में ल वर्ण होने से कोटपाल 'चन्द्र' हुआ । श्री जीवन विजय पंचांग में इस दिन इसका कोटपाल 'चन्द्र' उभा० नक्षत्र में बाहर बैठा कोट की रक्षा कर रहा है । कोटस्वामी 'शुक्र' धनिष्ठा में कोट के मध्य में बैठा है । 'कोटेशः कोट मध्ये तु···' इस नियम से यह शुभ स्थिति है । अन्य पापग्रहों—श० मं० रा० के० का विचार स्वयं करें या हमें पत्र लिखें । 'कोटचक्र' से सम्बन्धित यह उदाहरण हमने टाँटा ग्राम निवासी पं० धर्मानन्द शास्त्री जी के सुझाव पर दिया है ।

२. शूलचक्र विधिः—सूर्य जिस नक्षत्र में हो उसे नं० १ में रखकर सव्य क्रम से २८ नक्षत्रों की स्थापना करें । यदि दिननक्षत्र नीचे के तीन स्थानों में पड़े तो मृत्यु, चारों कोनों में शुभ, उपर के त्रिशूलों में अशुभ तथा शेष १२ स्थानों में मध्य फल होता है ।

शास्त्रोक्ति— अधस्त्रीणि गता मृत्युश्चतुर्कोणगताः शुभाः ।
द्वादशा मध्यमाः प्रोक्ता नवर्क्षा भस्मकारकाः ॥

अतः अन्नप्राशन का नक्षत्र अशुभ स्थानों में नहीं होना चाहिये । —सम्पादक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हलचक्र (सूर्यर्क्षात्)

क्रम	२	८	९	८	१
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे पहले २ नक्षत्र अशुभ, बाद के ८ शुभ, बाद के ९ अशुभ, फिर ८ शुभ तथा अन्त का २८ वां अशुभ होता है। अशुभ नक्षत्रों में पहले पहल हल नहीं जोतना चाहिये।

॥ बीजवापन चक्र ॥ (राहु नक्षत्र से)

क्रम	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

जिस नक्षत्र में राहु हो उससे पहले ८ नक्षत्र अशुभ, दूसरे ३ शुभ इसी क्रम में २७ नक्षत्रों का विचार करके अशुभ नक्षत्र के दिन तथा सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से ३ दिन तक बीज बोना प्रारम्भ नहीं करना चाहिये।

—: नष्ट वस्तु लाभाय नक्षत्र चक्र :—

अन्ध.	रे.	रो.	पु.	उफा.	वि.	पूषा.	ध.	पूर्वे	४दि.	शीघ्र लाभ
मन्द.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	अनु	उषा	शत.	दक्षि.	१२दि.	यत्न लाभ
काण.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा	पश्चि.	३०दि.	कष्ट लाभ
सुलो.	कृ.	पुन	पूफा	स्वा.	मू.	श्र.	उभा	उत्तरे	×	अलाभ

फल—विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं, मन्दे प्रयत्नतः ।
स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये, श्रुत्याप्ती न सुलोचने ॥

अर्थात् चोरी गई या नष्ट वस्तु अन्धाक्ष में शीघ्र मिल जाती है। मन्दाक्ष में प्रयत्न से मिलती है। मध्याक्ष (काण) में केवल समाचार मिलता है, वस्तु नहीं मिलती तथा सुलोचन में न तो समाचार मिलता है न तो वस्तु ही मिल पाती है॥

❀ अंग-स्फुरण फलम् ❀

१. पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फड़कना शुभ है।
२. मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के शुभ है।
३. इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदय	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-बुद्धि	स्तन	पुत्र-कष्ट

❀ करण चक्र ❀

शुक्लपक्ष की तिथियों के करण			कृष्णपक्ष की तिथियों के करण		
तिथि	पहला भाग	दूसरा भाग	तिथि	पहला भाग	दूसरा भाग
१	किस्तुघ्न	बव	१	बालव	कौलव
२	बालव	कौलव	२	तैतिल	गर
३	तैतिल	गर	३	वणिज	विष्टि
४	वणिज	विष्टि	४	बव	बालव
५	बव	बालव	५	कौलव	तैतिल
६	कौलव	तैतिल	६	गर	वणिज
७	गर	वणिज	७	विष्टि	बव
८	विष्टि	बव	८	बालव	कौलव
९	बालव	कौलव	९	तैतिल	गर
१०	तैतिल	गर	१०	वणिज	विष्टि
११	वणिज	विष्टि	११	बव	बालव
१२	बव	बालव	१२	कौलव	तैतिल
१३	कौलव	तैतिल	१३	गर	वणिज
१४	गर	वणिज	१४	विष्टि	शकुनि
१५	विष्टि	बव	१५	चतुष्पाद	नाग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चरसारिणी

उपकरण = अक्षांश-क्रान्त्यंश   फल = चर मि: से:

अक्षांशाः ↓ / क्रान्त्यंशाः δ	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
φ ८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	८	४१	१५	४९	२३	५७	३२	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	६	४५	२४	३	४२	२३	३	४४	२४	६	४८	३०	१३	५६	४०	२५	१०
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२४	७	५०	३२	१४	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२२	८	५५	४२	३२	२०	१०	०
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४६	३३	२०	७	५४	४१	२८	१५	३	५१	४०	२८	१७	७	५६	४७	३८	२९	२१	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
	५१	४२	३३	२४	१६	७	५९	५१	४३	३६	२८	२१	१५	९	४	५८	५४	५०	४६	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२७	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	१२	१४	१७	२०	२४	३०	३७	४६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२३	२९	३५	४१	४७	५७	८	१८	३०
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	८	१३	१८	२२	२७	३२	३८	४४	५०	५६	४	११	१९	२८	३८	४७	५८	१०	२२	३६	५२	७	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२६	३६	४५	५४	४	१४	२५	३६	४७	५८	११	२४	३८	५२	७	२३	४०	५८	१६	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२२	३८	५४	१२	२९	४८	७	२७	४८	११	३४	५७	२३	५०	१९
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	३०	५०	१२	३५	५९	२३	४८	१४	४२	८	३७	१०	४२	२०
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	४२	६	३०	५५	२१	४६	१४	४१	१०	३९	९	४१	१४	४८	२४	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२७	५५	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	१८	५०	२३	५५	३०	८	४७	२७	८	५०	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३७	[illegible]	४२	१५	४८	२२	५६	३२	७	४३	२०	५८	३६	१५	५६	३७	१९	२	५०	४१	३०	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१८	५१	२८	६	४४	२३	२	४०	२०	१	४२	२४	८	५२	३७	२३	१०	५८	५०	४१	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३१	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	७	५८	४९	४२	३७	३३	३०	२७	३५	३५
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	१०	०	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१९	२०	२१	२३	२५	२९	३४	४०

स्पक स्पर्श = ज्यान्तर   चरांश × ४ = मिनटादि चर

अक्षांश ↓ / क्रान्त्यंशाः δ	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
φ २५	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१३	८	२	५६	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५१	५८	५	१५	२६	४०	५३
२५°	१	३	५	७	९	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४६	४८
१९'	५३	४६	३९	३२	२६	२०	१५	१०	५	२	०	५८	५७	५७	५९	१	६	१०	१८	२६	३७	४९	४	१८
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	४७	४५	४३	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१०	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	१७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	१	१२	२३	३६	५०	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	७	१५	२३	३१	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	४	२५	४९	१२	३६	२	३०	४	३८
२८°	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२२	२४	२६	२८	३१	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५३	५५
४०'	१०	२१	३१	४२	५४	५	१७	३०	४४	०	१५	३१	४९	८	२८	५०	१४	३९	७	३६	८	४२	१९	५८
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३६	५२	९	२६	४४	४	२४	४६	१०	३५	१	३०	०	३२	८	४६	२६	९
२९°	२	४	६	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३२	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५२	५४	५७
२२'	१४	२८	४२	५८	१३	२८	४४	१	१९	३७	५७	१७	३९	२	२७	५३	२१	५१	२३	५७	३३	१२	५४	३८
२९°	२	४	६	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२५	२७	३०	३२	३४	३७	३९	४२	४४	४७	५०	५२	५५	५८
४०'	१६	३२	४८	४	२१	३८	५६	१५	३४	५४	१५	३७	१	२६	५३	२१	५१	२३	५७	३३	११	५२	३६	२२
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४२	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१८	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	५९	२२	४६	१२	३८	५	३४	७	४०	१५	५२	३१	१३	५८	४६	३५
३०°	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४१	४३	४६	४८	५१	५४	५७	६०
३०'	२०	४१	२	२३	४५	७	४०	५३	१७	४२	८	३५	५	३४	६	३९	१२	४९	३०	११	५५	४२	३१	२४
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	४८	१३	३८	३	२९	५६	२२	५०	२०	५०	२१	५४	२८	४	४१	२०	२	४६	३२	२०	१२	६	२
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	९	४३	१८	५४	३२	११	५२	३३	१७	३	५२	४२	३५	३१	३०	३३	३७
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२९	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६६
	३६	१२	४८	२४	१	३९	१८	५७	३८	१८	०	४४	३०	१६	५	५६	४९	४४	४१	४१	४४	४९	५८	४
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	६	४९	३२	१५	०	४६	३१	१९	८	५८	५०	४४	३९	३६	३६	३८	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	३	५३	४४	३५	२८	२२	१७	१३	१३	१३	१५	२०	२७	३६	४७	०	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३९	३४	३१	२८	२६	२६	२७	२८	३२	३८	४४	५४	६	२०	३७	५७	२०	४६	१७	५१	३०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri